हस्तलिखित संस्कृत-ग्रंथ-सूची

संपादकमंडल

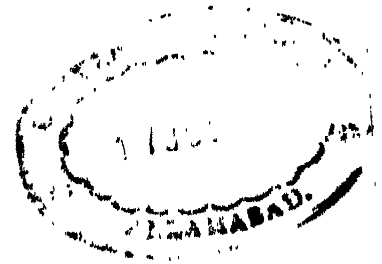
सुधाकर पांडेय करुणापति त्रिपाठी

मोहनलाल तिवारी

सहायक संपादक

विश्वनाथ त्रिपाठी





नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी

प्रकाशक
नागरीप्रचारिणी सभा,
वाराणसी

प्रथम संस्करण
सं० २०३१
७५० प्रतियाँ

मूल्य——७५-००

मुद्रक
शंभुनाथ वाजपेयी,
नागरीमुद्रण, वाराणसी

प्रकाशकीय

नागरीप्रचारिणी सभा ने अपनी स्थापना के साथ ही न केवल हिंदी साहित्य एवं देवनागरी लिपि के प्रचार प्रसार के लिये उद्योग आरंभ किया, अपितु ऐसे गुरु गंभीर आयोजन भी आरंभ किए जिनके कारण हिंदी साहित्य का अभ्युदय और विकास मात्र ही नहीं हुआ प्रत्युत उसके विकास की वह दृढ़ वैज्ञानिक भित्ति निर्मित हुई जिसके बल पर हिंदी का साहित्य दिनोत्तर समृद्ध होता चला आ रहा है। देश की परंपरा से प्राप्त हिंदी साहित्य की अतुल संपदा अनिश्चित राजनीति की स्थिति के कारण या तो नष्टभ्रष्ट हो चुकी थी या बेठनों में पड़ी पड़ी एकांत धरती में गड़े धन की भाँति निरर्थक कालोन्मुख हो रही थी। सन् १८६४ ई० में हिंदी पुस्तकों की खोज की दिशा में सभा ने सक्रिय चरण उठाए। तब से आज तक सभा यह कार्य करती चली आ रही है। सभा के इस यज्ञ में विभिन्न अवसरों पर प्रांतीय एवं केंद्रीय सरकारों ने समयोचित सहायता देकर सभा के कार्य को आगे बढ़ाया है।

इतनी लंबी अवधि के बीच हिंदी ग्रंथों की खोज करते समय सभा को बहुत से अलभ्य संस्कृत ग्रंथों की भी उपलब्धि होती रही। संस्कृत के ये हस्तलिखित ग्रंथ अत्यंत ही उपादेय एवं साहित्यान्वेषण के लिये अत्यन्त आवश्यक हैं। सभा बहुत दिनों से इनकी सूची प्रकाशित करना चाहती थी किंतु धनाभाव के कारण सभा का संकल्प बहुत दिनों तक अधूरा पड़ा रहा। अत्यंत हर्ष का विषय है कि इस कार्य के लिये केंद्रीय सरकार ने अनुदान देकर सभा के संकल्प को मूर्त रूप दिया है। एतदर्थ सभा सरकार के प्रति आभार प्रकट करती है एवं भविष्य के लिये और सहयोग की आकांक्षा रखती है। संस्कृत ग्रंथों की सूची का यह द्वितीय खंड प्रकाशित करते हुए हमें अत्यंत प्रसन्नता हो रही है और आशा है, हम शीघ्र ही इसका तृतीय खंड भी प्रकाशित कर सकेंगे।

महाशिवरात्रि
सं० २०३१ वि०

करुणापति त्रिपाठी
प्रकाशन मंत्री,
ना० प्र० सभा, काशी

भूमिका

नागरीप्रचारिणी सभा ने हिंदी के प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों की खोज का काम सन् १६०० से आरंभ किया और तब से लेकर अद्यावधि यह कार्य होता रहा तथा समय समय पर उनके विवरण प्रकाशित होते रहे हैं। इन विवरणों के प्रकाशन से अनेक अज्ञात लेखकों और ज्ञात लेखकों के अज्ञात ग्रंथों का परिचय हिंदी जगत् को प्राप्त हो सका जिससे अनवरत प्रवहमान साहित्यधारा की विस्तृति और उसकी गंभीरता एवं अतल-स्पर्शिता का आकलन करने में अकल्पनीय सहायता हुई है। किसी भी भाषा और साहित्य की परंपरा एवं इतिहास के ज्ञान के क्षेत्र में प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों की खोज और उनके विवरणों का प्रकाशन कितना महत्वपूर्ण है, यह सभी जानते हैं।

आज देश के विभिन्न भागों में जो भाषाएँ प्रचलित हैं, वे संस्कृत से जायमान हैं अतः यह सर्वमान्य है कि संस्कृत सभी भारतीय भाषाओं की जननी है। प्रचुरतम एवं विशाल ज्ञाननिधि का सचय, जो समयसीमा की दृष्टि को लाँघ गया है, किसी भी भाषा या उसके साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों में उपजीव्य एव मूलाधार के रूप में प्रतिष्ठित है। व्याकरण, दर्शन, ज्योतिष, योग, निरुक्त कोशग्रंथ आदि तथा साहित्य के विविध अंग--छंद, अलंकार, लक्षण ग्रंथ, रूपक आदि सभी क्षेत्रों में संस्कृत की यह प्रतिष्ठा अक्षुण्ण रूप से प्रथित है। संस्कृत भाषा में निबद्ध इस ज्ञानराशि के प्रति यूरोपियन विद्वान् पहल से ही अभिमुख थे। परपरा से प्राप्त यह संपदा राजनीतिक अस्थिरता एवं काल के प्रवाह में पड़कर व्यर्थ ही धरित्री में गड़ी हुई संपत्ति की तरह वेष्टन में लिपटी हुई शनैः शनैः नष्ट होती जा रही थी और उसके प्रसार की ओर से जनवर्ग, खासकर शिक्षित वर्ग, आँख मूँदे पड़ा था। अंग्रेजी शासन इस ओर १६वीं शती से ही प्रयत्नशील था। देश में अंग्रेजी शासन की पूर्ण स्थापना के अनंतर सन् १८६८ ई० से तत्कालीन सरकार द्वारा संस्कृत साहित्य के ग्रंथों की व्यापक पैमाने पर देशव्यापी खोज आरंभ हुई। रायल एशियाटिक सोसायटी, बंगाल और बंबई तथा मद्रास की प्रेसीडेंसी सरकारों ने इस कार्य में अग्रणीयता प्राप्त की। अनेक शोध संस्थाओं और विद्वानों द्वारा भी खोज में उपलब्ध ग्रंथों के संरक्षण तथा प्रकाशन की स्थायी व्यवस्था की गई। इस प्रकार के प्रयत्नों से प्राप्त ग्रंथों के विवरण के प्रकाशन से संस्कृत साहित्य के अनेक अज्ञात लेखकों और उनकी रचनाओं की तथा ज्ञात लेखकों के अनेक अज्ञात ग्रंथों की जानकारी जिज्ञासुओं और शोधकर्ताओं को प्राप्त हुई तथा अनेक अज्ञात ग्रंथों के प्रकाशन से संस्कृत साहित्य की श्रीवृद्धि हुई। इस संबंध में रायल एशियाटिक सोसायटी की तत्कालीन सेवाएँ अभिनंदनीय हैं।

हिंदी के क्षेत्र में कार्यरत होते हुए भी नागरीप्रचारिणी सभा का ध्यान इस ओर पहले से ही था। सभा से हिंदी ग्रंथों के प्रकाशन के क्रम में प्रकाशित संस्कृत साहित्य का इतिहास और अन्य ग्रंथों का प्रकाशन भी इसी दृष्टि से किया गया। सभा के [illegible] के

ही संस्कृत ग्रंथों की खोज में प्राप्त होनेवाले हिंदी के ग्रंथों की सूची और विवरण का सर्वप्रथम प्रकाशन एशियाटिक सोसायटी, बंगाल ने किया जिसमें सन् १८९५ की खोज में प्राप्त ६०० हिंदी ग्रंथों की सूची और विवरण संकलित है। इसके अनंतर सोसायटी ने यह कार्य (हिंदी ग्रंथों की सूची का प्रकाशन) समाप्त कर दिया।

हिंदी के हस्तलिखित ग्रंथों की खोज में देश के विभिन्न अंचलों में कार्यरत सभा के कार्यकर्ताओं को संस्कृत के भी ग्रंथ उसी प्रकार प्राप्त होते रहे जिस प्रकार एशियाटिक सोसायटी, बंगाल को संस्कृत ग्रंथों की खोज में हिंदी के ग्रंथ प्राप्त हुए थे। इस प्रकार संस्कृत के प्राचीन हस्तलेखों का सभा के पास एक अच्छा और अनेक विषय के ग्रंथों का संकलन हो गया। इनकी सुरक्षा और जानकारी के लिये हिंदी के हस्तलेखों के विवरण की तरह इनका भी संपादन और प्रकाशन आवश्यक था। सभा की प्रार्थना पर केंद्रीय सरकार ने विचार किया और इसके संपादन और प्रकाशन के लिये अनुदान देने की स्वीकृति दी। सरकार द्वारा प्राप्त इस अनुदान से नागरीप्रचारिणी सभा इसके संपादन और प्रकाशन की ओर अभिमुख हुई तथा उसके कर्मठ कार्यकर्ताओं ने सरकार द्वारा प्राप्त निर्देश के अनुसार इसका विवरण तैयार किया। इन ग्रंथों की कुल संख्या लगभग नौ हजार है, जिन्हें १८ विषयश्रेणियों में रखा गया है। इनमें साहित्य एवं साहित्यशास्त्र की सभी विधाओं के अतिरिक्त संगीत, नीतिशास्त्र, आयुर्वेद, धनुर्विद्या, आचार, धर्मशास्त्र, ज्योतिष, व्याकरण, उपनिषद्, कोश ग्रंथ, पाकशास्त्र, पशुचिकित्सा, कामशास्त्र, तंत्र, मंत्र, यंत्र, रसायन, इतिहास, पुराण, रत्नपरीक्षा, वास्तुविद्या आदि विषयों के भी महत्वपूर्ण प्राचीन ग्रंथों के विवरण उपलब्ध हो सके हैं। सरकार द्वारा प्राप्त विवरण निर्देशिका के अनुसार इनके विवरण कार्डों पर तैयार किए गए, जिनमें (१) विषय एवं क्रमसंख्या, (२) पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या, (३) ग्रंथनाम, (४) ग्रंथकार, (५) टीकाकार, (६) ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है, (७) लिपि, (८) पत्रों या पृष्ठों का आकार, (९) पत्रसंख्या, (१०) प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और (११) प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या, (१२) क्या ग्रंथ पूर्ण है, अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण, (१३) अवस्था और प्राचीनता, तथा (१४) अन्य आवश्यक विवरण शीर्षक से संकलन किया गया है। इस कार्य के करने में सभा के निम्नांकित कार्यकर्ताओं सर्वश्री शिवशंकर मिश्र, डा० प्रेमीराम मिश्र, मयालाल मिश्र, पारसनाथ पांडेय, वृजकुमार मिश्र, माधवप्रसाद शुक्ल, महानंद तिवारी, प्रेमनारायण पांडेय, आदि का तत्पर सहयोग और श्रम प्रशंसनीय रहा है अतः ये सभी धन्यवाद के पात्र हैं। अपने कार्य के प्रति इन लोगों की निष्ठापूर्ण लगन प्रशंस्य है।

कार्डों के तैयार हो जाने पर इसके संयोजन और संपादन के निमित्त श्रीश्रीपति त्रिपाठी जी से सहयोगार्थ अनुरोध किया गया। उन्होंने इसे स्वीकार किया और दो चार दिन आए भी पर अंत में वे इससे एकदम विरत हो गए।

संस्कृत के प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों के विवरण का यह द्वितीय खंड है जिसमें विभिन्न

इसमें ज्योतिष के ६०६, तंत्रशास्त्र के ६२८, दर्शनशास्त्र के ५८५, धर्मशास्त्र के ३४०, नीति-उपदेश के ६९, तथा पुराणेतिहास के १९ ग्रंथों का विवरण प्रकाशित है। इसका तृतीय खंड भी प्रकाशन के क्रम में है। अंतिम खंड में परिशिष्ट में उन ग्रंथों का विशिष्ट विवरण दिया जायगा जो संपादनक्रम में विशेष महत्वपूर्ण सिद्ध हुए हैं। ऐसे ग्रंथ पुष्पचिह्नांकित (*) हैं।

संस्कृत के प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों का विवरण तैयार करते समय प्राकृत और अपभ्रंश के भी अनेक ग्रंथ प्राप्त हुए हैं। इस प्रकार के ग्रंथ हिंदी के प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों का विवरण तैयार करते हुए भी पाए जा रहे हैं। इन प्राकृत और अपभ्रंश के ग्रंथों का भी विवरण तैयार कराए जाने पर अनेक महत्व के ग्रंथ प्रकाश में आ सकेंगे।

सुधाकर पांडेय
प्रधान मंत्री,
नागरीप्रचारिणी सभा, काशी

---o---

विषयनिर्देश

क्रमसंख्या	विषय	पृष्ठसंख्या
१.	ज्यौतिष	२–१५९
२.	तंत्रशास्त्र	१६०–३१६
३.	दर्शन	३१६–४६२
४.	धर्मशास्त्र	४६२–५४७
५.	नीति उपदेश	५४८–५६४
६.	पुराणेतिहास	५६४–५६९

हस्तलिखित

संस्कृत-ग्रंथ-सूची

(पृ० ६६५ से आगे)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
ज्योतिष						
४६०	१११५	बालविवेक			दे० का०	दे०
४६१	७२६०	बालविवेकिनी			दे० का०	दे०
४६२	६८४६	बीजगणित	भास्कराचार्य		दे० का०	दे०
४६३	३९५३	बीजगणित	भास्कराचार्य		दे० का०	दे०
४६४	६१३५*	बीजगणितकुट्टकविवरण	ब्रह्मगुप्त		दे० का०	दे०
४६५	६६१४	वृद्धपाराशरी			दे० का०	दे०
४६६	२५२	बृहज्जातक	वराहमिहिराचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·३ × ११·८ सें० मी०	५ (१–५)	८	३५	पू०	प्राचीन १६१७	शुभ सम्वत्सरा ।। १६१७ शके ।।१७८२।। समय श्रावण मासे कृष्ण पक्षे अमावस्या बुधवासरे लिखित्यां सम जगेश्वर ··· इति श्री बालविवेकनि समाप्ति ।।
२२ × ९·३ सें० मी०	१३ (१–१३)	९	२७	पू०	प्राचीन सं०१८४८	इति श्री बालविवेकिनी ग्रंथ समाप्ताः सुभ वो भूयात् सम्वत् १८४८ ।। साके १७१३ लिषित बैजनाथ द्विवेद···
२४·५ × ११·२ सें० मी०	४७ (१–४७)	१०	४४	पू०	प्राचीन	इति श्री भास्कराचार्य विरचिते सिद्धांतशिरोमणौ बीज गणिताध्यायो द्वितीयः समाप्तः ।।
२३·९ × १०·२ सें० मी०	१४	१२	३६	अपू०	प्राचीन सं०१८९९	इति श्री भास्कराचार्य विरचितं बीजगणितं समाप्तं शुभमस्तु श्रीरस्तु ।। सवत् १८९९ शोक १७६४ मासात्तमेमासे पौषेमासे शुक्ल पक्षे १ प्रतिपद्रवौ का पुस्तक लिखित श्री चतुर्वेदी ठाकुर रामेण आत्म पाठार्थं परार्थं वा शुभं भूपात् ।।
२५·८ × १०·९ सें० मी०	२२ (१–२२)	१३	४६	पू०	शके १५३१	इति श्री ब्रह्मगुप्त विरचिते ब्रह्मसिद्धांते बीजगणित कुट्टक विवरणं समाप्तं ।। श्री रस्तु ।। पाठकयोशुभमस्तु ।। शके १५३१ सौम्यनाम संवत्सरे ।
२९·३ × १२·३ सें० मी०	३५ (१–३५)	९	३१	पू०	सं०१९३५	इति श्री वृद्ध पाराशरीये चतुर्विशोऽध्यायः ।।४।। श्री सम्वत् १९३५ मिती ज्येष्ठकृष्न सप्तम्यागुरुवासरे ।।
२९·४ × ११·७ सें० मी०	४० (१–४०)	८	३७	पू०	प्राचीन सं०१९१९	इत्यावंतिकाचार्य श्री वराहमिहिराचार्य कृतौबृहज्जातके उपसंहाराध्यायः··· श्री गुरवे नमः श्री सूर्यायनमः श्री भगवदंत्य नमः श्री शिवायनमः ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४९७	३३८९	बृहज्जातक	वराहमिहिर		दे० का०	दे०
७९८	७३५६	बृहज्जातक	वराहमिहिर		दे० का०	दे०
४९९	३४०२	बृहज्जातक (सटीक)	वराहमिहिर		दे० का०	दे०
५००	५७४५	बृहज्जातक	वराहमिहिर		दे० का०	दे०
५०१	१७०३	बृहज्जातक	वराहमिहिराचार्य		दे० का०	दे०
५०२	३८५५	बृहज्जातक	वराहमिहिराचार्य		दे० का०	दे०
५०३	३८१४	बृहज्जातक	वराहमिहिर		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·५ × ११ सें० मी०	३९ (१–३९)	१०	३४	पू०	सं०१८८५	इति श्री मदर्वंतिकाचार्य्य वराहमिहिर विरचिते वृहज्जातके उपसंहाराध्याय: संवत् १८८५ शाके १७५० मासे माघे कृष्णपक्षे तिथौ षष्ठ्या ६ चंद्रवासरे ···
२४·२ × ११·६ सें० मी०	५६ (१–५६)	८	२८	पू०	प्राचीन सं०१८६७	इति श्री वराहमिहराचार्यं विरचिते बृहज्जातके संपूर्णमस्तु ।। अथ शुभ संवत्सरेस्मिन् श्री नृपति विक्रमादित्य राज्ये सं०१८६७ शाके १७३२ वर्षे वैसाख शुक्ल १० चंद्र वासरे ।। लिखित मनरुपव्यास स्वात्मार्थं शुभंभवतु ।।
३१·५ × १४·३ सें० मी०	१०४ (१–१०४)	१४	५२	पू०	सं०१८१३	इति श्री बृहज्जातक वि ···ये द्रेष्काणाध्याय: २५ माघ सुदि नवम्यां९ शुक्रवासरान्वितायां सं० १८१३ ···
२६ × ११·१ सें० मी०	४३ (१–४३)	९	३१	पू०	प्राचीन सं०१९०७	इति श्री वृहज्जातके वराहमिहर कृतौ-उपसंहाराध्यायोनाम सप्तविंशतम: × सं०१९०७ शाके १७७ श्रीरामचंद्राय नमोनम: ।।
२२ × १४·५ सें० मी०	१८ (१-५,९-२१)	६	३०	अपू०	प्राचीन	इति श्री बृहज्जातके नाम संयोगाध्यायो द्वादश: ।। १२ ।।
३२ × १२·५ सें० मी०	४२ (१–४२)	७	४८	पू०	सं०१९०९	इति श्री बृहज्जातके वराहमिहराचार्य्य विरचिते शुभंभवतुमांगल्यंददातु ।। ॐ तत्सत् । उमाशिवो जयति ।। संवत् १९०९ वैशाख शुक्ला ९ वुधदिने लिखतंपचौली महतावराय ·· ··
२६ × ११ सें० मी०	८ (१–८)	१२	४५	अपू०	प्राचीन	इति श्री वराहमिहिर रचिते बृहज्जातके आयुर्दाध्याय: सप्तम: ।।७।। (पत्रसंख्या १२) × ×

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५०४	३८१८	बृहज्जातक	वराहमिहिर		दे० का०	दे०
५०५	४८०४	बृहज्जातक	वराहमिहिर		दे० का०	दे०
५०६	४८०५	बृहज्जातक	वराहमिहिर		दे० का०	दे०
५०७	२९८८	बृहज्जातक	वराहमिहिर		दे० का०	दे०
५०८	५०१६	बृहज्जातक	वराहमिहिर		दे० का०	दे०
५०९	५०१९	बृहज्जातक	वराहमिहिर		दे० का०	दे०
५१०	५०२५	बृहज्जातक	महीधर		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६·५ × ११ सें० मी०	३० (५–३४)	३०	३९	अपू०	शाके सं० १८९८	इति श्री आवंतिकाचार्य्य श्री वराह मिहर विरचिते बृहज्जातकोपसंहाराध्यायः शाके १८९८ श्रावरन वदि ८ सोमे लिखे ···॥
२६·८ × ११·६ सें० मी०	२० (१–२०)	८	३७	अपू०	प्राचीन	इति श्री वाराहामहिरविरचिते बृहज्जातके ष्टवर्गाध्यायः नवम ९ ॥ (पत्र सं० १९)
२२·७ × ९·७ सें० मी०	६ (४५–५०)	८	३१	अपू०	प्राचीन	इति श्री वाराहमिहिरकृतौतौ बृहज्जातके उपसंहाराध्यायोनामश्चशिंवशतिमः समाप्तः ॥२८॥ शुभं ॥
२४·३ × १० सें० मी०	६	८	३१	अपू०	प्राचीन	
२९·३ × ११·५ सें० मी०	२५ (२१–४५)	८	३४	अपू०	सं० १९१०	इति श्रीमदवन्तिकाचार्यं वराहमिहिर विरचिते बृहज्जातके उपसंहाराध्यायः शंम्वत १९१० मासानाममसोत्तममासे वैसषशुक्ल १५ श्रीराम ॥
२३·५ × १०·३ सें० मी०	२२ (१–२२)	७	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री वाराहमिहिर विरचिते बृहज्जातके दशापाकाध्यायोऽष्टमः८ (पत्रसंख्या २२) ॥
३३·८ × ११·७ सें० मी०	५	१६	८३	अपू०	प्राचीन	इति श्री महीधर कृते बृहजातक विवरणे आयुर्हीयाध्यायः सप्तमः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५११	५०४४	बृहज्जातक	वराहमिहिर		दे० का०	दे०
५१२	७००७	बृहज्जातक	वराहमिहिर		दे० का०	दे०
५१३	५४२५	बृहज्जातक	वराहमिहिर		दे० का०	दे०
५१४	५५८८	बृहज्जातक	वराहमिहिर		दे० का०	दे०
५१५	५८८४	बृहज्जातक	वराहमिहिर		दे० का०	दे०
५१६	१८१४	बृहज्जातक	वराहमिहिर		दे० का०	दे०
५१७	४४७८	बृहज्जातक	वराहमिहिर		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३२·५ × १२·३ सें० मी०	१८ (१–१८)	१२	५५	अपू०	प्राचीन	इति श्री वराहमिहराचार्य कृते बृहज्जातके उपसंहारा ध्यायः षड्विशतिमः।
२५·८ × ६·६ सें० मी०	३८ (१–३८)	६	३५	अपू०	प्राचीन सं० १८८४	इति श्री वराहमिहर कृतौ बृहज्जातके उपसंगृहाध्ययायः २६ सं० १८८४ पौषकृष्णनवम्यां बुधे लिखितं पाठक ॥
२३ × ९·८ सें० मी०	५ (१–५)	१०	३५	अपू०	प्राचीन	इति श्री वराह मिहिर विरचिते बृहज्जातके प्रथमोध्यायः (पत्र सं० ३)॥
२६·४ × ११·४ सें० मी०	६	६	४३	अपू०	प्राचीन	इति श्री आचार्य वराहमिहर कृतौ बृहज्जातके निषेकाध्यायश्चतुर्थः ॥
२४ × १०·५ सें० मी०	२६ (१–२६)	८	३०	अपू०	प्राचीन	इत्यावन्तिकाचार्य वराहमिहिर कृतौ बृहज्जातके ग्रह योनि भेदाध्यायो, द्वितीयः ॥ (पृ०७)
२३ × १०·६ सें० मी०	६८ (१–६८)	८	२५	अपू०	प्राचीन सं० १८८३	इति श्री वराहराचार्य कृते बृहज्जातके उपसंहा ध्यायः सप्तविंशतिमः २७ सं० १८८३ शुभमस्तु, कल्याणमस्तु ॥
२७·७ × १२ सें० मी०	२४ (२–२५)	११	४६	अपू०	प्राचीन	इति श्री आवंतिकाचार्य वराहमिहर विरचिते बृहज्जातके उपसंहाराध्यायो षड्विशतिकः × ×

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५१८	४६६८	बृहज्जातक	वराहमिहिर		दे० का०	दे०
५१९	४१३४	बृहज्जातक	वराहमिहिर		दे० का०	दे०
५२०	१२०२	बृहज्जातक	वराहमिहिर	महीधर	दे० का०	दे०
५२१	६३२	बृहज्जातक	वराहमिहिर		दे० का०	दे०
५२२	३३९०	बृहज्जातक टीका		महीधर	दे० का०	दे०
५२३	२७६६	बृहज्जातक		भट्टोत्पल	दे० का०	दे०
५२४	५०११	बृहज्जातक टिप्पणी		महीधर	दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·६ × १२·७ सें० मी०	२५ (१५-३१, ३४-३६, ४२-४३, ४५)	१०	३०	अपू०	प्राचीन सं० १८८०	इति श्री वाराहमिहर कृतौ बृहज्जातकेऽध्योपः सग्रहानामषड्विशति तमोऽध्यायः …संवत् १८८० शाके १७४५ पौषसुदि चतुर्थी सोमवासरे कों लिषितमिदं पुस्तकं… ॥
२१·६ × १०·५ सें० मी०	४७	६	२४	अपू०	प्राचीन	इति श्री बृहज्जातके नष्टजातकोऽध्यायो नाम षट्विशतितमोऽध्यायः (पत्रस० ४३)
३१·× १२ सें० मी०	५८	१६	४४	अपू०	प्राचीन	इति श्री महीधकृते बृहज्जातक विवरणो उपसंहाराध्यायः ‥ सं० १८८४ ॥
२४ × १०·४ सें० मी०	४० (४-१३, १५-२०, २४, २६-४६)	६	३१	अपू०	प्राचीन	
२४ × १३ सें० मी०	८० (१-३, ८-४६)	१४	३८	अपू०	सं० १८८५	इति श्री महीदास कृते बृहज्जातक विवरणे उपसंहाराध्यायः षड्विशः २६ सं० १८८५ शाके १७५० शुभमस्तु शुभंभूयात् ॥
३१ × ११·१ सें० मी०	६	११	४५	अपू०	प्राचीन	
२३·६ × १२·६ सें० मी०	४ (५-२१, ४७-४८)	१५	३७	अपू०	प्राचीन	इति श्री महीधर कृते जातक विवरणे राज योगाध्यायः ॥ (पत्र सख्या ४८)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है
१	२	३	४	५	६
५२५	५०४३	बृहज्जातकटीका		महीधर	दे० का०
५२६	६६५१	बृहज्जातकटीका (केरली संग्रह)			दे० का०
५२७	६६३०	बृहज्जातकटीका (केरली संग्रह)			दे० का०
५२८	४४२२	बृहज्जातकटीका			दे० का०
५२९	१३२०	बृहज्जातकटीका		महीधर	दे० का०
५३०	३०५३	बृहज्जातकटीका			दे० का०
५३१	६२९९	बृहज्जातक विवृति		भट्टोत्पल	दे० का०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
३४·४ × १२·२ सें० मी०	५ (१,३-६)	१४	६५	अपू०	प्राचीन	इति महीधर कृते बृहज्जातक विवरणे-निषेकाध्यायः × × × ॥
२४·८ × ११·५ सें० मी०	३१ (१–३१)	६	३४	पू०	प्राचीन सं०१६५८	बृहज्जातक टीका केरली संग्रहः समाप्तः संवत् १६५८ शके १८२३ चैत्र शुक्ल गुरौ तद्दिनेआरभ्य च चैत्र शुक्ल ११ शनौ तद्दिने समापितम् लेखक हस्तेन-लिखापितम् ॥
१६·७ × ६·६ सें० मी०	३१ (१–३१)	६	३४	पू०	प्राचीन	बृहज्जातक टीका केरल संग्रहः समाप्तः ॥
३१·७ × १५·७ सें० मी०	५४ (१–५४)	१६	५०	अपू०	प्राचीन	
३२·८ × ११·६ सें० मी०	१	१५	६१	अपू०	प्राचीन	
३०·१ × ११·७ सें० मी०	५६	१०	४१	अपू०	प्राचीन	
२४·६ × १०·५ सें० मी०	१२२ (१–१२२)	११	४३	पू०	प्राचीन	इति श्री भट्टोत्पल विरचितायां बृहज्जातक विवृतौ दशांतर्दशाध्यायोऽष्टमः ॥८॥ (पत्रसं०–१२१)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५३२	३६११	बृहज्जातक विवृति	भट्टोत्पल		दे० वा०	दे०
५३३	६३३३	बृहत् वाराही संहिता (पूर्वार्द्ध) (सटीक) (बुधजनमनोरमा टीका)	भट्टोत्पल	गोकुलनाथ	दे० का०	दे०
५३४	४३१४	बृहत्संहिता			दे० का०	दे०
५३५	२३०६	बृहस्पति कांड			दे० का०	दे०
५३६	४७०६	बृहस्पति मत			दे० का०	दे०
५३७	६६२२	ब्रह्मसिद्धांत (शाकल्य संहिता)			दे० का०	दे०
५३८	७६०	भट्ट चिंतामणिया	गंगाभट्ट		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४.३ × ११ सें० मी०	१९ (२२२–२४०)	१०	३९	अपू०	प्राचीन	इनि श्री भट्टोत्पल विरचितायां बृहज्जातक विब्रज्यागायोगा: पंचदश: १५॥
२४·८ × ११·२ सें० मी०	४९ (१–४९)	१४	५४	पू०	प्राचीन	इति श्री ज्योतिरलंकारगुरुदैवज्ञ गोकुलनाथ विरचितायां वुधजनमनोरमायांवृहत्संहिता व्याख्यायां पुष्यस्नानाध्याय: षट् चत्वारिंश: ॥४६॥ समाप्तं पूर्वार्द्धम् शुभमस्तु······
२६·५ × ११ सें० मी०	७०(३५–३७, ३९–५३, ५६–८६, १०२–१२१)	११	४६	अपू०	प्राचीन	
१७·२ × ९ सें० मी०	७ (१–७)	९	२९	पू०	सं० १९३४	इति मीनफल समातं इति वृहस्पति कांड समाप्तं···संवत् १९३४ शाकेशाल १७९९ आदित्य वासरे लिषितं······
२३·७ × १७ सें० मी०	११ (१–११)	११	२३	पू०	सं० १८७६	इति व्रहस्पतिमतौ संपूर्णं समापता ॥ जथा प्रत तथा लिष्यतंम्मदोष न दियते ॥ भादौवदि ॥९॥ कौ संवत्–१८७६ लिषतंतहनगा ॥
२६·८ × १२·७ सें० मी०	३९ (१–३९)	१०	३५	पू०	प्राचीन	इति श्री शाकल्य सहितायां द्वितीयप्रश्ने ब्रह्मसिद्धांत षष्टोऽध्यायसमाप्त: समाप्तोऽयं ब्रह्मसिद्धान्त: ॥
२८·५ × १२·६ सें० मी०	१२ (१–११, १४)	१०	४०	अपू०	प्राचीन	इति श्री गंगाभट्ट कृतभट्ट चिंतामणौ अष्टमस्याध्यायस्य चतुर्थ पाद: ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५३९	५७८४	भाग्यभास्करं	भास्करराय		दे० का०	दे०
५४०	६४५५	भार्गवमुहुर्त्त	वररुचि		दे० का०	दे०
५४१	४७६	भावकुतूहल	जीवनाथ दैवज्ञ		दे० का०	दे०
५४२	७१२७ / ३	भावफल आदि (फुटकलपत्र)			मि० का०	दे०
५४३	४९३२	भावस्थानग्रहफल			दे० का०	दे०
५४४	६१८८	भास्वती	शतानंद		दे० का०	दे०
५४५	५०७३	भास्वती			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५.७ × १०.९ सें० मी०	६० (१–६०)	९	३८	पू०	प्राचीन	इति भास्कररायेण कृते सौभाग्यभास्करे ॥ सप्तमे शते × × × ॥
२१ × ९ सें० मी०	६ (१–६)	१४	३२	पू०	प्राचीन	इति वररुचिर्चिविरचितायां भार्गवमुहूर्तं समाप्तं ॥…"इदं पुस्तकं कवीश्वरस्य ॥
२० × ११.९ सें० मी०	१४ (५–८, १५–१६, १९–२४,२७,२८)	११	४५	अपू०	प्राचीन	
१७ × १०.९ सें० मी०	२	१५	१४	अपू०	प्राचीन	इतिभावफल ॥
२६.२ × १०.८ सें० मी०	७ (१–७)	७	३४	पू०	प्राचीन	भावानां द्वादशनां च सर्वेषां फलमादिशेत् । भावस्थानां ग्रहाणां च फलं ते कथितं मया ।
२३.३ × ११.२ सें० मी०	८ (५–१२)	९	३३	अपू०	सं०१७५२	इति श्री भास्वती करणे परिलेखाध्यायः॥ अष्टम् ॥ समाप्तः संवत् १७५२ माघ सुदि ७ जीव वासरे"…।
२२.४ × ११.७ सें० मी०	२ (१, ४)	९	२९	अपू०	प्राचीन	इति प्रसिद्धः सरस्वतीशंकरयोस्तनूजः इति भास्वत्यां परिलेखाधिकारः ॥ संपूर्णं शुभमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५४६	४६६८	भास्वती			मि० का०	दे०
५४७	३७६६	भास्वती	शतानंद		दे० का०	दे०
५४८	६६८३	भास्वती	शतानंद		दे० का०	दे०
५४९	१९११	भास्वती	शतानंद		दे० का०	दे०
५५०	१८८६	भास्वती	शतानंद		दे० का०	दे०
५५१	१७३०	भास्वती	शतानंद		दे० का०	दे०
५५२	६१८६	भास्वती	शतानंद		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४·४ × ११·६ सें० मी०	७ (१–३, ५–८)	११	३४	अपू०	प्राचीन	इति श्री शतानंद विरचिते पंचसिद्धांत सारे भास्वत्यां तृप्तप्रणाधिकारः ··· ······ (पृ० ७)
२३·१ × १०·६ सें० मी०	१४ (१–६, ८–१५)	६	२३	अपू०	सं० १८३६	इति श्री शतानंद विरचितेभास्वती-प्रकरणे परिलेखाधिकारोऽष्टमः ।८।। संवत् १८३६ श्रावन कृष्ण नवम्यां भृगुवासरे ।। समाप्तं ।। ··· ·· ··· लिषितं पं० श्री व्यास छोटे की पुस्तक
२३·३ × ६·७ सें० मी०	३ (६–८)	१०	३१	अपू०	प्राचीन सं० १८१०	इति भास्वत्यां परिलेखनाधिकार.।। समाप्तः ।। शुभं भूयात् संवत् १८१० शाके १६७५ पौषमासे कृष्णपक्षे तिथौ ३० चंद्रवासरे ।। लेखक कनौजिया ।।
३०·१ × १४·२ सें० मी०	२० (१–२०)	१५	३६	पू०	सं० १८८२	इति श्रीसूर्य्यसिद्धांतमीमांसायां-भास्वत्यां शतानंदविरचितायां परिलेषाधिकारोष्टमः ।। संवत् १८८२ वर्षे ज्येष्ट मासे शुक्लपक्षे तिथौ ।। १५ ।। शुभंभूयात् ।।
२८·२ × ११·५ सें० मी०	४ (१–४)	१०	५०	पू०	सं० १६६४	इति श्री सूर्यसिद्धांतमीमांसायांभास्वत्यां शतानंद विरचितायां परिलेखाधिकारः संवत् १६६४ वर्षे कार्त्तिकमासे शुक्ल-पक्षे तिथौ ४ लिषिकृष्णदासेनापठनार्थं ··· ···
२१ × १० सें० मी०	८ (१–८)	११	२३	अपू०	प्राचीन	
२२·८ × ११ सें० मी०	१	११	३२	अपू०	सं० १७६३	इति श्री तानंद विरचिते भस्वती करणे परिले खाध्यायोऽष्टमः ।। ८ ।। सं० १७६३ चैत्र वदि ७ रवौकः ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५५३	७६३६	भास्वती	शतानंद		दे० का०	दे०
५५४	७६०३	भास्वती	शतानंद		दे० का०	दे०
५५५	७७६७	भास्वती	शतानंद		दे० का०	दे०
५५६	५३३२/८	भास्वती (चंद्रसूर्य-ग्रहणाधिकार)	शतानंद		दे० का०	दे०
५५७	५३३२/१७	भास्वती (प्रथम अध्याय)	शतानंद		दे० का०	दे०
५५८	१४६	भास्वती-सुबोधिनी	शतानंद	मधुसूदन	दे० का०	दे०
५५९	५६२	भास्वतीसूत्र-टीका (भाषा टीका सहित)		यशोधर मिश्र	दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०·६ × ९·८ सें० मी०	७ (२–८)	५	१३	अपू०	प्राचीन	इति सतानंद विरचितायांभास्वत्यां ॥ पंच सिद्धांत्यां पंचतारा ध्रुवाधिकारो द्वितियोध्याय: ॥ ··· (पत्र सं० ६)
२९·४ × ९.७ सें० मी०	५ (१–५)	९	३१	अपू०	प्राचीन	
२७·१ × १३·८ सें० मी०	६ (२–७)	१०	२५	अपू०	प्राचीन	इति सिद्धान्त भास्वत्यांतिथ्याधिकार अथभौमादिग्रहमध्यमाधिकार: × (पत्र सं० ४)
२१·६ × १४·६ सें० मी०	४ (९–१२)	१४	२२	पू०	प्राचीन	इति श्री शतानंद विरचितायां भास्वत्यां चंद्र सूर्यग्रहणाधिकार: समाप्त: ॥···
१३·७ × ११·५ सें० मी०	१३/२	१३	२४	पू०	प्राचीन	इति शतानंद विरचिते भास्वती करने तिथि ध्रुवाधिकार: प्रथमोध्याय:
२२·३ × ९·८ सें० मी०	१६ (२–११, १३–१८)	८	२८	अपू०	प्राचीन	
२०·४ × १२·३ सें० मी०	३३ (१–८,१६–३०)	११	२८	अपू०	प्राचीन	इति श्री मिश्र यशोधर विरचितायां भास्वती भाषाटीकायांत्रिप्रश्नाधिकार: (पृ० २५)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५६०	६६३	भास्वत्युदाहरणम् (सूर्यग्रहणाधिकार)	शतानंद		दे० का०	दे०
५६१	६८१८	भुवनदीपक	पद्मप्रभ		दे० का०	दे०
८६२	१३३६	भुवनदीपक	पद्मसूरि		दे० का०	दे०
५६३	४२३४	भुवनदीपक	पद्माकर		दे० का०	दे०
५६४	३०८३	भुवनदीपक	पद्मप्रभ सूरि		दे० का०	दे०
५६५	१५६	भुवनदीपक	पद्मप्रभ सूरि		दे० का०	दे०
५६६	४१४	भुवनदीपक	प्रद्मप्रभसूरि		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३१·५ × १५ सें० मी०	१०	१६	५१	पू०	प्राचीन	इति श्री शतानंद विरचितायां पंचसिद्धांतमते भास्वती करणे सूर्यग्रहणाधिकारः समाप्तम् ॥
२४·६ × १०·४ सें० मी०	२१ (१–२१)	५	३३	पू०	प्राचीन	इति श्री भुवनदीपकां नाम ज्योतिः शास्त्रं समाप्त ॥
३२·२ × १२·५ सें० मी०	१२ (१–१२)	९	४२	पू०	सं० १९०९	इति श्रीपद्मसूरि विरचितं भुवनदीपक समाप्तम् ॥ संवत् १९०९ वैशाख शुक्ला ११ शुक्रवारे लिखितं पचौलि महतावराय पठनार्थं देवीसहायस्य श्रीरस्तु मंगल्यं ददातु ॥
२४ × १२·३ सें० मी०	१७ (१–१७)	८	२७	पू०	सं० १९०३	इति पद्मकर विरचितं भुवनदीपकाख्यं· संपूर्णं संवत् १९०३ माघमासे कृष्ण पक्षे द्वादश्यां गुरुवासरे इदं पुस्तक लिख्यतं गुलाव विद्यार्थी चंदपणा मध्ये सुभमस्तु ॥
२०·५ × ७·३ सें० मी०	७	१४	३८	पू०	सं० १८८७	इति श्री पद्मप्रभु शूरि विरचिते भुवनदीपकं समाप्तं, संवत् १८८७ पौष वदि ५ शनौकः मुकाम इंगौली परगनो हयदराबाद को मल्लिनाथस्येदं पुस्तकं उचहरा नगर वाशिनः ॥
२९·५ × १२·१ सें० मी०	२७	१२	४८	पू०	प्राचीन	इति श्री भुवनदीपकं समाप्तम् ॥शुभं॥
२३ × ९·६ सें० मी०	२३ (१,२–११, १३–२३)	११	२६	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५६७	२५३२ / १७	भुवनदीपक			दे० का०	दे०
५६८	६३२८	भुवनदीपक (हिंदी टीका)	पद्मप्रभसूरि		दे० का०	दे०
५६९	४०३०	भृगुष्कलं जातक			मि० का०	दे०
५७०	७१७	भृगुसंहिता	भृगु मुनि		दे० का०	दे०
५७१	३१०	भृगुसंहिता			दे० का०	दे०
५७२	३४२	भृगुसंहिता			दे० का०	दे०
५७३	३६८	भृगुसंहिता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१३·७ × ११·५ सें० मी०	७१/२	१७	३४	पू०	सं० १९२४	इति भुवनदीपक शमाप्तः ॥ शुभमस्तु शंवत् १९२४
२०·२ × ९ सें० मी०	३१ (१–३१)	९	२८	अपू०	प्राचीन	......अथ भवनदीपक लिष्यते ॥ ...
२० × ७·७ सें० मी०	३ (१–३)	६	४०	पू०	प्राचीन	इति हिल्लाज मते भृगुष्कलं जातकं ॥
२९·८ × १७·५ सें० मी०	१९३	१३	२७	अपू०	प्राचीन	इति श्री भृगु संहितायां सावनयोगं मिथुनलग्न समाप्तम् ।
३४·५ × १८·२ सें० मी०	१७ (१–१७)	१२	३८	पू०	प्राचीन	इति श्री भृगुसंहितायां कर्क कुंडल्यैक भावगत फलं संपूर्णं ।
३·८ × १६ सें० मी०	११ (२३–३३)	११	४३	अपू०	प्राचीन	
२७ × ११·७ सें० मी०	२	१०	४०	अपू०	प्राचीन	
(सं० सू०२–४)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५७४	६६३९	भृगुसंहिता (मेष, मिथुन, कर्क, वृष)			दे० का०	दे०
५७५	२४४७	मंत्रमुक्तावली			दे० का०	दे०
५७६	३२४५	मंत्रमुक्तावली			दे० का०	दे०
५७७	१२४१	मकरंद कारिका	श्रीतम		दे० का०	दे०
५७८	१२४२	मकरंद कारिका	रघुवीर		दे० का०	दे०
५७९	६८३९	मकरंद विवरण	दिवाकर		दे० का०	दे०
५८०	१२४०	मकरंद विवरण	दिवाकर दैवज्ञ		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३१·८ × १६·६ सें० मी०	६२१ (मे०—२००, मि०—२२०, क०—२४३ वृ०— २२३ + २६)	१६	४२	अपू०	प्राचीन	
२१ × १०·५ सें० मी०	४ (१—४)	१०	२१	अपू०	प्राचीन	
२४·५ × ११ सें० मी०	२६	५	२०	पू०	सं०१८६०	इति श्री मंत्रमुक्तावलीसमाप्ता ॥ शुभं भूयात् ॥ सं० १८॥६० लिखितम् ॥
२३·८ × १० सें० मी०	७ (१—७)	११	२६	पू०	प्राचीन	इतिमकरन्द्र कारिका श्रीतमकृता समाप्ताः ॥ शुभमस्तु ॥
२३ × १० सें० मी०	२	१३	४२	अपू०	प्राचीन	इतिश्रीदैवज्ञविठ्ठल दीक्षितात्मज श्रीरघुवीर विरचितं मकरन्द कारिकायाम ··· ···नीरदः समाप्तः ॥
३३·२ × १०·६ सें० मी०	५ (१—५)	१२	६८	पू०	प्राचीन सं०१६२५	इति श्रीसकलगणक सार्वभौम कृष्णदैवज्ञ सुतनृसिंहसुतेन दिवाकरेण विरचितं मकरंदविवरणं समाप्तं सं० १६२५ × × × ×
२३ ८ × १० सें० मी०	७ (४—१०)	१२	३६	अपू०	प्राचीन सं०१८३६	इति श्रीसकलगणक सार्वभौमश्रीकृष्णदैवज्ञात्मज नृसिंहस्यसुतेन श्रीदैवज्ञदिवाकरेणविरचित मकरंदविवरणं समाप्तिमगमत् ॥श्रीरस्तु॥ शशिख तुरगचन्द्रैः सम्मितेशाकवर्षे ··· ···संवत् १८३६ ···

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५८१	२६७६	मकरंद विवरण	दिवाकर दैवज्ञ		दे० का०	दे०
५८२	४०६३	मकरंद मारणी (संवत्सराध्याय)	गोपीनाथ		दे० का०	दे०
५८३	२५६३	मकरंदस्योदाहरण			दे० का०	दे०
५८४	५२१७	मकरंदोदाहृति	रघुवीर		दे० का०	दे०
४८५	२४७४	मकरंदोपपत्ति			दे० का०	दे०
५८६	६३१	मध्यमसारिणीचक्राणि			दे० का०	दे०
५८७	२१३६	मयूरचित्रक	नारद		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४·२ × १०·५ सें० मी०	११ (१–११)	१०	४०	पू०	सं०१६०६	इति श्री दिवाकर दैवज्ञविरचितं मकरंद विवरणं संपूर्णम् । शुभमस्तु ।। संवत् १६०६ मार्ग सुदि ८ गुरौ इष्टम १० समाप्तम् ।।
२० × १५ सें० मी०	५२ (१–५२)	१५	३३	पू०	सं०१८१६	इति श्री गोपिनाथ विरचितायां संवत्सराध्याय: संपूर्णम् ।। सं० १८१६ मिति कार्तिग वदि ६ शनि दिने लिषतं ...।।
२३.२ × ६·३ सें० मी०	२६ (१-२,४-३०)	१०	४१	अपू० (कृमिकृतित)	प्राचीन सं०१६२८	इति श्री दिवाकर...समाप्तिमगमत् ।। सवत् ।। १६२८... .. ।।
२१·३ × ६·४ सें० मी०	४ (१–४)	८	२६	पू०	प्राचीन स०१७६५	इति रघुवीर कृता मकरंदोदाहृतिस्समाप्ता ।। ।। शुभमस्तु ।।...सम्वत् १७६५ साके १६३० समय पौष वदि १६ चन्द्र के ता दिन पुस्तकमिदमलेखि त्रिपाठी हरि कृष्णेन ।।
२३·३ × ६·२ सें० मी०	१६	११	३७	अपू०	प्राचीन	
२६·८ × १२·६ सें० मी०	६	×	×	अपू०	प्राचीन	
२६ × १२ सें० मी०	२०	१०	३७	पू०	सं०१६१७	मयूर नारद मुनि विरचितायां मयूर चित्रकं संपूर्णं । संवत् १६१७... ...

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५८८	३९९१/२	मरुतज्ञान			दे० का०	दे०
५८९	११८/२	महागम प्रश्न	विघ्नराज		दे० का०	दे०
५९०	२०६७	महादशाफलम्			दे० का०	दे०
५९१	३८२९	मातृकाशकुन प्रश्न			दे० का०	दे०
५९२	६९०२	माधवीय कालनिर्णय			दे० का०	दे०
५९३	६४७६	माधवीयकाल निर्णय			दे० का०	दे०
५९४	४०४३	मास सारिणी	मुरलीधर द्विज		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५·३ × ११·१ सें० मी०	४ (१, ६–८)	६	१७	अपू०	प्राचीन सं०१९३४	इति श्री वृद्धगार्गिणा व्यासमुनेनप्रोक्तं मरुत ज्ञानं संपूर्णम् ॥ सं० १९३४ ॥
२२ × ९ सें० मी०	१५	७	२६	अपू०	प्राचीन	
२२·२ × १०·३ सें० मी०	३४ (२१-३५, ३१-३८, ४०-४४, ४६–५७)	६	३६	अपू०	प्राचीन	
२३·३ × १०·३ सें० मी०	३ (१–३)	१०	३९	पू०	प्राचीन	इति श्री मातृका सकुनंप्रष्ण संपूर्णम् ।
२७ × ११·५ सें० मी०	६ (१–६)	९	४१	अपू०	प्राचीन	इति माधवीये संज्ञाध्ययः प्रथमः ... ... (पृ०–५)
२१·७ × १०·१ सें० मी०	१० (१–१०)	१०	३८	पू०	प्राचीन	इति माधवीय कालनिर्णय विवरणं ॥ शुभमस्तु ॥ × ×
३१·३ × १५ सें० मी०	३ (१–३)			पू०	सं०१८९३	संवत् १८९३ वैशाषमासे कृष्णाष्टम्यां ८ लिखितं विरचितमिदं मुरलीधर द्विजेन तत्माससारणी निरंतर संपूर्णम् ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५९५	८०८	*मुक्तापाशकेवलि			दे० का०	दे०
५९६	४६३१	मुग्धबोध (हिन्दी टीका)		विप्रदास	दे० का०	दे०
५९७	६८७४	मुद्दशाफल			दे० का०	दे०
५९८	१४५७	मुष्टिका ज्ञान			दे० का०	दे०
५९९	४७०१	मुष्टिचिंताप्रश्न (मुष्टिज्ञान)	वंदिकेश्वर		दे० का०	दे०
६००	५५४४	मुहूर्त्त कल्पद्रुम	विट्ठल दीक्षित		दे० का०	दे०
६०१	२६१६	मुहुर्त कल्पद्रुम	वृहद्दीक्षित		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०·५ × १२·५ सें० मी०	११ (१–११)	१०	२८	पू०	प्राचीन	···अधुनातवमहदुद्वेगोवर्ततेतस्यशांत्यर्थं-देवताभक्ति पूजां कुरुतेनसर्वकार्य्यं संतोषोभविष्यति १६ इति श्री।
२५·३ × ८·६ सें० मी०	१७	९	४५	अपू०	प्राचीन	इति श्री शुक्रनिचिकरात्मज विप्रदास विरचितायां जातके मुग्धबोध टीकायां आधान परिच्छेदो नाम प्रथमोध्यायः···· ··· ··· ॥
९·९ × ६·९ सें० मी०	३	७	१५	पू०	प्राचीन	इति मुद्दशा फलानि ॥
१६·३ × १०·२ सें० मी०	६ (१–६)	९	२०	पू०	प्राचीन	इति शिव विरचितायां ब्रह्मचर्य्यं तत्व सारलग्नप्रदम् मुष्टिका ज्ञान समाप्तम् ॥ शुभमस्तु ॥
२२·३ × ९·२ सें० मी०	१० (१–१०)	७	२७	पू०	सं०१८६०	इति श्री वंदिकेश्वर विरचितां मुष्टि ज्ञानं समाप्तं ॥ (पृ० ४)
२५·३ × १३·१ सें० मी०	३९	१३	४३	अपू०	प्राचीन	इति श्रीविद्वद्विट्ठलविरचितायां स्वकृत मुहूर्त्त कल्पद्रुम टीकायां ··· ··· ॥
२४ × ११ सें० मी०	३३ (१–३३)	११	५६	पू०	सं०१८२०	इतिबृहद्दीक्षित विरचितो मुहूर्तं कल्पद्रुम समाप्तमागात् ॥ संवत् १८२० कार्तिक वदि ९ लिखितं कालू चतुर्वेदिना।

(सं० सू०२–५)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६०२	६३०५	मुहुर्त कल्पद्रुग (सटीक)			दे० का०	दे०
६०३	२७४७	मुहूर्त कल्पद्रुम मंजरी (संस्कृत टीका)	विट्ठल दीक्षित		दे० का०	दे०
६०४	३५७०	मुहूर्तगणपति	रावल गणपति		दे० का०	दे०
६०५	१०४८	मुहूर्तगणपति	,,		दे० का०	दे०
६०६	३६३२	मुहूर्तगणपति	,,		दे० का०	दे०
६०७	२८०१/४	मुहूर्तगणपति	,,		दे० का०	दे०
६०८	४७२२	मुहूर्तगणपति	रावल गणपति		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२९·६ × ११·८ सें० मी०	३	९	३७	अपू०	प्राचीन	
२९ × ११·८ सें० मी०	१०५ (१९-३०, ३२-४६, ४६-४९, ५१-७७, ७९-८९, ८९-११८, ११८-१२३)	११	४१	अपू०	प्राचीन	इति विट्ठल दीक्षित विरचितायांस्व कृत मुहूर्त्त कल्पद्रुम टीकायां मंजरी···
३२·७ × १३·७ सें० मी०	२८ (१-२८)	१५	४४	अपू०	प्राचीन	
३३·७ × १७ सें० मी०	६० (१-६०)	१७	४४	पू०	सं० १९१३	इति श्रीमदग्निहोत्रिचातुर्मास्ययाजिसमासादितपुरुषार्थसार्थं दैवज्ञवर्य्यरावलहरिशंकरसूरिसुनु रावल गणपति कृते मुहूर्तगणपतौ ग्रंथालंकारप्रकरणं द्वाविंशति समाप्तं २२ समाप्त मुहूर्तगणपतिग्रंथोयं संवत् १९१३ वैषाख शुक्ल ४··· शुभंभूयात्
२८·१ × १३·२ सें० मी०	८५ (१-५८, ६२-७६, ८५-९४, ९६-९७)	१२	३५	अपू०	प्राचीन	इति श्री मद्दैवज्ञ रावल हरिशंकर सूनु-गणपति कृते मुहूर्त गणपतौ शवत्सरादिप्रकरणं प्रथमं ।। (पृ० ३)
१७·५ × १३·५ सें० मी०	८	१२	१९	अपू०	प्राचीन	
१७·३ × ११·४ सें० मी०	५१ (१-४५, ४५-५०)	१०	२२	पू०	प्राचीन	श्री रामदास जनुषो हरिशंकरस्य श्री रावलम्त्य तनयो विनयोपपन्नः । ग्रंथं मुहूर्तं गणपत्यभिधंविधत्ते विद्यानिधिर्गणपतिर्गणितागमज्ञः ··· (पृ ०२)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६०९	४९३९	मुहूर्तचंद्रिका			दे० का०	दे०
६१०	३८८२	मुहूर्तचिंतामणि	राम दैवज्ञ		दे० का०	दे०
६११	३८४९	मुहूर्तचिंतामणि	राम दैवज्ञ		दे० का०	दे०
६१२	४७३१	मुहूर्तचिंतामणि	राम दैवज्ञ		दे० का०	दे०
६१३	४६४३	मुहूर्तचिंतामणि	राम दैवज्ञ		दे० का०	दे०
६१४	४६३०	मुहूर्तचिंतामणि (गृहप्रवेशप्रकरण)	राम दैवज्ञ		दे० का०	दे०
६१५	४६२५	मुहूर्तचिंतामणि	राम दैवज्ञ		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७·३ × ११·३ सें० मी०	३ (१–३)	१३	२४	अपू०	प्राचीन	
२८·५ × १०·८ सें० मी०	६	८	४२	अपू०	प्राचीन	
३० × ११ सें० मी०	३४ (१-२६, २८, ३४, ३९-४४)	७	५२	अपू०	प्राचीन	इति श्री दैवज्ञानंतसुत दैवज्ञ राम विरचिते मुहूर्त्त चिंतामणौ यात्रा प्रकारणम् नवमं ॥९॥ (पृ० ६९)
२८·५ × १०·८ सें० मी०	३३ (१-२, २३–५३)	८	३५	अपू०	खंडित	इति मुहूर्त्त चिंतामणौ राजाभिषेक प्रकरणं ••• (पृ० ४४) × × ×
३१ × १३·२ सें० मी०	२९ (१–२९)	१२	५१	पू०	सं०१९०३	इति श्री दैवज्ञानंत सुतदैवज्ञ रामविरचिते मुहूर्त्त चिंतामणौ गृहप्रवेश प्रकरणं समाप्तच ••• ••• श्री शंवत १९०३ पौषमासे कृष्णपक्षे दसम्या १० ।: श्रीराम जी ॥
२६·५ × ११·४ सें० मी०	४४ (१-१२, १२, १३-२६, २६-४२)	९	३२	पू०	सं०१९०४	इति श्री मुहूर्त चिंतामणौ गृह प्रवेश प्रकरणम् ॥ समाप्तोयं मुहूर्त्त चिंतामणिः ॥ संवत् १९०४ ॥
२७·८ × १४·५ सें० मी०	४९ (१-४४, ४६-५०)	९	३३	अपू०	सं०१८९२	इति श्री दैवज्ञानंत सुतदैवज्ञरामविरचिते मुहूर्तचिंतामणौगृहप्रवेश प्रकरणं समाप्त शुभमस्तु मंगलंददातु ॥ संवत् १८९२ शाके १७५७ मासोत्तममासे श्रावणेकृष्णे शुभतिथौ पंचम्यांभौमवासरे लिषितं मिश्र जियराजपठनार्थं ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६१६	४६२२	मुहूर्तचिंतामणि	राम दैवज्ञ		दे० का०	दे०
६१७	४६१८	मुहूर्तचिंतामणि (गृहप्रवेशप्रकरण)	राम दैवज्ञ		दे० का०	दे०
६१८	४६०१	मुहूर्तचिंतामणि	राम दैवज्ञ		दे० का०	दे०
६१९	४५५५	मुहूर्तचिंतामणि	राम दैवज्ञ		दे० का०	दे
६२०	५३६७	मुहूर्तचिंतामणि	राम दैवज्ञ		दे० का०	दे०
६२१	४९००	मुहूर्तचिंतामणि	राम दैवज्ञ	राम दैवज्ञ	दे० का०	दे०
६२२	४९४२	मुहूर्तचिंतामणि	राम दैवज्ञ		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
२४·१ × ११·५ सें० मी०	३८ (१-२, २, ३-१५,१७,२३, २७-३०,३४, ३६,४१-४२, ४८,५१,५६-६३,६५-६६)	८	२७	अपू०	प्राचीन	इति श्री दैवज्ञानंत सुत दैवज्ञ राम विरचिते मुहूर्त चिंतामणौ शुभाशुभ प्रकरणं प्रथमं ॥ (पृ० ८)
३२·१ × १२·१ सें० मी०	४८ (१–४८)	८	४४	पू०	प्राचीन सं०१८५६	इति श्री मदैवज्ञानन्त सुत दैवज्ञराम विरचिते मुहूर्त्त चिंतामणौ शुभाशुभ प्रकरणं गृह प्रवेश प्रकरणं संपूर्णम् ॥ सम्मत् १८५६ ॥ साके १७२४ ॥ समये फाल्गुन मासे कृष्ण पक्षे पंचम्यां शुक्रवासरे । विलेषितं रघुवर × × ॥
३०·८ × ११·८ सें० मी०	२० (१–२०)	१२	३८	अपू०	प्राचीन	
१५·३ × १२·६ सें० मी०	२२ (११,२३–३४,३६–३९, ४१–४५)	९	१७	अपू०	प्राचीन	इति श्री दैवज्ञानंतसुत दैवज्ञ राम विरचिते मुहूर्त चिन्तामणौ संक्रांति प्रकरणं-तृतीयम् × × × (पृ० ३१)
३१ × ११·७ सें० मी०	६ (२–७)	८	५३	अपू०	प्राचीन	इति श्री दैवज्ञानंतसुत दैवज्ञराम विरचिते मुहूर्त्त चिंतामणौ शुभ प्रकरणम प्रथम् ॥ (पृ० ६)
२५·८ × ११ सें० मी०	३८ (१–३८)	१०	३४	अपू०	प्राचीन	इति श्री दैवज्ञानंत् सुत दैवज्ञ राम विरचिते मुहूर्त्तचिन्तामणौ सपरिकर संस्कार प्रकरणम् ॥५॥ (पृ०२२)
३२·८ × १५ सें० मी०	३३ (१७–४०, ४८,५०–५७)	११	४३	अपू०	प्राचीन	इति श्री दैवज्ञानंतसुतदैवज्ञरामविरचितायां स्वकृत मुहूर्त्तचितामणिटीकाया प्रमिताक्षरायं सक्रान्तिप्रकरणं शुभं ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६२३	६४५२	मुहूर्तचिंतामणि	राम दैवज्ञ		दे॰ का॰	दे॰
६२४	६७६४	मुहूर्तचिंतामणि	राम दैवज्ञ		दे॰ का॰	दे॰
६२५	६९९४	मुहूर्तचिंतामणि	राम दैवज्ञ		दे॰ का॰	दे॰
६२६	६९९९	मुहूर्तचिंतामणि	राम दैवज्ञ		दे॰ का॰	दे॰
६२७	७१३६	मुहूर्तचिंतामणि	राम दैवज्ञ		दे॰ का॰	दे॰
६२८	५४३१	मुहूर्तचिंतामणि	रामदैवज्ञ		दे॰ का॰	दे॰
६२९	२२१३	मुहूर्तचिंतामणि (शुभाशुभ प्रकरण)	राम दैवज्ञ	श्रीराम दैवज्ञ	दे॰ का॰	दे॰

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१·५ × ९·३ सें० मी०	३२ (१–३२)	१२	३५	पू०	प्राचीन श०१६०४	इति श्रीदैवज्ञानंत सुत दैवज्ञ राम विरचिते मुहूर्तचिंतामणौ गृह प्रवेश प्रकरणं समाप्तं ॥ ···श्री शके १६०४ दुंदुभि संवत्सरे पौष वदि प्रतिपदायां ··
२२·७ × ११·९ सें० मी०	४५ (१–४५)	११	३२	पू०	प्राचीन सं०१९०७	इति श्री दैवज्ञ नंत सुत दैवग्य राम विरचिते मुहूर्त चितामनि गृह प्रवेस प्रकरणंहुती वैसाषसुदि ५ बुधे का संवत् १९०७ केसाल श्री गौतमवाल-गोविंद निमित्यार्थंलिषितं × ॥
२३ × १४·९ सें० मी०	२२	१४	३६	अपू०	प्राचीन श० १५२२	इति श्री दैवज्ञ राम विरचिते मुहूर्त चिंतामणौ गृह प्रवेश प्रकरणं समाप्तम् × × ×
२३·२ × १४·४ सें० मी०	१६	१३	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री दैवज्ञ राम विरचिते मुहूर्त चिंतामणौ शुभाशुभ प्रकरणम् ॥ (पृ० ६ और १२)
२५·१ × १०·५ सें० मी०	४८ (१–३५, ३५–४७)	९	३८	पू०	प्राचीन	इति श्री दैवज्ञानंत सुतदैवज्ञरामविरचितेमुहूर्तचिंतामणौ गृह प्रवेश प्रकरणं ॥ इतिमुहूर्त चिंतामणिः समाप्तिर्भूयात् ॥
२३·४ × १०·८ सें० मी०	७ (३-८,१०)	१०	३३	अपू०	प्राचीन	इति श्री दैवज्ञानंत सुत दैवज्ञ राम विरचिते मुहूर्त चिंतामणौ सुभाऽसुभ प्रकरणं समाप्तं ··· (पृ०–६)
३१·७ × ११·८ सें० मी०	२२	११	४६	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६३०	२२१२	मुहूर्तचिंतामणि (संक्रांति प्रकरण)	राम दैवज्ञ	श्रीराम दैवज्ञ	दे० का०	दे०
६३१	२३०५	मुहूर्तचिंतामणि (नक्षत्रप्रकरण)	राम दैवज्ञ	राम दैवज्ञ	दे० का०	दे०
६३२	५५२३	मुहूर्तचिंतामणि	राम दैवज्ञ		दे० का०	दे०
६३३	२१२८	मुहूर्तचिंतामणि (गृहनिर्माण प्रकरण) (संस्कृत टीका)	राम दैवज्ञ	राम दैवज्ञ	दे० का०	दे०
६३४	२१२७	मुहूर्तचिंतामणि (संस्कृत टीका)		,,	दे० का०	दे०
६३५	२१२६	मुहूर्तचिंतामणि (गोचर प्रकरण) (संस्कृत टीका)	रामदैवज्ञ	,,	दे० का०	दे०
६३६	२१२१	मुहूर्तचिंतामणि (विवाह प्रकरण) (संस्कृत टीका)	रामदैवज्ञ	,,	दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३१·७ × ११·८ सें० मी०	८	१२	४४	पू०	प्राचीन	
३१·७ × ११·६ सें० मी०	३९ (१–३९)	११	४४	अपू०	प्राचीन	इति श्रीदैवज्ञानंत सुत दैवज्ञराम विरचितायां स्वकृत मुहूर्तचिंतामणिटीकायां प्रमिताक्षरायां नक्षत्र प्रकरणम् ।।
२६·३ × ११·३ सें० मी०	२६ (१–२६)	११	३४	अपू०	प्राचीन	इति श्री दैवज्ञानंतदैवज्ञरामविरचिते मुहूर्तचिन्तामणौ विवाहवधू प्रवेश द्विरागमनानिप्रकरणम् × ।। (पृ० २६)
३१·८ × १२ सें० मी०	८ (१–८)	११	४९	पू०	प्राचीन	इति श्री दैवज्ञानंतसुतदैवज्ञरामविरचितायां स्वकृतमुहूर्तचिंतामणिटीकायां प्रमिताक्षण्यांगृहप्रवेश प्रकरणं समाप्तिमगात् ।
३१·७ × ११·७ सें० मी०	२२ (१–२२)	११	४७	पू०	प्राचीन	इति श्री दैवज्ञ सुत दैवज्ञ राम विरचितायां स्वकृत मुहूर्तचितामणि प्रमिताक्षरायां संस्कार समाप्तं
३१·६ × ११·७ सें० मी०	१० (१–१०)	१०	४८	पू०	प्राचीन	इति श्री दैवज्ञ राम विरचितायां स्वकृत मुहूर्तचिंतामणि टीकायां गोचर प्रकरणं संपूर्णं ।।
३१·७ × ११·८ सें० मी०	४१ (१-५,१–३६)	१०	४३	अपू०	प्राचीन सं० १८५८	इति श्री दैवज्ञानंत सुत दैवज्ञ रामविचितायां स्वकृत मुहूर्तचिंतामणिटीकायां प्रमिताक्षरायां विवाहप्रकरणं सपूर्णं ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६३७	२१२०	मुहूर्तचिंतामणि (विवाहपद्धति)	काशीनाथ		दे० का०	दे०
६३८	२०४७	मुहूर्तचिंतामणि (संस्कृत टीका)	राम दैवज्ञ	राम दैवज्ञ	दे० का०	दे०
६३९	५८०२	मुहूर्तचिंतामणि	राम दैवज्ञ		दे० का०	दे०
६४०	५७४७	मुहूर्तचिंतामणि	राम दैवज्ञ		दे० का०	दे०
६४१	६१०८	मुहूर्तचिंतामणि	राम दैवज्ञ		दे० का०	दे०
६४२	४३२२	मुहूर्तचिंतामणि (संस्कृत टीका)	दैवज्ञ राम	राम दैवज्ञ	दे० का०	दे०
६४३	१८६५	मुहूर्त चिंतामणि (संस्कृत टीका)	राम दैवज्ञ	,,	दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३१·५ × ११·८ सें० मी०	३५ (१–३५)	११	४५	अपू०	प्राचीन	
३३·४ × १५·४ सें० मी०	५	१४	५८	अपू०	प्राचीन	
२५·१ × १०·२ सें० मी०	२४ (२–४, १२–३८)	८	२८	अपू०	प्राचीन	इति श्री दैवज्ञानंत सुत दैवज्ञ रामविरचिते मुहूर्त्त चिंतामणौ संस्कार प्रकारणम् ॥ ... ... (पृ० ३४)
२७·१ × ११·८ सें० मी०	२३ (१–२३)	६	२२	अपू०	प्राचीन	इति श्री दैवज्ञानंत सुत दैवज्ञाराम-विरचिते मुहूर्त्त चिंतामणौ शुभाशुभ प्रकरणम् प्रथमम् ॥ अथ नक्षत्र प्रकरणम् ॥ (पृ० ११)
२५·७ × १०·८ सें० मी०	२२	७	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री दैवज्ञानंतसुत दैवज्ञरामविरचिते मुहूर्त्त चिंतामणौ राजाभिषेक प्रकरणम् ॥ (पृ० ५१)
३२ × १२·५ सें० मी०	२६ (१–२६)	१०	४०	पू०	सं०१९०७	इति श्री दैवज्ञानंतसुत दैवज्ञराम विरचितायां स्वकृत मुहूर्त्त चिंतामणि टीकायां प्रमिताक्षरायां गृहप्रवेशप्रकरणं समाप्तम् संवत् १९०७ तत्र वर्षे आषाढ़ मासे कृष्णपक्षे शुभ तिथौ द्वादश्यां शनि वासरे लिखतं ॥
३१·३ × १४ सें० मी०	५८ (१-३१ ३४-६०)	१४	४२	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६४४	१८६२	मुहूर्तचिंतामणि	राम दैवज्ञ		दे० का०	दे०
६४५	१८३२	मुहूर्तचिंतामणि	रामदैवज्ञ		दे० का०	दे०
६४६	१७६५	मुहूर्तचिंतामणि (संस्कृत टीका)			दे० का०	दे०
६४७	१७०६	मुहूर्तचिंतामणि	राम दैवज्ञ		दे० का०	दे०
६४८	२८८६	मुहूर्तचिंतामणि	राम दैवज्ञ		दे० का०	दे०
६४९	२८५५	मुहूर्तचिंतामणि	राम दैवज्ञ		दे० का०	दे०
६५०	४१४३	मुहूर्तचिंतामणि (गृहप्रवेश प्रकरण)	राम दैवज्ञ		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३१ × ११·५ सें० मी०	१२१	१४	४३	अपू०	सं०१८५७	इति श्री दैवज्ञानंत सुत दैवज्ञ रामे विरचितायां स्वकृत मुहुर्तचिंतामणि गृह प्रवेश प्रकरणं समाप्तम् ॥ ··· ··· ··· संवत् १८५७ शाके१७२३ श्रावणेमासि पक्ष के तिथौसप्तम्याम् बुधवारे शुभमस्तु मंगलंभूयात् ···
२४ × ६·८ सें० मी०	४८ (१–४८)	६	३३	अपू०	प्राचीन	
२४·५ × १० सें० मी०	७ (७७–८३)	१२	४८	अपू०	प्राचीन श०१६४५	इति श्री मुहूर्तचिंतामणि टीकायां प्रमिताक्षरायां संक्रांति प्रकरणं ॥ ग्रंथ संख्या-२०४ ॥ शके १६४५ वर्षे शोभकृत-नामसंवत्सरे माघशुद्ध द्वितीयायां श्रीपतिकलंवकारेत्युपनाम्नाज्योतिर्विदेन लिखितं ॥
३२ × ११ सें० मी०	१०	१२	६६	पू०	प्राचीन	इति मुहूर्त चिंता मणौ ॥
२३ × १०·७ सें० मी०	६ (११,१३-१५, १७,१९)	६	२३	अपू०	प्राचीन	
२३·८ × ११ सें० मी०	३१ (२,३१–४०, ४२-४४,४६-५५,५७,५९, ६१–६४)	८	२९	अपू०	प्राचीन सं०१८४२	इति श्री दैवज्ञानंत सुत दैवज्ञरामविरचिते मुहूर्तचिंतामणौ गृहप्रवेशप्रकरणम् समाप्तम्···संवत् १८४२ शाके १७०७ कार्तिक के मासि शुक्ल पक्ष पक्षे······॥
१९·२ × ११४ सें० मी०	५३ (१–५३)	१०	३१	पू०	प्राचीन	इति श्री दैवज्ञानंतसुतदैवज्ञरामविरचिते-मुहूर्त्त चिंतामणौ गृहप्रवेश प्रकरणम् ॥ समाप्तोयं ग्रंथः ॥५॥ शुभं भवत् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६५१	२७१३	मुहूर्तचिंतामणि	राम दैवज्ञ		दे० का०	दे०
६५२	२७३२	मुहूर्तचिंतामणि			दे० का०	दे०
६५३	३४८२	मुहूर्तचितामणि	राम दैवज्ञ		दे० का०	दे०
६५४	३५८०	मुहूर्तचिंतामणि टीका	राम दैवज्ञ	राम दैवज्ञ	दे० का०	दे०
६५५	१२७६	मुहूर्तचिंतामणि	राम दैवज्ञ		दे० का०	दे०
६५६	१२७५	मुहूर्तचिंतामणि	राम दैवज्ञ		दे० का०	दे०
६५७	१२१२	मुहूर्तचिंमामणि	राम दैवज्ञ		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२१.८ × ११.३ सें० मी०	४४ (१-४४)	१२	४१	पू०	सं० १८६७	इति श्री दैवज्ञानंतसुत दैवज्ञराम विरचिते मुहूर्तं चिंतामणौगृहप्रवेश प्रकरणम् ॥ समाप्तोयं ॥ शुभमस्तु संवत् १८६७ आश्विने मासि शनिवासरे ...शिवायनमः ॥
२१.८ × १३.६ सें० मी०	२०	१६	३५	अपू०	प्राचीन	
२८.४ × १३.३ सें० मी०	४२ (१–१६, २३–४५)	१३	४६	अपू०	सं० १८५२	इति श्री दैवज्ञानंसुत दैवज्ञ राम विरचिते मुहूर्त्त चिंतामणौ गृहप्रवेश प्रकरणं समाप्तं संवत् १८५२ रामायनमः॥
३२.७ × ४२.२ सें० मी०	१५० (१–६२, ६४–६६, ६६-१५१)	१४	४७	अपू०	प्राचीन सं० १८४६	इति श्री दैवज्ञानंत सुत दैवज्ञ राम विरचितायां स्वकृत मुहूर्त चिंतामणि टीकायां प्रमिताक्षरायां गृहप्रवेश प्रकरणं समाप्तंम् शुभमस्तु मंगलं ददातु संवत् १८४६ शाके १७१४ ... ...॥
२५ × १०.५ सें० मी०	१६ (३–१८)	६	२६	अपू०	प्राचीन	
२५.३ × ११.५ सें० मी०	३६ (५-८, १०, १३-२२, २४-२६, २६, ३०-३५, ३७-४४)	८	२४	अपू०	प्राचीन	
३१ × १५ सें० मी०	६ (८–१०, १२, १५–१८, २०)	१०	२८	अपू०	प्राचीन	

(सं० सू० २-७)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है
१	२	३	४	५	६
६५८	११५४	मुहूर्तचिंतामणि	राम दैवज्ञ		दे० का०
६५९	४१२१	मुहूर्तचिंतामणि टीका			दे० का०
६६०	२४५९	मुहूर्तचिंतामणि (सटीक)	राम दैवज्ञ	राम दैवज्ञ	दे० का०
६६१	२४५३	मुहूर्तचिंतामणि	राम दैवज्ञ		दे० का०
६६२	२६०२	मुहुर्तचिंतामणि (गृहप्रवेश प्रकरण)			दे० का०
६६३	६५२	मुहूर्तचिंतामणि	राम दैवज्ञ		दे० का०
६६४	४०७	मुहूर्तचिंतामणि (संस्कृतटीका)	राम दैवज्ञ		दे० का०
६६५	६१६१	मुहूर्तचिंतामणि (सटीक)	राम दैवज्ञ		दे० का०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·७ × ११·२ सें० मी०	२२ (३९–६०)	१०	८	अपू०	सं० १८६८ शाके १७३३	इति श्री दैवग्यानंतर सुत दैवज्ञ रामविरचिते मूहुर्त चिंतामनौ ग्रह प्रवेस प्रकरणं समाप्तोयं ग्रंथ शुभमस्तु ।। संवत् १८६८ शाके १७३३ माह सुदि पंचमी ५ शनिवासर कहःत दिन पुस्तक समाप्त ।। मंगल ददात् ।।
३०·५ × १६ सें० मी०	१२ (३२, ८३–८७, १०४, १२२-१२५)	१६	४९	अपू०	प्राचीन	
३०·४ × १४·६ सें० मी०	२५०	१६	४७	अपू०	प्राचीन	इतिश्री दैवज्ञानंत सुत दैवज्ञराम विरचितायां स्वकृत मुहूर्त चिंतामणि-टीकायां प्रमिताक्षरायां गृह प्रवेश प्रकरणं ··· ···दिने पुस्तक समाप्तं ।।
२४·४ × ११ सें० मी०	५६ (१–५६)	८	३८	अपू०	प्राचीन सं० १९१५	इति श्री दैवज्ञानंत सुत दैवज्ञ राम विरचिते मुहुर्त चिंतामणी गृह प्रवेश प्रकरणम् संवत १९१५ भाद्रपद ।।
२६ × १०·५ सें० मी०	३	६	३५	पू०	सं०१९३८	इति श्रीमुहूर्तचिंतामणौ गृह-प्रवेश प्रकरणं समाप्तम् संवत्-१९३८ मिती कातिग कृष्ण ३ चंद्र दिने वनवारि लाल शर्मार्णं कितो यम शुभम् ।।
२६·५ × ९·५ सें० मी०	६५ (१–६५)	८	३२	अपू०	प्राचीन	
३६·६ × १४·३ सें० मी०	२९ (८–११,१५-२०,२२-३३, ४०, ४६,५१-५५	१४	५१	अपू०	प्राचीन	
३५ × १३·८ सें० मी०	१७४ (१–१७४)	१२	५३	पू०	सं० १९१६	इति श्री दैवज्ञानंत सुत दैवज्ञराम विरचितायां स्वकृत मुहूर्त चिंतामणिटीकायांप्रमिताक्षरायां गृह-प्रवेश प्रकरणं समाप्ति श्री संम्वत् ।। १९ ।। १६ ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६६६	७६०२	मुहूर्तचिंतामणि	राम दैवज्ञ		दे० का०	दे०
६६७	७२८३	मुहूर्तचिंतामणि	राम दैवज्ञ		दे० का०	दे०
६६८	७५६४	मुहूर्तचिंतामणि (शुभाशुभप्रकरण)	राम दैवज्ञ		दे० का०	दे०
६६९	७३३१	मुहूर्तचूडामणि	शिव दैवज्ञ		दे० का०	दे०
६७०	३५१३	मुहूर्ततत्त्व	केशव दैवज्ञ		दे०का०	दे०
६७१	१५७२	मुहूर्ततत्त्व	केशव दैवज्ञ		दे० का०	दे०
६७२	५१५३	मुहूर्तदर्पण			दे० का०	दे०
६७३	२५२८	मुहूर्तदर्पण			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·८ × १०·२ सें० मी०	२६ (१–३, ३-४, ४–१९, २१–२८, ३०–३३)	११	४७	अपू०	प्राचीन	इति श्री दैवज्ञानंतसुतदैवज्ञरामविरचिते मुहूर्तचिंतामणौयात्राप्रकरणम् × × × × (पृ० ३३)
२३·९ × १०·५ सें० मी०	१५ (५–१६, १९–२१)	१०	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री दैवज्ञानंतसुतदैवज्ञरामविरचित-मुहूर्त चिंतामणौ संक्राति प्रकरणं समाप्तम् + + (पृ० ११)
२५·४ × ११·४ सें० मी	७१ (१–७१)	७	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री दैवज्ञावंत सुत दैवज्ञ रामविरचिते मुहूर्तचिंतामणौशुभाशुभ प्रकरणं समाप्तम् ।।
२८·१ × ११·९ सें० मी०	४० (१–४०)	१५	४३	पू०	प्राचीन	इतिकृष्णदैवज्ञात्मज शिवदैवज्ञविरचितो मुहूर्तचूड़ामणि समाप्तिमगत् + + ।।
२३·५ × १० सें० मी०	४ (१–४)	८	३१	अपू०	प्राचीन	
२४·२ × ८·६ सें० मी०	१७ (१३-२९)	८	४०	अपू०	प्राचीन	इतिश्री सकलागमाचार्य वर्य श्रीकमलाकर सुत श्री केशव दैवज्ञ विरचितं मुहूर्ततत्व संपूर्णं ।। ।।·········· ।। शुभमस्तु ।।
३२ × १०·२ सें० मी०	४८ (१–३२, (३६-५१)	७	३८	अपू०	प्राचीन	इति मुहूर्त दर्पणे वस्त्रपरिधान प्रकरणं त्रयोदशः + + + + ।। (पृ०४)
२४·८ × ९·८ सें० मी०	२८	९	३५	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की सख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ जिस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६७४	३५२६	मुहूर्तदर्पण	लालमणि		दे० का०	दे०
६७५	४४१६	मुहूर्तदर्पण			दे० का०	दे०
६७६	६०३८	मुहूर्तदीपक			दे० का०	दे०
६७७	४१५२	मुहूर्तदीपक	रामसेवक त्रिपाठी		दे० का०	दे०
६७८	१५८	मुहूर्तप्रश्न			दे० का०	दे०
६७९	४०४६	मुहूर्तभूषण	रामसेवक त्रिपाठी		दे० का०	दे०
६८०	३२५	मुहूर्तमंजरी	पं० यदुनंदन		दे० का०	दे०
६८१	४४८४	मुहूर्तमंजरी	पं० यदुनंदन		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४·१ × १३·१ सें० मी०	९ (१–८,१०)	१०	३०	अपू०	प्राचीन	
३०·८ × १५ सें० मी०	१२	१७	३९	अपू०	प्राचीन	
२२·२ × ९·८ सें० मी०	९ (१–९)	९	३१	अपू०	प्राचीन	
२३·७ × १०·७ सें० मी०	३ (३, ४, १५)	१०	३०	अपू०	सं०१८१९	इति श्रीमत्त्रिपाठि देवीदत्तात्मज त्रिवेदि राम सेवक कृतिमुंहूर्त्त दीपकः समाप्तः ॥ इति त्रिपाठि दयारामोलिखत् संवत्सर १८१९ शाके १६८४... ......
३० × १२·५ सें० मी०	३ (१–३)	६	२९	अपू०	प्राचीन (जीर्ण)	
२२·५ × १०·३ सें० मी०	१८ (१–१८)	११	३९	पू०	सं०१८८८	इति श्रीमत्त्रिपाठी (राम) देवी दत्तात्मज राम सेवककृत्तिमुहूर्त्त भूषणोनाम ग्रथः समाप्तः ॥ गजागाश्वचंन्द्रो १७७८ ... ... अथशुभ संवत १८८८के साल समयेनामशुभक्त ॥
२९ × १२·६ सें० मी०	८ (१–८)	१०	३८	पू०	प्राचीन सं०१९१२	इति श्री मत्पंडित यदुनंदनन विरचितायां मुहूर्त मंजर्य्यंस··· ··· ··· संवत् १९१२ फाल्गुणमासे शुक्ल पक्षे शुभतिथौ पंचम्यां ५ भौमवासरे के शुभंभूयात् विहारिलालेन लिषितं ॥
२४·६ × ९·२ सें० मी०	८ (४–१२)	८	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री मत्पंडित यदुनंदनविरचितायां मुहूर्त मंजर्य्यांसकलव्यवहारमुहूर्त विचारो चतुर्थो गुच्छः संवत् १९२२ + + ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है
१	२	३	४	५	६
६८२	२६७९/२	मुहूर्तमंजरी (सूर्यग्रहणाधिकार)	पं० यदुनंदन		दे० का०
६८३	६०५७	मुहूर्तमार्तंड (टीका सहित)			दे० का०
६८४	१३४४	मुहूर्तमार्तंड			दे० का०
६८५	२०२४	मुहूर्तमार्तंड (संस्कृत टीका)			दे० का०
६८६	६६२०	मुहूर्तमार्तंड	पं० नारायण		दे० का०
६८७	३६०१	मुहूर्तमार्तंड	पं० नारायण		दे० का०
६८८	६८१६	मुहूर्तमार्तंड (मार्तंडवल्लभा टीका)			दे० का०
६८९	३३८६	मुहूर्तमार्तंड (सटीक)	पं० नारायण		दे० का०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७·८ × १५·५ सें० मी०	२१३/४ (१–२१३/४)	१३	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री यदुनंदनं विरचितायां मुहूर्त मंजर्य्यां समाप्तम् ॥
२६ × १०·९ सें० मी०	४६ (१–४६)	९	३९	अपू०	प्राचीन	इति स्वकृत मुहूर्त्तमार्तंडटीकायां गर्भाधानादि संस्कार प्रकरणं ॥ (पृ० ३२)
२३·७ × १०·२ सें० मी०	१७ (१–१७)	८	३७	अपू०	प्राचीन	
३०·८ × १४·४ सें० मी०	२१	१५	३८	अपू०	प्राचीन	
१८·८ × ७·४ सें० मी०	४२ (१–४२)	७	२७	पू०	प्राचीन (शाके–१५८३)	इति श्री मदनंताख्यचातुमास्ययाजिपुत्र नारायण विरचिते मुहूर्तं मार्त्तंडोयं समाप्तः ॥ शके १५८३ प्लवनाम संवत्सरे उत्तरायणे आषाढ शुद्धतृतीया बुधवासरे + + + ॥
२६·८ × ११·१ सें० मी०	२५ (१–२५)	७	३८	पू०	प्राचीन	इति मुहूर्त मार्तंडः समाप्त :
२३·८ × ११·४ सें० मी०	१८९ (१–१८९)	९	३२	पू०	सं०१८४२	इति मुहूर्तमार्त्तंड टीकायांमार्त्तंड वल्लभायां व्याख्या समाप्तं ॥ शुभमस्तु श्री कल्यानरस्तु लिषतंब्राह्मण भवानी राम श्रावण मासे नवम्यां शनिवासरे संवत् १८४२ ॥ श्री मंगलं ददाति ॥
२४·५ × १० सें० मी०	८१ (४७–१२६, १२८)	१०	४०	अपू०	सं०१८४२	इति श्रीमदनंताख्यचातुर्मास्ययातिपुत्र नारायणविविते मुहूर्तं मार्तंडे स्वकृत टीका मार्तंड वल्लभा समाप्ता सं० १८४२मी: चैत्रशुक्लपक्षे पोथी समाप्त श्री राम ··· ··· ···
(सं० सू० २–८)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६६०	२६२६	मुहूर्तमार्तंड (टीका)	नारायण पंडित		दे० का०	दे०
६६१	११५६	मुहूर्तमार्तंड	,,		दे० का०	दे०
६६२	३५८३	मुहूर्तमार्तंड (व्याख्या)	,,		दे० का०	दे०
६६३	२७३७	मुहूर्तमार्तंड (टीका)	,,		दे० का०	दे०
६६४	२८०७	मुहूर्तमार्तंड	नारायण		दे० का०	दे०
६६५	५६२०	मुहूर्तमार्तंड	नारायण		दे० का०	दे०
६६६	३६६६	मुहूर्तमुक्तावली			दे० का०	दे०
६६७	१५५६	मुहूर्तमुक्तावली			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
३३ × १२ सें० मी०	७५ (१–५६,६१–७५, ७७)	१०	४०	अपू०	प्राचीन	
२३ २ × ११ सें० मी०	१३ (१,१०–१२ १४–२२)	६	२६	अपू०	प्राचीन	
३३·५ × १५·३ सें० मी०	५४ (१–५४)	१६	५१	पू०	प्राचीन सं०१८५६	इति स्वकृत मुहूर्तमार्तंडभवल्लभा १५ समाप्ता श्री विक्रमार्कराज्यातीत् सं० १८५६ श्री शालिवाहनराज्यातीत् शाके १७२४ काश्यां …………
२५ × १०·३ सें० मी०	१५१	८	४१	अपू०	प्राचीन	
२४.३ × १०·३ सें० मी०	१६ (२–२०)	८	२६	अपू०	प्राचीन	
२७·५ × ११·२ सें० मी०	१६ (१–१६)	६	३३	अपू०	प्राचीन	इति श्री मदनंताख्यचातुर्मासयाजि पुत्र नारायण विरचिते मुहुर्त मार्तण्डेत्याज्य प्रकरणम् ॥१॥ (पृ०सं० २)
२५·५ × १०·४ सें० मी०	६ (२–७)	६	३१	अपू०	प्राचीन	
३०·२ × १४·३ सें० मी०	५ (१–५)	१३	३३	पू०	प्राचीन	इति श्री मुहूर्त मुक्तावली संपूर्णं शुभं भूयात ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६९८	५५६९	मुहूर्तमालिका			दे० का०	दे०
६९९	४२४६	मुहूर्त (लग्न) विचार			दे० का०	दे०
७००	२५३२ / १७	मुहूर्तविचार	शिव		दे० का०	दे०
७०१	२७१५	मुहूर्त्तसर्वस्व	रघुवीर दीक्षित		दे० का०	दे०
७०२	६७२१	मुहूर्तसर्वस्व (मिश्रप्रकरण)	रघुवीर दीक्षित		दे० का०	दे०
७०३	६४५७	मुहूर्तसर्वस्व	रघुवीर दीक्षित		मि० का०	दे०
७०४	४९९२	मुहूर्तसर्वस्व	रघुवीर दीक्षित		दे० का०	दे०
७०५	५३६१	मुहूर्तसर्वस्व	रघुवीर दीक्षित		दे० का	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
१८·१ × ११·३ सें० मी०	६ (१–६)	१७	३५	पू०	प्राचीन	शिवेन लिखितं युक्तं तछिवा लिखितं शुभ ॥ तत्रस्थं सार मुधृत्य प्रोक्ता मूहूर्तं मालिका ॥ ··· ··· ···
१६·६ × १२·५ सें० मी०	१८ (१०,२६–४१,५७)	१३	१७	अपू०	प्राचीन	
१३·७ × ११·५ सें० मी०	४१⁄२	११	२१	पू०	प्राचीन	इति सिवालिखितं शंपूर्णं ॥
२३ × ६·३ सें० मी०	२६ (१–२६)	७	३३	पू०	प्राचीन सं०१८२६	इति श्री मद्विट्ठल दीक्षितात्मज रघुबीर दीक्षित विरचिते मुहूर्त्त सर्वस्वे मिश्र प्रकरणम्। सं० १८२६ शके १६६४ कार्त्तिकेमासे कृष्णपक्षे प्रतिपत् सोमवासरे लिषितं इदं भोदूरामस्येदं ... ...
२२ × १०·३ सें० मी०	२२ (१–२२)	१०	३०	पू०	प्राचीन सं०१८३१	श्री इति श्रीमद्विठलदीक्षितात्मज रघुवीरज्योतिर्विद्विरचिते मुहूर्त्तसर्वस्वेश्रीमिश्रप्रकरणं संपूर्णं समाप्तं ॥ शुभमस्तु ॥ संवत् १८३१ शके १६६६ अधिकवैशाखकृ ११ ···
१६·८ × ६·४ सें० मी०	२२ (१–२२)	६	२६	पू०	शके१७६४	श्री शालीवाहनशके१७६४ प्रचक्रे मुहूर्तं सर्वस्वं रघुवीरो विमुक्तये ॥ ३३६ ॥ इति श्रीमद्विठलदीक्षितात्मज रघुवीरज्यतिर्विरचिते मुहूर्तसर्वस्वे मीश्र प्रकरणंगोत्रनिर्णय समाप्तं ॥
२४·१ × १०·४ सें० मी०	१७ (१–१७)	११	३२	पू०	प्राचीन सं०१८२८	इति श्रीरघुवीरदीक्षितविरचिते मुहूर्तसर्वस्वे ··· ··· वसु द्वि गज सोमाख्यं विक्रमाब्दे ···
३१ × ११·५ सें० मी०	१७ (१–७)	८	४०	पू०	सं०१८८०	इति श्री रघवीर दीक्षितार्चाजः वीरचिते मूहूर्त सर्वश्वे मिश्र प्रकरणं समाप्तं शुभमस्तुः संवत् १८८० के ॥ शाके १७४५ ॥ श्री शालिवाहने ।।······

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७०६	२६२२	मुहूर्तसारसंग्रह			दे० का०	दे०
७०७	३१८६	मेघमाला ?			दे० का०	दे०
७०८	५१६१	यात्राविचार			दे० का०	दे०
७०९	६६४०	यात्राविचार	बादरायण		दे० का०	दे०
७१०	७५२८	यात्राशकुनविचार			दे० का०	दे०
७११	६०८२	युद्धकौशल			दे० का०	दे०
७१२	७६६०	युद्धचिंतामणि	रामसेवक शर्मा		दे० का०	दे०
७१३	२४७०	युद्धजयोत्सव	गंगाराम		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६·१ × १० सें० मी०	७	८	१९	अपू०	प्राचीन	
२७·८ × ११·१ सें० मी०	३२ (१–३२)	११	४२	पू०	प्राचीन	इति श्री उमामहेश्वर संवादे मेघमालायां समाप्तं ॥
१७·७ × ११·२ सें० मी०	४	११	२१	पू०	प्राचीन	
२७·७ × ११·८ सें० मी०	१	१२	५१	पू०	प्राचीन सं०१९२५	इति बादरायणकृतयात्रा समाप्ता ॥ सं० १९२५ श्रावण व० ९ चंद्रे······
२९·५ × ११·६ सें० मी०	५ (१–२२)	८	३८	अपू०	प्राचीन	
२४·५ × १२ सें० मी०	३ (१–३)	१६	३१	पू०	प्राचीन	इति युद्धकौशलस्य संपूर्णं ॥
२४·४ × ९·५ सें० मी०	७ (१–७)	७	३१	अपू०	प्राचीन	··· लक्ष्मीनारायणं नत्वा रामसेवक शर्म्मणा ॥ युद्धचिन्तामणिर्नामग्रंथोनिर्मीयतेलघु ··· ··· ··· (प्रारंभ)
२४·१ × १०·६ सें० मी०	२० (१–२०)	७	४८	पू०	सं.१८२२	गंगारामकृतेराचारूग्रंथे युद्ध जयोत्सवे ॥ ··· ··· संवत् १८२२ पौषवदि ३ शनौ कहलिखित मिदं कालू चतुर्वेदिनास्वार्थंपरार्थं वा ॥ श्रीकृष्णार्पणम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७१४	६७८	युद्धजयोत्सव	गंगाराम		दे० का०	दे०
७१५	६४६२	* युद्धोपयोगार्थसंग्रह (युद्ध कौशल)	रुद्र		दे० का०	दे०
७१६	६८०६	योगशतक			दे० का०	दे०
७१७	५०६३	योगसार (ग्रहयोगफल)			दे० का०	दे०
७१८	२२७१	ोगावली			दे० का०	दे०
७१९	७२४६	योगावली			दे० का०	दे०
७२०	४३२०	योगिनी अंतंदशाफल			दे० का०	दे०
७२१	६६२८	योगिनीचक्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	न्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·५ × १०·५ सें० मी०	२७ (१–२७)	८	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री गंगा राम कृतं युद्धजयोत्सवं सम्पूर्णम् ॥ ६ ॥
२१ × ९·३ सें० मी०	६ (१–६)	१६	४०	पू०	प्राचीन सं० १६६९	इति श्री रुद्र विरचितायां कौशलं समाप्तमिति ॥ सं० १६६९ शाके १५३४ भाद्रपदवदि ४ गुरौ अश्विन्यामर्गल पुरेऽ लिखत् ॥ शुभंभवतु ॥
२४·१ × १०·५ सें० मी०	१२ (१–१२)	७	३०	पू०	प्राचीन	
२२·८ × १२·९ सें० मी०	९ (१–९)	१०	२८	पू०	सं० १९०७	इति योगसारे ग्रह योगफलम् समाप्तम् ॥ सम्वत १९१२
२१·२ × ८·३ सें० मी०	१३ (१–१३)	८	३०	पू०	प्राचीन	इति योगावलिः समाप्तः ॥
१३·७ × ८·३ सें० मी०	४ (१–४)	९	३२	पू०	प्राचीन सं० १८५१	इति श्री योगावली समाप्तम् ॥सुभमस्तु॥ सम्वत् १८५९ (?)
१४·५ × १० सें० मी०	९ (१–२,४–७, ९–१२)	८	१६	अपू०	प्राचीन	इति समाप्तं ।
१९·७ × ८·४ सें० मी०	९ (१–९)	८	२४	पू०	प्राचीन	इति योगिनिचक्रं ·········॥
(सं० सू० २–९)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७२२	४४२७	योगिनी दशांतर्दशा-फल			दे० का०	दे०
७२३	८८६	योगिनीदशा			दे० का०	दे०
७२४	३३०५	योगिनीदशा			दे० का०	दे०
७२५	२२४७	योगिनीदशा			दे० का०	दे०
७२६	५१३४	योगिनीदशा			दे० का०	दे०
७२७	२७२४	योगिनीदशा			दे० का०	दे०
७२८	१७०६	योगिनीदशा			दे० का०	दे०
७२९	१७२२	योगिनीदशा			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
२७·१ × ११·६ सें० मी०	२ (६–७)	१०	३३	अपू०	सं०१६०६	इति योगिनी दशांतर्दशाफलं समाप्तम् । भाद्रपद शुक्ल ६ रवि संवत १६०६ ॥ श्रीराम शाके १७७३ शन १२५६ साल् :
२७·२ × ११·५ सें० मी०	११ (१–११)	११	४५	पू०	प्राचीन सं०१६४६	इति योगिनिदसाविवरणम् समाप्तम् ॥
२३·२ × १०·६ सें० मी०	८ (१–८)	११	३६	पू०	प्राचीन	इति श्री योगिनीदशाचिंतामणि समाप्त. ॥
२६·३ × १३·८ सें० मी०	५ (१–५)	११	४४	पू०	प्राचीन सं०१८५६	इतियोगिनी दशा समाप्तं । संवत् १८५६ शाके १७२१ श्रावणमासे शुक्लपक्षे शुभतिथौ एकादशी ॥ आदित्यवार यागनीदशा लिखतम् चौहमाल सोभाराम तस्यात्मज गंगाविष्णु श्री मैरार नगरे शुभंभूयात् ॥
२८ × ११ सें० मी०	१० (१–१०)	१०	४५	पू०	प्राचीन	इति रुद्रायामले तंत्रे उमामहेश्वर संवादे योगिनी दशा समाप्ता ॥
१६·५ × १५·५ सें० मी०	१६४	१६	२३	अपू०	प्राचीन	
२३·१ × ११ सें० मी०	६ (७,६-१३)	११	२६	अपू०	प्राचीन	
१६ × ११·६ सें० मी०	६ (१-६)	२०	२१	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७३०	४७२५	योगिनीदशा			दे० का०	दे०
७३१	५०७७	योगिनीदशा			दे० का०	दे०
७३२	५३३२/८	योगिनीदशापद्धति (हिंदी टीका)			दे० का०	दे०
७३३	५३३२/८	योगिनीदशाफल			दे० का०	दे०
७३४	६७१६	योगिनीदशाफल			दे० का०	दे०
७३५	४४६६	रत्नज्योतिष	गंगाराम		दे० का०	दे०
७३६	६०२५	रत्नद्योत	गंगाराम		दे० का०	दे०
७३७	६५४०	रत्नद्योत			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५·३ × ११·१ सें० मी०	१४ (१–७, ९–१५)	११	२२	अपू०	प्राचीन	... अथ योगनी दशा लिख्यते ।:... (प्रारंभ)
२७·८ × १२·४ सें० मी०	९ (१,४,६-१२)	८	२८	अपू०	प्राचीन	
२१·६ × १४·९ सें० मी०	३	१६	२६	पू०	प्राचीन	अथ योगिनी दशा पद्धति लिख्यते ॥
२१ ६ × १५·९ सें० मी०	२	१६	२८	पू०	प्राचीन	इति योगिनी दशा फलं संपूर्णम् ॥ शुभ मस्तु ... ...
२१·६ × ९·९ सें० मी०	४ (१–४)	२०	५०	पू०	प्राचीन सं० १७९८	इति श्री योगिनी दशांतर्दशाफलम् ॥ संवत् १७९८ आश्विन शुदी १० गुरौ।
२८·३ × ११·२ सें० मी०	१५ (१–१५)	९	३०	पू०	प्राचीन सं० १८६७	इति श्री हनुमत्किकर गंगाराम आचार्य विरचितायांरत्नज्योति संपूर्णं शुभमस्तु संवत् १८६७ × × × ×॥
२३·८ × १० सें० मी०	५५ (१–५५)	७	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री मद्विवेद गंगाराम विरचिते रत्न द्योते गोचर प्रकरणं पंचम समाप्तम् संवत ॥ १८८७॥ शाके १७५२॥ आश्वनन शुक्ल ॥ दशम्यां शौम्यवासरान्विते ॥
२४·४ × १० सें० मी०	१४ (१–१४)	९	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री मद्विवेदोगंगारामाविरचितेरत्नद्योगोचर प्रकरणं समाप्तं शुभमस्तु संवत् १८३५ कार्तिक सुदि ११ समौकौ लिषतं श्री रावत अनंतरामसुत...।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है
१	२	३	४	५	६
७३८	२५३२/१७	रत्नद्योत	गंगाराम		दे० का०
७३९	१६	रत्नद्योत			दे० का०
७४०	४५६१	रत्नद्योत	गंगाराम द्विवेदी		दे० का०
७४१	५५१७	रत्नपरीक्षा			दे० का०
७४२	४३२६	रत्नप्रदीप	गणपति		दे० का०
७४३	३२११	रत्नप्रदीपक [भावाध्याय]			दे० का०
७४४	२७२६	रत्नमाला	श्रीपतिभट्ट		दे० का०
७४५	२४४२	रत्नसार	श्रीपति		दे० का०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१३.७ × ११.५ सें० मी०	८० (१–८०)	११	२३	पू०	सं०१९०२	इति श्री श्रीमद्द्विवेद गंगाराम विरचिते रत्नद्योते गोचर प्रकरणं पंचमम् समाप्तं ॥ संवत् १९०२ के साल शाके १७६७ ॥
२१.७ × ११ सें० मी०	११ (१-२,४-१२)	११	२८	अपू०	प्राचीन	
२२.३ × ११.७ सें० मी०	३६ (१–३६)	१०	२६	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमद्द्विवेदगंगारामविरचिते रत्नद्योते गृहप्रकरणम् ॥ (पृ० २८)
१४.६ × ९.७ सें० मी०	८ (१–८)	९	१८	पू०	प्राचीन	इति बृहत्संहितायां रत्नपरीक्षायां मरकत लक्षणोऽध्यायःद्व्यशीतितमः ॥ (पृ०–७)
३० × ११.५ सें० मी०	२४ (१–२४)	९	१८	पू०	सं०१९११	इति श्री गणपति कृते रत्न पदीपके कुष्ट योगाध्यायस्त्रयोविंशतितमः २३ संवत् १९११ मार्गशिरशुक्ला द्वितीया वुध वासरे महतावराय लिखितं देवी सहाय पठनार्थं ॥
२१.५ × ११ सें० मी०	८ (१–८)	११	३२	पू०	सं०१८६५	इति श्री रत्नप्रदीपको भावाध्या संपूर्णं सुभमस्तु मंगल ददात् ॥ लिषतं गिरधारी दुबे संवत १८६५ ॥
२१.५ × १४ सें० मी०	६८	१५	३६	पू०	सं०१८१९	इति श्री महादेव विरचितं श्रीपतिरत्नमालाया विवरणं समाप्तम् ॥ शुभमस्तु ॥ संवत् १८१९ ॥
२४.६ × १०.३ सें० मी०	१४ (१-२,४-१०१३-१७)	९	३२	अपू०	प्राचीन सं०१८३९	इति श्री गोकुल वास्तव्य लक्ष्मी नृसिंह भट्टात्मज श्रीपति कृतेरत्नसारे प्रश्न विशेष कथनं नाम चतुर्थं प्रकरणं समाप्तम् । संवत् १८३९ चैत्र कृष्ण चतुर्थ्यामिंद वासरे समाप्तोयं ग्रंथ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७४६	५१६४	रत्नसार-संग्रह (वालवोधक)	मुंजादित्य		दे० का०	दे०
७४७	३५३६	रत्नसुमणिका	दैवज्ञ हरनाथ		दे० का०	दे०
७४८	७१९६	रमल			दे० का०	दे०
७४९	४६३८	रमल			दे० का०	दे०
७५०	५२५७	रमल			दे० का०	दे०
७५१	४४७३	रमल			दे० का०	दे०
७५२	३५३४	रमल	चिंतामणि दैवज्ञ		दे० का०	दे०
७५३	३०७५	रमल			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और,प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०×७·५ सें० मी०	३६ (२-११,११, १२-१४,१४, १५,१५-१८, २२,२३,२९, ३०,३२-४१, ४३)	५	२१	अपू०	प्राचीन	... ... मुद्धत्य क्रियन वालबोधकम् । मुंजादित्येन विप्रेण शिष्यार्थे सार संग्रहः २ · · ॥ (पृ० २)
१५·७×१०·५ सें० मी०	३६ (२-३७)	९	१६	अपू०	प्राचीन सं०१८१२	इति श्री मदैवज्ञ हर नाथ कृत रत्न सुमणिका संपूर्ण सं० १८१२ चैत्रमासे शुक्ल पक्षे तिथौ ९ शनि वासरे लिषतं तुलाराम ·· ··· ॥
२५·४×९·६ सें० मी०	१० (१-१०)	९	२८	पू०	प्राचीन	साके नवखाद्रिन्दु १७०९ सं० वेदाब्धि नगेंद्र १८४४ मार्गकृष्ण चतुर्दश्यां शनिवासरे लिखितं ठाकुर शर्मणस्वत्मा ॥
१९·८×१२·९ सें० मी०	१४ (१-१४)	१२	२७	पू०	प्राचीन	इति श्रीरमलरत्नानंददायनेशकलानां-संज्ञातंत्र समाप्तम् ॥
२९·८×१५·५ सें० मी०	६ (७-१२)	११	४२	अपू०	प्राचीन	
३०·७×१६·१ सें० मी०	४ (१-४)	१२	४५	अपू०	प्राचीन	
२४·१×११·२ सें० मी०	११ (१-४,१२,१४ १६,२०-२१, ४०)	१०	२६	अपू०	प्राचीन	इति श्री दैवज्ञ चिंतामणिविरचिते रम्लोत्कर्ष वर्ष तंत्रं संपूर्ण ॥ ... ... (पृ० २०)
२४·४×११ सें मी०	३ (५-७)	९	२२	अपू०	प्राचीन	

सं० सू० २-१०

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७५४	४१२०	रमल चिंतन			दे० का०	दे०
७५५	६८८६	रमल चिंतामणि (मिश्रप्रकरण)			दे० का०	दे०
७५६	३६७	रमलचिंतामणि	चिंतामणि		दे० का०	दे०
७५७	४३२६	रमल चिंतामणि			दे० का०	दे०
७५८	४५७१	रमलनवरत्न	परमसुख उपाध्याय		दे० का०	दे०
७५९	३६१४	रमलनवरत्न	परमसुखउपाध्याय		दे० का०	दे०
७६०	४७६	रमलनवरत्न	परसुखोपाध्याय		दे० का०	दे०
७६१	५४०४	रमल प्रश्न (प्रथम, द्वितीय तंत्र)	चिंतामणि		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३०.५ × १६.५ सें० मी०	४ (२–५)			अपू०	प्राचीन	
२२.५ × ९.६ सें० मी०	३२ (१–३२)	११	३५	पू०	प्राचीन	इति रमलचिंतामणौ मिश्र प्रककर्णं समाप्तां ॥ × × (पृ० ३१)
२५.४ × ११.२ सें० मी०	१८ (१–१८)	१३	३८	अपू०	प्राचीन	
२६.५ × ११ सें० मी०	२३ (१-२२,२४)	११	४६	अपू०	सं० १८९०	व्योमांकाष्टेंदु १८९० वर्षेंनृपमुकट विक्रमाप्तशालिवाहिन्ययशाकाच्छरशर नगचंद्रे १७५५ भद्यायनाताप्पशुक्ले तृभिगुरुतुरगधिष्ये पूस्तकं लेखनीयं लक्ष्मण सुत्तनय विदग्धं मुललिदत: द्विजेन: ... ...
२९.२ × ११.५ सें० मी०	३ (१–३)	७	३०	अपू०	प्राचीन	नत्वा श्री रमलाचार्य्यान्पिरमाद्यसुखाभिधैः। उद्धृतं रमलांभोधेः नव रत्नसुशोभनं ॥ (पृ० १)
२७.३ × ११.३ सें० मी०	४३ (२–४४)	१०	३४	अपू०	प्राचीन	इति श्री सनाढ्यकुलावतंशपरमसुखोपाध्याय कृते रम्लनवरत्ने संज्ञारत्नं प्रथमं समाप्तम् ॥ (पृ० ७)
२७.५ × १३.५ सें० मी०	३४ (१-७,९-३५)	८	३०	अपू०	प्राचीन	
२३.६ × ११.५ सें० मी०	२६ १७ (१-६,९-१९) ९ १-७,११-१२	९	३३	अपू०	प्राचीन सं० १८७०	इति श्रीदैवज्ञ ... श्रीमन्महाराजवंदित चरणांवुज शिष्य जनानंद रामेषुस ... सर्वं शास्त्रेष् कृत श्रम श्रीमच्चिंतामणि श्री पंडित वर्यं रचिते ज्योतिः शास्त्रे संज्ञातंत्रे रमल शास्त्रे प्रथम तंत्र संपूर्ण संवत ॥ १८।७० ॥ (पृ० १९)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है
१	२	३	४	५	६
७६२	४१२९	रमल प्रश्न संग्रह			दे० का०
७६३	३७७७	रमल प्रश्न संग्रह			दे० का०
७६४	३५०९	रमलभाष्यम्	रत्नाकर		दे० का०
७६५	४८६	रमलरत्न			दे० का०
७६६	७३८	रमलरत्न			दे० का०
७६७	५०७५	रमल शास्त्र	चिंतामणि		दे० का०
७६८	९७७	रमलशास्त्रम् ४	चिंतामणि		दे० का०
७६९	४५१६	मलशास्त्र	चिंतामणि		दे० का०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४·६ × ११ १ सें० मी०	६ (३०-३४,३९)	९	२६	अपू०	प्राचीन	
२५·६ × १६ सें० मी०	२४	२२	१७	अपू०	प्राचीन	
२६·६ × १३.१ सें० मी०	३ (१–३)	११	३५	अपू०	प्राचीन	
२४ × ११ सें० मी०	६८	१३	३६	पू०	सं०१९३४	इति रमल रत्न समाप्तम, यादृशं पुस्तकंदृष्ट्वा तादृशं लिषतंमया यदि शुधं अशुधंवो मम दोशी न दियते ।।१।। संवत् १९३४ मार्ग शिरक्त पौष कृष्ण ३ तृतीया रवि दिने ।। शुभमस्तु,
२५ × ११·५ सें० मी०	१८ (१०१-११८)	९	४०	अपू०	सं०१९३४	श्रीरमलरत्नवर्तकसकोंपरि विशेष्य ४ विराजमान भूतभविष्यतवर्तमान-प्रश्नज्ञे ग्रंथ संपूर्ण । शुभमस्तु ।। श्रीरामचंद्राय नमः संवत् १९३४ माघ मासे शुक्ले पक्षे दशमी १० भोमवार वुढाणे नगरे तस्य स्थाने तिस्टति मिश्रभिखम सैन ५ स्वयंपठनार्थं ।।
२६·८ × ११·२ से० मी०	२३ (२-६,२३-२४ २६-२८,२८ ३०-४१)	७	२८	अपू०	प्राचीन	इति श्रीदैवज्ञचूडामणिश्रीमन् महाराजवंदितपदावुजशिखशजनानंददापि सर्वविद्याकुशलसर्वसास्त्रेषुक्त श्रीमन्-चिंतामणि पंडितोर्विरचिता ज्योतिःसास्त्रेषुप्रश्न तंत्रे रमलसास्संपूर्णं × (पृ० ३२)
२४ × ९ सें० मी०	४ (१-८,१०-१७ १७–४२)	७	३६	अपू०	प्राचीन सं०१८०४	श्रीमत चिंतामणि पंडित वर्यविरचितायां ज्योतिशास्त्रे ब्रह्म तंत्र रसल शास्त्रं संपूर्णं शुभ लिलेखीहं पुस्तकं अहलादेन स्वार्थ परायेवा सं० १८०४ ।
३२.३ × ३२.६ से० मी०	२० (४–११, २४–२७	१२	४४	अपू०	प्राचीन सं०१८०४	इति श्री दैवज्ञंचूडामणि श्रीमन्महाराज वंदितपदांबुज शिष्यजनानंददायि सर्वविद्याकुशल सर्वशास्त्रेषुकृतश्रम श्री चिंतामणिपडतवर्थ विराचिते ज्यौतिषशास्त्रेप्रश्नतंत्रे रमलशास्त्र समप्तम् सं,० १९०९ जेष्ट कृष्णा८ श्रीमदिने लिख मीश्रमहतावराय···

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७७०	६७२०	रमलसंग्रह	+	+	दे० का०	दे०
७७१	१५०४	रमलसर्वस्व			दे० का०	दे०
७७२	७२२१	रमलसार	श्रीपति	×	दे० का०	दे०
७७३	८४०	रमलसार			दे० का०	दे०
७७४	४१७७	रमलसार	श्रीपति		दे० का०	दे०
७७५	२५४७	रमलोत्कर्षप्रश्नतंत्र	चिंतामणि पंडित		दे० का०	दे०
७७६	६९६३	रसाला			दे० का०	दे०
७७७	६८८८	रसालाभिधासमाविवेक विवृत्ति	गोविंद ज्योतिर्विद		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१×११·२ सें० मी०	२३ (१–२३)	१०	२५	पू०	प्राचीन	इति रमल संग्रह समाप्त···
२२×१३·५ सें० मी०	२९ (१–२, ५–३१)	११	२१	अपू०	प्राचीन	
२२·८×१०·२ सें० मी०	१६ (१–१६)	१०	२८	अपू०	प्राचीन सं०१८३१	इति श्री रमलसारं समाप्तः ॥ श्री रामचंद्रायनमः ॥ सं० १८३१ ।
२८·३×१२·५ सें० मी०	१० १–१०	१३	३९	पू०	प्राचीन	इति रमलसार समाप्तः ॥सं० १८९०॥ मार्ग कृष्ण द्वितीया भौमे ॥पाराग्रामे॥
१७·६×१५.६ सें० मी०	१७ (१–१७)	१७	२४	पू०	प्राचीन सं०१९०४	इति तत्त्वष्टशकले समाप्तं ग्रंथमिदम् शुभं ओंतत्सत् संवत् १९०४ मार्गसिरशुक्ला १५लिखितमिदं ···
२४·४×११.२ सें० मी०	१४ (९–१३,२५-२६,२८,३४, ३३–३८,४० ४३)	१०	२६	अपू०	प्राचीन सं०१८४७	इति श्री मणि चिंतामणिपंडितकृते-रमलोत्कर्षं प्रश्नतंत्र संपूर्णम् शुभमस्तु संवत् १८४७
२३·२×१० सें० मी०	५८ (१–१०,१२-५२,५४-६०)	७	२९	अपू०	प्राचीन	
२६·९×१३ सें० मी०	४५ (३–४७)	१३	४९	अपू०	शके१७४५	इति श्री विद्वद्दैवज्ञ··· कुटालंकार श्री नीलकंठ ज्योतिर्वित्सूनू गोविंदज्योतिर्विद् विरचिता रसालाभिधासमाविवेकवि वृत्तिः समाप्तिमगमत् ॥··· शके १७४५ सुभानुनामसंवत्सरे जेष्ठे मासेकृष्णपाश्रे ३० भौमवासरे तद्दिन समाप्तः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७७८	२५३२/१७	राजमार्तंड			दे० का०	दे०
७७९	८२७	राजवल्लभ वास्तु शास्त्र	सूत्रधार मंडन		दे० का०	दे०
७८०	४०३३	राज्याभिषेचन निर्णय विधि			दे० का०	दे०
७८१	१६०७/२	रामचक्र			दे० का०	दे०
७८२	६३१५	राशिगृह विस्तार			दे० का०	दे०
७८३	७४७२	राशिफलादि			दे० का०	दे०
७८४	६९५३	रेखा गणित (७–१५ अध्यायतक)	सम्राट् जगन्नाथ		दे० का०	दे०
७८५	२०८२	रोगावली (लग्न सुंदरी)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१३·७ × ११·५ सें० मी०	५३	१२	२६	पू०	प्राचीन	इति उक्तं राजमार्तण्डः ॥
२६·५ × १०·५ सें० मी०	३८ (२–३९)	६	३६	अपू०	प्राचीन	
२० × ७·७ सें० मी०	२९ (१–२९)	७	३८	पू०	सं० १९२५	इतिराज्या भिषेचन विधिः नृपस्य शुभम् शके १७९१ सं० १९२५ वृषनाम संवत्सरे चैत्र कृष्ण ७ मंदवासरातदिने इदं पुस्तकं समाप्तं ॥
८·५ × ७·५ सें० मी०	५५ (१-९, २–७, ९-४८, १-७)	८	११	अपू०	प्राचीन	
२२ × १० ५ सें० मी०	३ (२–४)	१०	२४	अपू०	प्राचीन	
२३·३ × ११·१ सें० मी०	५ (१-१२, १२, १३-२६, २६-४२)	१०	३३	अपू०	प्राचीन	
२७ × १३ सें० मी०	१३१	११	२९	पू०	सं० १९४१	श्री मद्राजाधिराज प्रभुवरजयसिंहस्य तुष्ट्यै द्विजेन्द्रः श्री मत्संम्राट् जगन्नाथ इति समभिधारूढितेन प्रणीतेग्रंथेस्मिन्नाम्निरेखागणित इति सुकोणाववोध प्रदातयंध्यायोध्येतृमोहाय हृइहविरति घस्रसंख्योगतोभूत् समाप्तोयं ग्रंथः ॥ मित्ती अाषाढशुक्ल ८ चंद्रवासरे सं० १९४१ तद्दिने संपूर्णमभवत् ॥
२८·७ × ११·८ सें० मी०	८ (१–८)	८	३०	पू०	प्राचीन	इति रोमावली समाप्त ॥ सुभमस्तु ॥ सं० १९ ॥१२॥ केशा ल मिती वैसग्ष वदि ॥ ६ ॥ रविवासरेकः ॥ लिखितं रामलला पिडिहा मेहुती वैढे श्रीराम ॥ श्रीराम ।

(सं०सू० २ ११)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७८६	६६४२	रोदसी प्रकरण	नीलकंठ		दे० का०	दे०
७८७	६४५४	रोमक सिद्धांत (एकादशाधिकार)	श्रीषेण		दे० का०	दे०
७८८	२०६४	रौद्री मेघमाला			दे० का०	दे०
७८९	६०६२/२	रौद्री मेघमाला			दे० का०	दे०
७९०	३३१५	लग्नचंद्रिका	काशीनाथ		दे० का०	दे०
७९१	१०५५/३	लग्नचंद्रिका	काशीनाथ		मि० का०	दे०
७९२	११४९	लग्नचंद्रिका			दे० का०	दे०
७९३	४३२८	लग्नचंद्रिका	काशीनाथ		दे० का	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३०·६ × १२·२ सें० मी०	८ (१–८)	१३	४९	पू०	प्राचीन स०१९०६	इति श्री पदवाक्य प्रमाणमर्यादाधूरंधर चतुर्धरवंशावतंसगोलविन्द सूरिसूनो नीलकण्ठस्यकृतौ सौर पौराणिकमत्य समर्थने रोदस्यो: प्रकरणं संपूर्णम् ।।सं० १९०६ कार्तिके ···
२६·५ × १६·५ सें० मी०	२० (१–२०)	१०	३५	पू०	प्राचीन	इति श्रीवशिष्ठरो मशाभ्यां विष्णुपदिष्टे नारदोपनिबद्धे रोमशसिद्धान्ते गोलाध्याय एकादशाधिकार: ।
२७·५ × १२·२ सें० मी०	२० (१–२०)	१३	४२	अपू०	प्राचीन	इति श्री रौद्री मेघमलायां गर्भ निश्चयो नाम: ।। श्लोक ३२६ ।। (पृ० ११)
२७·५ × १२·१ सें० मी०	३ (२१–२५)	१३	४२	अपू०	सं०१८९९	इति श्री गार्गी संहितायां रौद्री मेघमालायांगर्भसंयोग संपूर्णम् ।। इति मेघमाला संपूर्ण ।। संवत् १८९९··· ।
२१.५ × ११	४२ (२–६,१२, १८,२२–५१)	१०	२८	अपू०	प्राचीन सं०१८३५	इति ग्रहमध्ये केतुफल: इति श्री कासिनाथ कृतौ लग्नचंद्रिकायां संपूर्ण शुभमस्तु मंगल ददातु संवत् १८३५ साके १७००
२०·३ × १०·८ सें० मी०	८३ (१–८३)	१०	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री सर्वशास्त्रविशारद: काशी कृतौ लग्नचंद्रिकायां दशमोपरिच्छेद: १० ।। शुभमस्तु ।
२३ × ११·५ सें० मी०	१४	११	२७	अपू०	प्राचीन	
२२ × १३ सें० मी०	११ (३०–३३ ३५–४०,४९)	१४	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री काशीनाथ विरचितायाम् लग्न चंद्रिकायांमेकादश ११ परिच्छेद: संपूर्णम् समाप्तम् श्री कृष्णायनम:··· चंद्रमै १८८३ माधुश्व मासानामानि तिथिऽद्री ७ चंद्रवासरात्: ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है
१	२	३	४	५	६
७९४	४९०८	लग्नचंद्रिका			दे० का०
७९५	५३१९	लग्नचंद्रिका			दे० का०
७९६	२९८३	लग्नचन्द्रिका			दे० का०
७९७	३७३४	लग्नचंद्रिका	काशीनाथ भट्टाचार्य		दे० का०
७९८	१४२६	लग्नजातक			दे० का०
७९९	७२५१ / २	लग्नजातक			दे० का०
८००	३८७८	लग्नजातक			दे० का०
८०१	३७८५	लग्नजातक			दे० का०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७ × १२·१ सें० मी०	३ (१–२, ४)	६	१८	अपू०	प्राचीन	अथालिख्यते लग्नचंद्रका (प्रारंभ) × × ×
२५ × १० सें० मी०	१४ (१–१४)	८	२६	अपू०	प्राचीन	
२४·३ × ७·८ सें० मी०	१४	६	४२	अपू०	प्राचीन	
२६·१ × ११·४ सें० मी०	३६ (१–३६)	१०	२६	अपू०	प्राचीन	इति शर्वशास्त्रिविशारद श्रीकाशीनाथ भट्टाचार्जकृतौ लग्न चंद्रकाया प्रथमो परछेद: (पृ० २०)
१४·५ × ६ सें० मी०	१३	७	१३	पू०	सं० १९४४	इति श्री काशीनाथ भट्टाचार्य कृत लग्न जातक समाप्तम् भादो सुदि १३ शंवत् १९४४ मुकां षरगापुर लिषतं पं० श्री तिवारि माधौ राम चिरंजीव् श्री रामचंद्रायन्म: ।।
१४·६ × ८·१ सें० मी०	१७ (१–१७)	७	१७	पू०	प्राचीन सं० १९३८	इति श्री लग्न जातक सम्पूर्णम् सम्वत् १९३८ माघमासे सिते पक्षे चतुर्दश्या ×
२३·१ × १५·३ सें० मी०	११	१०	२२	अपू०	प्राचीन	
२१·८ × १०·८ सें० मी०	१४ (३–१६)	११	३१	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८०२	१६४६	लग्नजातक (सटीका)			दे० का०	दे०
८०३	३६६१/२	लग्नपरीक्षा			दे० का०	दे०
८०४	४५७२	लग्नपरीक्षा			दे० का०	दे०
८०५	६०६२/२	लग्नप्रदीपिका			दे० का०	दे०
८०६	७६२५	लग्नप्रश्न		राम दैवज्ञ	दे० का०	दे०
८०७	१०४३/३	लग्नवाराही			दे० का०	दे०
८०८	५५४	लग्नवाराही			दे० का०	दे०
८०९	२२६६	लग्नवाराही			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३०×१२·५ सें० मी०	३ (१–३)	१२	४२	अपू०	प्राचीन	
१५·३×११·१ सें० मी०	१	८	१६	अपू०	प्राचीन	
२६·७×११·७ सें० मी०	३ (१–३)	८	३१	अपू०	प्राचीन	अथ लग्न परिक्षा ॥ (प्रारंभ)
२७·५×१२·१ सें० मी०	२ (२४–२५)	१३	४४	अपू०	सं०१६०१	इति श्रीकाशीनाथकृतौ लग्नप्र दी-पका समाप्तंम् संवत् १६०१ आ० ब० ५ ब०
१६·२×११ सें० मी०	८ (१–८)	६	२४	पू०	प्राचीन	इति लग्न प्रश्नः···
२२×१३ सें० मी०	४ (१–४)	१३	२८	पू०	प्राचीन	इति लग्न वाराहि समाप्तम् ।···
२५·६×११	४	७	३०	पू०	सं०१६३० श० १७६५	इति श्री लग्नवाराह्या स्त्री द्वादशभाव फलम् समाप्तम् ॥ यादृशंपुस्तकद्रष्टा तादृशंलिखितंमया यदि शुद्धंम शुद्धंवा मम दोषो नदीयते ॥ लिखितं हर द्वारीलाल ॥ संवत् १६३० शाके १७६५ मिति आषाढ़ शुदि त्रयोदश ॥ शुभमस्तु शुभं ॥
२६·२×११ सें० मी०	८ (१–८)	१०	३०	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८१०	१२३५	लग्नसुंदरी रोगावली			दे० का०	दे०
८११	२५३२/१७	लग्नस्वरूप			दे० का०	दे०
८१२	६०५७	लघुकारिका			दे० का०	दे०
८१३	२५०४	लघु तिथिचिंतामणि (उदाहृतिः)	दिवाकर दैवज्ञ	विश्वनाथदैवज्ञ	दे० का०	दे०
८१४	४१६	लघुजातक (बालजातक खंड)	वाराहमिहिर		दे० का०	दे०
८१५	४०६२	लघुजातक	वाराहमिहिर		दे० का०	दे०
८१६	२६६७	लघुजातक			दे० का०	दे०
८१७	४५१७	लघुजातक	वाराहमिहिर		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२८×९·८ सें० मी०	१	२२	१३	पू०	प्राचीन सं०१६३०	इति श्रीलग्नसुंदरि रोगावलि समाप्त सं० १६३०
१३×८·२ सें० मी०	८	६	२६	अपू०	प्राचीन	
२१·२×१३·३ सें० मी०	२० (१–२०)	११	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री लघुकारिका समाप्तम् ।। शुभं भूयात् श्री गोपीजन वल्लभाय नमोनम: ।। श्री कृष्णायनम: ।।
२४×१०·६ सें० मी०	१७ (१–१७)	१३	४०	पू०	प्राचीन	इति श्री दिवाकर आत्मज विश्वनाथ दैवज्ञ विरचिता लघुतिथि चितामणौः उदाहृतिः समाप्ता ।
२६·२×१२·५ सें० मी०	३ (१–३)	१३	३४	अपू०	प्राचीन सं०१८६५	इति श्री लघुजातक समाप्तं सपूर्णं शुभमस्तु ।। सं० १८६५ मिति चैत्रवदि १३ बुधवार लिषतं मिश्र ननसुख ।।
२२·३×११ सें० मी०	१५ (१–१५)	६	३०	पू०	प्राचीन	इति वाराह मिहरकृते लघुजातके नष्टजातकाध्याय ।।
२७·६×१२·५ सें० मी०	११ (१–११)	११	४५	पू०	प्राचीन स०१८५५	इति श्री लघुजातके धीर्य्याणाध्याय: पंचदश: ... ... स० १८५५... ... लिषितं श्री मिश्र रामवकस शुभंभूयात् ।।
३२·५×१२·४ सें० मी०	५ (२,४,–५,८,११)	८	४२	अपू०	प्राचीन सं० १६८०	इति श्री वनिकाचार्यं वराहमिहिराचार्यं कृते लघु जातके नष्ट जन्माध्याय समाप्तम् ग्रंथ संपूर्णं सं० १६८० । भाद्रपद शुक्लात्रयोदश्यां चंद्रवासरे लिपिकृतमिदं पुस्तकं पचौलि महताव द्विजेन पठनार्थं देवी सहाय ।।... ...
(सं० सू० २–१२)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८१८	१८६२	लघुजातक	वराहमिहिर		दे० का०	दे०
८१९	५७४६	लघुजातक (सटीक)	भट्टोत्पल		दे० का०	दे०
८२०	२१९४	लघुजातक			दे० का०	दे०
८२१	२३१३	लघुजातक	वराहमिहिर		दे० का०	दे०
८२२	२३२७	(लघुजातकजन्मविचार)			दे० का०	दे०
८२३	४७७३	लघुजातक (सटीक)	बराहमिहिर	भट्टोत्पल	मि० का०	दे०
८२४	४९३०	लघुजातक			दे० का०	दे०
८२५	३०४९/६	लघुजातक			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३०×१३.९ सें० मी०	१३ (१–१३)	१२	३२	अपू०	प्राचीन सं०१८८१	इति श्री वराहमिहराचार्य्यं विरचिते लघु जातके······संवत् १८८१ मार्गशिर शुदि १४ चतुर्द्दशी १४ रविवासरे ··· ··· ॥
२९.५×१२.२ सें० मी०	१६ (१–१६)	११	३५	अपू०	प्राचीन	इति श्री भट्टोत्पलविरचितायां सूक्ष्मजातक टीकायां ग्रहयोनिभेदाध्यायः द्वितीयः २ ··· (पृ० ९)।
२७×११.३ सें० मी०	३ (१,३,४)	७	२६	अपू०	प्राचीन	
२७×११.३ सें० मी०	३ (१,३,४)	७	२६	अपू०	प्राचीन सं०१८९४	इति श्री वराहमिहराचार्य कृतौ लघुजातके ··· संवत् १८९४ माघ कृष्ण पंचम्यां चन्द्रदिने शुभमस्तु ॥
२९.२×१३.८ सें० मी०	६ (१–६)	१४	४४	पू०	प्राचीन सं०१८७५	इति श्री लघुजातक विचार फलम्। संवत् १८७५ मिति पौषवदि ३ भौमवासरे लिखितं
३०.५×१२.८ सें० मी०	३४ (१–१७,१९, २३–३८)	११	४६	अपू०	प्राचीन सं०१९०९	इति श्रीमदाचार्य वाराहमिहिर कृतस्य जातकस्य श्री भट्टोत्पल विरचितायां विवृतौनष्ट जातके ध्यायो नाम त्रयोदशम् ॥ सम्वत् १९०९ शाके १७७४॥
२३.८×११ सें० मी०	७ (१–७)	९	४०	अपू०	प्राचीन	
१९.७×१३.१ सें० मी०	११ (१–११)	२०	१८	पू०	प्राचीन सं०१८९४	इति लघुजातके वराहमिहिरं संवत १८९४ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८२६	३८६३	लघुजातक	वराहमिहिर		दे० का०	दे०
८२७	८५३	लघुजातक	वराह मिहिर		दे० का०	दे०
८२८	४८१४	लघुजातक (सटीक)	वराह मिहिर	भट्टोत्पल	दे० का०	दे०
८२९	८६४	लघुजातक (संस्कृत टीका)	वराह मिहिर		दे० का०	दे०
८३०	७३८०	लघु मुहूर्तमार्तंड			दे० का०	दे०
८३१	३६८१	लीलावती	भास्कराचार्य		दे० का०	दे०
८३२	४८१८	लीलावती	,,	रामकृष्ण	दे० का०	दे०
८३३	५०६६	लीलावती	,,		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६·३ × १३·३ सें० मी०	१४ (१–१४)	१२	२४	अपू०	सं०१६०१	इति श्री वराहमिहराचार्य्ये कृतौ लघु जातकेनेष्टजातकाध्यायाष्टादश: १८ समाप्तोयं ग्रंथ संवत् १९०१ मार्ग सु १ लि० मि० हीरानंदस्यात्मजेन जीवणरामेण ।
२६·५ × ११·५ सें० मी०	१३	८	३०	पू०	प्राचीन	इति लघु जातके समाप्तम् शुभमस्तु
२६·७ × १२·३ सें० मी०	९ (१७–२५)	१४	४७	अपू०	सं०१९०६	इति श्री भट्टोत्पलविरचितायां सूक्ष्मजातक कृतोनष्टजातकटोकायां त्रयोदशोध्याय: १३ संपूर्ण शुभमस्तु श्रीरस्तु सवत् १९०६ शाके १७७१ चत्रेमासे कृष्ण पक्षेऽष्टमी ८ बुध्ये का लिखितं पुस्तकं ··· वेणीमाधौ चौवेरीमावैठे ···
२२·२ × ९·७ सें० मी०	१७ (१–१७)	८	२५	अपू०	प्राचीन	इति श्री वराहमिहराचार्य विरचिते लघुजातकेनिर्वाणध्याय: समाप्तम् ॥ ··· लिष्यतं नौवतराम ॥ पठनार्थं ॥ शुभं ददाति ॥
२७ × ११·५ सें० मी०	९ (१–९)	१०	४५	अपू०	प्राचीन	
२०·८ × १०·७ सें० मी०	२८ (१–२८)	१०	३०	पू०	प्राचीन	इति लीलावती समाप्त: ॥
२२·३ × ९.४ सें० मी०	४७ (१४–६०)	६	२४	अपू०	प्राचीन	इति श्री रामकृष्ण विरचितेलीलावत्युदाहरणे मनोरंजनेश्रेष्टीव्यवहार: समाप्त: ।
३२ × १२·७ सें० मी०	९ (१,२,२,३,३, ४,४,५,७)	११	३८	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८३४	५७६५	लीलावती	भास्कराचार्य		दे० का०	दे०
८३५	५६२१	लीलावती	भास्कराचार्य		दे० का०	दे०
८३६	२७६२	लीलावती	भास्कराचार्य		दे० का०	दे०
८३७	२५६४	लीलावती (संस्कृत टीका)	भास्कराचार्य		दे० का०	दे०
८३८	२३८३	लीलावती (उत्तरार्द्ध)	भास्कराचार्य		दे० का०	दे०
८३९	७८२५	लीलावती (सिद्धांतशिरोमणि)			दे० का०	दे०
८४०	७४०६	लीलावती (सिद्धांतशिरोमणि-गणिताध्याय)	"		दे० का०	दे०
८४१	२४६४	लीलावती (सटीक)	"		दे० का	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
२७·७ × ११·२ सें० मी०	५ (१–५)	१०	४२	अपू०	प्राचीन	... ... पाटीं सद्गणितस्य वाच्यंचतुरः प्रीतिप्रदां प्रस्फुटां संक्षिप्ताक्षर कोमलामलपदैर्लालित्य लीलावतीम् ।।१।। (पृ० १)
२४·५ × ६.६ सें० मी०	६ (१–६)	७	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री भास्करीये सिद्धांत शिरोमणौ गणितपाट्यां लीलावत्यां परिकर्माष्टकम् ।। (पृ० ६)
२४·४ × १०·८ सें० मी०	५ (१–५)	१०	२८	अपू०	प्राचीन	इतिपरिकर्माष्टक (ग्रंथनाम के लिये हाशिये पर 'लीला व शब्दलिखिति है) समाप्तं ।।
२३·५ × १२ सें० मी०	२२ (२५-३८,५३-५६,६८,७३,८१,६१-६२)	१२	३६	अपू०	प्राचीन	
२५·८ × १० सें० मी०	१० (१–१०)	८	३०	अपू०	प्राचीन	
२३·६ × १०·६ सें० मी०	३१ (१–३१)	११	३८	अपू०	प्राचीन सं०१८८१	इति श्री महेश्वरोपाध्यायसुत श्रीभास्कराचार्य विरचिते सिद्धांत शिरोमणौ पाटी नामाध्यायः समाप्तः सुभमस्तु सं०१८८१ माघवदि ५ रविवासरेकः ।।
२३·४ × १०·५ सें० मी०	४६ (१–४६)	६	३३	अपू०	प्राचीन सं०१६१०	इति श्री महागणक भास्कराचार्य विरचिते सिद्धांतशिरोमणौ पाटीगणितध्यायः समाप्तः × × सं० १६१० वासरी वायां श्री प्रसादेन सिद्धिर्निर्विघ्नतयामगमत् ।। श्रीवरदमूर्तिर्जयति ।।
२३·६ × १२·१ सें० मी०	६७ (१-२१,२३-२४,३५,३६-५२,५७-५८,६०-६७,७२,७४,७६,-८२-८६,८६-६० ६३-१०२)	११	३५	अपू०	प्राचीन	इति श्रीं मद्दैवज्ञ पंडित सूर्य विरचितायां-गणितामृतकूपिकायां क्षेत्र व्यवहारः समाप्तः ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है
१	२	३	४	५	६
८४२	२५३१	लीलावती (सटीक)	भास्कराचार्य	नरायन ?	दे० का०
८४३	४१६९	लीलावती (सटीक)	,,		दे० का०
८४४	२९५७	लीलावती (सटीक)	,,		दे० का०
८४५	३८६२	लीलावती (उत्तरार्द्ध) (सटीक)	,,	रामेश्वर	दे० का०
८४६	६६४६	लीलावतीविवृति	रंगनाथ		दे० का०
८४७	५२३४	लोकमनोरमा	गर्गाचार्य		दे० का०
८४८	६८७७	लोकमनोरमा प्रश्नविद्या	गर्ग		दे० का०
८४९	७२६१	लोमशसंहिता			दे० का०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२१·५ × १३ सें० मी०	६५	१०	३३	अपू०	प्राचीन	
२२·७ × १२·८ सें० मी०	२१ (१३, १७–१८, २०-२४)	१२	३५	अपू०	प्राचीन	
१९·२ × ७·३ सें० मी०	४९ (५५–१०३)	८	५८	अपू०	प्राचीन	
३४ × १३·६ सें० मी०	१२ (२०–३१)	१२	७०	अपू०	प्राचीन	इति श्री मन्मिश्रमणिरामात्मज रामेश्वर कृतायांलीलावती टीकायां ···। (पृ० ३१)
२६ × १२·२ सें० मी०	२५ (२–२६)	९	४६	अपू०	प्राचीन	इति श्रीसकलगणकसार्वभौमश्रीश्रीमन्नृसिंह दैवज्ञ सुत रंगनाथ कृतायां लीलावती विवृतौ परिकर्माणि समाप्तानि ।।··· (पृ० ६)
२५·६ × १०·४ सें० मी०	३	९	३७	अपू०	प्राचीन	इतिश्री गर्गचार्यरचिरचितायां लोक मनोरमा समाप्ता ।। ···
२०·६ × ८·६ सें० मी०	५ (१,३-६)	६	३२	अपू०	प्राचीन	इति गर्ग विरचिते लोक मनोरमां प्रश्न विद्या मूलशमाप्तः ।। (पृ० ३)
१६·६ × १०·२ सें० मी०	५ (१–५)	१४	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री लोमशसंहितायां भावफलाध्यायः समाप्तः ।।शुभं।।

(सं०सू० २-१३)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८५०	६८६६	लोमशसंहिता			दे० का०	दे०
८५१	२७८४	वर्णमालाप्रश्न ज्ञानम्	नारसिंह (नृसिंह)		दे० का०	दे०
८५२	६४५८	वर्णस्वरविचार			दे० का०	दे०
८५३	३८५१	वर्षकुण्डली फल			दे० का०	दे०
८५४	४६६३	वर्षतंत्र	दैवज्ञ चिंतामणि		दे० का०	दे०
८५५	४३७६	वर्षतंत्र टीका	विश्वनाथ दैवज्ञ		दे० का०	दे०
८५६	७००६	वर्षफल	दिवाकर दैवज्ञ		दे० का०	दे०
८५७	५३१६	वर्षफल पद्धति	केशव दैवज्ञ	विश्वनाथ दैवज्ञ	दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·३ × ११·७ सें० मी०	३४ (१–३४)	९	३४	अपू०	प्राचीन	इति लोमश संहितायां त्रयोदशोत्थाने लोमश सुजन्मा विप्र संवादो अदृष्टाश्रुत वस्तुनिर्णयो नामक चत्वारिंशाध्याय: ॥४१॥
१९ × १२·८ सें० मी०	६ (१–६)	८	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री नारसिंह कृतौ श्री वर्णमाला प्रश्न ज्ञानं समाप्तं ॥ शुभं भूयात् ।
२०·५ × ८·२ सें० मी०	१	१०	३१	पू०	प्राचीन	···अथ योगतरंगिण्यां वर्णस्वर विचार:॥ (प्रारंभ) इत्येकनाडीनक्षत्र विचार: (अंत)
२२·७ × १०·५ सें० मी०	१० (१–१०)	९	३४	अपू०	प्राचीन	
२४·८ × ११ सें० मी०	२	८	२९	अपू०	प्राचीन	इति श्री दैवज्ञचिंतामणि विरचिते रमलोत्कर्षे वर्षतंत्र संपूर्ण ।
२३·८ × १०·२ सें० मी०	४१ (२–४२)	१२	४१	अपू०	प्राचीन	इति श्री दिवाकरात्मज श्री विश्वनाथ-दैवज्ञविरचितायां वर्षतंत्रटीकायां द्वादशभाववि ।
२६·९ × ११·९ सें० मी०	९ (१–३)	८	२६	अपू०	प्राचीन	नृसिंह पुत्रेण दिवाकरेण दैवज्ञ तोषाय-विनिर्मितायाम् सत्पद्धतौवर्ष फलस्य × × समाप्तम् × ×
२९·३ × १२·५ सें० मी०	१३	११	४८	अपू० (जीर्णपत्रे)	सं० १७२०	इति श्री गणकचक्रचूणामणि श्री दिवाकर दैवज्ञात्मज विश्वनाथ दैवज्ञ विरचिता श्री केशव दैवज्ञ कृत वर्षफल पद्धति समाप्ता ॥ संवत् १७२० वैशाष-शुक्ल द्वितीया ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८५८	२६८४	वर्षफलादेश	समरसिंह		दे० का०	दे०
८५९	६८९५	वर्षभेदविचार	गोविंद		दे० का०	दे०
८६०	४९८४	वर्षविनोद			दे० का०	दे०
८६१	७९७	वर्षादिनामानयन			दे० का०	दे०
८६२	४९८०	वशिष्ठ संहिता	वशिष्ठ		दे० का०	दे०
८६३	६७९२	वसिष्ठ संहिता	वृद्ध वशिष्ठ		बाँ० का०	दे०
८६४	३१९३	वसिष्ठ संहिता (सिद्धांत)			दे० का०	दे०
८६५	२९७८	वसिष्ठ संहिता	वृद्धवसिष्ठ		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·८ × १०·५ सें० मी०	१७	१०	२९	अपू०	प्राचीन	इति प्राग्वागन्वय कुमारसिंहात्मज समर सिंह ··· ··· ··· ताजिक सारे वर्ष फलोद्देश ॥
२३·२ × ९·८ सें० मी०	६ (१–६)	१०	३७	अपू०	प्राचीन	··· ··· गौरी सूनुं नमस्कृत्य नीलकंठं गुरुं तथा ॥ गोविंदेन विधिज्ञेन वर्षभेदो विचार्यते ॥ १५॥ (प्रारंभ)
२४·९ × १२ सें० मी०	१४ (१–१४)	९	२१	अपू०	प्राचीन	
२२·७ × १०·६ सें० मी०	३ (१–३)	९	३०	पू०	प्राचीन	
३१·३ × ११·५ सें० मी०	४६ (१-३२, ३४, ३६,३८,३९, ४१-५०)	१२	४६	अपू०	सं०१९०९	इति ग्रंथमुहुर्तस्य संपूर्ण सं० १९०९ लिखित मिदं पुस्तकं मिश्र मुरलिधर स्वात्मज पठनार्थम् ॥
३२ × १०·१ सें० मी०	१७६ (१–१७६)	७	४५	पू०	सं०१९३१	इति श्री वृद्ध वसिष्ट ब्रह्मर्षि विरचितायां महा संहितायां कूहूयोग विधानाध्यायः समाप्तं ॥ ··· ··· ॥ सं० १९३१ शाराचैत्र कृष्णाचतुर्दश्यां लिखितमिदं पुस्तकं शंकर दत्तात्मज पुत्र नंदलाले नैव ॥
२४·४ × १०·२ सें० मी०	७ (१–७)	७	२१	अपू०	प्राचीन	
३०·२ × १३·५ सें० मी०	१२६ (१–१२६)	१२	३१	पू०	सं०१८१६	इतिश्री वृद्धवशिष्ट ब्रह्मर्षि विरचिताया महा संहितायां तिथिनक्षत्र वाररोगोत्पत्ति-शांत्यध्याय चत्वारिंशः ४८ इति वृद्धवाशिष्ट समाप्तः ॥ सं० १८१६ ···

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८६६	३०५	वशिष्ठसंहिता	वशिष्ठ		दे० का०	दे०
८६७	४६६३	वसंतराज			दे० का०	दे०
८६८	६०३०	वादरायण प्रश्न			दे० का०	दे०
८६९	३३२९	वादरायणविद्या			दे० का०	दे०
८७०	६१५५	वाराहीव्याख्या (उत्तरार्द्ध)	गोकुलनाथ		दे० का०	दे०
८७१	७०९०	वास्तुप्रदीप	वासुदेव		दे० का०	दे०
८७२	५६४९	वास्तुरत्नाकर	दैवज्ञ सेवकराम		दे० का०	दे०
८७३	४५३४/२	वास्तुविधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२९·३ × ११·६ सें० मी०	१२८ (१–१२८)	९	४६	अपू०	प्राचीन	
२२·३ × ९·५ सें० मी०	१० (१–१०)	६	२६	पू०	सं०१८६०	इति श्री वसंतराजे शिवाचरित्रे चतुर्थ प्रहरे समाप्तम् ॥ ······संवत् १८६० साके १७२५···।
२२ × ९·२ सें० मी०	४ (२–५)	९	४२	अपू०	सं०१८३३	इति श्री वातरायण प्रोक्त प्रश्न समाप्तम् ॥ संवत् १८३३ शके १६९८ पौष शुदि १० शनौलिखितं स्वपाठार्थम् ॥
२४ × १०·७ सें० मी०	६ (१–६)	१०	३५	पू०	सं०१९२३	इति वादरायण विद्या समाप्ता। वक्रोत्था: श्रुद्धवर्णं गजमिति सहिता खेंपर्यं रवेन्दु १०० विनिघ्नोह्यर्क्कैः शेषेषु रूपा १ द्वि ७ नवं ९ सु च भवेत् ··· ···
२५·६ × ११·८ सें० मी०	५४ (१–५४)	१५	५४	पू०	प्राचीन	
२६·९ × ११·१ सें० मी०	१२ (१–१२)	१०	३९	पू०	प्राचीन	इति श्री नन्दात्मज पंडित वासुदेव विरचितं वस्तु प्रदीपः समाप्तः शुभमस्तु ॥
३२·८ × १२·६ सें० मी०	३१ (१–३१)	१३	४७	पू०	सं०१९०७	इति श्री दैवज्ञ सेवकाराम कृतो वास्तु रत्नाकरः समाप्तः ॥ संवत् १९०७ पौषसुदि १२ भौमे। लिखितं पं० श्री नायक रामगोपालेन ॥
३० × १२·२ सें० मी०	६ (१–६)	९	४७	पू०	सं०१८१४	इति वास्तुविधि समाप्तं ॥ शुभमस्तु ॥ संवत् १८१४ माघवदि ९ वृहस्पति कह लिषितमिदं पुस्तकं कालू चतुर्वेदेन स्वार्थं परार्थं वा (पृ० ६)······।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८७४	६८१६	वास्तुशास्त्र	सूत्रधार मंडन		बाँ० का०	दे०
८७५	२६११	वास्तुसंहिता			दे० का०	दे०
८७६	२६६३	वास्तुसंहिता			दे० का०	दे०
८७७	२५३२/१७	विघ्नराज			दे० का०	दे०
८७८	४३१२	विवाह वृंदावन	केशवादित्य		दे० का०	दे०
८७९	७६०८	विवाह वृंदावन			दे० का०	दे०
८८०	५५५३	विवाह वृंदावन-टीका	गणेशदैवज्ञ		दे० का०	दे०
८८१	७१९१	व्यवहार वृंद			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३३ × १०·२ सें० मी०	३२ (१–३२)	७	४६	पू०	प्राचीन	इति श्री सूत्रधार मंडन विरचिते वास्तु शास्त्रे राजवल्लभ मंडने शाकुन लक्षणं चतुर्दशं संपूर्णं ॥
१९·७ × १४ सें० मी०	६	१७	१९	अपू०	प्राचीन	
२४·९ × ९·७ सें० मी	६	१०	३४	अपू०	प्राचीन	
१३ × ८·२ सें० मी०	६	८	२१	अपू०	सं०१९२४	इति श्री विघ्नराजग्रंथशमाप्ति शुभमस्तु सं० १९२४ मिति अगहन वदि ३०
२६·५ × ११ सें० मी०	१९ (१–१९)	९	४३	पू०	प्राचीन	इति श्री केशवादित्य विरचितं वृंदावनं समाप्तं ॥ शुभमस्तु ॥
२०·६ × ९·८ सें० मी०	८	११	३४	अपू०	प्राचीन	ज्ञति श्री विवाह वृंदावने ग्रहयोगबलाध्यायो × + + + + ॥ (पृ० १५)
३१·४ × १२·२ सें० मी०	५५ (२–५६)	११	४५	अपू०	प्राचीन	इति श्री सकलागमाचार्यवर्य श्री केशव सावत्सरात्मजे गणेश विरचितायां विवाह वृंदावन टीकायां विवाह दीपिकायां (पृ० ४४)
२७·४ × ११·२ सें० मी०	७ (१,२, ४-८)	७	२५	अपू०	प्राचीन	

(सं०सू०२-१४)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है
१	२	३	४	५	६
८८२	४२६१	* व्यवहारवृंद (वास्तुप्रभेद)	शुकदेव मिश्र		दे० का०
८८३	१०४३/३	शंकरीय ताजकपद्धति			दे० का०
८८४	६६५७	शंकुविचार			दे० का०
८८५	६४५६	शंभुहोराप्रकाश	पुंजराज		दे० का०
८८६	७३५४	शंभुहोराप्रकाश	पुंजराजदैवज्ञ		दे० का०
८८७	३०९९	शंभुहोराप्रकाश			दे० का०
८८८	५०५२	शकुनदीपिका			दे० का०
८८९	३७५७	शकुनशास्त्र			दे० का

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६·३ × १०·७ सें० मी०	३२ (१–३२)	९	३९	पू०	सं०१७००	इतिश्री व्यवहारवृंदे मिश्रशुकदेव विरचिते वास्तुप्रभेदं दशमं ॥ संवत्सर सूत्रस्य श्लोकसख्या ॥ २५ ॥ ··· ··· ··· ··· संवत् ॥१७००॥ वर्षे वैशाख-शुदि द्वितीया सोमवासरे श्रीमथुरा-मध्ये ॥ लिषितं जटमल गोंड शुभं-भवत् मांगल्यददार्ल्पेत् ॥ शिवायनमः॥···
२२ × १३ सें० मी०	११ (१–११)	९	२०	पू०	प्राचीन सं०१८४७	इति श्री शंकरीय ताजकपद्धतौ गणिता-धिकार समाप्तम् सं० १९०७ भाद्र पद कृष्ण ३ ।
२६·७ × १०·९ सें० मी०	२ (१–२)	१४	३४	पू०	प्राचीन	
२० × १०·२ सें० मी०	१३४ (१–१३४)	११	२८	पू०	प्राचीन	" होराचार्यः पुंजराजः करोति होरा-सारं शंभुहोराप्रकाशं··· (पृ०१)
२४·४ × १०·७ सें० मी०	६६	११	३८	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमद्दैवज्ञ पुंजराज विरचिते शंभु होरा प्रकाशे दशांतर्दशाध्यायः ॥ × × (पृ० ५२)
२६·१ × १०·२ सें० मी०	७९ (१–७९)	१०	४२	अपू०	प्राचीन	
२७ × ११·५ सें० मी०	७ (३–९)	१०	३१	अपू०	प्राचीन	
२४·८ × १२·३ सें० मी०	प० सं० २१ (१३–२२)	७	२५	अपू०	प्राचीन	इति श्री वसंतराय शाकुने सदागमार्थ-शोभने समस्त सत्यकौतुके विचारितो शुभाशुभं वर्ग ५······ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८६०	६०४	शकुनशास्त्र			दे० का०	दे०
८६१	४५५६	शकुनावली			दे० का०	दे०
८६२	६६५२	शिष्यधीवृद्धिद महातंत्र	लल्लाचार्य		दे० का०	दे०
८६३	५४११	शीघ्रबोध	काशीनाथ भट्टाचार्य		दे० का०	दे०
८६४	५६३३	शीघ्रबोध	काशीनाथ		दे० का०	दे०
८६५	६०८०	शीघ्रबोध	काशीनाथ		दे० का०	दे०
८६६	१८१६	शीघ्रबोध	काशीनाथ		दे० का०	दे०
८६७	११८२	शीघ्रबोध	काशीनाथ भट्टाचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·६ × ९·६ सें० मी०	४ (१–४)	६	३२	अपू०	प्राचीन	इत्युपश्रुतिविधानं ॥
२७·१ × १०·५ सें० मी०	५ (१–५)	१०	३४	पू०	सं०१६११	इति श्री शकुनावली स्कंदपुराणोक्त याज्ञवल्केनभणितं चतुर्थ प्रकर्णं समाप्तम् ४ सं० १६११ लिषितं दातामैंकरोदमध्ये ॥
२७.६ × ·१४·१ सें० मी०	२३ (१–२३)	११	३६	पू०	प्राचीन सं०१८८८	इति श्रीभट्टत्रिविक्रम सूनु लल्लाचार्य्य विरचिते शिष्यधीवृद्धिदे महातंत्रे उत्तराधिकारो ऽष्टमः सं०१८८८ रा कार्तिक वदि ॥
२७·२ × १६·६ सें० मी०	३७ (१–३७)	१२	३०	पू०	प्राचीन स०१९००	इति श्री काशीनाथ कृतौ शीघ्रबोधे चतुर्थप्रकर्णं ४ आसाड सुदि ११ संवतु १९०० वलदेवं गड शुभ स्थाने ॥
२६ ५ × ११ सें० मी०	३९ (१–३९)	६	३१	पू०	सं०१८११	इति श्री कासिनाथ कृतो सिघ्रवेधे चतुर्थ प्रकर्णं संपूर्णं सं० १८११ कर्त्तग कृशा ६ सोमवासोरे ॥
२३·५ × १२ सें० मी०	४५ (१–४५)	१०	२६	पू०	सं०१८८७	इति श्री काशिनाथ भट्टाचार्य कृतौ शीघ्र बोधः चतुर्थप्रकर्णः समाप्तः शुभमस्तु अथ शुभसंवत १८८७ के शाके १७५२ मिती माशोत्तमे मासे फाल्गुने मासे ··· ··· ॥
२०·७ × १४ सें० मी०	३८ (१–३८)	२०	१५	पू०	प्राचीन सं०१८८५	इति श्री काशीनाथकृतौ शीघ्रवोध चतुर्थं प्रकर्णं समाप्तो संपूर्णं ··· ··· संवत् १८८५ तत्र वर्षे महामंगलप्रदे मासोत्तम मासे श्रावणमासे कृष्णपक्षे शुभत्तिथौ पंचम्यायां ॥५॥ गुरुवासशन्यतायं ··
२४ × ११·६ सें० मी२	२५ (१–२५)	१०	३२	पू०	सं०१८५२	इति श्री काशीनाथ भट्टाचार्यकृतौशीघ्रबोध चतुर्थप्रकर्णं समाप्तं सं० १८५२ शाके १७१७ ज्येष्ठकृष्ण अमावस्यायां चंद्रवासरे तादिनपुस्तक समाप्तं ···॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८९८	६४	शीघ्रबोध	काशीनाथ भट्टाचार्य		दे० का०	दे०
८९९	२०५३	शीघ्रबोध (१ से ४ प्रकरण)	काशीनाथ		दे० का०	दे०
९००	२१९५	शीघ्रबोध (चतुर्थ प्रकरण)	काशीनाथ		दे० का०	दे०
९०१	७४४४	शीघ्रबोध	काशीनाथ		दे० का०	दे०
९०२	८०२	शीघ्रबोध (चतुर्थ प्रकरण)	काशीनाथ		दे० का०	दे०
९०३	५१२	शीघ्रबोध (विवाह प्रकरण)	काशीनाथ		दे० का०	दे०
९०४	३२४३	शीघ्रबोध	काशीनाथ		दे० का०	दे०
९०५	२३७०	शीघ्रबोध	काशीनाथ भट्टाचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३ × १४·५ सें० मी०	२५ (१-२५)	१५	२४	पू०	प्राचीन सं०१८८५	इति श्री काशीनाथ कृतौ शीघ्रवोधभाव संवत्सर प्रकर्णं चतुर्थं संपूर्णं समाप्तम् सं० १८८५ मासोत्तम मासे भाद्रपद मासे शुक्ले पक्षे तिथी तृतीयां भृगुदिने शुभं भूयात् ।
१८ × १३·५ सें० मी०	२५	१५	१६	पू०	प्राचीन सं०१९१७	इति श्री कासिनाथ कृतो सिघ्रबोथ चतुर्थ प्रकरण शुभमस्तु सं० १९१७॥
२५·१ × १०.८ सें० मी०	३८ (१–३८)	८	३६	पू०	प्राचीन सं० १९२६	इति श्री काशीनाथभट्टाचार्य्य विरंचितं कृतौ। शीघ्रबोध चतुर्थ्यप्रकरण समाप्तम्॥ सं० १९२६ जेष्टमासे शुक्लापक्षे......
२४·१ × १२·३ सें० मी०	१७ (१–१७)	१२	३०	अपू० (प्रथम प्रकरण पूर्णं)	प्राचीन	इति श्री काशीनाथ भट्टाचार्य कृतौ शीघ्रवेंधे विवाह प्रकरणं प्रथमं १
२१·१ × ९·७ सें० मी०	४५ (१–४५)	११	२५	पू०	प्राचीन (सं०१८६७)	इति श्री काशीनाथ कृतौ शीघ्रवोघ चतुर्थ प्रकरणं समाप्तम् ॥४॥ अथशुभ संबत्सरेऽस्मिन् श्री नृपति विक्रमदित्यराज्ये सं० १८६७ श्री श्री रामायनमः शुभंभूयात् ॥
२५·५ × १४ ३ सें० मी०	१३ (१–७, ९–१४)	८	२३	अपू०	प्राचीन	इति श्री काशीनाथ कृतौ शीघ्र : प्रवोध विवाह प्रकरणं संपूर्णम् ॥
२३ × १५·४ सें० मी०	९ (१–९)	१४	३१	अपू०	प्राचीन	
२४ ५ × १०·३ सें० मी०	८१ (१–८, १०–८२)	६	२६	अपू०	प्राचीन सं १९०१	इति श्री काशीनाथ कृतौ शीघ्रवोधेग्रहुराशिनिर्णयं नाम चतुर्थं प्रकरणं ४ श्री सं० १९०१ अश्विन शुल्क ...... ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६०६	२३१६	शीघ्रबोध	काशीनाथ भट्टाचार्य		दे० का०	दे०
६०७	५६००	शीघ्रबोध	काशीनाथ		दे० का०	दे०
६०८	२००१	शीघ्रबोध (विवाह प्रकरण)	काशीनाथ		दे० का०	दे०
६०९	२१६१	शीघ्रबोध	काशीनाथ		दे० का०	दे०
६१०	२११६	शीघ्रबोध	काशीनाथ		दे०का०	दे०
६११	२०६६	शीघ्रबोध	,,		दे० का०	दे०
६१२	५७४८	शीघ्रबोध	काशीनाथ		दे० का०	दे०
६१३	५६०६	शीघ्रबोध	काशीनाथ भट्टाचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२८.८ × १२.४ सें० मी०	१६ (२–३, ७, १२-१३,१६–१८,२१-२४, २७–३०)	११	३३	अपू०	प्राचीन सं० १८६३	इति श्री काशीनाथ कृतौ शीघ्रबोधे चतुर्थं प्रकारणं समाप्तं । संवत् १८६३ ॥······ ॥
२०.६ × १०.२ सें० मी०	६ (१–६)	११	२६	अपू०	प्राचीन	क्रियते काशीनाथेन सीघ्रबोधाय संग्रह ॥१॥ (प्रारंभ)
२२.५ × ११ सें० मी०	११ (२–१२)	६	३०	अपू०	प्राचीन	इति श्री काशीनाथभट्टाचार्य कृतं-शीघ्रबोध विवाह प्रकरणं संपूर्णम् शुभंभूयात् शूभंभवतु ।
२६.४ × ११.३ सें० मी०	२८ (४,६-१०,१२, १८–२१,२६-२८,३०–४७)	८	३०	अपू०	प्राचीन	
२६.७ × ११.८ सें० मी०	२६ (१३–४१)	१०	३०	अपू०	प्राचीन	इति श्री काशीनाथभट्टाचार्य विरचितं शीघ्रबोध बलावल प्रकरणं चतुर्थं समाप्तम् शुभं भूयात···
२२.५ × ८.६ सें० मी०	३६ (१–७,१०–११,१३-३६)	७	३१	अपू०	प्राचीन	
२७.२ × १.११ सें० मी०	२	६	३४	अपू०	प्राचीन	
१६.७ × १३ सें० मी०	१४ (४–७)	१०	२०	अपू०	प्राचीन सं० १६२१	ईति श्री कासीनाथ भद्राचार्ज कृतौ सीघ्रबोध विवाह प्रकर्नं १॥ आषाड सुदि ॥३॥ संवत् १६२१॥

(सं० सू० २-१५)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९१४	१३९३	शीघ्रबोध	काशीनाथ भट्ट		दे० का०	दे०
९१५	१३१७	शीघ्रबोध	काशीनाथ		दे० का०	दे०
९१६	१८५२	शीघ्रबोध	काशीनाथ भट्ट		दे० का०	दे०
९१७	४४४२	शीघ्रबोध	काशीनाथ भट्टाचार्य		दे० का०	दे०
९१८	१६७७	शीघ्रबोध	काशीनाथ		दे० का०	दे०
९१९	३४४२	शीघ्रबोध	काशीनाथ भट्टाचार्य		दे० का०	दे०
९२०	१२१७	शीघ्रबोध	काशीनाथ		दे० का०	दे०
९२१	३९३५	शीघ्रबोध	काशीनाथ		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
१६×६ सें० मी०	६ (५१–५६)	७	२८	अपू०	प्राचीन	
२१·७×११ सें० मी०	१० (८-१२,१५, १८,२०-२२)	११	४०	अपू०	प्राचीन	इति श्री काशीनाथ कृतौ शीघ्रबोध ··· ··· ऋषि सीलापति वा विद्यापति पठनार्थं ॥
१६×६ सें० मी०	४७ (१-४१,४५-५०)	८	२२	अपू०	प्राचीन	
२५×१० सें० मी०	३७ (६-२६-२६-४५)	८	३६	अपू०	सं० १६२२	इति श्री काशिनाथ दैवज्ञाभट्टाचार्य कृतौ शीघ्रबोधे चतुर्थं प्रकर्णं समाप्तं शुभमस्तु ॥ ··· ··· सं० १६२२ ॥
२१×१६ सें० मी०	५५ (१-१३,१५-१८,२१-३०, ३२-५८)	१७	१३	अपू०	प्राचीन	
२३·७×१४·६ सें० मी०	५८ (१–५८)	६	२२	अपू०	प्राचीन	इति श्री काशीनाथ भट्टाचार्य कृतौ शीघ्रबोध चतुर्थ प्रकर्णं समाप्तं संपूर्णं शुभमस्तुः (पृ०५७)
२१·८×१०·७ सें० मी०	१२ (३,६–१६)	८	२१	अपू०	प्राचीन	
२५·१×१३·७ सें० मी०	२२ (१-८,१०, १२,१४,१७, १७,२०-२६, २६-३०)	११	२४	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६२२	४००५	शीघ्रबोध	काशीनाथ भट्ट		दे० का०	दे०
६२३	४५३२	शीघ्रबोध	काशीनाथ भट्ट		दे० का०	दे०
६२४	४६१४	शीघ्रबोध	काशीनाथ		दे० का०	दे०
६२५	४५६७	शीघ्रबोध	काशीनाथ		दे० का०	दे०
६२६	४५५८	शीघ्रबोध (सटीक)	काशीनाथ		दे० का०	दे०
६२७	४७८३	शीघ्रबोध	काशीनाथ भट्टाचार्य		दे० का०	दे०
६२८	८१९	शीघ्रबोध	काशीनाथ भट्ट		दे० का०	दे०
६२९	३७९३	शीघ्रबोध	काशीनाथ		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
२८·२ × ११·२ सें० मी०	१५	६	३५	अपू०	प्राचीन	
२२·६ × १४·७ सें० मी०	३७	२०	१०	अपू०	प्राचीन सं०१८६३	ईति नक्षत्रप्रमाणं ईति श्री कासीनाथ भट्टाचार्य्य विरचितायां कृतौ सिघ्रबोध अर्थप्रकर्णं चतुर्थं संपूर्णम् ॥ सं०१८६३॥
२३·८ × ११·८ सें० मी०	२२ (४-१२, १४-१६, ३०-३६)	११	२६	अपू०	प्राचीन सं०१८६७	इति श्री काशीनाथ भट्टाचार्य कृतौ-शीघ्रबोध चतुर्थ प्रकरण समाप्तं ॥ लिषतं पं० श्रीशुकलराधाच ॥ सं० १८६७ स्रा ॥
२३·७ × १३·६ सें० मी०	१८ (२ से ४५ तक बीच में खंडित)	१०	३१	अपू०	प्राचीन	इति सर्व विद्या विसारद श्री काशीनाथ भट्टाचार्य कृतौ शीघ्रबोध समाप्ता ॥ (पृ० ४५)
२४·१ × ११·५ सें० मी०	४४ (पृ० २ से ६५ तक बीच बीच में खंडित)	७	२८	अपू०	प्राचीन	इति श्री काशीनाथ भट्टाचार्य कृतौ सीघ्रबोध अर्थप्रकरन त्रतियां ॥ (पृ ६१)
३२·३ × १३·४ सें० मी०	२६ (२-३,३-२६)	११	४३	अपू०	प्राचीन	इति श्री काशीनाथ भट्टाचार्य्य कृतौ शीघ्रवोधे समाप्ति प्रकरणं चतुर्थम् ॥
१६ × ६ सें० मी०	६ (४२-४४, ६०-६५)	६	२२	अपू०	प्राचीन सं०१६३०	इति श्रीभट्टाचार्य काशीनाथनौ शिघ्र-बोध चतुर्थ प्रकरण समाप्तम सं० १६३० मीति श्रवण वदिर गुरूवासरे लिखतं मिश्ररामजस भिखम सन पठनार्थम्· ॥
२४·२ × ११ सें० मी०	८ (४०,४२, ४४-४५, ५२,५५)	६	२५	अपू०	प्राचीन सं० १८२८	इति श्री सर्वविद्यानिधान श्री कासिनाथ भट्टाचार्जकृतौ शीघ्रबोध चतुर्थ प्रकरणं ॥ शुभमस्तु ॥ मंगलं समाप्त लिषितं पं० श्री तिवारी संकर संवत् १८२८ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है
१	२	३	४	५	६
६३०	६१७३	शीघ्रबोध	काशिनाथ भट्टाचार्य		दे० का०
६३१	२७५	शीघ्रबोध	काशीनाथ		दे० का०
६३२	३०७	शीघ्रबोध	काशीनाथ		दे० का०
६३३	७८६४	शीघ्रबोध			दे० का०
६३४	६७१७	शीघ्रबोध			दे० का०
६३५	३७०५	शीघ्रबोध	काशीनाथ		दे० का०
६३६	३६७७	शीघ्रबोध	काशीनाथ भट्टाचार्य		दे० का०
६३७	३६५५	शीघ्रबोध	काशीनाथ		दे० का०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·८ × १०·५ सें० मी०	२९ (१८–४०, ४३–४८)	९	३६	अपू०	प्राचीन सं० १८८२	इति श्री काशीनाथ भट्टाचार्य कृतौ चतुर्थ प्रकरणम् ४ समाप्तं शुभमस्तु, संवत् १८८२ के · ···
२९ × १४·५ सें० मी०	४५	१०	२२	पू०	सं० १९०९ शाके १७७४	इति श्री काशीनाथ कृतौ शीघ्रबोधं होराचक्र प्रकर्ण चतुर्थं संपूर्ण ॥०॥ सं० १९०९ शाके १७७४ मासोत्तमे मासे, आश्विन मासे शुक्लेपक्षे शुभं तिथौ ॥१३॥ त्रयोदस्यां सोमवासरे लिखितं मिश्रनथमल जी महाराजाधिराज पंडिताधिराज लिषि बिहारी के खातीर शुभं लिषि मुकलंपुरामध्ये श्री श्री श्री श्री ··· ··· ··· ···
२९·५ × १२·१ सें० मी०	३५ (२–३६)	१०	३६	अपू०	प्राचीन	
१४·८ × १३·५ सें० मी०	८ १–८ (९ पत्र फुटकल)	११	१५	अपू०	प्राचीन	
२३·७ × १०·७ सें० मी०	४१ (१–३४, ३६–४२)	१०	४०	अपू०	प्राचीन सं० १७९०	इति श्रीकाशिनाथभट्टाचार्य्यकृतौ शीघबोधः समाप्तः ॥ + + + सं० १७९० चइत्र मासे सुक्लपक्षे १० वारबुधवार के पोथी संपूर्णं लिखितं काशीयमध्ये पोथि संपूर्णं संवत नाम रक्तबीज ॥
२०·५ × १४·७ सें० मी०	३० (३–३२)	१६	१७	अपू०	सं० १८६०	इति श्री काशीनाथकृतौ शीघ्रबोधचतुर्थौ पकर्णः संपुरणं समापि्तम् ॥ संवत् १८६०॥ साके १७२५ गत षष्टाध्योरमध्ये चैत्रादौभावानामसंवत्सरे ··· ॥
२९·२ × १४ सें० मी०	४७ (१–८, १०–४८)	९	२४	अपू०	प्राचीन	इति श्री काशीनाथ भट्टाचार्य कृतौ शिघ्र बोधे समाप्तिप्रकरणं चतुर्थम् ···॥
२३·१ × ११·१ सें० मी०	३७	८	३०	अपू०	प्राचीन	इति श्री काशीनाथ कृते शीघ्रबोध··· ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है
१	२	३	४	५	६
६३८	३६०५	शीघ्रबोध	काशीनाथ		दे० का०
६३९	७३५२	शुकचंद्रिका	सेवाराम दैवज्ञ		दे० का०
६४०	४५८६	शुकजातक			दे० का०
६४१	७६४८	शुद्धिदीपिका	श्रीनिवास		दे० का०
६४२	२५३२/१७	शुभाशुभविचार			दे० का०
६४३	७०५६/३	शुभाशुभ स्वप्न फल			दे० का०
६४४	५६०७	षट्ग्रही फल			दे० का०
६४५	३४८३	षट्पंचाशिका	भट्टोत्पल		दे० का०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·५ × १३·३ सें० मी०	३३ (१–२६, २८–३४	१०	३६	अपू०	प्राचीन	
३०·६ × १४·६ सें० मी०	१३ (१–१३)	१२	३२	अपू०	प्राचीन सं०१८६५	इति दैवज्ञ सेवाराम विरचिते शुक-चंद्रिका समाप्तं मंगलं ददातु संवत् १८६५ मार्गेकृष्णपक्षे ······ ॥
३४ × १६·१ सें० मी०	६	१५	३४	अपू०	प्राचीन (खडित)	इति श्री शुकजात के निषेकजन्माध्यायः। (पृ० ३)
१५·७ × ११·२ सें० मी०	५६	१३	२१	पू०	प्राचीन सं०१८४६	इति श्री महीतापनीय सत्पंडितश्री श्रीनिवास कृतायां शुद्धिदीपिकायां यात्राध्यायो नामाऽष्टमोध्यायः।······ सं० १८४६ मि० माह वदी ३० शर्निवासरे ···
१३·७ × ११·५ सें० मी०	२३½	११	२१	पू०	प्राचीन	
२२·४ × १६ सें० मी०	६ (१–६)	११	३२	पू०	प्राचीन	
२१·६ × १०·६ सें० मी०	६ (१–६)	६	३८	अपू०	प्राचीन	अथ षडग्रही फलं ॥ (प्रारंभ)
२६·८ × १४ सें० मी०	१५ (१–१५)	१३	४६	पू०	सं०१८८३	इति श्री भट्टोत्पल विरचितायां षट्-पंचाशिकायां होरायां मिश्रिकाध्यायः समाप्तः ७॥ समाप्तोयं ग्रंथः शुभमस्तु संवत् १८८३ श्रावणेमासे शुक्लपसे तिथौ ८ शुक्रवारे ··· ।

(सं०सू०२-१६)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है
१	२	३	४	५	६
९४६	४०६८	षट्पंचाशिका (मिश्रकाध्याय)			दे० का०
९४७	२४८२	षट्पंचाशिका			दे० का०
९४८	४८१७	षट्पंचाशिका	भट्टोत्पल		दे० का०
९४९	५०५४/१५	षट्पंचाशिका	पृथुयशा		दे० का०
९५०	५३६३	षट्पंचाशिका (टीका)	पृथुयशा	दामोदर दैवज्ञ	दे० का०
९५१	५२०५	* षट्पंचाशिका (सटीक)	पृथुयशा	भट्टोत्पल	दे० का०
९५२	२५८	षट्पंचाशिका (टीका)		भट्टोत्पल	दे० का०
९५३	२४१	षट्पंचाशिका (संस्कृत टीका)	भट्टोत्पल		दे० का०

लिपि ७	पत्रों या पृष्ठों का आकार ८ अ	पत्रसंख्या ब	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या स	 द	क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण ९	अवस्था और प्राचीनता १०	अन्य आवश्यक विवरण ११
दे०	२१·८×१०·२ सें० मी०	९ (१–९)	६	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री षट्पंचाशिकायां मिश्रकाध्यायः
दे०	१९·६×९·२ सें० मी०	९ (१–९)	६	२५	पू०	सं०१८०८	इतिषट्पंचाशिकायां मिश्रिकाध्यायः ॥ समाप्तोयं ग्रंथः संवत् १८०८ शाके १७३ पौषमासे कृष्णपक्षे ··· ॥
दे०	२८·८×१४·७ सें० मी०	२० (१–२०)	१२	४०	पू०	सं०१८५३	इति श्री भट्टोत्पलविरचितायां षट्पंचाशिकायां प्रश्नहोरावृतौमिश्रकाध्यायः ॥ शुभमस्तु ॥ सं० १८५३ भाद्रपद शुक्ल अष्टमी ८ ॥
दे०	१६×७·८ सें० मी०	७ (१–७)	८	२१	पू०	प्राचीन सं०१८२५	इतिषट्पञ्चाशिकायांप्रकीर्णकाध्याय : सप्तमः समाप्तः ॥७॥ समाप्तश्चायंग्रंथः शुभमस्तु श्रीकृष्णायनमः इषुद्याष्टचन्द्रैर्मिते वर्षवृन्देनभःशुक्लपक्षेऽविष्णु तिथौ सोमवारे भवानी प्रसादेन पुस्तंव्यसे ···
दे०	२९·५×११·७ सें० मी०	१७ (१–१७)	८	३९	पू०	प्राचीन	इति श्री दामोदर दैवज्ञ विरचितायां षट्पंचाशिकायां टीकायां सप्तमोध्यायः ॥७॥ शुभमस्तु ॥ संवत् १९८ ··· मिती फालगु शुक्ल १३ वार बृहस्पति ॥
दे०	२३·७×८·८ सें० मी०	६ (१–६)	१०	४६	पू०	प्राचीन सं०१६३८	इति उत्पलसप्त विं० समाप्ता ॥ शुभ मस्तु ॥ संवत् १६३८ समये कार्तिक सुदि १ प्रतिपत् सनिवासरे । भट्टोत्पलेन शिष्यान् कंपया यथालोक्य सर्व शास्त्राणि आ ··· ॥
दे०	२८·८×१·०९ सें० मी०	१८ (१–१८)	१०	४१	पू०	प्राचीन सं०१८९०	इति षट्पंचासिका समाप्तं सं० १८९० साके १७५५ मासोत्तमे माशेका ··· लिख ज्वालादत्त पठनार्थं शुभं ··· अतिशुद्धमतं अशुद्धंवा ममं दोशो न दियतां ॥
दे०	२४·२×१०·६ सें० मी०	१५ (१–१५)	१३	४८	पू०	प्राचीन	इति श्री भट्टोत्पलकृत विरचितायां षट्ठंचाशिकायां विवृतौप्रकीर्णकाध्यायः समाप्तः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है
१	२	३	४	५	६
६५४	२५३२ १७	षट्पंचाशिका (संस्कृत टीका)	भट्टोत्पल		दे० का०
६५५	४१६३	षट्पंचाशिका (सटीक)	पृथुयश	भट्टपल	दे० का०
६५६	४२१८	षट्पंचाशिका (हिंदी टीका सहित)	पृथयश		दे० का०
६५७	२२७२	षट्पंचाशिका	पृथुयश		दे० का०
६५८	७०८६	षट्पंचाशिका	पृथुयश		दे० का०
५६६	६६१६	षट्पंचाशिका ('प्रकाश' संस्कृत टीका)	पृथुयश	दामोदर दैवज्ञ	मि० का०
६६०	३६०३	षट्पंचाशिका (सटीक)	पृथुयश		दे० का०
६६१	५२०६	षट्पंचाशिका	पृथुयश		दे० का

लिपि	पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
७	८ अ	ब	स	द	९	१०	११
दे०	१३·७ × ११·५ सें० मी०	२०½	१५	३६	पू०	शक१७८०	इति श्री भट्टोत्पलविरचितायां षटपंचासिकायां समाप्तः शुभमस्तु संवत् २४ शा १७८०
दे०	३३ × १४ सें० मी०	४ (१–४)	१४	६६	पू०	प्राचीन	
दे०	३४·५ × १३·५ सें० मी०	६	१५	५८	पू०	प्राचीन	इति षट्पंचाशकायांषष्टोध्यायः। अथमिश्रकाध्यायो व्याख्यायते।···
दे०	२३·५ × १०·३ सें० मी०	४ (१–४)	१०	३३	पू०	प्राचीन	इति श्री वराह मिहिरात्मजपृथुयशो विरचिता षट्पंचाशिका संपूर्णा ॥ शिव शिव शिव श्रीरस्तु शुभम्।
दे०	२२.२ × ११·६	६ (१–६)	९	२४	पू०	प्राचीन सं०१८७२	इति श्री वराहमिहिरात्मजपृथुयशसविरचिते षट्पंचासिकायां सपूर्णाम् रामायसंवत् १८७२ भाद्रपद कृष्णपक्षे ८ अयोध्याक्षेत्रे नागेश्वर समीपेनागेश्वरा॰ यनमः गंगातटे × × ×।
दे०	२८·५ × ११·३ सें० मी०	९ (१–९)	१०	५६	पू०	प्राचीन	इति श्री दमोदर दैवज्ञ विरचितायां षट्पंचाशिकायां सप्तमोध्याय समाप्तश्चायं ग्रथः।···
दे०	२६ × १२ सें० मी०	४	११	३६	पू०	सं०१८८३	इति वराहमिहरात्मज पृथुजस विरतायां षट्पंचाशिकायां मिश्रिकाध्यायः। समाप्तं संवत् १८८३ ॥ शुभभूयात॥
दे०	२३.८ × ८.९ सें० मी०	१	५	४२	अपू०	प्राचीन सं०१६३८	इति श्री षट्पंचाशिका समाप्ता॥ संवत् १६३८ समये ··· ···

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९६२	५४६७	षट्पंचाशिका	पृथुयश		दे० का०	दे०
९६३	२४७६	षट्पंचाशिका	भट्टोत्पल		दे० का०	दे०
९६४	४०५७	षट्पंचाशिका	भट्टोत्पल		दे० का०	दे०
९६५	२६३१	षट्पंचाशिका विवृत्ति	भट्टोत्पल		दे० का०	दे०
९६६	३७२५	षट्पंचाशिका (टीका)	पृथुयश	नीलोत्पलभट्ट	दे० का०	दे०
९६७	७३०८	षट्पंचाशिका होरावृति	भट्टोपल		दे० का०	दे०
९६८	७३२९	षट्पंचाशिका होरावृत्ति	पृथुयश	भट्टोत्पल	दे० का०	दे०
९६९	६३२५	षष्टिसंवत्सरी (सटीक)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१·२ × १०·३ सें० मी०	५ (२–४, ६–७)	८	२२	अपू०	प्राचीन	इति श्री वराहमिहिरात्मजविरचितायां षट्पचासिकायां नष्टप्राप्तिज्ञान षष्टमोध्याय ॥ × × × ॥
२५ × १०·२ सें० मी०	४ (३–६)	८	३३	अपू०	प्राचीन	इति श्रीभट्टोत्पल विरचितायां षट्पंचासिकायां होरावृत्तौ मिश्रिकाध्याय: सप्तम: ।७।।
२६·५ × ११·५ सें० मी०	६ (१-४,७-११)	१२	३३	पू०	सं०१९०६	इति श्री भट्ट।त्पलविरचि तयांषटपंचाशिका वृत्तौमिश्रकाध्याय: सप्तम: ॥ समाप्त: ॥ संवत् १९०६ ॥
२६·४ × १२ सें० मी०	१२	७२	४६	अपू०	प्राचीन	
२३ ३ × ११·३ सें० मी०	१२	१२	४१	अपू०	सं०१८६२	इति श्री वराहमिहिरात्मजविविरंचिताया षटपंचाशिकायां मिश्रिकाध्याय: सप्तम ।।७।। समाप्त: सं० १८६२ अस्वन " इति श्री भट्टोत्पलीविरंचतोयाषटिपञ्चसकायां वृत्तौ: मिश्रकाध्याय: सप्तम सुषऽस्तुयादिकं पुस्तकं द्रष्टातादसं लिष्यते मया यदि शुद्धिमसुद्धवा ममदोषो न दीयते ॥ अस्वनि सुदि १० सुक्रं सं० १८६२ ता दिन पुस्तकं संपूर्नं
२३·३ × १२ सें० मी०	५ (१–५)	१३	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री भट्टोत्पल विरचितायां षट्पंचासिकायां होरावृत्तौ जयपराजयाध्यायस्तृतीय :३···(पृ० ४)
२०·२ × ९·५ सें० मी०	३ (१–३)	५	२२	अपू०	प्राचीन	केशाजार्कनिशाकरान् क्षितिजविज्जीवास्फुजित्सूर्यंजान्, विघ्नेशं स्वगुरूं प्रणम्य शिरसा देवीं च वागीश्वरीं ॥ प्रश्नज्ञानवतो वराहमिहिरापत्यस्य सद्वस्तुनो, लोकानां हितकाम्यया द्विजवरष्टीकां करोत्युत्पल: ॥१॥ (प्रारंभ)
२३·५ × १०·५ सें० मी०	४ (२–४)	१९	४५	अपू०	प्राचीन (जीर्ण)	इतिषष्टि सम्वत्सरी टीकायां··· (पृ० ५)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की सख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६७०	१६८२	षोडश गृहविचार			दे० का०	दे०
६७१	३१८८	संकेतकौमुदी (पंचम अध्याय)			दे० का०	दे०
६७२	६६१६	संकेतकौमुदी	हरिनाथाचार्य		दे० का०	दे०
६७३	१७५८	संकेतकौमुदी (भाव प्रकरण)			दे० का०	दे०
६७४	१०८६	संकेतकौमुदी	हरिनाथाचार्य		दे० का०	दे०
६७५	२५६६	संकेतकौमुदी	हरिनाथचार्य		बाँ० का०	दे०
६७६	६१३६	संक्रांति प्रकरण	शिव दैवज्ञ		दे० का०	दे०
६७७	६६३	संक्षिप्त जातक			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२ × ११·७ सें० मी०	७ (१–७)	११	२६	अपू०	प्राचीन	
२३·२ × १०·६ सें० मी०	२३ (१–२३)	८	२५	पू०	प्राचीन सं० १९४०	इति श्री संकेतकौमुद्यां पंचमोऽध्यायः। शुभं भूयात् संवत् १९४० कार्त्तिक शुक्ल १० शनिवार ॥
२६·८ × १०·३ सें० मी०	८ (१–८)	१३	५१	पू०	प्राचीन सं० १९२६	इति श्री हरिनाथाचार्य विरचिता संकेत-कौमुदी संपूर्णा ॥
२४·६ × १०·५ सें० मी०	१८ (१–१८)	१०	२८	पू०	सं० १८८३	इतिश्रीशंकेतकौमुद्यां भावप्रकरणे श्रीहरीनाथाचार्यकृतायां सप्तमोध्यायः ॥ श्रीरस्तु।लीं० दूवे गोविंदजी स्वार्थमीति पौषशुक्ल ५ भौमे संवत् १८८३ श्री ॥
१७·४ × १३·३ सें० मी०	१९ (१·११-१३-२०)	११	२३	अपू०	प्राचीन सं० १९४५	इति श्रीहरिनाथश्चार्य कृतायां संकेत-कोमद्यां न१ग्रह भावफलं पंचमोध्यायः सप्तंशभम् ५ । श्री नृपति विक्रमादित्य सं० १९४५ कार्तिक शुद तृतियायां भौमवासरे पुस्तक संकेतकौमुद्यां पुस्तकदितु राम शुभम् कल्याणमं ॥
२५ × १०.७ सें० मी०	१३ (२–८,१०-१५)	१०	३५	अपू०	प्राचीन	
२२ × ९·८ सें० मी०	१२ (१–१२)	१०	४१	पू०	सं० १८५६	इति श्री नागेश दैवज्ञ सुत श्री शिव दैवज्ञ विरचितं संक्रांति प्रकरणं समाप्तम् ॥ सवत् १८५६ श्रावण कृष्ण चतुर्दश्यां १४ बुधे गोकुलनाथेन लिखितमिदम् ॥
२७·७ × ११·७ सें० मी०	१	७	३१	अपू०	प्राचीन	
(सं०सू० २-१७)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है
१	२	३	४	५	६
९७८	९८०	संक्षिप्त जातक			दे० का०
९७९	४८४०	संक्षेप जातकनिर्णय	शिवदयाल		दे० का०
९८०	७६१८	संग्रामनिर्णय			दे० का०
९८१	६९६६	संज्ञातंत्र प्रकाश (सहमाध्याय व्याख्या)	नीलकंठ	विश्वनाथ दैवज्ञ	दे० का०
९८२	२२६६	संज्ञाविवेक विवृति	माधव		दे० का०
९८३	२२७०	संतानदीपिका			दे० का०
९८४	४०५६	संतानदीपिका			दे० का०
९८५	४२५१	संवत्फल			दे० का०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२६·८ × ११·३ सें० मी०	२३ (२-६,१४ २६)	८	३१	अपू०	प्राचीन	
३४·५ × १३·५ सें० मी०	१७ (१,४-१६)	६	३८	अपू०	सं० १६१८	इति श्री संक्षेप जातक नीर्णय शीवद्याल कृतौ त्रिपतिय प्रकरणं वालहेतं वे विरचितं कादुस्फुट वृहज्जातक मते संक्षेप जातकं संपूर्णम् ॥ शुभ संवत् १६१८ शाके १७८३ × ×
२०·६ × ६·४ सें० मी०	१८ (३-१८,२०, ३३)	८	२५	अपू०	प्राचीन सं० १८२६	इति श्री समर विजये संग्राम निर्णय समाप्नमू रंध्र युग्म वसु चंद्रचाब्दके चाश्विने तिथि ॥
२६·३ × ११ सें० मी०	३५ (७४–१०८)	७	३८	अपू०	सं० १७१६	इति श्री दिवाकर दैवज्ञात्मज विश्वनाथ दैवज्ञ विरचिते नीलकंठज्योतिर्वित्कृतं सज्ञातंत्रे सहमाध्यायस्य व्याख्योदाहृतिः समाप्त अकारिविश्वनाथेन संज्ञा तंत्र प्रकाशिकाः ॥ अंक चंद्रगिरिचंद्र संमिते विक्रमस्य ॥
२७·३ × ११·२ सें० मी०	१६ (१–१६)	१३	४६	पू०	प्राचीन	इति विद्वद्दैवज्ञमुकुटभूषण गोविंद ज्योतिर्वित्सुनु माधव ज्योतिर्विद्विरचितायां संज्ञाविवेक विवृतौ शिशु वोधिन्यां राशिस्वरूपादि प्रकरणं समाप्तिमगमत् ॥ लिखितं हरीरामदीक्षित मंडलेकरेण स्वार्थं। शुभं भूयाल्लेखक पाठकानां ॥
२१·१ × ८·४ सें० मी०	१३ (१–१३)	७	२६	पू०	प्राचीन सं० १६३०	इति संतानदीपिकायां पुत्र भावानिरूपणाध्यायः समाप्तः ॥ श्रीगजानभार्पणमस्तु। इंद पुस्तकं श्री त्र्य वकेश्वर सन्निधौ सं० १६३० ॥ मिति वैशाख कृष्ण १३ बुधवार ॥
२४·४ × १२·५ सें० मी०	४ (२–५)	१२	४६	अपू०	सं० १८२६	इति संतानदीपिका समाप्ता ॥ संवत् १८२६ शके १६६१ चैत्र सुदि ६ बुधे पुस्तकलिखितं मल्लिनाथेंन ॥
२३·२ × १५·५ सें० मी०	२८	२०	२०	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९८६	४९८१	संवत्सर फल			दे० का०	दे०
९८७	१५८२	संवत्सर फल			दे० का०	दे०
९८८	५८०३	संवत्सर फल			दे० का०	दे०
९८९	५९५१	संवत्सर फल			दे० का०	दे०
९९०	५९७४	संवत्सर फल			दे० का०	दे०
९९१	१३०७	संवत्सर फल (प्रश्नकेवली)			दे० का०	दे०
९९२	२००२	संवत्सर फल			दे० का०	दे०
९९३	४२९१	संवत्सर फल (टीका)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथपूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०·६ × १२ सें० मी०	४ (१–४)	११	२९	अपू०	प्राचीन	
२६ × १०·७ सें० मी०	३	१४	३०	अपू०	प्राचीन	
१९·५ × १०·२ सें० मी०	४ (१–४)	११	२२	पू०	प्राचीन	आयुष्यं क्षेममारोग्यं पुत्रपौत्रादिकं तथा ॥ लभते मानव नित्यं श्रुत्वा सांवत्सरं फलम् ।।३।। (पृ०–१)
१८·५ × ११·४ सें० मी०	७	१३	२९	पू०	प्राचीन	
१७·५ × १०·८ सें० मी०	२० (१-१२,१४-१६-१८-२२)	९	२२	अपू०	प्राचीन सं०१८८	× × × संवत १८८६
२६·२ × ११ सें० मी०	४ (२–५)	१६	४१	अपू०	प्राचीन	इति संवत्सर फलं··· ···प्रश्नकेवली संपूर्णं ।।१।। ज्येष्टे च मासे कृष्णेच पक्षे ··· ··· ··· ··· ···
२२ × १२·५ सें० मी०	१३	१२	३२	अपू०	प्राचीन	
२३·२ × १२ सें० मी०	१३ (४,६–११ २०–२४, एक जीर्णपत्र)	९	३९	अपू०	प्राचीन	इति प्रजापति कालं अथाश्चंगिरा नाम संवत्सरटीका ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९९४	१४४८	संवत्सरमासफलं			दे० का०	दे०
९९५	१६८०	संवत्सराध्याय:	गोपीनाथ		दे० का०	दे०
९९६	४३०५	संवत्सरादिफल			दे० का०	दे०
९९७	४८५५	संवत् साष्ठिकासर			दे० का०	दे०
९९८	७४३२	सप्तविंशति नक्षत्रमंत्र			दे० का०	दे०
९९९	७४०२	समरविजय			दे० का०	दे०
१०००	४७६१	समरसार	रामचंद्र सोमयाजी		दे० का०	दे०
१००१	४८१	समरसार (सरला टीका सहित)	रामचंद्रसोमयाजी	भरत	दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
२८·७ × १३·५ सें० मी०	१४ (१–१४)	१०	२९	अपू०	प्राचीन	
२२·१ × १४·२ सें० मी०	२० (१-८,१२, १४-१६,२४-३२-३४,४२)			अपू०	प्राचीन सं०१८९५	
२४·५ × १०·३ सें० मी०	१८ (१–१८)	११	३१	पू०	सं०१८५२	इति संवत्सरादि फलानि संपूर्णानि × सं० १८५२ शक १७१७ ।। श्री मणिकार्णिकायै नमः ।।
२१ × ८·८ सें० मी०	१९ (१–१९)	६	३२	पू०	सं०१८६०	इति श्री सम्वतसाष्ठिकासर समाप्तम् ।। सं० १८६० साके १७२५ समै आषाढ़-मासे शुल्कपक्षे द्वतिया ··· ··· इत्यश्विन्यादिन नक्षत्र मंत्र समाप्ताः ।।··· श्री रस्तु संवत् १८९२ ··· ।।
२४·१ × ११·२ सें० मी०	४	१०	३२	अपू०	प्राचीन	
२०·७ × ९·२ सें० मी०	१० (१९,२१-२६, २९-३१)	८	२७	अपू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामले समर विजये त्रैलोक्य विजया भूमिः बलावल प्रकरणं अथाष्ट-विधिराहु लिख्यते ।।
२८·२ × १४·४ सें० मी०	६ (१–६)	१५	४१	पू०	प्राचीन सं०१८८६	इति श्री श्री रामचंद्रविरचितं समरसार संपूर्णं शुभमस्तु ।। संवत्सरे घी ६ द ८ द ८ य १ त्सु १८८६ शुक्लेमिया १५ तिथौ मुरलीदत्तेन लिखितं ··· ।।
२२ × १३·५ सें० मी०	२१	१६	४५	पू०	सं०१८३७	इति श्रीरामचंद्र सोमयाजी विरचित समरसारटीका भरतकृत समातप्म् । ग्रंथकृतो रामस्य भ्राता भरतो लघु-विद्वान् टीकामेनामकरोत ग्रंथार्थ प्रका-शिका सरला टीका स्वकृतेछे भरत नेमामे पौते श्रीराम चद्रार्थ वाजपेयी ये कैटी श्लोवि, शुभ मस्तु सं० १८३७ पौष कृस्नाहरविदिने लिपि कृतं शिव कर्णेन नौबत रायस्यार्थ ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१००२	२७३०	समरसार		भरत	दे० का०	दे०
१००३	३८४७	समरसार (टीका)	राम वाजपेयी		दे० का०	दे०
१००४	४४६२	समरसार (व्याख्या)			दे० का०	दे०
१००५	७३७४	समरसार संग्रह टीका	रामचंद्र सोमयाजी		दे० का०	दे०
१००६	६८४५	सर्वतोभद्रचक्र			दे० का०	दे०
१००७	६८४३	सर्वसार प्रश्नदीप			दे० का०	दे०
१००८	१९२२	सर्वार्थचिंतामणि	वेंकट नायक		दे० का०	दे०
१००९	६२४६	साठिका (हिंदी टीका)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७ × ११·१ सें० मी०	५ (१–५)	१०	४२	अपू०	प्राचीन	
३१ × १३·५ सें० मी०	२० (१–२०)	१५	५१	अपू०	सं०१८८९	इति श्री काशिवासी दिक्षित मसांवत्मरविरचितं समसार टीप्पणम् समाप्तम् शुभमस्तुः संबत् १८८९ शाके १७५४ अश्विन शुक्ला सप्त७म्यांचंद्रे लिपि···।
३०·५ × १२·२ सें० मी०	१८ (१-४,१२-१५ १७,१९,२०, २५,२७-) ३१,३४	१०	४७	अपू०	प्राचीन	
३०·१ × ११·५ सें० मी०	१६ (१–१६)	१६	५४	पू०	प्राचीन सं०१८८८	इति श्री रामचंद्र सोमयाजि विरचितासमार सार संग्रह टीका समाप्ता शुभमस्तु मार्ग वदि ३ भौमेकः संवत् १८८८ के···।
२५·८ × १०·३ सें० मी०	१५ (१–१५)	१२	४४	पू०	प्राचीन	इति सर्वतोभद्र चक्रं ब्रह्मयाभलोक्तं समाप्तं ॥
२१·५ × १०·१ सें० मी०	१	१०	४५	पू०	प्राचीन	इति सर्वसार प्रश्न दीपः समाप्तः ॥
२४ × १० सें० मी०	२५	९	४०	अपू०	प्राचीन	
२१·८ × ११·२ सें० मी०	४९ (२–४६, ४८–५१)	९	२५	अपू०	प्राचीन सं०१८८२	इति श्री वृहस्पतिकांड संपूर्ण शुभमस्तु ॥ चैत्रमाशि कृष्ण पक्षे तिथौ तृतीयां चन्द्रवाशरान्यतायां ॥ सम्वत् १८८२ ॥

(सं०सू० २-१८)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है
१	२	३	४	५	६
१०१०	५१०४	सामुद्रिकशास्त्र			दे० का०
१०११	५६६२	सामुद्रिक			दे० का०
११२	५८८१	सामुद्रिक			दे० का०
१०१३	२७२१	सामुद्रिकशास्त्र (स्त्रीपुरुषलक्षण)			दे० का०
१०१४	१४०६	सारचिंतामणि			दे० का०
१०१५	६६४५	सारावली	कल्याण वर्म		दे० का०
१०१६	५६६३	सारावली	कल्याणवर्म		दे० का०
१०१७	५७७०	सारावली	कल्याण वर्म		दे० का०

लिपि	पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
७	८ अ	ब	स	द	९	१०	११
दे०	२३·२ × १० सें० मी०	८ (३,५-९,१३-१४)	१२	२६	अपू०	प्राचीन	इति समुद्रिके स्त्री लक्षणे षष्टोध्यायः ॥ समाप्तः ॥
दे०	२५·८ × ११ सें० मी०	९ (१–९)	८	३१	अपू०	प्राचीन	··· ··· सामुद्रिकं प्रवक्ष्यामि लक्षणं पुरुषस्त्रियो ··· ··· (आदि)
दे०	२३·८ × ७·८ सें० मी०	४ (१–४)	८	३१	अपू०	प्राचीन	
दे०	२० × १२·६ सें० मी०	१३ (१–१३)	१०	३०	पू०	प्राचीन सं०१८१४	इति श्री सामुद्रिके स्त्री लछणे पंचमोध्यायः॥ समाप्तं॥ सं० १८१४ फालगुन सुदि ··· पुस्त्री लक्षण श्लोक॥
दे०	२२·१ × १४·७ सें० मी०	६ (१–६)	१४	४०	पू०	सं०१८९४	इति श्रीविश्वनाथविरचितेष्टकवर्गसारे सारचिंतामणौ लग्नाष्टकवर्गनिर्देशो नाम नवमोध्यायः सं० १८९४ तत्र कार्तिक वदि ११ बुधवासरे लिषतं मिश्र हरनंदात्मपठनार्थं शुभं मंगलं ददातु श्री रस्तु ॥
दे०	२५·३ × १०·५ सें० मी०	१०१ (३–१०३)	१३	४२	अपू०	सं०१६७९	इति श्रीभूत्कल्याणवर्मरचितायां सारावल्यां ··· तृतीयः। (पृ० ३)। सारावली ग्रंथ सपूर्णं ॥संवत् १६७९॥
दे०	२५·५ × ८ सें० मी०	१६ (४-११,१५, १७,१८,२०, २१,२६,३०, ३१)	६	४६	अपू०	प्राचीन	इति श्री कल्याण विरचितायां सारावल्यां ग्रहयोनिभेदाध्यायः॥ (पृ० ९)
दे०	२१.७ × १०.२ सें० मी०	२० (१-९,११-१४ १६-२२)	९	३१	अपू०	प्राचीन	इति श्री मद्कल्याण वर्म विरचितायां सारावल्यां मिश्रकाध्यायः पंचमः॥ (पृ० ११)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०१८	४६२३	सारावली			दे० का०	दे०
१०१९	४३४३	सारावली			दे० का०	दे०
१०२०	६६४३	सिद्धांतकौस्तुभ (भूगोलरचनाध्यायः)	गोपिराज		दे० का०	दे०
१०२१	६६६५	सिद्धांततत्त्वविवेक	कमलाकर		दे० का०	दे०
१०२२	२२६७	सिद्धांतरहस्य	विश्वनाथ		दे० का०	दे०
१०२३	६६४७	सिद्धांतरहस्योदाहरण (ग्रहलाघव टीका)	विश्वनाथ दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१०२०	६८६७	सिद्धांतराज	बालकृष्ण		दे० का०	दे०
१०२५	३७३६	सिद्धांतशिरोमणि (ग्रहगणित अध्याय)	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६ × १२·५ सें० मी०	७	११	४६	अपू०	प्राचीन (जीर्ण)	इति सारावल्यांपंचग्रहाध्याय स्त्रयोदशः ।।··· ··· ···
३१ २ × १४·४ सें० मी०	४ (१–४)	१७	५५	पू०	प्राचीन	इति सारावल्यांनष्टजातक नामाध्यायः ।।
३१ × १२·५ सें० मी०	२ (१–२)	७	३४	पू०	प्राचीन शाके १७७१	इतिश्री दैवज्ञ गोपिराज विरचिते सिद्धान्तकौस्तुभे भूगोल रचनाध्यायः ।। शाके १७७१ कार्तिके धवले ८ बुधे लि० कृष्णलालेन काश्याम् ।
२६ ३ × ११ सें० मी०	७२ (२–७३)	८	४३	अपू०	प्राचीन	।। इति । श्रीकमलाकरविरचिते सिद्धांततत्वविवेके मध्यमाधिकारः ।। (पू० ३४)
२४ × १०·५ सें० मी०	१५ (१–१५)	११	५०	पू०	प्राचीन सं० १८६६	इति श्रीदैवज्ञाचार्य दिवाकरात्मज विश्वनाथविरचितं सिद्धांतरहस्योदाहरणं समाप्तिमिति मजगात् संवत् १८६६ ।
२५·२ × ११ सें० मी०	२० (११–३०)	१३	४८	अपू०	सं० १६६३	इति सिद्धान्त रहस्योदाहरणं समाप्तं ।। सवत ··· ·· शाकेऽहिमारुतशरेंदुमिते १५५८ नभस्ये पक्षेऽसिते भृगुसुताहनि भूत तिथ्यां···
२७·८ × १३·७ सें० मी०	७१	११	३५	अपू०	प्राचीन	इति श्री बालकृष्णाख्य वेदवृक्ष सुनिर्मिते सिद्धान्तराज संज्ञेत्र पातालानां-निरूपणं ।···(पू० २८)
२०.२ × १०·२ सें मी०	६२ (१–६२)	११	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री भास्करीये सिद्धान्त शिरोमणौ पाताधिकारः ।। समाप्तोऽयं ग्रहगणिताध्यायः ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है
१	२	३	४	५	६
१०२६	३७३७	सिद्धांतशिरोमणि (गोलाध्याय)	गणेश दैवज्ञ		दे० का०
१०२७	६६२३	सिद्धांतशिरोमणि (बीजगणित अध्याय) टीका	भास्कराचार्य		दे० का०
१०२८	३४३३	सिद्धांतशिरोमणि	भास्कराचार्य		दे० का०
१०२९	८१०	सिद्धांतसंग्रह			दे० का०
१०३०	५३३२/८	सिद्धांतसार			दे० का०
१०३१	३६५६	सिद्धांतसार चिंतामणि			दे० का०
१०३२	७७००	सिद्धांतसुंदर (बीजगणिताध्याय)	ज्ञानराज		दे० का०
१०३३	६६२७	सुखबोध (मुहूर्त्तसारसंग्रह)	रघुनाथ		दे० का०

लिपि	पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
७	८ अ	ब	स	द	९	१०	११
दे०	२१·२ × १०·२ सें० मी०	५१ (१–५१)	११	३१	पू०	प्राचीन	
दे०	२४·३ × १२ सें० मी०	२४ (२–२५)	११	३७	अपू०	प्राचीन	
दे०	३२·८ × ११·९ सें० मी०	२५ (१–२५)	११	४०	पू०	प्राचीन सं० १९०३	इति श्री भास्करीये सिद्धान्त शिरोमणौ ग्रहाणां पाताध्यायः एकादशः ११ ··· प्रथमाध्याय संपूर्णम् ।। सं० १९०३ शाके १७६८ ··· ··· ।।
दे०	२७·२ × ११·५ सें० मी०	४१ (१–४१)	९	४०	पू०	प्राचीन सं० १९३६	इति श्री सीध्यांन्त संग्रह समाप्तम् ॥ सं० १९३६ शाकाब्द १८०१ मासानांमासोत्तमेमासे फाल्गुणमासे शुल्कपक्षे ११ चन्द्रवासरे लिषित्वा गौरीशर्म्मणे स्वयं पाठार्थंहेतवे ।।
दे०	२१·६ × १४·९ सें० मी०	७ (१–७)	१२	२३	पू०	प्राचीन	इति शिद्धांतसार। लिषत। म् विद्यार्थी कुड़े। (पृ० ७) ··· श्री युक्ता गौड विप्रा हरि रस कवयो हेतवे सज्जनानां कुर्मः सिद्धांत सारं सुर मुनि मतजां तत्वपंचा-सिकांतां ··· (पृ० १)
दे०	३१·५ × १३·३ सें० मी०	३९ (१–३९)	१२	४१	अपू०	प्राचीन सं० १९०७	इति श्री सिद्धांतसारचिंतामणि सं० १९०७ फा० लिखितं मिश्र मुरलिधर ।।
दे०	२५·१ × ११·२ सें० मी०	१६ (१–१६)	११	३४	पू०	प्राचीन	श्री नागनाथो भवद्गोदातीरकरींद्र चारुवदन ध्यानानुरक्तः सदा ।।३।। सूनुस्तस्य गजाननस्य कृपया श्री ज्ञानराजः सुंधर्विस्तारणाद्गणितार्णवादुदहरः सिद्धांतत्सुदरं ।।
दे०	१७·९ × ७ सें० मी०	४० (१–४०)	१२	२६	पू०	प्राचीन	नागेश पुत्रो रघुनाथ नामा श्री मद्भवानी कृपया प्रबंधं ।। चकार तस्मिन्सूखबोधसंज्ञेसद्गोचाराख्यान मिदं समाप्तं ।। (पृ० ३९)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०३४	६४८४	सुबोधिनी	केशवदेव भट्ट		दे० का०	दे०
१०३५	४५६८	सूत्रवृत्त			दे० का०	दे०
१०३६	५३६६	सूर्यसिद्धांत	विश्वनाथ दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१०३७	६८७६	सूर्यसिद्धांत			दे०का०	दे०
१०३८	४६३७	सूर्यसिद्धांत व्याख्या (सटीक)	विश्वनाथ दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१०३९	२८१०	सौर			दे० का०	दे०
१०४०	१२४५	स्त्रीजातक	वृद्धयवन		दे० का०	दे०
१०४१	४७६८/२	स्त्रीलक्षण			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२·५ × १३·३ सें० मी०	७ (३–९)	८	२२	अपू०	प्राचीन	इति श्री केशव देव भट्ट कृतौ सुबोधिन्यां मध्यमाधिकारः प्रथमः (पृ०३)
२२·७ × ९·९ सें० मी०	४ (३७–९)	१०	३५	अपू०	प्राचीन	
३३ × १३·१ सें० मी०	१३ (१२३–१२६, १३९-१४७)	११	२६	अपू०	प्राचीन	इति श्री दिवाकरदैवज्ञात्मज श्री विश्वनाथ दैवज्ञ विरचिते सूर्यसिद्धांत सोदाहरण व्याख्याने गहूनार्थप्रकाशिके वीज साधनाध्यायः समाप्तम् शुभमस्तु ॥
२४·८ × १०·६ सें० मी०	३० (१-३०)	९	३८	पू०	प्राचीन	इति श्री सूर्यसिद्धांते ग्रहस्पष्टीकरणम् ॥ (पृ० ९)
३०·७ × १४·८ सें० मी०	५७ (१–५७)	१३	४१	अपू०	प्राचीन	इति श्री दिवाकरदैवज्ञात्मज विश्वनाथ दैवज्ञ विरचिते श्रीसूर्य्य सिद्धांतस्योदाहरणं व्याख्याने स्पष्टाधिकारः समाप्तः द्वितियः २ (पत्रसंख्या ४१) × × ×
१४·८ × ७·५ सें० मी०	१० (१–१०)	७	१९	पू०	प्राचीन	इति सौर समाप्तः ॥ सं० १८७८-भादोशुल्क सप्तम्यां इंदुवासरे समाप्तः ॥ स्वार्थं परार्थंच ॥
२८·२ × ११·५ सें० मी०	१५ (१–१५)	११	३७	पू०	प्राचीन	इति श्रीवृद्धयवने स्त्रीजातके चंद्रराशिगुणाध्यायः २०४ श्लोकसंख्या २७३ ॥
२१ × १३ सें० मी०	३	१०	४०	पू०	प्राचीन	इति श्री करणादि स्त्रीलक्षणं समाप्तम् ॥
(सं० सू० २–१९)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार
१	२	३	४	५
१०४२	५५५१	स्फुट ज्योतिषसंग्रह		
१०४३	१६५४	स्फुट ज्योतिषसंग्रह		
१०४४	१५७९	ॐ स्वप्नचिंतामणि	जगदेव	
१०४५	१६१९	स्वप्नाध्याय		
१०४६	२८४३	स्वप्नाध्याय		
१०४७	७२९१	स्वप्नाध्याय		
१०४८	५१६९	स्वप्नाध्याय		
१०४९	४९०३	स्वप्नाध्याय		

ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि	पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
६	७	८ अ	ब	स	द	९	१०	११
दे० का०	दे०	१७·२ × ९·५ सें० मी०	६	६	२३	अपू०	प्राचीन	
दे० का०	दे०	१३.२ × ८ सें० मी०	१०	८	१४	अपू०	प्राचीन	
दे० का०	दे०	२०·५ × ८·५ सें० मी०	२३ (१–२३)	८	३७	पू०	प्राचीन सं० १५२५ श० १३९५	··· ··· महत्तमदुर्लभराजात्मजजगदेव-विरचितेस्त्रप्नचिंतामणौदुःस्वप्नाधिकारोद्वितीयः समाप्ता ॥ बा ॥ संवत् १५२५ शाके १३९५ विजय संवत्सरे ॥ माघ शुद्ध ३ गुरूदिने विदुरनगरे सूरत्तानु माहामदसाय विजय राज्ये १ स्वप्नाध्याय पुस्तक लिखितं गणनायक सूतविनायेकेन ··लिखितं परोपकारार्थं ॥
दे० का०	दे०	१९·७ × १०·५ सें० मी०	४	९	२७	पू०	प्राचीन	इति श्री स्वप्नाध्याय बृहस्पतिकृति-संपूर्णं ॥ शुभम् ··· ··· ॥
दे० का०	दे०	२४ × ११ सें० मी०	३	८	२९	पू०	प्राचीन सं० १८८५ श० १७५०	इति श्री स्वप्नाध्यायः समाप्तः संवत् १८८५ साके १७५० आषाढे मासे कृष्णपक्षे तिथौ १० रविवासरे तद्दिने इदंपुस्तकं समाप्तं, शुभमस्तु, मंगलं ददातु ॥
मि० का०	दे०	३४·८ × १२·२ सें० मी०	६ (१–६)	९	३६	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मवैवर्ते पुराणे श्री कृष्ण-कृष्णखंडे श्री कृष्णनंदसंवादे ×
दे० का०	दे०	११·७ × ६·८ सें० मी०	२ (१–२)	१३	२२	अपू०	प्राचीन	··· स्वप्नाध्यायं प्रवक्ष्यामि यथोक्तं गुरुभाषितं ॥ येन विज्ञान मात्रेण ज्ञातव्यं च शुभाशुभं ॥ १ ॥ (प्रारंभ) ॥
दे० का०	दे०	२२.५ × ८·८ मे० मी०	४ (२–५)	७	३०	अपू०	प्राचीन	इति वृहस्पत्युक्त स्वप्नाध्यायः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०५०	६८४६	स्वप्नाध्याय	बृहस्पति		दे० का०	दे०
१०५१	७२२८	स्वप्नाध्याय	बृहस्पति		दे० का०	दे०
१०५२	५३४६	स्वप्नाध्याय			दे० का०	दे०
१०५३	४७६८/२	स्वप्नाध्याय			दे० का०	दे०
१०५४	१०८४	स्वप्नाध्याय			दे० का०	दे०
१०५५	६३४	स्वप्नाध्याय			दे० का०	दे०
१०५६	३१७/२	स्वप्नाध्याय			दे० का०	दे०
१०५७	५८३	स्वप्नाध्याय (शांतिरत्न)	कमलाकर दैवज्ञ		दे० का०	

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४·८ × ११·३ सें० मी०	४ (१–४)	११	२६	पू०	प्राचीन	इति बृहस्पति कृतः स्वप्नाध्यायः ॥
२५ × ११·६ सें० मी०	५ (१–५)	६	३२	पू०	प्राचीन सं० १७८६	इति पुराण समुच्चये गुरुक्तं स्वप्नाध्यायं समाप्तं शुभमस्तु संवत् १७८६॥
२७ × १२·१ सें० मी०	२ (१–२)	१३	४०	पू०	सं० १६२०	इति श्री बृहस्पति आचार्य प्रोक्तं स्वप्नाध्याय समाप्तम् संवत् १६२० ······
२१ × १३ सें० मी०	२	१०	२८	अपू०	प्राचीन	स्वप्नध्यायं प्रवक्ष्यामि यथाक्तं गुरुभाषितं ॥······(पृ ०३)
२८·५ × १३ सें० मी०	७	१०	३१	अपू०		इति स्वप्नाध्यायि संपूर्णम् ।
२३·५ × १० सें० मी०	३	६	३५	पू०	प्राचीन श०१७७४	इति श्री बृहस्पति विर विरचिते स्वप्नाध्यायः समाप्तः ॥ शके १७७४ मार्गशुक्ल ५ तद्दिने दुर्गों पनाम्ना जय हर हमेन लिखितं ॥
१२·२ × ११·२ सें० मी०	१२ (१–१२)	११	२३	अपू०	प्राचीन सं०१८७१	इति श्री आयुर्वेदमते स्वप्नाध्यायः द्वितीयः ॥ सुभंमस्तु सं० १८७१ कार्त्ति शुक्ल ११ बुध वासरे लिषतं गुलावसिंघ ब्राह्मण वुढाणामध्ये शुभं भूयात ॥
२६·७ × ११·४ सें० मी०	४ (१–४)	६	३५	पू०	प्राचीन स० १६१२	इति कमलाकरकृते शांतिरत्नेदुःस्वप्न शांतिसमाप्तम् ॥ लि० विश्वनाथ दीक्षितेन सं० १६१२ मार्गकृष्ण ७ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है
१	२	३	४	५	६
१०५८	३१४५	स्वप्नाध्याय			दे० का०
१०५९	२६१५	स्वरभेद	शिव		दे० का०
१०६०	३५६१	स्वरविज्ञान			दे० का०
१०६१	६८७१	स्वरशास्त्र			दे० का०
१०६२	६८५२	स्वरसार	नंदराम		दे० का०
१०६३	७३८३	स्वरोदय			दे० का०
१०६४	६६०३	स्वरोदय			दे० का०
१०६५	६८०५	स्वरोदय			दे० का०

लिपि	पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
७	८ अ	ब	स	द	९	१०	११
दे०	२७ × ११ सें० मी०	३ (१–३)	९	३८	पू०	प्राचीन सं० १८८९	इति श्री बृहस्पति प्रोक्तं स्वप्नाध्याय: समाप्तम् श्रीरस्तु संवत् १८८९० शाके १७५४ नभ शुक्ल ७ भगौलि लऊमिस्रेन छ ।।
दे०	२४ × ११ सें० मी०	८ (१–८)	८	४५	पू०	प्राचीन सं० १८२२	इति शिव विरचितयां: स्वरंभेदं समाप्तम् ।। संवत् ।।
दे०	१२ × ८·७ सें० मी०	२८ (१–२८)	१०	२३	अपू०		
दे०	१४ × ७·७ सें० मी०	१०	७	१६	अपू०	प्राचीन	इति स्वरशास्त्रां समाप्त: ।।
दे०	२३·८ × १०·६ सें० मी०	१० (१–१०)	१०	२६	पू०	प्राचीन सं० १८४४	इति श्री मिश्र नंदराम विरचित स्वर सार: संपूर्ण: ।। ··· ।। संवत् १८४४ वैशाख शुद्ध पौर्णमास्यां जयपुरे समाप्तिमगमत् ।।
दे०	२७·१ × ११·२ सें० मी०	२१ (१–२१)	९	३८	पू०	प्राचीन	इति श्री ईश्वर पार्वती संवादे स्वरोदय नवप्रकरणं साप्तं × × ।।
दे०	२७·४ × ११·६ सें० मी०	२	१८	५१	अपू०	प्राचीन	
दे०	२४·५ × १०·४ सें० मी०	१७ (१–१७)	९	४६	पू०	प्राचीन	इति स्वरोदय समाप्त श्री गुरूनाथ ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०६६	७१५६	स्वरोदय			दे० का०	दे०
१०६७	५७२४	स्वरोदय			दे० का०	दे०
१०६८	६२३०	स्वरोदय			दे० का०	दे०
१०६९	५६७८	हायनरत्न	बलभद्र		दे० का०	दे०
१०७०	३१०४	हायनरत्न	बलभद्र		दे० का०	दे०
१०७१	४५४	हायनरत्न	बलभद्र		दे० का०	दे०
१०७२	७६२९	हायनरत्न	बलभद्र		दे० का०	दे०
१०७३	७८५८	हायनरत्न	बलभद्र		दे० का	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
२०·९ × १०·८ सें० मी०	८ (१–८)	११	३२	अपू०	प्राचीन	
२०·१ × ९.७ सें० मी०	५ (१–५)	७	१८	पू०	प्राचीन	
२१·६ × १८·५ सें० मी०	३	१३	२८	अपू०	प्राचीन	
३१ × १२·८ सें० मी०	१५४	१२	३४	अपू० (कृमिकृन्तित)	प्राचीन सं० १८९८	इति ···दैवज्ञवर्य पंडितदामोदरात्मज वलभद्र विरचिते हायन रत्ने मासमवेशादिविचाराध्या यौडा ··· ८ समाप्तश्चायं ग्रंथ: श्री सं० १८९८ शाके १७६३ मासोत्तमे माघमासे ··· ···
२३·८ × १०·१ सें० मी०	११२ (९०,१५४-२६४)	९	३८	अपू०	प्राचीन	
३१·९ × ९·७ सें० मी०	६३ (१–४५, ४८–६५)	७	४९	अपू०	प्राचीन	इति श्री मद्दैवज्ञवर्य्य पंडितदामोदरात्मज वलभद्र विरचिते हायनरत्ने सहमाध्यायश्चतुर्थ: ४ अथवर्षेशादि विचाराध्याय: तत्रर्षेश निर्णमुंथाज्ञानं विना नभवत्यत्र आदौमुथहा निरूप्यते—तत्रमुंथा देशस्य व्याख्यान माहुवादव: प्रसूतिलग्न भ्रमनेन भावान्मन्थातिमुंथेति चऊठिरस्या: ॥ शुभाशुभाख्यं ······ ···द्वादश भक्तेतु दुद्धृते ॥
२६·८ × ११·५ सें० मी०	६९ (१–६९)	११	४५	पू०	प्राचीन	इति श्री मद्दैवज्ञवर्य्यं पण्डित दामोदरात्मज वलभद्रविरचिते । हायनरत्ने वर्षेशादि विचाराध्याय: समाप्तोयं श्री ॥········ ···
२३·२ × ११·२ सें० मी० (सं०सू०-२-२०)	५०	११	३६	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०७४	६८१३	हिल्लाज दीपिका			मि० का०	दे०
१०७५	२४६	होडाचक्र			दे० का०	दे०
१०७६	९७९	होडाचक्र			दे० का०	दे०
१०७७	४४८९	होडाचक्र			दे० का०	दे०
१०७८	२२४९	होडाचक्र			दे० का०	दे०
१०७९	१३३६	होडाचक्र			मि० का०	दे०
१०८०	१८८०/२	होडाचक्र			दे० का०	दे०
१०८१	४२०१	होराच			दे० का	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१·८ × ११ सें० मी०	१४ (१–१४)	९	३३	पू०	आधुनिक	इति हिल्लाज दीपिका समाप्तं ॥
२५·२ × ११·३ सें० मी०	५ (१–५)	११	३४	पू०	प्राचीन सं०१९३१	इति होडाचक्रं सम्पूर्णं सं० १९३१ श्रावणमासे कृष्ण पक्षे शुभ तिथौ पंचम्यां ५ तत्रापि रविवार लिखतं मिकुस्व पठनार्थं । यादृशं पुस्तकं दृष्ट तादृशं लिखतं मया यदि शुद्धं अशुद्धं वा मम दोशो न दीयते ॥
२५·८ × १०·७ सें० मी०	६ (१–६)	६	१९	पू०	प्राचीन सं०१९०१	इति होडाचक्रं समाप्तम् लिषतं चौबे व शिव लालस्य आत्मज्यर्थं परार्थं शुभं भवतु ॥ श्री मंगलं ददातिम् ॥ संवत् १९०१ शाके १७३७ ॥
२७·३ × १२ सें० मी०	१० (२–११)	९	३४	अपू०	प्राचीन	इति होड़ाचक्र समाप्तम् ॥
१०.८ × १०·२	१५	१०	१३	अपू०	प्राचीन सं०१८५२	इति लग्न विचार ईति होडाचक्र सं० संपूर्णं समाप्तं शुभसमस्तु सं० १८५२ तत्र वर्षे श्रावण मासे शुक्लेपछे शुभ तिथौ दशम्यायां शिवदत्त ॥ पठनार्थम् नणराम वेटावे नथमल का शुभं ॥
१९ × १५·२ सें० मी०	१४ (१–१४)	१४	२३	पू०	सं०१९१५	शुभं लिषते परथम ज्येष्ठ शुदि १५वार्सा गुरुवासरे संवत्त १९१५ का: शाके१७८० वाचै पढै सीषै ··· गोपाल जी की···
२०·२ × १३·७ सें० मी०	१३	१९	१४	अपू०	प्राचीन	
२५ × १२.९ सें० मी०	३ (१–३)	९	३३	पू०	प्राचीन सं०१९०३	इति श्री होराचक्र समाप्तम संवत् १९०३ चैत्र मांशे कृष्णपक्षे ११ एकादस्यां शनीवासरे ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है
१	२	३	४	५	६
१०८२	८६९६	होराज्ञान			दे० का०
१०८३	७६२४	होरामकरंद	गुणाकर		दे० का०
१०८४	३७१८	होरामकरंद	गुणाकर		दे० का०
१०८५	३६४१	होरामकरंद	गुणाकर		दे० का०
१०८६	४९०६	होरारत्न	रघुवीर		दे० का०
१०८७	५०७६	होरारत्न	रघुवीर		दे० का०
१०८८	४४९९	होरारत्न			दे० का०
१०८९	६०२८	होरारत्न			दे० का०

लिपि	पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
७	८ अ	ब	स	द	९	१०	११
दे०	२४·७ × १३·३ सें० मी०	१८ (१–१८)	१४	२५	अपू०	प्राचीन	
दे०	२३·१ × ११ सें० मी०	५० (१–५०)	१०	३३	पू०	प्राचीन सं० १६७९	इति श्री गुणाकर विरचिते होरा मकरंदे स्वख्याति वर्णनं नाम द्वात्रिंशोध्यायः समाप्तः ॥
दे०	२३·३ × १०·९ सें० मी०	१८ (१–१८)	१३	३८	अपू०	प्राचीन	इति श्रीगुणाकर विरचिते होरा मकरंदे दशाविपाको नाम दशमो ध्यायहः ॥ १०
दे०	२३·२ × ११ सें० मी०	१० (२७–३६)	१४	३९	अपू०	प्राचीन	इति श्री गुणाकर विरचिते होरा मकरंदद् काणस्वरूपाध्यायः ॥ (पृ० ३५)
दे०	३०·४ × १५·१ सें० मी०	३ (२–४)	१३	३४	अपू०	प्राचीन	रघुवीरो कृते होरा रत्ने गर्भादिचिंतनं प्रकाशस्ति मितः पद्यैर्यातो वास वसं मितैः ॥
दे०	३०·४ × १५·३ सें० मी०	११ (६–१६)	१३	३९	अपू०	प्राचीन	रघवीरोकृते होरारत्ने निर्याण संज्ञकः। प्रकाशः सप्तभूतुल्यः पद्यैर्यातोरसो-न्मितैः × × ॥
,,	३०·७ × १०·८ सें० मी०	१० (१-२, ४-११)	११	४४	अपू०	प्राचीन सं० १८९३	इति श्री होरारत्ने सूर्यादि भावफला-न्यवस्थावशात्समाप्तम् शुभमस्तु सं० १८९३ फाल्गुण शुक्ला ९ बुध ··· ॥
दे०	२७·९ × ११·७ सें० मी०	८ (१–८)	९	३९	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की सख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है
१	२	३	४	५	६
१०९०	२२६८	होरारत्न			दे० का०
१०९१	६६०७	होरारत्न (अष्टकवर्ग विचार)			दे० का०
१०९२	३३१०	होरारत्न प्रकाश			दे० का०
१०९३	४१८२	होराशास्त्र			दे० का०
१०९४	५००२	होरासार			दे० का०
१०९५	४४५५	होरासेतु	रघुवीर शर्मा		बाँ० का०

—:o:—

लिपि	पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
७	८ अ	ब	स	द	९	१०	११
दे०	२४·७ × ११ सें० मी०	४ (१–४)	१२	४७	अपू०	प्राचीन	
दे०	२७·३ × ११·७ सें० मी०	१२ (१–१२)	९	४४	पू०	सं० १९३०	इति श्री होरारत्ने अष्टक वर्ग विचारः समाप्तिमफाणीत् ॥ इति ॥ संवत् १९३० ॥ चैत्र कृष्ण १४ चतुर्दश्यां भौमे ॥
दे०	२२·२ × १२·६ सें० मी०	१९ (१–१९)	१३	३१	पू०	प्राचीन सं० १८५५	रघुवीरोद्धते होरारत्ने नष्टाख्य जातकं ॥ प्रकाशोष्टादशः पद्यैः प्रयातो दशसंमितैः ॥ समाप्तश्चायंग्रंथः ॥ संवत् १८५५ कार्तिक कृष्ण १० लिखितं खुमान दुबे गवरू ॥
दे०	२८·४ × १३·२ सें० मी०	६	९	२८	अपू०	प्राचीन	
दे०	२४·७ × ११·८ सें० मी०	६ (१८, २७-२८, ३३, ४७, ६२)	११	३६	अपू०	प्राचीन	
दे०	२८ × ११·६ सें० मी०	६३ (१–६३)	१०	४२	पू०	प्राचीन सं० १७३१	शकेष्ट वाणेषु मही प्रमाणे काशी निवासी रघुवीर शर्मा × × × × × × × × दैवज्ञ श्रीमद्विठ्ठलस्यात्मजेन बद्धेसेतो पद्य रत्नैरनर्घ्यैः उच्छ्वासानां नाम संख्यान नामा प्रोच्छ्वासोयं षट्त्रि ३६ संख्यःप्रपूर्णः ॥ सं० १७३१ जेष्ठे मासि अष्टम्यां सोमवासरे लिखित मिदं × × × ॥

—:०:—

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है
१	२	३	४	५	६
तंत्र					
१	१६६४	अजपा गायत्री कल्प			दे० का०
२	४१८३	अतिकाल पंचरात्र			दे० का०
३	३३६७/२	अन्नपूर्णा कवच			दे० का०
४	२१६१/७	अन्नपूर्णा कवच			दे० का०
५	१७३६	अन्नपूर्णा पटल			दे० का०
६	२१६१/७	अन्नपूर्णा पटल			दे० का०
७	२१८१/७	अन्नपूर्णा पूजा पद्धति			दे० का०
८	३३६३	अन्नपूर्णा पूजापद्धति			दे० का०

लिपि	पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
७	८ अ	ब	स	द	९	१०	११
दे०	१४ × ८·५ सें० मी०	३ (४-५-६)	९	२१	अपू०	प्राचीन	अथ गायत्री कल्पः समाप्तः ॥ श्री ॥
दे०	३६ × १५·२ सें० मी०	५६ (१,४-३०, ३२-५९)	७	४१	अपू०	प्राचीन	इति श्री अतिकाल पंचगाले शिवपार्वती संवादे अक्षोभ्यकक्षपुटयां अणिमाद्याष्ट सिद्धि ··· ··· मग्रवर्णनंनामसप्त दशः समाप्तिमगमत् ॥ (पत्रसंख्या ५२)
दे०	२०·१ × १०·२ सें० मी०	३ (१-३)	७	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री भैरव तंत्रे अन्नपूर्णं कवचं संपूर्णम् ॥ शुभमस्तु ॥
दे०	१४·५ × १०·५ सें० मी०	३ (३७-३९)	९	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री भैरव तंत्रे अन्नपूर्णं कवच सपूर्णम् ॥
दे०	२०·४ × १०·२ सें० मी०	८ (१,३-९)	७	२४	पू०	प्राचीन	
दे०	१४·५ × १०·५ सें० मी०	१०	९	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामले तंत्रे पंचाग खंडे सप्त विद्या रहस्ये श्री मदन्नपूर्णा पटल समाप्तम् ॥ श्रो नमो देव्यै नमः ॥
दे०	१४·५ × १०·५ सें० मी०	२७ (१०-३६)	९	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामले तंत्रे सप्त विधि रहस्ये श्री मदन्नपूर्णेश्वरी पूजा पद्धति संपूर्णं ॥
दे०	२०·४ × १०·५ सें० मी० (सं०सू०२-२१)	२० (१०-१३, १५-३०)	७	२७	अपू०	सं०१८०९	इति श्री रूद्रजामलेतंत्रे सप्तविद्यारहस्ये श्रीमदन्नपूर्णा पूजापद्धति संपूर्णः सं० १८०९ वर्षेना मार्ग सुदि १४ भोमवासर ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९	४७९४	अन्नपूर्णेश्वरी मंत्र-प्रयोग			दे० का०	दे०
१०	५४९६	अपराजिता कल्प			दे० का०	दे०
११	४३२१	अभिष्टगणपति कल्प			दे० का०	दे०
१२	४९४५/२	अर्गला स्तुति तंत्र			दे० का०	दे०
१३	२७३८	अष्टविद्या साधन-विधि			दे० का०	दे०
१४	६४४८	अष्टाक्षरदेवी मंत्र			दे० का०	दे०
१५	४३६८	आकाश भैरव कल्प (निग्रहदारुण सप्तक)			दे० का०	दे०
१६	२८२७/५	आपद्उद्धार			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२८.६ × ९ सें० मी०	१	८	३०	पू०	प्राचीन	अथान्नपूर्णेश्वरी मंत्रप्रयोगः। (प्रारंभ)
२७ × ११·८ सें० मी०	३ (१–३)	१३	५५	अपू०	प्राचीन	
२१ × १० सें० मी०	३ (१–३)	१२	४१	पू०	प्राचीन	इति सिद्ध शाबरतंत्रे कलियुगे प्रत्यक्ष सिद्धि प्रदे महा रहस्ये उमा माहेश्वर संवादे शंकरेण विरचिते सर्वाभिष्ट फल प्रद्रे श्वेतार्क अभिष्ट गणपति कल्प समाप्तं ॥
१३·३ × ९·५ सें० मी०	१ (१०वाँ)	१०	१५	अपू०	प्राचीन	इति अर्गला स्तुति……॥
१५·७ × ११·४ सें० मी०	१२ (१-२,५-१४)	१०	२८	अपू०	प्राचीन	
२५·८ × ११·२ सें० मी०	१	१०	३६	पू०	प्राचीन	इति श्री अष्टाक्षर मंत्रसमाप्तम् १॥
१९·५ × १०·३ सें० मी०	४ (१–४)	९	३३	पू०	प्राचीन	इत्याकाश भैरव कल्पे निग्रह दारुण सप्तकं समाप्तं।
१५·८ × ९·२ सें० मी०	१२½	७	१६	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१७	६३१३	आपदुद्धार			दे० का०	दे०
१८	६२४८	आपदुद्धारक स्तव-राज कवच			दे० का०	दे०
१९	२९६५/४	आपदुद्धार कवच			दे० का०	दे०
२०	७०४३/४	आवाहनमंत्र			दे० का०	दे०
२१	३०४६/७	आसुरीकल्प			दे० का०	दे०
२२	१८०१	आसुरी कल्प			दे० का०	दे०
२३	१५९१/५	आसुरी मंत्र			दे० का०	दे०
२४	१५७६	आसुरी विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२० × ११·५ सें० मी०	१	६	१८	अपू०	प्राचीन	
१०·६ × ५·८ सें० मी०	१	१४	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री विश्वसारोद्धारे आपदुद्धारकस्तवराज कवच समाप्त: ।।
१५·५ × ६·५ सें० मी०	१०	१२	१२	अपू०	प्राचीन	
१४·७ × १२·३ सें० मी०	३	१०	१३	अपू०	प्राचीन	
१७.७ × ११ सें० मी०	१	८	१६	अपू०	प्राचीन	
१५ × १२ सें० मी०	७	११	१७	पू०	प्राचीन	इति आसूरी कल्प समाप्तम् । सं० १८३६ श्रावण कृष्ण ७ बुधवार ।
१६·२ × १०·१ सें० मी०	२	८	१८	पू०	प्राचीन	इति पुरश्चरण विधि: संपूर्ण सुमंत्रं व्रतमंगलं ददातु । श्री जूसहाई ।
२०·१ × ११·६ सें० मी०	६ (१–६)	८	१७	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२५	७३१०	उग्रतारामंत्र (कालीतंत्र)			दे० का०	दे०
२६	२६५१	उड्डीशतंत्र			दे० का०	दे०
२७	१२७०	उड्डीशतंत्र			दे० का०	दे०
२८	१६६७	उड्डीशतंत्र			दे० का०	दे०
२९	४९४५/२	उत्कीलनमंत्र			दे० का०	दे०
३०	५०१५	उलूककल्प			दे० का०	दे०
३१	५२१८/२	एकमुखीहनुमत् कवच			दे० का०	दे०
३२	८४७	एकमुखीहनुमत् कवच			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·३ × १०·९ सें० मी०	१	११	४०	अपू०	प्राचीन	इति काली तंत्रे एकादशं पटलं ॥
२२·८ × १४·३ सें० मी०	७	१३	२४	अपू०	प्राचीन	
१७·६ × ९·२ सें० मी०	४ (१–४)	७	२२	अपू०	प्राचीन	
२० × १०·४ सें० मी०	६ (१–६)	९	२७	अपू०	प्राचीन	
१३·३ × ९·५ सें० मी०	१ (११वाँ)	१०	१६	अपू०	प्राचीन	अस्य श्री उत्कीलन मंत्र ... ... (प्रारंभ) × × ×
२५·२ × १०·९ सें० मी०	६ (१–६)	९	४०	अपू०	सं० १९५५	इति श्री रुद्रयामले शुक्रसदाशिव संवादे उल्लूक कल्प समाप्तम् ॥ श्री भुवनेश्वरीभ्यो नमः संमत० १९५५ मार्गशिर्षे मासे शुक्ल पक्षे शनौष्ठम्यां ८ लिखित्वा दः बागीश्वरी प्रसाद मु० उदार पो० शाहगंज जि० मिर्जापुर प० बडहर...
१५ × १०·८ सें० मी०	६	१२	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मांडपुराणे नारदऽगस्त संवादे श्री राम प्रोक्तं श्री हनुमत कवच संपूर्णं ।
२०·४ × १०·८ सें० मी०	६ (१–६)	८	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री नारद नारायण संवादे एक मुखी हनुमत्कवचं संपूर्णं शुभ मस्तु श्रीराम०

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३३	७५१६	एकाक्षर गणपतिकवच			दे० का०	दे०
३४	२८०२/६	कंठकापालक			दे० का०	दे०
३५	४८३	कर्पूरस्तव			दे० का०	दे०
३६	५३१३	कर्पूरस्तव व्याख्या			दे० का०	दे०
३७	१५६४	कात्यायनितंत्र			दे० का०	दे०
३८	२७१८	कात्यायनी तंत्र			दे० का०	दे०
३९	३२१४	कारणादिशुद्धिः			दे० का०	दे०
४०	३३९६	कार्त्तवीर्य	अर्जुन		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
१२·२ × ८·४ सें० मी०	८ (१–८)	७	१५	पू० (कृमिकृंतित)	प्राचीन सं०१८६६	इति रुद्रयामले उमामहेश्वर संवादे एकक्षरगणपति कवचं सपूर्णं संवत् १८६६ पौष × × × × × × × ॥
२० × ११·७ सें० मी०	२½	१७	३८	अपू०	प्राचीन	
२८ × १२ सें० मी०	१४ (१-२,११ –२२)	६	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री कर्पूर स्तवसमाप्तम् ।
२७·७ × १६·६ सें० मी०	११ (१–११)	१४	४१	अपू०	प्राचीन	अथ श्रीमद्दक्षिणकालिकायाः परमकारुणिक श्रीमन्महाकालविरचित कर्प्पूरमित्यादिस्वरूपाख्यस्तोत्रस्य ··· (प्रारंभ) × × ×
१४·५ × ६·७ सें० मी०	४	१०	२२	पू०	प्राचीन	इति कात्यायनि तंत्रसमाप्तम् ॥ शुभमस्तु ॥ मंगल ददातु ॥
३०·२ × ११·१ सें० मी०	५ (१–५)	११	३५	पू०	प्राचीन	इति कात्यायनी तंत्र समाप्तः ॥
१६ × १०·५ सें० मी०	५ (१–५)	१०	२५	पू०	प्राचीन	इति कारणादिशुद्धिः = अपशक्तिशोधनंयथा ।
२४·२ × ११ सें० मी०	१० (१–७,६ –११)	८	२८	पू०	प्राचीन सं० १८१५	इति श्री अर्जुन विरचितं कात्तिकवीर्यं संपूर्णं । शुभ मस्तु मंगलं ददातु ॥ संवत् १८१५ तत्र साके १६८० जेष्ठमासे सुक्लपक्षे सनिवासरे ।···

(सं० सू० २-२२)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४१	३८३५	कार्तवीर्यकवच			दे० का०	दे०
४२	५६७७	कार्तवीर्य कवच			दे० का०	दे०
४३	५०५१	कार्तवीर्य दीपदान विधि			दे० का०	दे०
४४	२८२५	कार्तवीर्य दीपदान			दे० का०	दे०
४५	४४५६	कार्तवीर्य विधि	शिवानंदभट्ट गोस्वामी		दे० का०	दे०
४६	७४५४	कार्तवीर्यार्जुनकवच			दे० का०	दे०
४७	७८८	कार्तवीर्यार्जुनकवच			दे० का०	दे०
४८	७१४७	कार्तवीर्यार्जुनकवच			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
१७ × ८ सें० मी०	२९ (१–२९)	५	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री डामरतंत्रे उमामहेश्वर संवादे कार्त्तवीर्यस्य कवचं सपूर्णं ॥ ··· ···
२०·५ × ९·१ सें० मी०	१२ (१–१२)	८	२७	अपू०	प्राचीन	
२५·२ × ८ सें० मी०	१४ (१,२–१५)	६	४०	अपू०	सं०१८६०	इति श्री उड्डमरतंत्रे शिवाशिव संवादे कार्त्तवीर्य्य दीपदान विधिः समाप्तम् ॥ शुभंभूयात् ॥ संवत् १८६० ॥ लिखितं
२४·२ × ११·६ सें० मी०	९ (१–९)	११	३४	पू०	प्राचीन सं०१८९०	इति श्री उडासरेतंत्रे सिवासिव संवादे कार्त्तवीर्य दीपदान समाप्तं । शुभमस्तु मंगल ददातु ॥ संवत् १८९० शकः १७५५ चैत्रे मासे कृष्ण पक्षे तिथौ ···
२७·५ × ११·५ सें० मी०	२७ (१–२७)	११	४९	पू०	प्राचीन	इति श्री गोस्वामि शिवानंद भट्ट विरचिते श्री कार्त्तवीर्य विधि रत्नो चतुर्थः प्रकाशः श्री कार्त्तवीर्य पद्धति समाप्तः शुभ मस्तु ॥
२०·६ × ११·५ सें० मी०	१० (१–१०)	६	१७	अपू०	प्राचीन	
२०·७ × ८·४ सें० मी०	१३ (४-१५,१५)	१०	२९	अपू०	प्राचीन	संपदस्तस्य जायंते जनास्तस्य वशं सदा आनयत्याशुदूरस्थंक्षेमं लाभंत्युतंप्रियं कार्त्तवीर्यं महावाहो सर्वं शत्रु निवर्हण सर्वत्र सर्वदातिष्ट चौरान्नाशय नाशय ।
१५·५ × ८·८ सें० मी०	१८ (१,३,५,५,९, १३-१९,२१ –२५)	७	१७	पू०	प्राचीन सं०१८९१	इति डामरेश्वरतंत्रे पार्वतीश्वर संवादे कार्त्तवीर्यार्जुन कवचं सपूर्णं शुभमस्तु मंगलंदः सवत् १८९१ माघ कृष्ण २ भृगौ ॥ श्री शिवायत्नम ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४९	६७६१	कार्तवीर्यार्जुनकवच			दे० का०	दे०
५०	७५६२	कार्त्तवीर्याजुनदीपदान			दे० का०	दे०
५१	७६६८	कार्तवीर्यार्जुनदीपदान-विधि			दे० का०	दे०
५२	३५६१/५	कार्तवीर्यार्जुनमंत्र			दे० का०	दे०
५३	३६४७	कालरात्रिपद्धति			दे० का०	दे०
५४	२२१४	कालरात्रिपद्धति			दे० का०	दे०
५५	७८६२/४	कालिका कवच (त्रैलोक्यमोहनकवच)			दे० का०	दे०
५६	११६८	कालिकाकवच			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५·१ × ९·३ सें० मी०	१७ (१–१७)	९	२०	पू०	प्राचीन सं०१८८६	इति पौषशुक्ल ९ रविवासरे संवत् १८८६ के० ॥
२६ × १२ सें० मी०	५ (१–५)	१६	३७	पू०	प्राचीन	इति श्री कार्त्तवीर्यार्ज्जुन दीपदानं संपूर्ण ॥ ... ... ॥
१६ × ८ सें० मी०	१० (५-६,८-१४, १६)	८	२०	अपू०	सं०१८५०	इनि श्री रुद्रयामले उमामहेश्वर तंत्रे कार्तवीर्यार्जुनस्यदीपदान विधिः ॥ संवत् १८५० ... ... ॥
१७ × १०·५ सें० मी०	३ (१–३)	८	२५	पू०	प्राचीन	
२५ × १३ सें० मी०	६ (१–६)	६	२५	पू०	प्राचीन	
१६·७ × १०·५ सें० मी०	२१	११	२०	पू०	प्राचीन सं०१८४०	इति श्रीकाल रात्रि कल्पे ईश्वर पार्वति संवादे काल रात्रि पधित्त समाप्तं ॥ ... संवत् १८४० मीति कार्तिक सुदि १० भैम दीने लिषीतं जोसि चन राम सूत पुत्र कालूराम चीरंजी वरस्तू: ॥
१८ × ९·६ सें० मी०	६ (१-२,४ ७)	५	२१	अपू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामले महा तंत्रे कालिका कवचं समाप्तम् ॥
१८·३ × १०·६ सें० मी०	६ (१–६)	६	१९	पू०	प्राचीन	इति श्री भैरवी भैरव संवादे श्री जगन्मंगल नाम कालिका कवच संपूर्णम् ॥ शुभमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५७	५२६६	कालिकातंत्र			दे० का०	दे०
५८	५५३६	कालीकवच			दे० का०	दे०
५९	७७३६	कालीकवच			दे० का०	दे०
६०	१२५	कालीतंत्र *			दे० का०	दे०
६१	३०४६/७	कालीपटल			दे० का०	दे०
६२	६१६/२	कालीपटल			दे० का०	दे०
६३	१५४७	कालीमंत्र			दे० का०	दे०
६४	४२६३	कुंडसिद्धि*			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६·८ × ११·५ सें० मी०	६ (१–६)	११	४४	अपू०	प्राचीन	
२१ × १०·५ सें० मी०	६ (१–६)	५	१८	अपू०	प्राचीन	ॐ अस्यश्री कालिकाकवचस्य भैरव ऋषि रनुष्टुप्छंदः श्री कालिका देवता ...... (पत्र सं०–२)
१६·४ × ८·४ सें० मी०	७ (१–७)	५	१८	पू०	प्राचीन सं० १८६४	इति श्री वैरिहरण कालिकवचं शमाप्तं शुभंम् ॥ श्री समत १८६४ × × ×
२४·५ × १०.१ सें० मी०	४	४	२१	अपू०	प्राचीम	
१७·७ × ११ सें० मी०	३४ (१–३४)	८	३०	पू०	प्राचीन	इति कालीकुलसर्वस्वे महातंत्रे... कालीपटलो द्वादशः समाप्तः शुभमस्तु सर्वजगताम् ॥
२३·५ × १०·५ सें० मी०	८	८	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामलेतंत्रे दशविद्यारहस्ये कालीपटलं समाप्तं ॥
२२·८ × ९·५ सें० मी०	११	८	२७	अपू०	प्राचीन	
२३·८ × १० सें० मी०	३२ (११-१५, १७-३४)	८	३२	अपू०	सं० १५०६	कुंडाकृति—वत्सरे मासे भाद्रे पक्षच कृयोः ॥ त्रयोदस्याचै विद्रावा—दामोदरः समालिखेत् ॥ शके १४७१ सुभानु-संवत्सरे भाद्रपमासे कृष्णप्रक्षे गुरौ त्रयोदशी तिथौ आश्लेषानक्षत्रे—दामोदर भेटभट्टेन लिखितंद चात्रयस्य सुतः त्रियंबक भट्टसरठेन लिखापितं इदंग्रंथ समाप्तं १५०६ समयन तिथि प्रमाथा वर्षे ... ... ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६५	३८८७	कुब्जिकामतम् (भैरवी तंत्र)			दे० का०	दे०
६६	६३	कुमार तंत्र			दे० का०	दे०
६७	१८४३	कुमारीपूजा			दे० का०	दे०
६८	३४२१	कुल दीपिका (कौलिकार्चनदीपिका)	जगदानंद		दे० का०	दे०
६९	१५६१/५	कूटशोधन			दे० का०	दे०
७०	१७८०	कूलांतपीठ			दे० का०	दे०
७१	७५५	क्रमदीपिका* (संस्कृत टीका)	केशवाचार्य		दे० का०	दे०
७२	७५६	क्रमदीपिका	केशवाचार्य		दे० का	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२९·३ × १३·७ सें० मी०	१६	११	४१	अपू० (जीर्ण)	प्राचीन	इति कुब्जिकामते भैरवी निर्णयो नाम चत्वारिंशतितमः पटलः ॥
१४·५ × १५ सें० मी०	९	१०	११	पू०	प्राचीन	
१४ ४ × ११·५ सें० मी०	५ (१–५)	९	१२	अपू०	प्राचीन	
२३·५ × ११ सें० मी०	६९ (१–२५, ३०–७३)	१०	३५	अपू०	सं०१९१५	इति श्री जगदानंद महामहोपाध्याय कृता श्री कुलदीपिका समाप्तः सं० १९१५ फाल्गुण कृष्ण चतुर्दश्यां गुरु वासरे ।
१६·२ × १०·१ सें० मी०	१	८	१६	पू०	प्राचीन	इति चतुर्थी सोधनं मूलेन दशवारं सर्वं शोधयेत ॥
२५·३ × १०·३ सें० मी०	१	११	३६	अपू० (जीर्ण)	प्राचीन	
२७ × ७·८ सें० मी०	५० (१–५०)	७	५४	पू०	प्राचीन सं०१६३८	इति श्री केशवाचार्य विरचितायां क्रमदीपिकायामष्टमः पटलः ॥ सं० १६३८ समये श्रावण सुदि १३ शनौ लिखितमिदं पुस्तकं स्वार्थं गोपालेन तृपाठिना काश्यां ॥ शुभमस्तु ॥ (वैष्णव तंत्र ॥)
२६·५ × ११·५ सें० मी०	३०	१३	५०	पू०	श०१६२४	इति श्री केशवाचार्य विरचितायां क्रमदीपिकायांमष्टमः पटलः ॥ शके १६२४ सुभानु संवत्सरे आषाढ़ शुक्ले चतुर्थ्यां इंदुवासरे क्रमदीपिकायां ग्रंथ लिखितमिद पुस्तकं समाप्तं ॥ उद्धवदास वैष्णव महानुभावस्य पठणार्थं लिखित मिदं पुस्तकं गोस्वामीवासुदेवेन । (गोपाल मन्त्रानुसारिवैष्णवतंत्र) ।

(सं०सू० २-२३)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७३	१०१४	क्रमदीपिका	केशवाचार्य		दे० का०	दे०
७४	५५७१	क्रमदीपिका बिवरण	गोविंद विद्या-विनोद भट्टाचार्य		दे० का०	दे०
७५	३०५१	खेचरसिद्धि			दे० का०	दे०
७६	५१९९	गंधर्वराज मंत्र			दे० का०	दे०
७७	३९७३	गकारादि गणपति सहस्रनाम स्तोत्र			दे० का०	दे०
७८	५११३	गणपति शुक्रशापमोचनीमंत्र			दे० का०	दे०
७९	४९५५	गणेश कवच			दे० का०	दे०
८०	५९६०	गणेश कवच			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·६ × ११ सें० मी०	४२ (१–२४, २४–२५, २८-४३)	१०	३८	अपू०	प्राचीन	इति श्री क्रमदीपिकायांसप्टमः पटलः समाप्तः ।। शुभमस्तु ।। (गोपाल मंत्रानुसारी वैष्णवतंत्र ।)
२४·५ × १०·६ सें० मी०	२ (३–११)	१२	४६	अपू०	प्राचीन	इति श्री गोविंदविद्याविनोद भट्टाचार्य विरचिते क्रमदीपिका विवरणे प्रथम पटलः ! (गोपाल मंत्रानुसारी वैप्णव तंत्र ।)
२४ ३ × ८.७ सें० मी०	८ (१–८)	७	४०	पू०	प्राचीन	इतिखेरसिद्धयां समाप्ताः शुभमस्तु ।।
२४·२ × १०·२ सें० मी०	१	८	३०	पू०	प्राचीन	ओम अस्यश्री गंधर्वराज मंत्रस्य संमोहन ऋषिः बृहति छंदः श्री गंधर्वराज-विश्वावसु देवता ··· ··· ··· (प्रारंभ)
१८·५ × ९ सें० मी०	२० (१–२०)	७	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामले शिवोमासंवादे गकारादि गणपति सहस्रनाम स्तोत्रं संपूर्णं ।। श्री गणेशार्पयामस्तु लिखितं स्वार्थं परार्थं वा राव जी ने मिति भाद्रपद कृष्ण १४ बुधे ।
१०·७ × ५·७ सें० मी०	४ (१–४)	८	२१	पू०	प्राचीन	
११·४ × ६·५ सें० मी०	१	८	१८	अपू०	प्राचीन	
२१ × १०·३ सें० मी०	४ (१–४)	८	२६	पू०	प्राचीन	इति श्री रूद्रयामले उमा महेश्वर संवादे गणेश कवचं संपूर्णं ।। शुभमस्तु ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८१	७३०५	गणेश कवच			दे० का०	दे०
८२	३३४८/४६	गायत्रीअष्टसहस्रनाम			दे० का०	दे०
८३	५४२६/४	गायत्री कवच			दे० का०	दे०
८४	७०६०	गायत्री कवच			दे० का०	दे०
८५	३७३८	गायत्री कवच			दे० का०	दे०
८६	३३४८/४६	गायत्री नित्यपूजा			दे० का०	दे०
८७	३३४८/४६	गायत्री पंचांग (गायत्री रहस्य)			दे० का०	दे०
८८	३३४८/४६	गायत्री पटल			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
११·४ × ६·५ सें० मी०	३ (१–३)	६	१९	अपू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामले उमामहेश्वर संवादे गणेशकवचं समाप्तम्··· ··· ··· ···।
१२·५ × ८·२ सें० मी०	२९ (१–२९)	६	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री विष्णुयामलतंत्रे ब्रह्मनारद संवादे गायत्र्यष्ट सहस्त्रं संपूर्णम् शुभमस्तु श्री ॥
१७.३ × ८·६ सें० मी०	३	७	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री अगस्त संहितायां ब्रह्मा नारद-सवादे गायत्री कवचं संपूर्णं ॥ श्री गायत्रैनमः ॥
२३·१ × १०·२ सें० मी०	३ (१–३)	८	२७	पू०	प्राचीन	इति श्री अगस्ति संहितायां ब्रह्मा नारद संवादे गायत्री कवच संपूर्णं ॥ ··· ···
१७ × १० सें० मी०	४१ (१-४,६-७,९-१०,१२-१७,१९-२२,२५-४१,४५-४६)	९	३१	अपू०	प्राचीन	
१२·५ × ८·२ सें० मी०	४२	७	१२	अपू० (खंडित)	प्राचीन	इति श्रीरूद्रया···रहस्ये तत्वसारेगायत्री नि···स्सम्पूर्णं शुभंभूयात् ॥
१२·५ × ८·२ सें० मी०	८	६	१७	पू० (खंडित)	प्राचीन	इति श्री रुद्रयायाले तंत्रे गाय···रहस्ये परमार्थ देवता त्रिपदीगा···त्री पंचाङ्ग संपूर्णं शुभंभूयात् ॥
१२·५ × ८·२ सें० मी०	१२ (१–१२)	६	१५	पू० (खंडित)	प्राचीन	···तत्व सारे गायत्री पटलः सं···

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की सख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८६	३३४८/४६	गायत्रीमंत्रसहस्रनाम (गायत्री रहस्य)		भरत	दे० का०	दे०
९०	११४१	गायत्रीमुद्रा			दे० का०	दे०
९१	७४१७	गायत्री रहस्य			दे० का०	दे०
९२	३:४५	गायत्री शापविमोचन			दे० का०	दे०
९३	२०५	गायत्री शापविमोचन			दे० का०	दे०
९४	२२५०	गायत्री शापविमोचन			दे० का०	दे०
९५	४०५९/२	गीतामाला मंत्र			दे० का०	दे०
९६	५८६	गुरु पादुकाबंदनं			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१२·५ × ८·२ सें० मी०	३० (१–३०)	७	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामले तंत्रे गायत्री रहस्ये गायत्री मंत्रनाम सहस्त्रं शंपूर्णम् शुभमस्तु ।।
१९·८ × ११·५ सें० मी०	९ (२–१०)	११	२८	अपू०	प्राचीन	इति ग··· लीऋषिछंददेवताबीजशक्तिमुद्रावर्णस्माप्त मिति ।। श्री रस्तु ।।
२५·३ × १०·७ सें० मी०	६ (१–६)	८	३४	अपू०	प्राचीन	
३२·८ × १२ सें० मी०	१	३०	१८	अपू०	प्राचीन	
२०·८ × १०·५ सें० मी०	४	९	२४	अपू०	प्राचीन	
९·७ × ८·३ सें० मी०	८ (१–८)	८	११	पू०	प्राचीन सं० १९५५	इति मुद्रास्समाप्ता सवत १९५५ मि० अश्विन शुदि षष्टि गुरुवारो रेमिश्र ···।।
१५·९ × ·८·७ सें० मी०	३ (१–३)	६	२०	अपू०	प्राचीन	
१५ × १० सें० मी०	४	८	१६	पू०	प्राचीन	इति गुरुपादुका वंदनं समाप्तं ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९७	५१४५	गोपाल कवच			दे० का०	दे०
९८	३३४८/४६	गोपाल कवच			दे० का०	दे०
९९	७३२६	गोपाल गायत्री			दे० का०	दे०
१००	२३९/१२	गोपालचूडामणि स्तोत्रं			दे० का०	दे०
१०१	४३८०/२	गोपाल पटल			दे०का०	दे०
१०२	७१७८/७	गोपाल पटल			दे० का०	दे०
१०३	४३८०/२	गोपाल पद्धति			दे० का०	दे०
१०४	७४५५/२	गोपालमंत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२४.२ × ६.२ सें० मी०	५ (१–५)	७	३५	पू०	प्राचीन	इति संमोहनतंत्रे श्री गोपाल कवच समाप्तः श्री कृष्णार्प्पणमस्त्क शुभमस्त्क ॥
१२.५ × ८.२ सें० मी०	१०	६	१८	पू०	प्राचीन सं०१८८१	इति सनत्कुमार तंत्रे त्रैलोक्य मंगलं नाम गोपाल कवचं समाप्तम् संवत् १८८१ के भाद्र सुदि ३ ॥
१५.६ × ७.६ सें० मी	४ (१–४)	६	१५	अपू०	प्राचीन सं०१८८८	संवत् १८॥८८ श्रीमते भगवन्निंवार्कायनमः
१६ × १०.५ सें० मी०	३ (३१-३३)	१२	१२	पू०	प्राचीन	इति श्री गौतमीय तंत्रे गोपालचूड़ामणि स्तव राजस्तोत्रंसमाप्तम् ॥
२१.३ × १०.६ सें० मी०	३ (१–३)	३	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री सनत्कुमार संहितायां गोपालपटल समाप्तं ० शुभमस्तु ॥
१६.६ × १० सें० मी०	३७ (१–३७)	५	१७	पू०	प्राचीन	इति श्रीगोपालपटलं समाप्तं······ ॥
२१.३ × १०.६ सें० मी०	१८ (४–१४, १४–२०)	८	२७	पू०	सं०१६१७	अथगोपाल पद्धति लिखते······ (पृ०-४) इति श्री कृष्णाराधन संक्षपपद्धति सपूर्णं ॥ समाप्तं । शुभमस्तु ॥ मितिमाहशुदि ।४। सं० १६१७ ॥ मु : राजनगर लिष्यतंपं श्रीदुवेराधे ॥ पठनार्थ श्री लाला रघुनाथसिह जू ॥
१३ × ६.५ सें० मी०	२	७	११	पू०	प्राचीन	इति गोपालमंत्र संपूर्णं ॥

(सं०सू०२-२४)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०५	७२४९	गोपाल रहस्य सहस्रनाम स्तोत्र			दे० का०	दे०
१०६	४१०७	गोपालसंमोहनकवच			दे० का०	दे०
१०७	२५२५	गोपालसंमोहनकवच			दे० का०	दे०
१०८	२३९/१२	गोपालसहस्रनाम			दे० का०	दे०
१०९	३३४८/४६	गोपालसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
१००	७८४७	गौतमीयतंत्र			दे० का०	दे०
१११	७०७९	गौतमीय महातंत्र			दे० का०	दे०
११२	४५७०/४	चंडीपल्लव विचार			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६·७ × १२·६ सें० मी०	३ (२९–३१)	९	१९	अपू०	प्राचीन सं० १९२७	इति श्री संमोहनाख्ये महातंत्रे श्री गोपालरहस्य सहस्त्रनामस्तोत्र सम्पूर्णम् सं० १९२७ आश्विन्कृष्ण × ×
२२·३ × ९·८ सें० मी०	३ (१–३)	९	४०	अपू०	प्राचीन	ॐ क्लीं श्रीं श्री गोपाल संमोहनं नाम कवचस्य ऋषि विराट छंदः कृष्णो देवता ... ... (पृ० २)
१५·५ × ९·२ सें० मी०	९ (१-२,२-८)	८	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री संमोन तंत्रे पार्वती हरसंवादे श्री गोपाल संमोहन कवचं समातम् ॥ शुभ मस्तुः ॥
१६ × १०·५ सें० मी०	२४ (७–३०)	१२	१२	पू०	प्राचीन	इति श्री संमोदन तंत्रे पार्वती हर सवादे श्री गोपाल सहस्त्रनामस्तंवं समाप्तं ॥
१२·५ × ८·२ सें० मी०	२६ (१–२६)	६	१८	पू०	सं० १८८१	इति श्री संमोहन तंत्रे पार्वतीहर संवादे श्री गोपालसहस्त्रनामस्तोत्र समाप्त शुभ-मस्तु संवत् १८८१ के कुवार वदि १२-१३ कः ॥
२८ × ११·५ सें० मी०	१८ (२-४,२०-२१ २३-८६,८८-९८)	१०	४२	अपू०	प्राचीन	इतिगौतमीय तंत्रे सर्व तंत्रोत्तमे त्रिंशोऽध्यायः × × (पृ० ९४)
३१·८ × १२·२ सें० मी०	१११ (२,४-२२, २४-१११)	९	४०	अपू०	प्राचीन	इति श्री गौतमीय महातंत्रे सर्व तंत्रोत्त-मोत्तमेषु द्वात्रिंशोध्यायः ॥३१। समाप्तः सपूर्णं ॥
२१.५ × १३.२ सें० मी०	५	१६	११	पू०	प्राचीन	अथ चंडी पल्लव विचार माह ·· (प्रारंभ) एवं क्रमेण शप्तभिदिनै एक वृत्ति एकैकं चरित्रे मेकस्मिन् दिने इति (अंत)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११३	६७६३	चंडीपाठ			दे० का०	दे०
११४	१८८४	चंडीपाठप्रयोग			दे० का०	दे०
११५	३१२२	चंडीपाठविधान			दे० का०	दे०
११६	७०४०	चंडीप्रयोगप्रकार			दे०का०	दे०
११७	७६२२	चंडीप्रयोगविधि	नागोजी भट्ट		दे० का०	दे०
११८	२०२७	ॐचंडीस्तोत्रप्रयोगविधि	नागोजी भट्ट		दे० का०	दे०
११९	३७०	चंडीस्तोत्र प्रयोगविधि	नागोजी भट्ट		दे० का०	दे०
१२०	३३९७	चंद्रोन्मीलन	जिनेंद्र		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·३ × १०·२ सें० मी०	१३ (१–१३)	८	२८	अपू०	प्राचीन	इति मरिचि तंत्रे अगस्त्य संवादे चंडी पाठक्रमः निर्मथ्य सवतंत्रेभ्यः समाप्त सुभम ॥
१६·२ × १०·८ सें० मी०	४६ (२–४७)	१०	२०	अपू०	प्राचीन	
१६·२ × ११·५ सें० मी०	७ (१–७)	११	१६	पू०	प्राचीन सं० १७४२	इति मारीचकल्पे ··चंडीपाठ विधानं समाप्तं।. सं० १७४२ जेष्ठ शुक्ल नवम्यां सामे नारायणेन दैवज्ञेन लिखित्वा गणपतिदाक्षितेभ्योदत्तं शुभ मस्तु ॥
२७ × १०·८ सें० मी०	२५ (१–२५)	७	३२	पू०	प्राचीन सं० १६११	ईति सप्तसतीप्रकारः समाप्त शुभ मस्तु संवत १६११ के साल माघ सुदि दुतीका········
२६ × ११ सें० मी०	१२	६	४३	पू०	प्राचीन	इति श्री सती गर्भज नागोजी भट्टकृतो मार्क्कण्डेय पुराणांतर्गत सप्तसत्याख्यचण्डोस्तोत्र प्रयोग विधिः ।
३०·८ × १५·४ सें० मी०	१८ (१–१८)	१७	३४	पू०	सं० १८८१	इति श्रीमदुपाध्यायोपनामशिवभट्टसुतसतीगर्भज नागोजीयभट्ट कृत मार्कंडेयपुराणांतर्गत सप्तशताख्याने चंडीस्तोत्रप्रयोगविधिसमाप्तम् ॥ संवत् १८८१ अश्विन सुदि पूर्णिमा १५ ··· ···शुभमस्तु ॥
२३·५ × ११ सें० मी०	२७	११	३२	पू०	सं० १८८०	इति श्रीमदुपाध्यायोपनामका शिव भट्टसुत सतीगर्भजनागोजीभट्ट कृते मारकंडेय पुराणांतर्गत सप्तशत्याख्य चंडीस्तोत्रव्याख्यायने चंडीस्तोत्र प्रयोग विधि समाप्ता सं० १८८० पौष शुक्ला १ शुक्रवासेर लिखतं मिश्र केसरी सिंह ॥ श्री ॥
२२·५ × १०·२ सें० मी०	४६ (१–४६)	६	४१	पू०	सं० १८२२	इति चन्द्रोन्मीलने महाशास्त्रार्णवविनिर्गते ग्रंथ परिपूर्णः ॥··· ··· ··· इति—ऽम चक्रम् ॥ सं० १८२२ असाढ वदि १ भौमे समाप्तः शुभभूयात् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२१	५२७८	चक्रसौभाग्यकवच (त्रिपुरसुंदरीतंत्र)			दे० का०	दे०
१२२	२२२६	चतुर्विंशतिगायत्री तंत्र			दे० का०	दे०
१२३	३६०६	चिद्वल्लीतंत्र			दे० का०	दे०
१२४	७७८६	चौबीस गायत्री			दे० का०	दे०
१२५	७८६६/४	चौबीस गायत्री			दे० का०	दे०
१२६	७१७८/७	चौवीस गायत्री			दे० का०	दे०
१२७	५६६	छिन्नमस्तासहस्रनाम			दे० का०	दे०
१२८	७६४२	जातवेददुर्गा कल्पव्याख्या			दे० का०	दे०

पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
ब	स	द	९	१०	११
६ (५–१०)	८	१५	अपू०	प्राचीन	
१	१९	१७	पू०	प्राचीन	इति चतुर्विंशति गायत्री संपूर्णं ॥
१०	९	३१	अपू०	प्राचीन	इति चिद्वल्ली तंत्रे शिष्य लक्षणं नाम द्वितीयं पटलं ॥२॥ (पत्र पृ० ७)
५ (१–५)	६	२२	पू०	प्राचीन	इति श्री चौबीस गायत्री तंतर संपर्णं ॥ वीज ॥ मुल ॥ मंत्र
४३ (१०१-१४३)	७	१२	अपू०	प्राचीन	इति चौविष गायत्री मंत्र लिखा संपुर्णं ॥
३५ (१३५–)	५	१५	पू०	प्राचीन	इति चौभीस गायत्री ॥ समाप्तम् ॥ संपूर्णम् ॥
७ (५–१२)	८	३८	अपू०	प्राचीन	इति रुद्रयामले तंत्रे पचण्डचण्डिका छिन्नमस्तायाः सहस्रनामस्तोत्रं संपूर्णं ॥ राम राम राम ... ...
३ (१–३)	८	३४	पू०	प्राचीन	इति जातवेदा कल्प० ॥ संक्षिप्तः समाप्तः ॥ इति जातवेदाकल्प ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२९	३३४८/४६	जानकीचरणलक्षण			दे० का०	दे०
१३०	६५२०/१६	जानकी त्रैलोक्यमोहन कवच			दे० का०	दे०
१३१	३८५३	जानकी त्रैलोक्य मोहन कवच			दे० का०	दे०
१३२	५९६३	जानकी त्रैलोक्यमोहन कवच			दे० का०	दे०
१३३	४९१०	जानकीदिव्यत्रैलोक्य-मोहन कवच			दे० का०	दे०
१३४	६८४	ज्ञानार्णव (नित्या तंत्र)			दे० का०	दे०
१३५	१९७८	ज्वरनक्षत्रशांतिमंत्र			दे० का०	दे०
१३६	७४३	* तंत्रकौमुदी	कमलाकर दैवज्ञ		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१२·५ × ८·२ सें० मी०	३ (१–३)	६	१५	पू०	प्राचीन	इतिश्री ब्रह्मयामले श्री विष्णु ब्रह्मा संवादे उर्द्धभागे षड् विंशतिमेऽध्या श्री राम जानकी चरण लक्षनम् संपूर्णम् ।
९·९ × ९·५ सें० मी०	४	१०	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री संमोहन तंत्रे श्री हनुमत्प्रोक्तं श्री जानकी त्रैलोक्यमोहन कवचंसमाप्तं शुभमस्तू राम सीता ॥
१३ × ८ सें० मी०	५ (१–५)	७	१८	अपू० (खंडित)	प्राचीन	इति श्री संमोहन तंत्रे हनुमत्प्रोक्तं श्री जानकी त्रैलोक्य मोहनंनाम कवचं……
३२ × ९·७ सें० मी०	२ (१–२)	९	४१	पू०	प्राचीन सं०१९३२	इति श्री हनुमत्प्रोक्तं संमोहनतंत्रे श्री जानकी त्रैलोक्यमोहनं नाम कवच संपूर्ण सं० १९ गत ३२ के…
९·७ × ७·३ सें० मी०	५ (१–५)	७	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री मंमोहनी तंत्रे हनुमत्प्रोक्तं श्री जानकी दिव्य त्रैलोक्य मोहनं नाम कवचं संपूर्णम् शुभं मंगलं ॥
२८ × १२ सें० मी०	१४ (२–१५)	७	३६	अपू०	प्राचीन	
२३ × १०·५ सें० मी०	४	६	२७	पू०	प्राचीन	इति ज्वर नक्षत्र शांतिक मंत्र समाप्तं शुभ मस्तु ॥
२४·७ × १०·५ सें० मी० (सं०सू०-२–२५)	१०० (१–६०-६८-१०७)	१०	३८	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३७	२४१०	तंत्ररत्न			दे० का०	दे०
१३८	५६३७	तंत्ररत्न (पूर्वार्द्ध)	श्रीकृष्ण विद्या-वागीश		दे० का०	दे०
१३९	५६३६	तंत्ररत्न (उत्तरार्द्ध)	श्रीकृष्ण विद्या-वागीश		दे० का०	दे०
१४०	२६६२	तंत्रविद्या			दे० का०	दे०
१४१	६०८	तंत्रविधान			दे० का०	दे०
१४२	३७६४	तंत्रसार	कृष्णानंद वागीश भट्टाचार्य		दे० का०	दे०
१४३	५१६७	तंत्रसार	कृष्णानंद वागीश भट्टाचार्य		दे० का०	दे०
१४४	५५२	* तंत्रसार	कृष्णानंद वागीश भट्टाचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३४·१ × १४·१ सें० मी०	२३ (३४,१२४-१४५)	१२	६२	अपू०	प्राचीन	
३१ × १२·५ सें० मी०	१६० (१-४५,४५-५६,६८-८१, ८१-१४३, १४५-१६८, १७०-१६५, ३२७,६१४ ६३६)	७	४२	अपू०	प्राचीन	श्री कृष्णविद्यावागीश भट्टाचार्येण धीमता। तंत्राणां सारभूतं च तंत्ररत्नं प्रतन्यते ॥ (पृ० २)
३१ × १२·५ सें० मी०	१३५	७	४०	अपू०	प्राचीन	
१६·६ × ७·७ सें० मी०	१० (२–११)	७	२०	अपू०	प्राचीन	
१५·५ × १०·४ सें० मी०	६	१३	२६	अपू०	प्राचीन	
२५ × १२·१ सें० मी०	४३१ (१-४२८) (३६६,३६८, ३७१ दो-दो पृ०)	१०	३५	पू०	प्राचीन सं० १६१८	इति श्री महामहोपाध्यायपट्टाचार्यं कृतः समाप्तः शुभमस्तु सर्वजगताम् ॐ नमः शिवाय वैशाख शुक्ल दशम्यां सं० १६१८
२५·६ × १३· सें० मी०	११ (१४४-१५५)	१२	३६	अपू०	प्राचीन	
२६ × १३ सें मी०	४१ (१,८५-१०६, १४०-१५७)	६	४५	अपू०	प्राचीन	इतिमहामहोध्याय श्रीकृष्णानंदवागीश भट्टाचार्य विरचिते तत्रसारे चतुर्थपटलः समाप्तः ॥ शुभंभवतु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४५	१२३	तंत्रसार	कृष्णानंद		दे० का०	दे०
१४६	५२१३	ताराकवच			दे० का०	दे०
१४७	६५५	ताराकवच			दे० का०	दे०
१४८	१७११	तारातंत्र			दे० का०	दे०
१४९	१५५९	तारातंत्र			दे० का०	दे०
१५०	७८४४	तारा त्रैलोक्यमोहन-कवच			दे० का०	दे०
१५१	७५१८	तारादेवीपद्धति (पूजाविधान)			दे० का०	दे०
१५२	६६२	* तारापद्धति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·५ × १२·६ सें० मी०	६१ (१,८१-१४३)	१०	४३	अपू०	प्राचीन	
३४ × १५·६ सें० मी०	१ (खर्रा)	२८	१४	पू०	प्राचीन	इति सीद्धयामले कवचं ससुप्तो (इत्येवंकवचं देव्या ताराया कथि मयापंक्तिसं० २२–२३)
१३·८ × ६·५ सें० मी०	७ (१–७)	६	२२	पू०	प्राचीन	इति श्री रूद्रयामल तंत्रे उर्ध्वाम्नाये तारादि कवच: समाप्त: ।। शुभम् ।।
१६·७ × १०·३ सें० मी०	४१ (३-२५,२६, ३१-४७)	८	२०	अपू०	प्राचीन सं० १९३५	
२२·५ × १० सें० मी०	१३ (१–१३)	१४	४२	अपू०	प्राचीन	
१९·७ × ८·२ सें० मी०	२	३२	१९	पू०	प्राचीन	इति भैरवतंत्रे भैरव भैरवी संवादे ताराकल्पे त्रैलोक्य मोहनं नाम कवचं समाप्तं श्रीरस्तु शुभं भवतु ।।
१९·६ × ९·३ सें० मी०	६ (१–६)	११	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री तारा देवी पद्धति पूजाविधानं समाप्त ।।
२४ × ९·३ सें० मी०	२२	८	३२	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५३	५६१	*ताराभक्ति सुधार्णव	ठक्कुर नरसिंह		दे० का०	दे०
१५४	५२२	*ताराभक्ति सुधार्णव	ठक्कुर नरसिंह		दे० का०	दे०
१५५	५५३	*तारारहस्य			दे० का०	दे०
१५६	३६८७	तारा सहस्रनाम स्तोत्र			दे० का०	दे०
१५७	६१८	तारा सहस्रनाम स्तोत्र			दे० का०	दे०
१५८	५६०२	तारिणी मंत्रसहस्रकं			मि० का०	दे०
१५९	२३८४	तारिणी मंत्रसहस्र नाम			दे० का०	दे०
१६०	७७३७/३	तुलसी कवच			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३०·४ × १२·५ सें० मी०	४४०	७	४१	पू०	प्राचीन	इति श्री महामहोपाध्यायठक्कुर श्री नरसिंह विरचिते ताराभक्तिसुधार्णवे एकमतरंगः समाप्तमितिताराखण्डः ॥ ११ ॥ शुभमस्तु ॥ श्रीरस्तु ॥ •••
३२.२ × १५·५ सें० मी०	१३०	१०	३६	अपू०	प्राचीन सं०१७४६	इतिमहातंत्रेमत्स्यसूक्ते ताराकल्पे चतुर्थः पटलः ॥ ४ ॥ समाप्तंश्चायंताराभक्तिसुधार्णव पुस्तकं ॥ शुभमस्तु ॥
२३·५ × १०·८ सें० मी०	५१ (२४–७४)	९	२७	अपू०	प्राचीन	
३२ × १३·५ सें० मी०	११	७	३९	अपू०	प्राचीन सं०१७३४	इति श्री महोग्रताराक्षोभ्यसंहितायां-शतसाहस्यां ताराप्रादुर्भावे ताराविरचितं दिव्यसाम्राज्यमेधाधरनामसहस्रं विंशत्तमप्टलः समाप्तम् ॥ शुभ॰मस्तु ॥ सं० १७३४ आश्विन वदि ७ सप्तमी लिखितं सुभदिने ॥ शुभं भूयात् ॥
२० × ८·७ सें० मी०	१४ (२–१५)	७	३३	अपू०	प्राचीन	इति हरगौरीसंवादे तारायाः कुलसर्वस्वे सहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम् ॥
३०·५ × १२·२ सें० मी०	९ (१–९)	१०	४४	पू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामले देवीश्वरसंवादे तारिणी मंत्र नाम सहस्रकं संपूर्ण ॥
३०·५ × १२·५ सें० मी०	८ (२०६-२१३)	१०	४०	अपू०	प्राचीन	इतिश्री शिवशंकर संवादे परम रहस्ये कालीकुल सर्वस्वसहस्र नाम समाप्तं ॥
९.६ × ४·१ सें० मी०	३	४	१३	पू०	प्राचीन	इतिदं परमगुप्तं तुलश्याकवचामृतम् तुलसीकवच समासमः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६१	६०५६	त्रिकूटारहस्य (रुद्रयामलांतर्गत)			दे० का०	दे०
१६२	७४६८	त्रिपुटापूजापद्धति			दे० का०	दे०
१६३	६६६	त्रिपुरभैरवी स्तोत्र			दे० का०	दे०
१६४	५०२	त्रिपुरसुंदरी कवच			दे० का०	दे०
१६५	१४२४	त्रिपुरसुंदरी कवच			दे० का०	दे०
१६६	६८८	त्रिपुरसुंदरी पटल (त्रिकूटा रहस्य)			दे० का०	दे०
१६७	६६०	त्रिपुरसुंदरी पूजापद्धति			दे० का०	दे०
१६८	३११७	त्रिपुरसुंदरी मालामंत्र			दे० का	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·२ × ११·५ सें० मी०	८ (१–८)	१०	६३	पू०	प्राचीन सं०१७६२	इति श्री रुद्रयामल तंत्रे त्रिकूटारहस्ये मुक्तिसाधनं नामक कवचं द्वात्रिंशः पटलः ॥ शंवस्तु १७६२ मिति कुआर सुदि ६ समाप्त ॥ ... ...
२७·८ × १२·१ सें० मी०	११ (१–११)	१०	३२	पू०	प्राचीन	
१५·१ × ९ सें० मी०	२२ (१–२१,२१)	७	१८	पू०	प्राचीन	
२४·१ × १० सें० मी०	७ (१–७)	७	२४	पू०	प्राचीन सं०१७६०	इति श्री रुद्रयामले उमामहेश्वरसंवादे त्रिपुरसुंदरी त्रैलोक्यमोहन कवचं संपूर्णम् ... ... अब्दे खरस सप्तेंदुलांछिते श्रावणे बुधे। द्वादश्यां च सितेपक्षे लिलेख कवचं द्विजः ॥ १ ॥ शुभम् ॥
१६·५ × ८ सें० मी०	६	७	३३	पू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामले देवीस्वर संवादे-त्रैलोक्य मोहन नाम श्री त्रिपुरसुंदर्या-कवचं समाप्तः ।। श्री गणेशाय नमः ॥
१९·५ × १०·८ सें० मी०	१९ (१–१९)	११	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री रूद्रयामल तंत्रे त्रिकूटा रहस्ये भैरव गौरी संवादे मुक्ति साधनाख्यं शोडस कवचं संपूर्ण श्रीराजराजेश्वरी ललितांवार्पणमस्तु ॥ श्री ॥
१५·९ × ८·८ सें० मी०	४३ (१–४३)	११	१९	पू०	प्राचीन	इति पराप्रसाद विद्यापद्धतिः प्रातः कृत्यादिमध्याद् रात्रि च ... ... भवानीभव संताप निर्वापण सुधानदीं।
७·२ × ५ सें० मी०	९ (१-३,५-१०)	८	१२	अपू०	प्राचीन	इति महा त्रिपुर सुंदरी माला मंत्र पूजनं-समाप्तं ॥
(सं० सू० २–२६)	—					

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६९	५०४०	त्रिपुरसुंदरी रहस्य			दे० का०	दे०
१७०	४१९६	त्रिपुरसुंदरी स्तोत्र			दे० का०	दे०
१७१	५५४०	त्रिपुरार्चन चंद्रिका	वीरमाहेश्वराचार्य (हंसानंद नाथ)		दे० का०	दे०
१७२	३१०३	त्रिपुरार्चनरहस्य	ब्रह्मानंद		दे० का०	दे०
१७३	८९९	त्रिपुरासुंदरी स्तोत्र			दे० का०	दे०
१७४	६१४	त्रिपुरासुंदरी स्तोत्र			दे० का०	दे०
१७५	६६९	त्रिपुरास्तोत्र			दे० का०	दे०
१७६	७४९३	त्रैलोक्यमंगल कवच			दे० का०	दे०

पत्रों का पृष्ठों ा अ कार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३४·१ × १३·५ सें० मी०	७ (२–८)	७	३४	अपू०	प्राचीन	
२१·५ × ९·३ सें० मी०	२ (१–२)	९	३६	पू०	प्राचीन	
२८ × १२ सें० मी०	७९ (२–८०)	९	३७	अपू०	प्राचीन	इति श्री महोपाध्याय श्री बीरमाहेश्वराचार्य्यं रामनाराध्य हंसानंद नाथ विरचितायां त्रिपुरार्चन चंद्रिकायां मुपोद्घात प्रकरणं नाम प्रथमः पटलः ॥ (पृ० ६)
१२·२ × ११ सें० मी०	७३ (१–७३)	९	२७	पू०	प्राचीन	इतिज्ञानार्णव दक्षिणामूर्ति संहिता संप्रदायानुसार तश्च ब्रह्मानंदविरचिते श्री त्रिपुरार्चनरहस्ये वाह्यार्चनाद्युत्तरतरंगः समाप्तिमगमत् ॥ शुभमस्तु ॥
२६·१ × १०·५ सें० मी०	५ (२–६)	१३	५०	अपू०	प्राचीन	इति श्री वांमकेश्वर तंत्रोत्तमे श्रीहरिकुमार संवादे श्री मजग··· ··· स्तोत्र संपूर्णं ॥
१९·५ × ७ सें० मी०	३ (१–४)	५	२७	अपू०	प्राचीन	
१४ × ९ सें० मी०	११	९	२५	पू०	प्राचीन	
२३·९ × ११·२ सें० मी०	३	६	२२	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१७७	२३६/१२	त्रैलोक्यमंगल कवचं (गोपाल कवच)			दे० का०	दे०
१७८	३३४८/४६	त्रैलोक्यमोहन कवच			दे० का०	दे०
१७९	४९२०/३	त्रैलोक्यमोहन कवच			दे० का०	दे०
१८०	१९३७	त्रैलोक्यमोहन कवच			दे० का०	दे०
१८१	३०२३	त्रैलोक्यमोहन कवच			दे० का०	दे०
१८२	६३९५	त्रैलोक्यमोहन कवच			दे० का०	दे०
१८३	२०३७	त्रैलोक्यमोहनकालिका-कवच			दे० का०	दे०
१८४	२९२३	त्रैलोक्यमोहन यंत्र			दे० का०	दे०

पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
ब	स	द	६	१०	११
७ (१–७)	१२	१२	पू०	प्राचीन	इति श्री सनत्कुमारसंहितायां नवमपटल श्री कृष्णे त्रैलोक्यमंगलं नाम कवचं समाप्तं ।
६ (१–६)	७	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मयामले उमामहेश्वर संवादे श्री रामस्य त्रैलोक्यमोहनं नाम कवचं समाप्तं शुभमस्तु राम।
३ (१२–१४)	७	२८	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मयामलतंत्रे उमामहेश्वर-संवादे त्रैलोक्यमोहनं नाम कवचं संपूर्ण ॥ श्री रामचंद्रायनमः ॥
६ (१–६)	७	२०	पू०	प्राचीन स०१६०८	इतिश्री ब्रह्मयामले तंत्रे उमामहेश्वर-संवादे त्रैलोक्यमोहनं नामकवचं समाप्तम् संवत् १६०८ ...... ॥
४ (२–५)	६	२५	अपू०	प्राचीन	इतिश्री ब्रह्मयामले गौरी तंत्रे उमामहेश्वर संवादे त्रैलोक्यमोहनं नाम कवचनं समाप्तम् ॥ श्री रस्तु ॥
५ (१–५)	७	२५	पू०	प्राचीन	इतिश्री ब्रह्मयामले गौरी तंत्रे उमामहेश्वर संवादे त्रैलोक्यमोहनं नाम कवचं समाप्तम् ॥ शुभमस्तुश्री रस्तु शुभं भूयात् ॥
२१	५	१२	पू०	प्राचीन	इति रुद्रयामले देवीश्वरसंवादे त्रैलोक्यमोहनं कालिकाकवचं समाप्तं ॥
३	१४	४२	अपू०	प्राचीन सं०१८३५	इति विश्वालयेक तंत्रे विंशदंकाख्यं ... ...सं० १८३५ शके १७।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१८५	८०३	त्रैलोक्यविजय यंत्र			दे० का०	दे०
१८६	६०५६/३	दक्षिणकालिका कवच			दे० का०	दे०
१८७	५२०१	दक्षिणकालिका तंत्र			दे० का०	दे०
१८८	५६१६	दक्षिणकालिका पद्धति			दे० का०	दे०
१८९	७७५६	दक्षिणकालिका पद्धति			दे० का०	दे०
१९०	५२९०	दक्षिणका लिका पद्धति			दे० का०	दे०
१९१	३०४६/७	दक्षिणकालिका पूजा-पद्धति			दे० का०	दे०
१९२	४८११	दक्षिणकालिका मंत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७ × ११· सें० मी०	३६ (१–३६)	१०	३३	अपू०	प्राचीन	
११·५ × ६·७ सें० मी०	१०	६	१३	अपू० (व्यस्त)	प्राचीन	इति श्री उत्तर तंत्रे कालिप्रस्तावे काली भैरव संवादे दक्षिणाकालिका कवचं संपूर्णं ॥ (पृ० २४२)
२४·४ × ८·५ सें० मी०	८ (१–८)	६	२०	अपू०	प्राचीन	
२५ × १६ सें० मी०	१२ (१,४०-५०, १ और)	२१	१६	अपू०	सं०१९२५	लिखितं दक्षिणकालिका पद्धतौ विधिविषेध वचन विचरणंनाम अष्ट ख पटल: संपूरणसुभमस्तु मिती पूस सुदि ९ का संवत् १९२५ के ॥
२७·२ × १४·५ सें० मी०	३८ (२–३९)	१८	१६	अपू०	प्राचीन	इति श्री दक्षिण कालिका पद्धतौ उपोद्घातादिदेतधावनांत कथनं नाम प्रथम: पटल: ॥ १ ॥
१५·४ × १२·६ सें० मी०	२४ (१-१६, १८-२५)	१२	१९	अपू०	प्राचीन	देवेशि भक्ति सुलभे परिवार समन्विते यावत्त्वां पूजष्यामि तावत्वं स्वस्थिरा भव इति मंत्र पठन् कल्पित मूर्त्तौ यंत्रे निधाय आवहनादि मुद्रा प्रदर्श्य महाकाल सहिते दक्षिण कालिके इहागच्छ २ संनिधाभव ... ... यथाशक्त्युपचारै: संपूज्य पंच पुष्पांजलिं दत्वा प्रार्थयेत् ... ... (पृ० २२)
१७·७ × ११ सें० मी०	५४ (१-३१, ३३-५४)	८	२०	अपू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामले काली कुल सर्वस्वे दक्षिणकालिका पूजा पद्धति समाप्ति ॥ शुभ मस्तुसर्वं जगताम्० ॥
२६·८ × ८·७ सें० मी०	५ (१–५)	८	३८	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१९३	२९६५/४	दक्षिणकालिका मंत्र			दे० का०	दे०
१९४	१५११	दक्षिणकालिका मंत्र			दे० का०	दे०
१९५	५३५२	दक्षिणकालिका मंत्र			दे० का०	दे०
१९६	३०४६/७	दक्षिणकालिकावाम स्तोत्र			दे० का०	दे०
१९७	६७१	* दक्षिणामूर्ति संहिता			दे० का०	दे०
१९८	७६८०	दत्तात्रेयतंत्र (संग्रह)			दे० का०	दे०
१९९	२७११	दत्तात्रेयतंत्र			दे० का०	दे०
२००	२२८०	दत्तात्रेयतंत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५.५ × ९.५ सें० मी०	४	१३	८	अपू०	प्राचीन	
१८.३ × १०.५ सें० मी०	२ (२–३)	६	१८	अपू०	प्राचीन	
२९.१ × २०.२ सें० मी०	१ (खर्रा)	२३	३५	पू० (जीर्ण)	प्राचीन	
१७.७ × ११ सें० मी०	६	८	१९	पू०	प्राचीन	इति श्री देवियामले महाकाल महाकीली-संवादे दक्षिणकालिकां वामस्तोत्र पद्य-सिद्धि प्रदं हृदयं संपूर्णम्० ॥
२४.६ × १०.१ सें० मी०	६५ (१–६५)	९	४५	पू०	प्राचीन सं०१७२०	इति श्री दक्षिण मूर्ति संहितायां दमन कारोपण नैमित्तिका विधानं नामपटल ॥ संवत्स १७२० सतैनाम कुअरवादी दुति आ वार बुधावरके पुस्ततक लीष्यीते शुभमस्तु सीध्य रस्ती ॥ श्री रामा कृष्ण सहाइ ॥
२७.९ × १७.३ सें० मी०	९	२०	१६	अपू०	प्राचीन	
१७ × १३ सें० मी०	३०	१२	२५	अपू०	सं०१९१०	इति श्री दत्तात्रेय तंत्रे सिंह व्याघ्रादि निवारणं नाम द्वाविंशति पटल: ··· इति संवत् १९१० फा० कृ० ९
२४.९ × १५.९ सें० मी० (स०सू०२-८७)	१२ (१–२, ४–१३)	१५	३०	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	
१	२	३	४	५	६	
२०१	१६३३	दत्तात्रेय मालामंत्र			दे० का०	दे०
२०२	३४२९	दत्तात्रेयवज्र कवच			दे० का०	दे०
२०३	४१७६	दीक्षाविद्याकथा			दे० का०	दे०
२०४	७१३०	दुर्गाकवच			मि० का०	दे०
२०५	६४२	दुर्गाकवच			दे० का०	दे०
२०६	११६४	दुर्गाकवच			दे० का०	दे०
२०७	७२९६	दुर्गाकवच			दे० का०	दे०
२०८	७६०४	दुर्गाप्रयोगविधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१३·८ × ९·७ सें० मी०	४	७	१३	अपू०	प्राचीन	
२३·८ × १५ सें० मी०	७ (१–७)	३०	२८	पू०	शाके सं० १७२०	इति श्री स्कंद पुराणे दत्तादनदत्त संवादे दत्तात्रेय वज्रकवचं संपूर्णं ॥ शाके १७२० कालयुक्तनाम संवत्सरे ... ...
२१·९ × १४·२ सें० मी०	१५	१४	१०	पू०	प्राचीन सं० १९६०	इति मंत्र सस्त्रे श्री कृष्ण नारद संवादे दीछा विद्य कथा समाप्तं संवत् ॥ १९६० ॥ कारतक मासे सुकाल पछे तीथौ ॥ ८ ॥ बुधवासरे लिषयते ··· ॥
१५ × ९·१ सें० मी०	३	७	१७	अपू०	प्राचीन	
१९·३ × ९·८ सें० मी०	६ (१–६)	७	२४	अपू०	प्राचीन	
१९·९ × १०·४ सें० मी०	७ (१–७)	७	२६	अपू०	प्राचीन	इति श्री कीलक समाप्तम् ॥ शुभमस्तु ॥
१३·९ × ८·६ सें० मी०	१३ (६–१८)	८	१४	अपू०	प्राचीन	इति हरिहर ब्रह्मविरचितं देव्या कवच समाप्तं ॥ ··· ···(पत्र सं० १३) इति भगवत्याः कीलकं सम्पूर्णम् ॥
२१·६ × १२·१ सें० मी०	१०	११	४०	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२०९	७३२७	दुर्गारहस्य (देवीमाहात्म्य)			दे० का०	दे०
२१०	७४४८	दुर्गासप्तशती			दे० का०	दे०
२११	७४५१	दुर्गासप्तशती			दे० का०	दे०
२१२	७७७५	दुर्गासप्तशती			दे० का०	दे०
२१३	७७८९	दुर्गासप्तशती			दे० का०	दे०
२१४	६१७७	दुर्गासप्तशती			मि० का०	दे०
२१५	६१४३	दुर्गा सप्तशती			दे० का०	दे०
२१६	५९५६	दुर्गा सप्तशती			दे० का	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
१४·८ × ५·७ सें० मी०	१२ (८२–९३)	७	१८	अपू०	प्राचीन सं० १९०६	इति मार्कंडेय पुराणे सावर्णिके मन्वंतरे-देवी माहात्म्ये मूर्ति रहस्यं नाम षोड-शोध्यायः ॥ संवत् १९०६ शके १७७१ दुर्मतीनाम संवत्सरे ॥
२० × ९·८ सें० मी०	८२ (१–८२)	७	२०	पू०	प्राचीन सं० १९१८	इति मार्कंडेय पुराणे सावर्णिके मन्वंतरे देवीमहात्म्ये × × संवत् १९१८ ज्येठ वदि ४ × × × ॥
२०·६ × १० सें० मी०	४२ (१–४२)	९	२६	अपू०	प्राचीन सं० १७९४	इति श्री मार्कंडेय पुराणे सावार्णिके मन्वंतरे देवी माहात्म्ये × × × संवत् १७९४ शाके १६५९ श्रावण वदि ३० अमावास्यायां शनि दिने लिखितं ×
२६·५ × १४·४ सें० मी०	५ (१–५)	९	२५	अपू०	प्राचीन	
१९·७ × ११·७ सें० मी०	७	७	२०	अपू०	प्राचीन	
२३·४ × ११·५ सें० मी०	३९ (१–३९)	८	३८	पू०	सं० १८६८	इति श्री मार्कंडेय पुराणे सावर्णिके मन्वंतरे देवी माहात्म्ये सुरथ वैश्ययोर्वर-प्रदानं नाम त्रयोदशोध्यायः ॥ १३ ॥ इति श्री सप्तसती पाठेन समाप्तं ॥ शुभमस्तू मंगलंददातु ॥ श्री ॥ संवत् १८६८ ॥
१५·५ × ७·८ सें० मी०	१०० (१–१००)	६	१३	पू०	प्राचीन सं० १८८४	इति मार्कंडेय पुराणे सावर्णके मन्वन्तरे देवी माहात्म्यें सुरथ वैश्ययोर्वरप्रदान नाम ॥ संवत् ॥ १८ ॥ ८४ ॥ ...
१६·९ × ९·८ सें० मी०	२८ (१८-३५, ७७-८६)	६	१८	अपू०	प्राचीन	इति मार्कंडेय पुराणे सावर्णिकेमन्वंतरे देवी माहात्म्ये शुंभ बधः ॥ (पृ० ७७)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२१७	५८२४	दुर्गा सप्तशती			दे० का०	दे०
२१८	२०७४	दुर्गा सप्तशती			दे० का०	दे०
२१९	७२३९	दुर्गासप्तशती			दे० का०	दे०
२२०	२९६८	दुर्गासप्तशती			दे० का०	दे०
२२१	२९७३	दुर्गासप्तशती			दे० का०	दे०
२२२	४५७३	दुर्गासप्तशती			दे० का०	दे०
२२३	४६२६	दुर्गासप्तशती			दे० क.१०	दे०
२२४	४८०८	दुर्गासप्तशती			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·५ × १४ सें० मी०	२२ (९-१७-३७)	१०	२४	अपू०	प्राचीन सं० १९१७	इति मांर्कंडेय पुराणे सार्वर्णिकेमन्वतरे देवी माहात्म्ये सुरथ वैश्ययोर्वरप्रदानो नाम त्रयोदशोध्यायः ··· संवत् १९१७
२१·८ × १०·८ सें० मी०	९ (१–९)	९	२६	अपू० (कृमिकृंतित)	प्राचीन	
१३·८ × ८·७ सें० मी०	१४६ (१–१२८, १३२–१४६	६	१३	अपू०	प्राचीन सं० १९३१	इति माकर्कण्डेय पुराणे सार्वर्णिके मन्वंतरेदेवी माहात्म्ये सुरथ वैश्यो × संवत् १९३१ शाके १७९६ पौष कृष्ण १४ बुधे ॥ मिदं पुस्तकं लिखितं मिश्र-राम नारायण × × ॥
८·९ × ५ सें० मी०	३५ (१–३५)	४	९	अपू०	सं० १८४०	इति श्री ··· किलक ··· सुभमस्तु संवत् १८४० ··· ··· ॥
१५·५ × ९·९ सें० मी०	५ (१–५)	८	३०	अपू०	प्राचीन	
२७·३ × १२ सें० मी०	२४ (२,५-६,८-१२,१५-१७, १९,२२-२३, २७,३२-३३, ३९,४२-४४, ४७-४८,५५)	७	२५	अपू० (कृमिकृंतित)	प्राचीन	इति श्री मार्कंडेय पुराणेसार्वर्णिके मन्वंतरे देवी महात्म्ये निशुंभवधाख्यो नवमोध्ययः ॥ ··· (पत्र संख्या ४२)
१६ × ८ सें० मी०	९३ (१–९३)	६	१९	पू०	प्राचीन	इति श्री मार्कंडेय पुराणे सार्वर्णिके मन्वंतरे देवी महात्म्ये सुरथ वैश्ययोवर प्रदानंनाम त्रयोदशोध्यायः ॥ १३ ॥
१४·९ × १० सें० मी०	३३ (१-३,५, ७-३५)	८	१६	अपू०	प्राचीन	इति श्री माकर्कण्डेय पुराणे सार्वर्णिके मन्वंतरे देवीमाहात्म्ये महिषासुर सैन्य-वधः नाम द्वितीयो अध्यायः ॥ २ ॥ × × (पत्र संख्या २८)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२२५	१०२७	दुर्गासप्तशती			दे० का०	दे०
२२६	६२१	दुर्गासप्तशती			दे० का०	दे०
२२७	८८४	दुर्गासप्तशती			दे० का०	दे०
२२८	३८८५	दुर्गासप्तशती			दे० का०	दे०
२२९	५८९	दुर्गासप्तशती			दे० का०	दे०
२३०	५८६	दुर्गासप्तशती			दे० का०	दे०
२३१	५७०	दुर्गासप्तशती			दे० का०	दे०
२३२	३४५	दुर्गासप्तशती			दे० का	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१·५ × ११ सें० मी०	५६ (१-४,६-१८-२१-५९)	७	३०	अपू०	सं०१९१५ शाके १७७०	इति मारकण्डे पुराणें सावर्णिक मन्वंतरे देवीमहात्मये सुरथ वैश्य वर प्रदान नामत्रयो दशोऽध्याय: १३ ··· ··· संवत् १९१५ शाके श्री शालि १७७०॥
१८ × ९ सें० मी०	८१	६	२०	अपू०	प्राचीन	
१४·५ × ८·७ सें० मी०	७८ (१-६९, २-१०)	७	२२	अपू०	प्राचीन	
१५·६ × १०·२ सें० मी०	८ (२-९)	८	१९	अपू०	प्राचीन	[कीलक अर्गला स्तुति के कुछ पत्र]
२६·२ × ११ सें० मी०	४८ (१-४८)	७	३०	पू०	सं०१९११	इति मार्कंडेय पुराणे सावर्णिके मन्वंतरे देवी माहात्म्ये सुरथ वैश्ययोर्वर प्रदानं नाम त्रयोदशोध्याय: ॥ १३ ॥ संवत् ॥ १९०११ ॥ फाल्गुण शुक्ला द्वादश्यां बुधवासरे लिपि कृतं स्वामी जमना प्रसादेण ॥
२४·३ × १२·३ सें० मी०	४९ (१-४९)	१०	२२	पू०	प्राचीन सं०१९२२	मार्कंडेय पुराणे सावर्णिके मन्वंतरे देवी माहात्म्ये ·····संवत् १९२२ श्री जयति अश्विनमासे शुक्लपक्षे षष्ट्यां भौमवासरे लिखितं रामय ॥
१८·५ × १०·५ सें० मी०	५ (५,२२, ३४,३४, ४७-४८)	८	२३	अपू०	प्राचीन	
२२·८ × ११·७ सें० मी०	८४ (१-३, ५-८५)	९	३०	अपू०	प्राचीन	इति लघुस्तव: समाप्त: ॥ श्री गणेशायनम: ॥

(सं०सू०-२-२८)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२३३	३५६	दुर्गासप्तशती	कृष्णानंद		दे० का०	दे०
२३४	६६०	दुर्गासप्तशती			दे० का०	दे०
२३५	४६०	दुर्गासप्तशती (संस्कृत टीका)			दे० का०	दे०
२३६	१२७	दुर्गासप्तशती			दे० का०	दे०
२३७	६३१	दुर्गासप्तशती			दे० का०	दे०
२३८	२५८७	दुर्गासप्तशती			दे० का०	दे०
२३९	२५८५	दुर्गासप्तशती			दे० का०	दे०
२४०	२५८३	दुर्गासप्तशती			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१·५ × ११·५ सें० मी०	६८	९	१५	पू०	सं० १८७७	इति श्री मारकंण्डेय पुराणे सार्वाणिके मन्वंतरे देवीमहात्म्ये सुरथः वैश्यो वर प्रदानों नाम त्रयोदशो अध्यायः सं० १८७७ ॥ चैत्र मासे शुक्ले पक्षे द्वितीयायां गुरु वासरे लिषतं गुजराती शिव दयाल बुढ़ाणें मध्यें ॥ पठनार्थं गिरधारी ॥ शुभं मस्तु ॥ मंगल ददातु ॥
२३·२ × ९·८ सें० मी०	२१	६	३३	अपू०	प्राचीन	
२७·५ × ·११ सें० मी०	८४ (१–८४)	११	४५	पू०	प्राचीन	सप्तशतिकाटीका समाप्तमागात् ॥ शुभमस्तू ॥
१२·५ × ७·८ सें० मी०	१५१ (१-६३,६५-६६,६८-९०, ९२-९८,१०१ -१२०-१२३-१२८,१३४-१३७-१४२-६६)	६	१४	अपू०	प्राचीन	इति मार्कंडेयपुराणे सार्वाणिकेमन्वतरे देवीमाहात्म्ये सुरत्थ वैश्ययो वरप्रदानं त्रयोदशोध्यायः ॥
२०·२ × ८·७ सें० मी०	८ (१–८)	९	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री मार्कंडेय पुराणे सावर्णिके मन्वंतरे देवीमाहात्म्ये रहस्यं समाप्तः ॥ शुभंमस्तु ॥ शुभं भूयात् ॥ श्रीराम ॥
१५·१ × ८·६ सें० मी०	१०४ (१–१०४)	१२	२२	पू०	प्राचीन सं० १९२३	(ग्रंथ नाम के लिये हाशियेपर 'दु० पा० लिखा है।) श्री मार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वंतरे देवी माहात्म्ये सुरथ वैश्ययोर्वर प्रदानं नाम त्रयोदशः ॥१३॥ श्री दुर्गा देवी प्रसादोस्तु संवत् १९२३ चैत्र कृष्ण २ भृगौ लक्ष्मण दत्त शर्मा पन्तोम नामकः । स्वार्थं मलिखत् ॥
१७·३ × ११·२ सें० मी०	२०	८	२०	अपू०	प्राचीन	
२६·३ × १४·५ सें० मी०	९ (८–१६)	११	२८	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२४१	३१६४	दुर्गासप्तशती			दे० का०	दे०
२४२	३२००	दुर्गासप्तशती			दे० का०	दे०
२४३	११५२	दुर्गासप्तशती			दे० का०	दे०
२४४	३४५६	दुर्गासप्तशती			दे० का०	दे०
२४५	३४३६	दुर्गासप्तशती			दे० का०	दे०
२४६	१५४१	दुर्गासप्तशती			दे० का०	दे०
२४७	१५२८/६	दुर्गासप्तशती			दे० का०	दे०
२४८	१४६७	दुर्गासप्तशती			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१०·३ × ७·४ सें० मी०	२७	५	६	अपू०	प्राचीन सं०१८०५	
१४ × ८·३ सें० मी०	१३	६	२१	अपू०	प्राचीन	
२५·७ × ११·८ सें० मी०	६ (५–१०,१२-१४)	७	२१	अपू०	प्राचीन	
२४·५ × ८ सें० मी०	५१ (१–५१)	७	३५	पू०	सं०१८४६	इति मार्कण्डेयपुराणे सावर्णिकेमन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये सुरथ वैश्ययोर्वरप्रदानोनाम त्रयोदशोध्यायः ।। समाप्तिमगमत् ।। शुभंभूया लेखकपाठकयोः ।। सं० १८४६ फाल्गुन शुक्ल द्वितीयायां लिखितं भौमवासरे ।।··· ·····
१६ × ६·३ सें० मी०	७२ (१–७२)	८	१८	अपू०	प्राचीन सं०१८८३	इति मार्क्कंडेयपुराणे सावर्णिके मन्वंतरे देवी माहात्म्ये सुरथवैश्ययोर्वर प्रदानं नाम त्रयोदशोध्यायः ।। शुभमस्तु मंगलं ददातु ।। सं० १८८३ शाके १७४८···।।
२० × १०·८ सें० मी०	८१ (१-२,४-८२)	७	२०	अपू०	प्राचीन	
१४·८ × ११ सें० मी०	८१ (५५–१०४, १–३१)	८	१५	अपू०	प्राचीन	इति श्री महा कालि सूक्तं समाप्तम् ।।
१४·६ × ६·८ सें० मी०	८६	६	१७	अपू०	प्राचीन	इति मार्कंडेयपुराणे सावर्णिके मन्वंतरेदेवी महात्मये वैकृतिरहस्यंनाम ।···

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२४९	१८१०	दुर्गासप्तशती			दे० का०	दे०
२५०	१७८४	दुर्गासप्तशती			दे० का०	दे०
२५१	१८२९	दुर्गासप्तशती			दे० का०	दे०
२५२	१३०८	दुर्गासप्तशती			दे० का०	दे०
२५३	४२४७	दुर्गासप्तशती			दे० का०	दे०
२५४	४३७५	दुर्गासप्तशती			दे० का०	दे०
२५५	१३२५	दुर्गासप्तशती			दे० का०	दे०
२५६	३०६९	दुर्गासप्तशती			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४ × ८·८ सें० मी०	१६ (१-३,५-१७)	८	२९	अपू०	प्राचीन	इति श्री मार्क्कंडेयपुराणेसावर्णिके मन्वंतरे देवी महात्म्येशक्रादि ··· ···॥
२२·७ × १२ सें० मी०	१०७ (१–१०७)	६	२१	पू०	प्राचीन	ॐ तत्सदितिश्रीमार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरेमंत्रगर्भ श्री देवीमाहात्म्येसुरथ वैश्ययोर्वरप्रदानोनामत्रयोदशोध्याय: । समाप्तोयं मंत्रगर्भ सहिता सप्तशतिकापाट: ॥ ॐ नमोनारायणाय ॥
२१·५ × ९·३ सें० मी०	७६ (१–७६)	६		पू०	प्राचीन	इति श्री मार्कंडेयपुराणेसावर्णीकेमन्वंतरे देवी माहात्म्येसुरथवैश्यवरप्रदानानाम त्रयोदशोध्याय: ॥ शुभं श्री भवान्ये नम: ॥ श्री ॥
१५ × १२·५ सें० मी०	६३	९	१९	पू०	सं०१९१०	इति श्री मार्क्कंडे पुराणे सार्वाणि के मन्वंतरे देवी महात्म्यै सुरथवैश्ययेर्वर प्रदानो नाम १३ राम ॥ सं० १९१० चैत्र शुक्ल प्रतिपदा शनिवारलिखतं उमादंत पठनार्थं ॥ श्री राम ॥ शुभ मस्तु, दुगार्यं नम: ॥
१५·२ × ८·७ सें० मी०	८१ (२-३६,३८-८०,९४,१४-१५ दो बार)	७	२०	अपू०	प्राचीन	
१५·७ × ९·४ सें० मी०	९९ (१ से ११२ संख्यक पृष्ठ प्राप्त है पर बीच बीच में खंडित है।)	७	१५	अपू०	प्राचीन सं० १८४९	इति श्री महाकाली महालक्ष्मी महा सरवतीभ्योनम: ॥ लिषितं पाठिक् गौरी शंकरेण देव्यार्पणमस्तु संवत् १८४९ × × × × × ॥ (पृ० १११)
२२·५ × १२ सें० मी०	२२	६	१८	अपू०	प्राचीन	
२२·८ × ९·६ सें मी०	५० (१–५०)	११	५३	पू०	प्राचीन	इति मार्क्कंडेय पुराणे इति त्रयोदशेत्यर्थ: एवषाहुतष: सप्तशतं स्युस्तर्प्पणस्य च ॥ इत्यं ··· नार्णवे तंत्रे प्रोक्त मिति ॥ तन्त्रज्ञानार्णवेऽनुपलंभा ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२५७	७८२९	दुर्गाशप्तशती टीका		नागोजी भट्ट	दे० का०	दे०
२५८	५६३४	दुर्गासप्तशती टीका			दे० का०	दे०
२५९	३७६७	दुर्गासप्तशती टीका		नागोजी भट्ट	दे० का०	दे०
२६०	१४६९	दुर्गासप्तशती, देवी माहात्म्य			दे० का०	दे०
२६१	७४०१	दुर्गासप्तशती, देवीसूक्त			दे० का०	दे०
२६२	३१६	दुर्गासप्तशती न्यास			दे० का०	दे०
२६३	७५०१	दुर्गासप्तशती व्याख्या	नागोजी भट्ट		दे० का०	दे०
२६४	५३०५	दुर्गासप्तशती व्याख्या	नागोजी भट्ट		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·४ × १०·४ सें० मी०	७१ (१–७१)	१०	४८	पू०	प्राचीन शके १६५१	इति श्री मद्रुपाध्यायोपनामक शिव भट्टसुतसतीगर्भ नागोजी भट्ट कृते मार्कंडेय पुराणांतर्गत सप्तशत्याख्य चंडीस्तोत्र व्याख्याने चंडी स्तोत्र प्रयोगविधिः संपूर्णः ॥ श्री रामार्पण मस्तु शाके भूशरषट् सुधाकर १६५१ × ×
३४ × १३·२ सें० मी०	२३ (१–२३)	११	५०	अपू०	प्राचीन	
२४·२ × १०·६ सें० मी०	४५ (१–४५)	१०	३४	अपू०	प्राचीन	इति शिवभट्ट सुत सतीगर्भज नागोजी-भट्ट कृत सप्तसती व्याख्याने द्वितीयोध्यायः ॥ × × पत्रसंख्या २०
२३ × ९·७ सें० मी०	२७	९	३१	अपू०	प्राचीन	
२३·१ × १०·६ सें० मी०	७ (१–७)	७	३५	अपू०	प्राचीन सं० १८३५	इति रुद्रयामले धाट तंत्रेदेवी माहात्म्यं सप्तशतिकायांदेवी सूक्तं वर्णनं समाप्तेम् शुभमस्तु मिती आषाढ़ वदि ७ भौमे संवत् १८३५ × ×
१४·६ × ८·७ सें० मी०	१२ (१–१२)	७	१५	पू०	प्राचीन	इति क्षमापनं समाप्तम् ॥ श्री भैरवायन्मः ॥
३२ × १२·४ सें० मी०	२२ (१–२२)	११	४६	अपू०	प्राचीन	इति शिव भट सुत सती गर्भजनागोजी वट्ट कृते सप्तसती व्याख्याने सप्तमोध्यायः ७ ··· पत्र सं० २०
३१·१ × १५·२ सें० मी०	५२ (१–५१) (२४वाँ दो)	११	४५	पू०	सं० १८६६	इति कालोप भाषक श्री शिव भट्ट सुत सती गर्भ ज नागो जी भट्ट कृते सप्तशती व्याख्याने त्रयोदशोध्यायः समाप्तः संवत् १८६६ शाके १७३१ तत्र वर्षे महामांग्यल्यप्रदे मासोत्तम मासे आषाढ़ प्रथम मासे शुक्ले पक्षे शुभतिथौ प्रतिपदायां १ बुधवासरे इदं पुस्तकं लिषतम् मिश्रलहौरी मलषतौलीमध्ये श्री शुभमस्तु श्री रस्तु × × × ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२६५	५३२५	दुर्गासप्तशती सटीक		नागेश भट्ट	दे० का०	दे०
२६६	३६४५	दुर्गासप्तशती सटीक			दे० का०	दे०
२६७	५२६३	दुर्गासप्तशती सटीक		नागोजी भट्ट	दे० का०	दे०
२६८	६११४	दुर्गासप्तशती सटीक			मि० का०	दे०
२६९	७४४३	दुर्गासप्तशती सटीक			दे० का०	दे०
२७०	६४३१	दुष्ट रजोदर्शन शांति			दे० का०	दे०
२७१	३५८७	देवनिर्णय			दे० का०	दे०
२७२	४९५३	देवी कवच			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३२·१ × १७·२ सें० मी०	२३ (१-१३,१५-१६,१६-१७, ३०-३४,५२)	१३	५२	अपू०	प्राचीन सं०१८९५	इति काल लोपक नाम शिवभट्ट सुत-सती गर्भज नागो जी भट्ट कृते सप्त-सती व्याख्याने सूक्त टीकायां ... ... संवत् १८९५ शाके १७६० आषाढ कृष्ण ६ बुधवासरे ॥
२३·८ × १२·६ सें० मी०	६ (१–६)	८	३१	अपू०	प्राचीन	
३३ × १६·७ सें० मी०	४७ (२–४८)	१५	३९	अपू०	प्राचीन सं०१९१७	इति कोलोपनामक शिवभट्टसुत सती गर्भज नागोजी भट्टकृते सप्तशती व्याख्याने त्रयोदशोध्याय: ॥ १३ ॥ पौषेमासिसिते पक्षे पंचम्यां बुधवासरे लिलेख पुस्तकं विप्र: शिवकर्ण:...... ऋषींदुनंदेदुमितेचवत्सरे १९१७ ॥
२५ × १२·५ सें० मी०	१२ (१–१२)	९	२२	अपू०	आधुनिक	
३७· × १४·२ सें० मी०	९० (१–९०)	१३	४५	पू०	प्राचीन सं०१९२३	इति श्री मार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वंतरेदेवी माहात्म्ये सुरथ वैश्यर्वर प्रदान नाम त्रयोदशोध्याय ॥ १३ ॥ संपूर्णमस्तु श्री संवत् १९२३ मीती भादो शुदी १४ के समाप्तम् ॥...... ......इति श्रीनागोजी भट्ट संमत कृते सप्तशती व्याख्याने सुरथवैश्ययोर्वर-प्रदानं नाम त्रयोदशोऽध्याय: ॥१३॥ समाप्तं देवी माहात्म्य ॥
२१·८ × ९·८ सें० मी०	१५ (१–१५)	१०	३१	पू०	प्राचीन	इति दुष्ट रजो दर्शन शांति समाप्ता ॥
१६·५ × १०·५ सें० मी०	२ (१–२)	८	५०	पू०	प्राचीन	इति कार्य परत्वेदेवनिर्णय: ॥
१३ × ९·३ सें० मी०	४ (७–८,१०-११)	६	१३	अपू०	प्राचीन	इदंतुदेव्या: कवचं देवानामपि दुल्लर्भं य:पठेत्प्रायतो नित्यं ... ... (पृ० १०)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२७३	६४०२	देवीकवच			दे० का०	दे०
२७४	७०३४	देवीकवच			दे० का०	दे०
२७५	६११९/७	देवीकवच			दे० का०	दे०
२७६	४२००/५	देवीकवच			दे० का०	दे०
२७७	७४४६	देवीकवच			दे० का०	दे०
२७८	५९९७	देवीकवच, अर्गला, कीलक			दे० का०	दे०
२७९	६०८७	देवीकवच, कीलकादि			दे० का०	दे०
२८०	७०६७	देवीकवच, कीलकादि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
११·४ × ६·४ सें० मी०	१४ (१-३,५-६,८, १०-१७)	६	१७	अपू०	प्राचीन सं० १८७८	इति श्री भगवत्याः कीलक समाप्तं सुभमस्तु ।। श्री राधाकृष्ण सहाइ राम संवत् १८७८ ।। लिषा × × × ।।
१८·६ × ६·२ सें० मी०	१० (१–१०)	५	२२	पू०	प्राचीन सं० १९२५	इति वाराहपुराणे हरिहर ब्रह्माविरचितन्देव्याः कवच समाप्तम् मार्ग मासे कृष्णपक्षेतिथौ तृतीयायां भौमवासरे सं० १९२५ इदम्पुस्तकं लिखितं दीक्षित अजोध्या प्रसादेन ········
१४·७ × ९·९ सें० मी०	७ (५२–५८)	९	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री हरिहर ब्रह्माविरचितं देव्याः कवचंसमाप्तम् ।।
१३·८ × ८·९ सें० मी०	१२ (२–१३)	७	१५	अपू०	प्राचीन	इतिहरिहर ब्रह्माविरचितं देव्याकवचं संपूर्णम् ।।
१८·३ × ९·३ सें० मी०	१९ (१–१९)	६	१८	पू०	प्राचीन	इतिभगवती स्तवकीलकं अथ रात्रि सूक्तंदेति देव्या कवच संपूरणं ।।
१९·७ × १०·८ सें० मी०	८ (१–८)	८	२७	पू०	प्राचीन	इति देव्याः कीलकं समाप्तम् ।।
१६·५ × ८·८ सें० मी०	१३ (१–१३)	६	२०	पू०	प्राचीन	इतिश्री देव्याः कीलकं समाप्तं ३
१६·५ × १०·५ सें० मी०	९ (१–९)	९	१७	पू०	प्राचीन	इति भगवत्याकीलकं समाप्तं ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२८१	४५८४	देवीकवचादि			दे० का०	दे०
२८२	२६३६/१२	देवीध्यान			दे० का०	दे०
२८३	१६६२	देवीनवार्णमंत्र एकादश न्यास			दे० का०	दे०
२८४	४६४३	देवीमाहात्म्य			दे०का०	दे०
२८५	५८४७	देवीमाहात्म्य टीका			दे० का०	दे०
२८६	११५८	देवीरहस्य			दे० का०	दे०
२८७	४६६२	देवीरहस्य			दे० का०	दे०
२८८	४१०१	देवीरहस्य			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
११·२ × ७·८ सें० मी०	१४ (१–१४)	७	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री गवत्याः कीलकं समाप्तम् ॥
२४·३ × १३·१ सें० मी०	५	२२	१७	पू०	प्राचीन	इति देव्याध्यानानि ॥
१३·५ × ८·५ सें० मी०	३०	७	१५	पू०	प्राचीन	श्री देव्यार्पण मस्तु ॥ इदं पुस्तकं रघुनाथ पंडितस्य पुत्रः मुकुंदनामांकितेन लिखितं ॥
३२·२ × १४·८ सें० मी०	१४ (२१३–२२६)	८	४३	अपू०	प्राचीन	इति श्री मार्कंडेयपुराणे सावर्णिके मन्वंतरे देवीमाहात्म्ये देव्याफल कथनं नाम ॥ १२ ॥
२५·२ × १५·९ सें० मी०	२३	११	४३	अपू०	प्राचीन	... ... मार्कण्डे पुराणे सवर्णे मन्वंतरे देवी महात्मे टीकायाम् २ ... (पत्र सं० ४)
२६ × ११·२ सें० मी०	१० (३०–३३, ५६–६१)	८	३०	अपूर्ण	प्राचीन	
२१·६ × ९·७ सें० मी०	९ (१–९)	८	३२	पू०	प्राचीन सं०१८७६	इति श्री मार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वंतरे देवि महात्म्ये रहस्य नामः समाप्तम् संवत् १८७६ ॥
११ × ४·८ सें० मी०	३७ (२८-२९, ३४, ३९-५५, ६६-८२)	९	२४	अपू०	प्राचीन	इति श्री देवीरहस्ये पुरश्चर्य्या होमविधिर्नामैकादशः पटलः (पत्रसंख्या ४४)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२८६	१५	देवीरहस्य			दे० का०	दे०
२९०	४३७३	देवीरहस्य			दे० का०	दे०
२९१	७८५४	देवीरहस्य			दे० का०	दे०
२९२	७७५२	द्वादशाक्षर मंत्र			दे० का०	दे०
२९३	७७३९	धनदाकवच			मि० का०	दे०
२९४	७६६१	धन्वंतरि विधान			दे० का०	दे०
२९५	३२९७	धूमावती पूजाविधान			दे० का०	दे०
२९६	६३	नक्षत्रकष्टावली			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१८×११·५ सें० मी०	८० (२–११, १४–८३)	७	१०	अपू०	प्राचीन	इति देवी रहस्ये तंत्रे लक्ष्म नारायणाख्य स्तवाख्यानं नाम चत्वारिंशः पटलः समाप्तं ॥ लक्ष्मी नारायण पंचांग पद्धति ॥
९·५×४·६ सें० मी०	१६१	५	१२	अपू०	प्राचीन सं०१९३९	इति श्री देवी रहस्ये लक्ष्मी नारायणाख्यांन स्तोत्रं नाम चत्वारिंशः पटलः × × × संवत् १९३९ वैशाख मासे कृष्णापक्षे शुभतिथौ एकादश्यां ११ शुक्रवासरे शुभंभूयातु ॥
१४·६×८·५ सें० मी	३	१२	२८	अपू०	प्राचीन	
१६·६×१०·२ सें० मी०	५ (१–५)	७	१९	पू०	आधुनिक	
११·७×६·७ सें० मी०	७ (१–७)	६	१५	पू०	प्राचीन सं०१८९०	इति धनदाकवचं समाप्तम् ॥ श्री रस्तू ।१। जेष्ठ शुल्क २ भौमे ॥ १८९० ॥ शाके ५५ ॥
२४·२×९·४ सें० मी०	६ (१–६)	७	२६	पू०	सं०१९१२	इति धन्वंतरजोक्त धन्वंतरि विधान समाप्तः शुभंभूयात् संवत् १९१२ ॥
१५·८×९·८ सें० मी०	१६	१६	१३	अपू०	प्राचीन	इति श्री मद्धूमावती पूजाविधानंसम्पूर्णम् ॥
१४·५×१५ सें० मी०	४ (७–९)	१२	१४	अपू०	प्राचीन	

(सं०सू०२-३०)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२९७	२२३६	नवग्रहन्यास विधिः			दे० का०	दे०
२९८	७१४१	नवग्रह पूजन यंत्रादि			दे० का०	दे०
२९९	६९९५	नवार्णन्यास			दे० का०	दे०
३००	१८९६	नवार्णमंत्र न्यास			दे० का०	दे०
३०१	१७७७	नवार्णमंत्र विधि			दे० का०	दे०
३०२	५८९५	नारदपंचरात्र			दे० का०	दे०
३०३	३९६७	नारदपंचरात्र विनियोग			दे० का०	दे०
३०४	५९७८	नारायणकवच			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१९·३ × १०·८ सें० मी०	१० (१–१०)	९	२५	पू०	प्राचीन	इति नवग्रह मंत्रन्यास विधिः ॥
१५·३ × ७·७ सें० मी०	७ (१–७)	७	१७	अपू०	प्राचीन	
११·२ × ७·३ सें० मी०	४ (१०–१३)	६	११	अपू०	प्राचीन	इति नवार्णा न्यासः संपूर्णम् ॥
२० × ८·५ सें० मी०	४	७	२२	पू०	प्राचीन	इति नवार्णं मंत्र न्यास समाप्तं ॥ शुभमस्तु ॥
३५·३ × १३·५ सें० मी०	१ खर्रा	३२	१८	अपू०	प्राचीन	
१६·६ × ११ सें० मी०	२	८	२२	अपू०	प्राचीन	इति श्री नारदोक्तं नारद पंचरात्रे ॥ षोडसोपचार पूजा समाप्ता ॥
२७ × ११·५ सें० मी०	४ (१–४)	१०	४२	अपू०	प्राचीन	इति श्री नारदपञ्चरात्रे ॥
११·६ × ७·४ सें० मी०	१० (२–११)	७	१२	अपू०	प्राचीन सं०१८६९	इति श्री भागवतमहापुराणे षष्ट स्कंधे नारायण कवचे निरुपणं नामाअष्टमोध्यायः ॥ विद्यारंगाख्यो ···संवत् १८६९ वर्षे आषाढ वदि २ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३०५	६२१२	नारायणवर्म			दे० का०	दे०
३०६	७७४४	नारायणवर्म			दे० का०	दे०
३०७	५६२१	नारायणवर्म			दे० का०	दे०
३०८	५०४	नित्या कवच			दे० का०	दे०
३०९	६३०२	नित्याषोडशिकार्णव व्याख्या	भास्कर राय		मि० का०	दे०
३१०	४३५९	नित्या षोडशिकार्णव व्याख्यान	भास्कर राय		दे० का०	दे०
३११	३४२३	निधिदर्शनांजन			दे० का०	दे०
३१२	३३८०	नृसिंह कवच			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७·७ × ९·५ सें० मी०	२ (१–२)	५	२२	अपू०	प्राचीन	भगवंस्तन्मयाख्याहि वर्म्मं नारायणात्मकं ।।······(पत्रसंख्या–१)
२०·२ × १०·६ सें० मी०	४ (१–४)	६	२५	पू०	प्राचीन सं० १८७५	इति श्री भागवते महापुराणे पारमहंस्यांसंहितायां अष्टादशसाहस्त्र्यांसंहितायांषष्टऽस्कन्धेनारायणवर्म्मोपदेशोनामाष्टमोऽध्यायः सं० १८७५ ।
१६·५ × ११.१ सें० मी०	७ (१–७)	७	२३	पू०	प्राचीन सं० १८६३	इति श्री भागवते महापुराणे षष्टस्कंधेनारायण वर्मनामाष्टमोध्ययः ।। सं० १८६३ श्रावण शुक्ल द्वितीयारविदिने ।।
२४ × १०·३ सें० मी०	४४ (५–४८)	७	३९	अपू०	प्राचीन श० १६२६	इति नित्याकवचं संपूर्णम् ।। श्री शाके १६२६ लिखितं बीरभद्र ओझा परोपगाराय । परोपठनार्थं ।।
३३ × २०·५ से० मी०	१५६ (१–१५६)	१७	४६	पू०	प्राचीन	इति श्रीमत्पदवाक्य प्रमाण पारावारीण धुरीणनिखिलतंत्र स्वतंत्र श्री मद्गभीरराज भारती दीक्षित सूरि सूनुनाभासुरानंद नाथ दीक्षाभिधानेन भास्कर रायेण प्रणीतोनित्याषोडशिकार्णव व्याख्यात्मासेतुबंधः संपूर्णं ।। श्री गुरुदेवतार्पण मस्तु ।।
२४·३ × १०·२ सें० मी०	३७६ (१-६४ दो, ६५-२१६ दो, २१७-२२५, २२७-२५५ दो, २५६-२६३ दो, २६४-३७२)	६	३७	अपू० (कृमि कृन्तित)	प्राचीन	इति श्री मत्पदवाक्य प्रमाणपारावरीण धुरीण निखिल तंत्र स्वतंत्र श्री मद्गभीरराजभारतीदीक्षित सूरिसूनुनाभासुरानंदनाथ दीक्षाभिधानेन भास्कररायेण प्रणीतोनित्या षोडशकार्णव व्याख्यात्मा सेतुबंधः संपूर्णः ।।
२२·६ × १०·३ सें० मी०	४ (१–४)	१२	३४	पू०	प्राचीन सं० १८९८	इति श्री सावरतंत्रे निधिदर्शनान्यंजनं संपूर्णं ।। श्री सांबसदाशिवार्पणमस्तु ।। परिधावीनाम संवत्सरे वैशाख कृष्ण सप्तम्यामिदं पुस्तकं समाप्तिगमयेत् ।। सं० १८९८ ।। शके १७६३ ।। शुभं ।।
१७·४ × ६·७ सें० मी०	४ (१–४)	५	३०	पू०	प्राचीन	इति ब्रह्म संहितायां त्रैलोक्य मोहनं नाम नृसिंह कवचं समाप्तं ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३१३	२१४२/६	नृसिंह कवच			दे० का०	दे०
३१४	२१६१/७	पंचचक्रनिरूपण			दे० का०	दे०
३१५	१५८७/४	पंचचक्रसदाचारविधि			दे० का०	दे०
३१६	३६८३	पंचदशी			दे० का०	दे०
३१७	११११/६	पंचदशी पद्धति			दे० का०	दे०
३१८	३७६६	पंचदशीयंत्रविधान			दे० का०	दे०
३१९	६३११/३	पंचदशीयंत्रविधि			दे० का०	दे०
३२०	६०७८/५	पंचमुखी			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१८·५ × १६ सें० मी०	२ (१–२)	११	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री नृसिह पुराणे ब्रह्मा सावित्रि संवादे श्री नृसिह कवचं समाप्तं ॥१॥
१४·५ × १०·५ सें० मी०	७ (७५–८१)	८	२०	अपू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामले इश्वर पार्वती संवादे कुलाचारे पंचचक्र निरूपणं समाप्तं ॥
१४·२ × १०·६ सें० मी०	१६ (११–२६)	५	६	अपू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामले तंत्रे पार्वती परमेश्वर संवादे ॥ महाकौलाचार क्रम पंच चक्र तदाचार विधि निरूपणं समाप्तं ॥
२६·७ × ११ सें० मी०	४ (१–४)	७	३६	पू०	प्राचीन	इति श्री पंचदशी विधानं नाम पटलं संपूर्णम् ॥
१६ × १३ सें० मी०	५	११	२२	पू० (कृमि कृन्तित)	प्राचीन	इति श्रीगौरीसंवादे पंचदशीपदत संपुर्ण ॥
२६·५ × १०·५ सें० मी०	३ (१–३)	१०	३९	पू०	प्राचीन सं०१९०२	इति श्री उमामहेश्वर संवादे यंत्र पंचदसी यंत्र विधानं सुभं ··· ··· संपूरणं सुभमस्तु लिखितं गोपालदासेन-संवत् ९०२ (?) ॥
१९ × ९·४ सें० मी०	२	९	२१	पू०	प्राचीन	
११·६ × ७·२ सें० मी०	८	५	१४	अपू०	प्राचीन	इति श्री सुन्दरसंहितायां रामचन्द्र-सीता मनोहरण पंचमुखी समाप्ता ॥ सुभम ०।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३२१	५२१८/२	पंचमुखी हनुमत्कवच			दे० का०	दे०
३२२	७६७०	पंचमुखीहनुमत्कवच			दे० का०	दे०
३२३	५९७७	पंचमुखीहनुमत्कवच			दे० का०	दे०
३२४	५९१३	पंचमुखीहनुमत्कवच			दे० का०	दे०
३२५	५४९२	पंचमुखीहनुमत्कवच			दे० का०	दे०
३२६	७२२६	पंचमुखीहनुमत्कवच (बृहत् चक्र सहित)			दे० का०	दे०
३२७	७२१९	पंचमुखीहनुमत्कवच			दे० का०	दे०
३२८	२२६९	पंचमुखीहनुमत्कवच			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथपूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५×१०·९ सें० मी०	३	१०	२२	पू०	प्राचीन	इति श्री सुदर्शन संहितायां सितामनोहर पंचमुखी हनुमत्कवचं संपूर्णं ।।
९·९×८·१ सें० मी०	६ (२-४,६ ८)	८	१२	अपू०	प्राचीन सं०१८९६	इति शुदर्सन संहितायां रामचंद्र मनोहर पंचमुखी हनुमत्कवच संपुर्णं शुभमस्तु मंगलं भवति संवत् १८९६ के साल वैसाष सुदि पंचमीसोमवासरे × ×
१२ ९×७·६ सें० मी०	७ (१–७)	८	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री सुदंशन संहितायां श्री रामचंद्र-शीता मनोहर पंचमुखी हनुमत्कवच स्तोत्रंसंपूर्णं × × ।।
१७·७×९ सें० मी०	१३ (१–१३)	५	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री रूद्रयामले हर पार्वती संवादे राम मनोहर पंचमुखि हनुमत्कवचं संपूर्णं ।।
३४·४×१०·६ सें० मी०	८ (१–८)	७	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री रूद्रयामले हरपार्वती संवादे राममनोहर।। पंचमुखी हनुमत्कवच संपूर्णं ।।
३३·७×१३ सें० मी०	२ (१–२)	१३	४३	पू०	प्राचीन	इति श्री रामचन्द्र सीता मनोहरण्य पंचमुखीहनुमत्कवचं तंत्रागमोक्त सम्पूर्णम् ।। × ×
१९·७×९·९ सें० मी०	४	८	२०	अपू०	प्राचीन	
२२·७×१०·७ सें० मी०	३ (१–३)	१०	२६	पू०	प्राचीन	इति श्री ··· संहितायां श्रीरामचंद्र सितामनोहर पंचमुख हनुत्कवच संपूर्णं सूभमास्तू ।।

(सं०सू० २-३१)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३२९	२२४८	पंचमुखी हनुमत्कवच			दे० का०	दे०
३३०	६४४५	पंचमुखी हनुमत्कवच			दे० का०	दे०
३३१	८२०	पंचमुखी हनुमत्कवच			दे० का०	दे०
३३२	१६०४/४	पंचमुखी हनुमत्कवच			दे० का०	दे०
३३३	४२२३	पंचमुखी हनुमत्कवच			दे० का०	दे०
३३४	१२१८	पंचमुखी हनुमत्कवच			दे० का०	दे०
३३५	४०८४/२	पंचमुखी हनुमत्कवच			दे० का०	दे०
३३६	२६०१/२	पंचमुखी हनुमत्कवच			दे० का	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
१८·७ × १०·५ सें० मी०	५ (१–५)	८	२४	पू०	प्राचीन सं० १९०४	इति श्री सुदर्शनसंहितायां सीताप्रोक्तं मनोहरं पंचमुखी हनुमत कवचं समाप्तं। श्री ।। संवतु १९०४··· ··· ········ ।।
१५·६ × ७·८ सें० मी०	४ (२–५)	७	२२	अपू०	प्राचीन	इति श्री सुदर्शन संहितायां श्रीराम सीताशक्तिमनोहरं पंचमुखी हनुमत्कवचंसमाप्तम् ।।
२० × ११·५ सें० मी०	४ (१–४)	९	२१	पू०	प्राचीन	गुह्यांति गुह्यतरंगोप्तं ।। ग्रहाणास्मृत कृतंजयं ।। सिद्धर्भवतु मेदेव ।। त्वत्प्रसादात् हृदिस्थितं ।। जलाक्षतान्समर्पयेत । इति श्री पंचमुखी हनुमत् कवच समाप्तम् ।। शुभमस्तु ।।
१३·६ × ७·६ सें० मी०	६ (१–६)	५	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री पंचमुखी हनुमत्कवच स्तोत्र समा···।
१२ × ७·५ सें० मी०	७ (१–६,८)	६	१५	अपू०	प्राचीन सं० १९१९	···संहितायां श्री रामचन्द्रसीता मनोहर पंचमुखी वीर हनुमत्कवच संपूर्णं ।।··· सं० १९०१९ ।।
१६ × ८·२ सें० मी०	८ (१–८)	६	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री अथर्वणरहस्ये श्री रामचंद्र सीता मनोहरण पंचमुखी हनुमान् कवच शुभ मस्तु ।।
१६ × ८·३ सें० मी०	७ (४–१०)	६	२०	पू०	प्राचीन सं० १८८९	इति श्री राम चंद्रविरिचितायां सुदर्शन संहितायां पंचमुखी हनुमत्कवचं संपूर्णं सुभंमवतु मंगलंदंदात् श्री पंचमुख हनुमतयेनमः सं० १८८९······ ।
२१ × ११·५ सें० मी०	५	८	२०	पू०	सं० १९५६	इति रुद्रवाक्य । श्री पंचमुखीहनुमत कवच स्तोत्र संपूर्णं-सं० १९५६ भाद्रपद मास कृष्णेपक्षे लिषितं कबुल सहाय समाप्तम् ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३३७	४४७	पंचमुखी हनुमत्कवच			दे० का०	दे०
३३८	४१८	पंचमुखी हनुमत्कवच			दे० का०	दे०
३३९	३७०७	पंचमुखी हनुमत्कवच			दे० का०	दे०
३४०	२१४२/६	पंचरात्रागम (सर्वमंत्रोत्कीलन मंत्र)			दे० का०	दे०
३४१	४१५३	पंचाक्षरी मंत्रोद्धार			दे० का०	दे०
३४२	३२७०	पक्षिराज कवच			दे० का०	दे०
३४३	४१६८/२	पक्षिराजकवच			दे० का०	दे०
३४४	७६०६	पटलपद्धति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
२७·७ × ११·४ सें० मी०	२	१०	३६	पू०	सं० १८७४ श० १७३९	इति श्री शुन्दर संहितायां श्री रामचन्द्र शीताराम शुन्दर पंच मूखि हनमंत्तमंत्र कवचं सपूर्णम् शुभमस्तु सिद्धिरस्तु शुभ संवत् १८७४ साके १७३९ ॥
१६·४ × १० सें० मी०	५ (१–५)	७	१७	पू०	प्राचीन	श्री पंचमुखी हनुमत् कवच संपूर्ण श्री राम लिषतं हरि गुलाल ॥
१५ × १०·५ सें० मी०	३ (१–३)	८	२२	पू०	प्राचीन	इति श्री सुदरसन संहितायां श्री रामचंद्रसीता मनोहरपंचमुखी हनुमत्कवच: संपूर्ण ॥ समाप्त ॥
१८·५ × १६ सें० मी०	३ (६–८)	९	१८	पू०	प्राचीन	इति पंचरात्रागमे मन्विंद्र संहितायां-शिव पावर्ती संवादे शैव वैष्णवशक्तिक बौद्धगाणपत्य सौर्यादिमंसंस्कारे मंत्रोत्कीलनं कृत्वा सर्वं मंत्रोत्कीलन मंत्र समाप्तम् ॥
२२·२ × ८·५ सें० मी०	५ (१–५)	७	३३	पू०	प्राचीन	इति पंचाक्षर विधानम् ॥
१४·२ × ७·३ सें० मी०	७ (४–९,११)	७	२६	अपू०	प्राचीन	
१३·९ × १०·५ सें० मी०	१५ (१–१५)	१०	१७	पू०	प्राचीन सं० १९२४	इति श्री महाकाश भैरव कल्पे प्रत्यक्ष सिद्धिप्रदे उमामहेश्वर संवादे शरभ शाल्वपक्षीराज कवच संपूर्णम् ॥ शुभमस्तु संवत् १९२४ माघ शुक्ला १४ शुक्रवासरे ... ... ॥
२५·६ × १०·५ सें० मी०	३ (१–३)	७	२८	पू०	प्राचीन सं० १८९४ सं० १९००	इति पटल पद्धति संपूर्णम् × संवत् १८९४ असाढ सुदी लिषा लालासिउसहाइ ॥ कुवर वदि ॥ १३ ॥ गुरौ का संवत् १९०० ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३४५	३६४४	पटलपद्धति			दे० का०	दे०
३४६	२८२९	पवन स्वरोदय			दे० का०	दे०
३४७	२९३६/१२	पात्रस्तवराज विधि			दे० का०	दे०
३४८	४८९१	पार्थिवेश्वर चिंतामणि-पूजा पटल			दे० का०	दे०
३४९	७६५६	पार्थिवेश्वरचिंतामणि मंत्र			दे०का०	दे०
३५०	२०१२	पुरश्चरणदीपिका			दे० का०	दे०
३५१	५२८७	पूजारत्न (न्यास खंड)			दे० का०	दे०
३५२	४८०३	पूतना विधान	कमलाकर भट्ट		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५·५ × ६·९ सें० मी०	१० (५०–५९)	५	१८	पू०	प्राचीन	इति पटल पद्धित द्वारा क्रिया मंत्र समाप्तम् ॥
२४·७ × १०·२ सें० मी०	१७ (१–१७)	१०	३९	पू०	प्राचीन	इंदपुस्तकं वालमुकुंद दीक्षितेन लिखितम् पवनस्वरोदयम् समाप्तम् ॥
२४.३ × १३·१ सें० मी०	९	२४	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री पात्रस्तवराज विधि संपूर्ण शुभम् ॥
२२·५ × ९·५ सें० मी०	४ (१–४)	८	४०	पू०	प्राचीन	इति पार्थिवेश्वरचिन्तामणि पुजा पटलं संपूर्णम् ॥··· ··· ··· ···
१२·८ × ८ सें० मी०	६ (१,३–७)	९	१७	अपू०	प्राचीन	
१८·७ × १६ स० मी०	१५	१३	१८	पू०	सं० १९४०	इति पुरश्चरण दीपिकायां जय विधानाख्यं पंचमः प्रकाशः सं० १९४० माघ कृष्ण १ रवि वासरे ॥ श्री गुरुभ्योनमः ॥
१५·८ × ९·५ सें० मी०	५८	८	२०	अपू०	प्राचीन	इति पूजा रत्ने त्रयोदशो मयूखः समाप्तः ॥ न्यास खंडः समाप्तः ॥ शुभंभूयात् ॥
२४ × १२·५ सें० मी०	७ (१–७)	१२	३५	पू०	प्राचीन	इति कमलाकर भट् कृते शांति रत्नाकरे पूत्तना विधानं समाप्तं ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३५३	५०३०	पूतनाविधान			दे० का०	दे०
३५४	१५६९	प्रचंडचंडिकापद्धति			दे० का०	दे०
३५५	५६३८	प्रपंचसार			दे० का०	दे०
३५६	३०८७	प्रपंचसार			दे० का०	दे०
३५७	३०८५	प्रपंचसारविवरण		पद्मपादाचार्य	दे० का०	दे०
३५८	७१५०	प्रत्यंगिरा महामालामंत्र			दे० का०	दे०
३५९	३२३	प्रत्यंगिरा सूक्त			दे० का०	दे०
३६०	७१०१	बगला कवच			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५·४ × ११·१ सें० मी०	१७	१०	१९	अपू०	प्राचीन	इति स्कंद पुराणोक्त चतुर्थे दिवसे मासाब्द पूतनां जनित पीडा शमने विधानं ॥
२८ × ९ सें० मी०	९	९	४०	पू०	प्राचीन	इति श्री प्रचण्ड चंडिकायाः पद्धतिः समाप्तः ॥
३०·२ × १३·५ सें० मी०	८६ (१–८६)	१२	६०	पू०	प्राचीन	समाप्तोयं प्रपंचसारः ॥
२२·६ × ९·२ सें० मी०	८ (१–८)	८	२८	पू०	प्राचीन	इति प्रपंचसारेष्टादशः पटलः समाप्तः ॥ ... ...
२२·६ × ९·४ सें० मी०	८ (१–८)	८	२८	अपू०	प्राचीन	इति प्रपंचसार विवरणे पद्मपादाचार्य कृते अष्टोदंविशः पटलः ॥ ...
१७·९ × १०·४ सें० मी०	१० (१–१०)	९	२१	पू०	प्राचीन	
२६·१ × ११ सें० मी०	११ (१–८, ११-१३)	११	४३	अपू०	प्राचीन सं० १८७०	श्री प्रत्यंगिरार्पणमस्तु सं० १८७० शकः १७३५ पौष शुक्ल ७ बुधदिने प्रत्यंगिरा संपूर्णं लिखितं गणराय पुस्तक मिश्रल्लश्रसहाय जी का लिखी चूडामणा के पासतै ॥
२६·३ × ११·२ सें० मी०	२ (१–२)	१२	३८	पू०	प्राचीन	एकवीर तंत्रे श्री महोगतारा भैरव संवादे षट्त्रिंशद्विद्यारत्न प्रस्तावे बगला कवचं संपूर्णम् ॥ शुभं भूयात् ॥
(सं०पू० २–३२)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३६१	५४३४	बगलामुखी उपासना			दे० का०	दे०
३६२	७७४३	बगलामुखी कवच			दे० का०	दे०
३६३	२२७८	बगलामुखीपूजनपद्धति			दे० का०	दे०
३६४	५६९०	बगलामुखीयंत्रपूजाविधि			दे० का०	दे०
३६५	२२७७	वगलामुखी साधन पटल			दे० का०	दे०
३६६	२०१९	बज्रपजर कवच			मि० का०	दे०
३६७	४८६९	बटुकदीपदान प्रकार			दे० का०	दे०
३६८	१३९९	बटुकदीपविधान			दे० का	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	१०
१६·३ × ८ सें० मी०	३ (१–३)	५	२३	अपू०	प्राचीन	
२५·३ × १०·३ सें० मी०	५ (१–५)	८	२८	पू०	प्राचीन सं०१८६४	इति श्री एकवीरा तंत्रे उग्रतारा भैरव संवादे बगला मुखी कवचं संपूर्णम् १८-४६ माघ शु० ११।
२७·२ × ११·१ सें० मी०	८ (१–८)	१२	४१	पू०	प्राचीन	इति श्री आगम सारे वगलामुखी पूजन पद्धति ब्रह्मास्त्रं संपूर्णं ॥ श्री वगला मुखीविश्व मोहिन्यैनमः ॥
२३ × १० सें० मी०	५ (५–६)	६	२३	अपू०	प्राचीन	
२७ × ११·१ सें० मी०	१० (१–१०)	६	३२	अपू०	प्राचीन	
२५·५ × ११ सें० मी०	५	७	३३	पू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामले तंत्रे देवी रहस्ये बज्र पंजराख्यं कवचं समाप्तम् ॥ १ ॥ ॥ शुभमस्तु ॥
२६·६ × ११·६ सें० मी०	७ (१–७)	१२	३६	पू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामले वटुक दीपदान प्रकारः समाप्तः ॥ (पत्र सं० ७)
१६·३ × ६·८ सें० मी०	५ (१–५)	७	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामले उमामहेश्वर संवादे वटुकस्यदीप विधानं संपूर्णम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३६९	७७७८	बटुकभैरव आपद्उद्धार			दे० का०	दे०
३७०	७२५३	बटुकभैरवकवच			दे० का०	दे०
३७१	७८४२	बटुकभैरवकवच			दे० का०	दे०
३७२	७०९३	बटुकभैरवकवच			दे० का०	दे०
३७३	२९३६/१२	बटुकभैरवकवच			दे० का०	दे०
३७४	२५९२	बटुकभैरवकवच			दे० का०	दे०
३७५	५२६७	बटुकभैरवस्तवराज			मि० का०	दे०
३७६	१५५८	बटुकमंत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१२·६ × ९·६ सें० मी०	३ (२–४)	७	१५	अपू०	प्राचीन	
१५·२ × १०·२ सें० मी०	४ (१–४)	१०	१७	पू०	प्राचीन सं०१८६२	इति श्री रुद्रयामल तन्त्रे उमामहेश्वर संवादे श्री बटुक भैरव कवचं समाप्तं संवत् १८६२ के साल माघसुदि ८ भौमे: ।
१५ ७ × ८·५ सें० मी०	२ (४–५)	५	१५	अपू०	प्राचीन	इति श्री भैरव तंत्रे देवि रहसं वदिवटुक भैरवकवचं समाप्तं । शुभमस्तु ।।
१५.६ × ७·६ सें० मी०	२ (१–२)	६	२३	अपू०	प्राचीन	
२४·३ × १३·१ सें० मी०	१२	२७	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामले तंत्रे ईश्वर पार्वती सवादे वटुक भैरव कवचं संपूर्णं समाप्तम् । शुभंभूयात् ।।
२१ × ९·५ सें० मी०	३	७	२६	पू०	प्राचीन	इति श्रीरुद्रयामल विश्वशारोद्धरे वटुक भैरव कवचं सपूर्णं ।। शुभ मस्तु श्री वटुकभैरवाय नमः ।।
१६.४ × १०·७ सें० मी०	३७	७	१७	अपू०	आधुनिक	इति श्रीविश्वसारोद्धारे रुद्रयामले उमा-महेश्वर संवादे आपदुद्धार वटुक भैरव स्तवराजः समाप्तः शुभ मस्तु अथ-ध्यानं··· ··· ··· ··· ।।
२०·७ × ९·५ सें० मी०	३ (१–३)	११	३७	अपू०	प्राचीन	इति योगपालशवर तंत्रेवटुक मंत्र त्रयं समाप्तम् ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	
१	२	३	४	५	६	
३७७	१५२८/६	बटुकाख्यानम्			दे० का०	दे०
३७८	३३०२	बलिविधान			दे० का०	दे०
३७९	६४५	बालतंत्र			दे० का०	दे०
३८०	६३	बालचिकित्सा पटल			मि० का०	दे०
३८१	७१०२	बालरक्षाप्रयोग			दे० का०	दे०
३८२	७७३१	बालाकवच			दे० का०	दे०
३८३	१४५८	बालाकवच			दे० का०	दे०
३८४	५४५७	बालात्रिपुरसुंदरी मंत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१४·८ × ११ सें० मी०	६८ (१,१–६७)	८	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री बटुक भैरव वलिदान समाप्तम् ।
२३·४ × ११ सें० मी०	१५ (१–१५)	८	३१	पू०	प्राचीन सं० १९०४	इति श्री रुद्रयामले उमामहेश्वर संवादे वलिविधान ··· संवत् १९०४ ···॥
३१·५ × १५·३ सें० मी०	९ (४–१२)	९	३५	अपू०	सं० १९०७	इति धन्वंतरमतेवाल बालतंत्रः ॥ संपूर्णम् ॥ संवत् १९०७ भाद्रपद कृष्ण० भौमवाशरे लिपिकृतं गौरीशंकर शुभम् ॥
१४·५ × १५ सें० मी०	१८ (१२–२९)	१४	१४	पू०	प्राचीन सं० १८९६	इति क्रिया काल गुणोत्तरे बालचिकित्सा-पटलं समाप्तं ॥ संवत् १८९६ मिति चैत्र वदि ४ सनीवार लीखतो देविसा सुत ॥
३१ × ११·५ सें० मी०	९ (१–९)	९	४३	पू०	प्राचीन	इति स्कन्दपुराणे वाल स्तव स्सम्पूर्णः श्री सूर्य्यो विजयते तरां ··· ··· ॥
१६·५ × ९·६ सें० मी०	४ (१–४)	७	१७	पू०	प्राचीन सं० १८९२	इति श्री रुद्रयामले तंत्रे त्रैलोक्य मोहनं नाम बाला कवचं समाप्तं शुभमस्तु × × संवत् १८९२ मुकाम जवलपुर नर्मदानुत्तरेतीरे शुभंभवतु ··· ··· ॥
१५·२ × ९·३ सें० मी०	१ (१–७)	७	१७	पू०	प्राचीन सं० १७८७	इति श्री रुद्रयामले शिव पार्व्वती संवादे वाला कवचं संपूर्णं । शुभमस्तु संवत् १७८७ वैशाष वदि १३ ।
१४·६ × ९·९ सें० मी०	१ (१–२)	१२	२४	पू०	प्राचीन	अस्य श्री वाला परमेश्वरी मंत्रस्य ··· ··· ··· प्रारंभ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३८५	१२१९	बालात्रिपुरसुंदरीपद्धति			दे० का०	दे०
३८६	३५७७	बालात्रिपुरसुंदरी पूजा पद्धति			दे० का०	दे०
३८७	४२६	बालात्रिपुरसुंदरी स्तोत्र			दे० का०	दे०
३८८	२९३५/७	बाला त्रिपुराकवच			दे० का०	दे०
३८९	२९३५/७	बालात्रिपुरानित्य-पूजापद्धति			दे० का०	दे०
३९०	३६२७	बालात्रिपुरा परमेश्वरी कवच			दे० का०	दे०
३९१	६६८	बाला मंत्र			दे० का०	दे०
३९२	७८०१	बालारिष्टशांति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७.५ × ११ सें० मी०	२	१७	७७	अपू०	प्राचीन	
२४ × १०·२ सें० मी०	१४ (१–१४)	८	३२	पू०	प्राचीन	
१६ × १०·३ सें० मी०	५	६	१८	पू०	सं० १९६०	इति श्री शारदातिलके श्री बालात्रिपुर सुंदरी स्तोत्रं सपूर्णं ॥ श्री बाला पर देवतार्पणमस्तु ॥ इदं पुस्तकं लिखितं मिती माघ कृष्ण १३ रा० संवत् १९६०
२४·५ × १४·५ सें० मी०	१½	२१		पू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामले तंत्रे हरगौरी संवादे श्री बाला त्रिपुराकवचं समाप्तिमगात् ॥
२४·५ × १४·५ सें० मी०	१६	२२	१७	पू०	प्राचीन	इति श्रीरुद्रयामले तंत्रे श्री देवी भैरव-संवादे श्री बाला त्रिपुरा नित्यपूजा-पद्धति संपूर्णम् शुभमस्तु ॥
१३·९ × ९·१ सें० मी०	२७ (१–२७)	९	२०	अपू०	प्राचीन	
१५ × १० सें० मी०	४ (८–११)	७	१४	पू०	प्राचीन	इति बालामंत्रः समाप्तः ॥श्री॥ ॥श्री॥
१३·९ × ९·१ सें० मी० (सं०सू०२-३३)	३ (२०–२२)	८	१४	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३९३	२९३५/७	बालासहस्रनाम स्तोत्र			दे० का०	दे०
३९४	१५८६	बालासहस्रनाम स्तोत्र			दे० का०	दे०
३९५	३१११	बीजकोश			दे० का०	दे०
३९६	२००४	बीजकोश	क्रोधीश भैरव		दे० का०	दे०
३९७	७०२५/३	भगवती कवच			दे० का०	दे०
३९८	१	भगवती कवच			दे० का०	दे०
३९९	४२००/५	भगवती कीलक			दे० का०	दे०
४००	४	भगवती कीलक			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४·५ × १४·५ सें० मी०	१२३	२२	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामले तंत्रे उमामहेश्वर संवादे श्री बाला सहस्रनाम समाप्तिमगात् ॥
१३·८ × १०·६ सें० मी०	१८ (१–१८)	७	११	पू०	प्राचीन	इति श्री तंत्रेवितरे बाला सहश्रनामस्तोत्र समाप्तम् ॥
२५·१ × १०·३ सें० मी०	१३	७	२८	पू०	सं० १९५२	इति बीजकोश: समाप्त: ॥
२४·५ × ११·८ सें० मी०	१५	७	२५	पू०	सं० १९३५	इति श्री परमरुद्रावतार श्री मदादिनाथोन्मत्तभैरव श्रीम क्रोधीश भैरव विरचितायां महाकाल संहितायां छिन्नाखंडे एकार्थ मनु कोशे भूत भैरवनाम महा तंत्रं संपूर्णतामगीत ॥ संवत् १९३५ आषाढ़े कृष्ण पक्षे द्वितीयायां रवौ दिने ... ... ॥
१४·८ × १०·९ सें० मी०	४	८	१६	अपू० जीर्ण	प्राचीन	
२०·५ × ९·५ सें० मी०	७ (३–९)	८	२५	अपू०	प्राचीन	मारकण्डेय पुराणान्तर्गत ॥
१३·८ × ८·९ सें० मी०	७	७	१५	पू०	प्राचीन	इति भगवत्या कीलकं संपूर्णम् ॥
२१ × ११·५ सें० मी०	११	८	२२	पू०	सं० १९१८	इति श्री सं० १९१८ मासोतम् मासे श्रावण माशे कृष्णे पक्षे शुभ तिथौ ७ भोम वासरे मिश्र नंद लाल जी के प्रताप से हितलिखितं मिश्र उदेराम जी शुभमस्तु * श्री राम चन्द्राय नम: *

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४०१	५११२	भगवत्या कवच			दे० का०	दे०
४०२	६२७५	भवानी कवच			दे० का०	दे०
४०३	५८१	भवानी कवच			दे० का०	दे०
४०४	७६५	भुवनेश्वरी एकाक्षर-सहस्रनाम			दे० का०	दे०
४०५	३८०६	भुवनेश्वरी मंत्र			दे० का०	दे०
४०६	२६३६/१२	भुवनेश्वरी रहस्य			दे० का०	दे०
४०७	७५११	भूतभैरव महातंत्र			दे० का०	दे०
४०८	७८३०	भूतशुद्धि			दे० का०	दे०

पत्रों का पृष्ठों आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१३·७ × ९·४ सें० मी०	८ (१-३,५-९)	१०	१९	अपू०	प्राचीन	इति श्री हरिहर ब्रह्मादिरचितं भगवत्याकवचं संपूर्णं ॥
१०·९ × ५·८ सें० मी०	३ (१–३)	७	१९	पू०	प्राचीन सं०१८२५	इति श्री रुद्रयामलेमहागुप्तसारे इश्वर पार्वतीसंवादे श्रीभवानी कवच समाप्त। शुभमस्तु॥ संवत् १८२५ के शाल समयेना स आषाढ सुदि सप्तमी मंगलं क पुस्तक लिषितं × × × × × ॥
१४·५ × ८·८ सें० मी०	२४	४	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामलेमहागुप्तसारे ईश्वर पार्वती संवादे भवानी कवचं संपूर्णं ॥ १॥ शुभंभवतु ॥
१४ × ९·१ सें० मी०	३५ (४–८,१५–४४)	८	१३	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमदादियामले शिवगौरी संवादे श्री भुवनेश्वर्य्यैकाक्षरसहस्रनामं समाप्तं ॥ संपूर्णं ॥
२४·२ × १०·४ सें० मी०	२ (२–३)	७	३२	अपू०	आधुनिक	
२४·३ × १३·१ सें० मी०	१२८ (१–१२८)	२३	१३	पू०	खंडित सं०१९१४	इति श्री भुवनेश्वरि रहस्ये दशम्यर्च ··· ···नाम पटल: ··· ···संपूर्णम् शुभमस्तु ॥··· ···संवत् १९१४ मिति श्रावणो तिने १४ तिथि एकादश्यां शनि··· ··· ··· ··· ···
१८·८ × १२·९ सें० मी०	४२ (७–४८)	१३	१८	अपू०	प्राचीन	
११·४ × ५·८ सें० मी०	४ (१–४)	६	१८	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४०९	४४५	भूतशुद्धि			दे० का०	दे०
४१०	२०८	भूतशुद्धि			दे० का०	दे०
४११	५४४६	भैरव तंत्र			दे० का०	दे०
४१२	३३०४	भैरव दीपदान			दे० का०	दे०
४१३	७१७३	भैरव पटल			दे० का०	दे०
४१४	१३१४	भैरव पटल			दे० का०	दे०
४१५	१३१०	भैरव पद्धति			दे० का०	दे०
४१६	३६७८	भैरव पारिजात			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०·२ × १०·८ सें० मी०	८ (१–८)	११	२८	पू० जीर्ण	प्राचीन	
२२·३ × १०·३ सें० मी०	५ (१–५)	९	४०	पू०	प्राचीन	इति भूशुद्धिभूतशुद्धि प्राण प्रतिक्षांतमतृका बहिर्मातृका समाप्तः॥ ६ ॥
१९ × १०·२ सें० मी०	१३ (२–९,११–१५)	६	२१	अपू०	प्राचीन	
२० × १०·८ सें० मी०	१२ (१–१२)	८	१९	पू०	प्राचीन सं० १९१५	इति दीप वलिदान समाप्तं ॥ शुभंमस्तु संवत् १९१५ ॥ मिति पौषवद ॥ ३० ॥ भौम वासरे ॥ मंगलं ददात् ॥
१०·४ × ६ सें० मी०	५ (१-२,४-६)	७	१९	अपू०	प्राचीन	
२०·४ × ११·६ सें० मी०	१	७	१८	अपू०	प्राचीन	
१९·५ × १० सें० मी०	९ (५३,५५-६२)	९	२१	अपू०	प्राचीन	
१५·१ × ११·७ सें० मी०	४ (१-४)	९	१७	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४१७	४४७१	भैरव प्रयोग			दे० का०	दे०
४१८	४००० / ३	भैरव मंत्र			दे० का०	दे०
४१९	२९३६ / १२	भैरव स्तोत्र			दे० का०	दे०
४२०	४२१	भैरव स्तोत्र			दे० का०	दे०
४२१	२९३९	भैरवाष्टोत्तरशतनाम			दे० का०	दे०
४२२	४३१५	मंत्रचिंतामणि			दे० का०	दे०
४२३	६४९७	मंत्रतंत्रोद्धार	चंडेग्नपाणि		दे० का०	दे०
४२४	४८२९	मंत्रदर्पण व्याख्या			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२·५ × १०·४ सें० मी०	२ (१–२)	१०	२३	पू०	प्राचीन सं० १८९५	इति पुष्प पूजांते तर्पणादिकं कृत्वा गुरुं संतोष्य भैरवरूपः सुखं विहरेदिति प्रयोगः ॥
१८·७ × १५·४ सें० मी०	१	२१	२४	अपू०	प्राचीन	
२४·३ × १३·१ सें० मी०	१½	२४	१८	अपू०	प्राचीन	
१८ × ११ सें० मी०	१२	८	१७	पू०	सं० १९३५	इति श्री रूद्रयामलेविश्वसारोद्धारे आपद्दुद्धारभैरवस्तोत्र संपुर्णं । लिखित्तं कबूल सहाय मीत्ती मार्गशिरत्रयोदश्यां कृष्णपक्षे संवत् १९५६ श्री रामजि सदासहाय शुभमस्तु ॥
१८·६ × १० सें० मी०	१० (१–१०)	७	२२	पू०	सं० १९२३	इति श्री रूद्रयामले उमामहेश्वर संवादे भैरव पाठः समाप्तः ॥ ••• ••• संवत् १९३५।।
२०·५ × १०·५ सें० मी०	५ (१–५)	१४	३६	पू०	प्राचीन	इति मंत्र चितामणी समाप्तः ॥ × × × ×
१६·८ × १०·२ सें० मी०	१० (१–१०)	८	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री चंडेग्नपाणि विरचिते मंत्र-तंत्रोद्धार समाप्तं ॥
२५ × ९·८ सें० मी०	४ (१–४)	१०	४७	पू०	प्राचीन	इति मंत्रदर्पणे व्याख्यातम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४२५	१८३०	मंत्रदीक्षाकालघटिका लग्न			दे० का०	दे०
४२६	४८५३	मंत्रराज समुच्चय (पुरश्चरण विधि)	काशीनाथ		दे० का०	दे०
४२७	२१३	मंत्रमहार्णव			दे० का०	दे०
४२८	२८८५	मंत्रमहोदधि	महीधर		दे० का०	दे०
४२९	४०९८	मंत्रमहोदधि	महीधर		दे० का०	दे०
४३०	१०३०	मंत्रमहोदधि	महीधर		दे० का०	दे०
४३१	४१३३	मंत्रमहोदधि	महीधर		दे० का०	दे०
४३२	५१६५	मंत्रमहोदधि	महीधर		दे० का	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·३ × ८·८ सें० मी०	१७ (१–१७)	५	३३	पू०	प्राचीन सं० १७५४	इति श्री घटिकालग्नसमाप्तं ॥ शुभमस्तु ॥ सं० १७५४ समै नाम वैसाष वदि खष्टि लिष्यतं पीताम्बर दास वैष्णव मणिकर्णिका समीपे ··· ···
२७·६ × ११·३ सें० मी०	१५ (१–१५)	१०	४५	पू०	सं० १९३९	इति श्री मंत्रराजसमुच्चयेभट्टात्मज काशीनाथ विरचिते षण्टः पटलः ॥ इति पुरश्चरण विधिः समाप्तः ॥ ··· ··· संवत् १९३९ के मिती श्रावण सुदि ३ यां ॥
२८·४ × ११·७ सें० मी०	१८६ (२-४७,४९-५७,६३-१५९ १६१-१९४, २६५-२६६)	१०	४३	अपू० जीर्ण	प्राचीन	
२५ × १२ सें० मी०	९ (२१–२९)	११	३०	अपू०	प्राचीन	
२५·२ × १२·७ सें० मी०	२९६	९	३०	अपू०	प्राचीन	इति श्री मन्महीधराचार्य विरंचिते मंत्रमहोदधौ बालालघुश्यामा मंत्र वर्णनं नामाष्टमस्तरंगः ॥ (पृ० ६९)
२४ × ९·५ सें० मी०	२१ (२–२२)	९	३५	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमहीधर विरचिते मंत्रमहोदधौ गणेश मंत्र कथनं नाम द्वितीयस्तरंगः ॥२॥ ··· ··· ···
२४·८ × १३·२ सें० मी०	३८ (१–३८)	८	१८	अपू०	प्राचीन	इति श्री मन्महीधर विरचिते मंत्र महोदधौ भूत शुध्यादिकथनं नाम प्रथमस्तरंगः × × × × × × ॥ (पृ० ३७)
२२·७ × १४ सें० मी०	७	३१	२०	अपू० जीर्णशीर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४३३	६१९६	मंत्रमहोदधि	महीधर		दे० का०	दे०
४३४	२३६८	मंत्रमहोदधि (सटीक)			दे० का०	दे०
४३५	८४	मंत्रमहोदधि (सटीक)	महीधर		दे० का०	दे०
४३६	३०१	मंत्रमहोदधि (सटीक)	महीधर		दे० का०	दे०
४३७	७४६३	मंत्रमीमांसा			दे० का०	दे०
४३८	७४४७	मंत्रमुक्तवाली			दे० का०	दे०
४३९	४४९५	मंत्रमुक्तावली			दे० का०	दे०
४४०	४४९२	मंत्रमुक्तावली			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·२ × ९·७ सें० मी०	१५९ (१-६,६-९, १२-१२०, २२-१३७, १३७,१३७-१५८)	८	४५	पू०	प्राचीन	इति श्री महीधर विरचिते मंत्र महोदधौषट्कर्मादिनिरूपणं नाम पंचविशस्तरंगः ।। समाप्तोयं मंत्रमहोदधिः ।।
२९ × ११·४ सें० मी०	६६ (२–६७)	११	४३	अपू०	प्राचीन	
३३·२ × १६·५ सें० मी०	१२३ (२-७२,७६-१२७)	१४	४८	अपू०	प्राचीन	
२४·७ × ११·५ सें० मी०	१२४ (१-२०-३०-१२४)	११	३८	अपू०	प्राचीन	
२७·१ × ११·३ सें० मी०	२० (४६–६५)	९	४०	अपू०	प्राचीन	
२५ × १०·६ सें० मी०	६ (१–६)	८	३१	पू०	प्राचीन सं० १९१३	इति मंत्रमुक्तावल्यां श्री कृष्णनारद संवादें तृतीयो अध्यायः ।। ३ ।। सं० १९१३ ।। मिती मार्ग वदि १२ द्वादस्यां भौमवासरे मंत्र मुक्तावल्यां समापत लिखतं माधौ राम दुबे ।।
३५·९ × १३·४ सें० मी०	७ (१–७)	८	४४	पू०	प्राचीन सं० १८२१	इति श्री सनक सनंदन सत्कुमार विरचितं आदि सास्त्रे सिध्यांति ऋषेश्वर मनं प्रियं मंत्रमुक्तावली समाप्ता सुभमस्तु ।। संवत् १८२१ के माघ वदि ८ कः ।।
१७·२ × १०·५ सें० मी०	७ (१–७)	९	२३	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४४१	४४४३	मंत्रमुक्तावली			दे० का०	दे०
४४२	१४६४	मंत्रमुक्तावली			दे० का०	दे०
४४३	६७५५	मंत्रमुक्तावली			दे० का०	दे०
४४४	४३३३	मंत्रमुक्तावली			दे० का०	दे०
४४५	५६५५	मंत्रमुक्तावली			दे० का०	दे०
४४६	५८३२	मंत्रमुक्तावली			दे० का०	दे०
४४७	४६६१	मंत्रमुक्तावली			दे० का०	दे०
४४८	२०२८	मंत्ररत्नदीपिका	शार्ङ्गधर मिश्र		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५·५×१०·३ सें० मी०	७ (१–७)	११	२७	अपू०	प्राचीन	इति श्री मंत्र मुक्तावल्या समय कथनं नाम द्वितियो अध्याय ॥ ··· ··· ···
२३·५×९·५ सें० मी०	१०	८	३०	अपू०	प्राचीन	
१६×९·६ सें० मी०	१० (१–१०)	७	१७	अपू०	प्राचीन	
१५×१० सें० मी०	५ (८–१२)	१०	२२	अपू०	प्राचीन सं०१९३७	इति श्री मंत्रमुक्तावल्यां श्री कृष्ण नारद संवादे मंत्र कथनं नाम तृतियो अध्याय ३ शुभं सम्पूर्णम मिती आषाढ़ शुक्ला ५ भौमवासरे संवत् १९३७ दस्तखत पं श्री पंडित परशराम मुर्दरि-सवासंदः
२१·७×१०·९ सें० मी०	७ (३–९)	१०	२६	अपू०	प्राचीन	इति श्री मंत्र मुकुतावलि संपुरणं समाप्तं ॥
१४·६×१०·२ सें० मी०	११ (२,४-१३)	७	१६	अपू०	प्राचीन	इति श्री मंत्र मुक्तावल्यांविष्णु नारद संवादे दीक्षा कथनं नाम तृतीयोध्यायः ॥ (पृ० १३)
२३·५×९·५ सें० मी०	८ (१–८)	९	३०	पू०	प्राचीन सं०१८६६	इति श्री सनक सनंदन संत कुमारविरचिते आदिशास्त्रे सिध्यंते रिषेस्वरमन प्रिया ॥ मंत्र मुक्ताल्यांसमाप्तम् शुभ मस्तु सिद्धिरस्तु सम्वत्सरा १८६६ साके १७३१ × × × × × ॥
२३×१०·५ सें० मी०	१४	१३	४०	पू०	प्राचीन	इति श्री सारंगधर मिश्र प्रकाशितायां मंत्र रत्न प्रदीपिकायां नवार्णव विधानं संपूर्णम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४४९	७६४६	मंत्रराज समुच्चय	काशीनाथ		मि० का० तथा दे० का० मिश्रित	दे०
४५०	२७०२	मंत्रशाबर			दे० का०	दे०
४५१	५३४५	मंत्रसिद्धिविधान			दे० का०	दे०
४५२	५५७८	मंत्रावली			दे० का०	दे०
४५३	३८०७	मंत्रोद्धारकोश	दक्षिणामूर्ति मुनि		दे० का०	दे०
४५४	१३००	मंत्रोद्धारविधि			दे० का०	दे०
४५५	१२०४	महाकालकवच			दे० का०	दे०
४५६	२७६१	महाकाली यंत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२८·२ × १०·८ सें० मी०	२६ (१–२६)	७	३२	पू०	प्राचीन	इति भट्टात्मज काशीनाथ विरचिते मंत्रराज समुच्चये षष्ठ पटलः ॥ ६ ॥
२२·८ × ९ सें० मी०	३ (१–३)	७	३१	अपू०	प्राचीन	
१४·९ × ९·७ सें० मी०	१४ (१–१४)	८	१९	पू०	प्राचीन सं० १८३८	इति श्री सनत्कुमार विरचितं आदि शास्त्रे सिधांत समाप्तं सुभं संवत् १८३८॥
२१·५ × १४·८ सें० मी०	१ (खर्रा)	१६	१५	पू०	प्राचीन	
२६·५ × १४ सें० मी०	१४ (२,४–१७)	१४	४२	अपू०	प्राचीन	इति श्री दक्षिणामूर्ति मुनि विरचिते उद्धार कोशे शकलागमसागरे देवी सप्तकुमार नवग्रहं च तस्यदेवीध्यान निर्णयो नाम सप्तमः कल्पः ७ ॥ ... ...
२२·४ × १०·२ सें० मी०	१५ (१–८,१०–१६)	७	२७	अपू०	प्राचीन	इति श्री रामचंद्र पटल पूजा पद्धतिः समाप्तः ॥
१७·४ × १०·५ सें० मी०	५ (१–५)	७	२०	पू०	प्राचीन सं० १९३३	इति श्री गंधर्व तंत्रे महाकाल कवचम् मिति जेष्ठ सुदी १ संवत् १९३३ ॥
१६·५ × १२·७ सें० मी०	१० (१–१०)	६	१३	पू०	प्राचीन	

(सं०सू०२–३५)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४५७	५४६६	महागणपति कवच			दे० का०	दे०
४५८	२९३६/१२	महागणपति मंत्र-सहस्रनाम			दे० का०	दे०
४५९	२९९५	महागणपति मूलमंत्र			दे० का०	दे०
४६०	२९३६/१२	महागणाति वरदगणेश पंचांग			दे० का०	दे०
४६१	५३८८	महाजगन्मंगल कवच			दे० का०	दे०
४६२	२४३८	महातारक मंत्र भाष्य			दे० का०	दे०
४६३	३५९८	महात्रिपुर सुंदरी पादुकार्चन	निजात्माप्रकाशानंद		दे० का०	दे०
४६४	५८८०	महामृत्युञ्जय मंत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१९×११·३ सें० मी०	४ (१–४)	१०	२२	पू०	प्राचीन सं० १८४९	इति श्री रुद्रयामले गौरी हर संवादे महागणपति कवचं समाप्तम् ।। शुभ मस्तु संवत् १८४९ के साल मिती पौष वदि १० रवौ कह: पुस्तक लिखितं सीराराम भरद्वाज रावा वैठे शुभस्थाने श्री नृपति आजीतसिंघ राज्ये ।।
२४·३×१३·१ सें० मी०	१९	२२	१६	अपू०	प्राचीन	इति श्री रूद्रयामले महागणपतिमंत्र नामसहस्राख्य संपूर्णम् समाप्तम् ।। शुभमस्तु ।।
१८·३×९·५ सें० मी०	६ (१–६)	९	२२	अपू०	प्राचीन	
२४·३×१३·१ सें० मी०	२	२४	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामले तंत्रे सर्वतत्व निरूपणं महागणति वरद गणेश पंचांग समाप्तम् ।। शुभमस्तु ।।
२२·९×८·५ सें० मी०	३ (१–३)	१५	४१	पू०	प्राचीन सं० १८३५	इति श्री काली कुलार्णवे महा जगन्मंगल कवचं संपूर्णं ।।
१८·७×१० सें० मी०	१५	११	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री मंत्रार्थोयं समाप्त: ।।
१९·८×१० सें० मी०	५२ (१–५२)	९	२५	अपू०	प्राचीन	
११·४×५.२ सें० मी०	१	३	१५	पू०	प्राचीन सं० १८६६	इति रुद्रजामले महामृत्युञ्जयमंत्र: ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४६५	७६६३	महामृत्युंजयमंत्र			दे० का०	दे०
४६७	२६१३	महाविद्यामन्त्र			दे० का०	दे०
४६८	१६०७/२	महीपाल कवच			दे० का०	दे०
४६९	४४३५	मातृकानिघंटु			दे० का०	दे०
४७०	५७५५	मातृकानिघंटु	महाचार्य्य (महीधर)		दे० का०	दे०
४७१	७३०२	मातृकान्यास			दे० का०	दे०
४७२	७३५५	मातृकान्यास			दे० का०	दे०
४७३	७२०७	मालामंत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१४·२ × १२·२ सें० मी०	४ (१–४)	८	१४	पू०	प्राचीन सं० १८३७	लिष्यतं पं श्री मिश्र अजुध्याप्रसाद सुभमस्तु शुभं मंगलं । संवत् १८३७ नदीनाम संवत्सरे ··· ···
१५·७ × ७·४ सें० मी०	१५ (२–१६)	५	१८	अपू०	प्राचीन सं० १८९०	इति श्री महाविद्या मंत्र समाप्तः··· संवत् १८९० ··· ··· ···
८·५ × ७·५ सें० मी०	७ (८–१४)	७	१०	अपू०	प्राचीन	इति श्री गौतमी तंत्रे श्री नारदेक्तां श्री महीपाल कवचं संपूर्ण ।
२५·५ × १०·४ सें० मी०	८ (१–८)	१०	३९	पू०	प्राचीन	इतिमातृका निषंटुः ॥··· ··· ··· ···
२४·३ × १०·४ सें० मी०	६ (३–८)	१०	३५	अपू०	प्राचीन	इति श्री मद्देशिकमण्डली मुकुटमाणि-क्योपम परमहंस श्री महाचार्य्य विरचित्तो मातृका निघंटु समाप्तम् ॥ शुभं ।
१५·२×१०·९ सें० मी०	४ (१५, १६, १९, २०)	९	१६	अपू०	प्राचीन	
२४·७×१०·४ सें० मी०	२४ (६–२९)	११	४०	अपू०	प्राचीन	
१७·१ × ८·९ सें मी०	२ (१, ४)	६	१६	अपू०	प्राचीन	इति माला मंत्र ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४७३	४१६८/२	मालामंत्र			दे० का०	दे०
४७४	३२१३	मालामंत्र			दे० का०	दे०
४७५	५६८९	मालामंत्रादि			दे० का०	दे०
४७६	२९३६/१२	मालासंस्कार			दे० का०	दे०
४७७	१४५९	मालासंस्कार			मि० का०	दे०
४७८	७७५१	मूर्त्तिरहस्य			दे० का०	दे०
४७९	६४९८	मृत्युंजयकवच			दे० का०	दे०
४८०	२९३६/१२	मृत्युंजयकवच			दे० का०	

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१३·६ × १०·५ सें० मी०	५ (१–५)	१०	१५	अपू०	प्राचीन	इति श्री मालामंत्रः ॥ श्री •••
१८ × ६ सें० मी०	४ (१–४)	१०	३०	अपू०	प्राचीन	
१०·२ × ५·७ सें० मी	१५ (स्फुट पत्र)	६	१७	अपू०	प्राचीन	
२४·३ × १३·१ सें० मी०	३	२५	१८	अपू०	प्राचीन	
१६·६ × ११·४ सें० मी०	२ (१–२)	११	३४	अपू०	प्राचीन	
१४·७ × ६·७ सें० मी०	१	६	२१	अपू०	प्राचीन	इति मार्कंडेयपुराणे सावर्णिके मन्वंतरे देवीमहात्म्येमूर्त्तिरहस्यं समाप्तं ॥
२५·५ × १०·२ सें० मी०	३ (१–३)	७	३२	पू०	प्राचीन सं० १६०६	इति श्री रुद्रजामले महामृत्युंजय कल्पे-महामृत्यु निवारण नाम मृत्यु ंजय कवच समाप्त शुभमस्तू ॥ संवत् १६०६ के साल समाएनामिति आस्वन वदि ८ बुधे कः लिषितेयंमिदं पुस्तकंश्री गौतम वाल-गोविन्दे न आत्मपाठार्थं शुभंभूयात् ॥
२४·३ × १३·१ सें० मी०	१½	२८	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री रूद्रयामले तंत्रे ईश्वर पार्वती संवादे मृत्यु ंजय कवचं समाप्तं ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४८१	१११४	मृत्युंजययंत्र			दे० का०	दे०
४८२	५४८७	यंत्रचिंतामणि	दामोदर		दे० का०	दे०
४८३	५६८	याक्षिणीकल्प			दे० का०	दे०
४८४	१५५५	युद्धकौशल			दे० का०	दे०
४८५	१६३४	योगेश्वरीमंत्र			दे० का०	दे०
४८६	३६७६	रजस्वलामंत्रोद्धार स्तोत्र			दे० का०	दे०
४८७	८२६	रजस्वलास्तव, कलिका कवच			दे० का०	दे०
४८८	१०३६	रसरत्नाकर	नित्यनाथ		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२·७ × १३·५ सें० मी०	४ (१–४)	१५	४४	पू०	प्राचीन सं० १८८६	इति श्री रूद्रतंत्रेमृत्युंजययंत्रे संपूर्णम् श्रीगुरुवे नमः सं० १८८६ श्रावन शुक्ला ३ रविदिनेलिखि तंमिदं मुरलीदत्तं स्वयंभूः ॐ
२७·६ × १० सें० मी०	६ (१–६)	७	४४	अपू०	प्राचीन	
२०·३ × ११·५ सें० मी०	४ (१–४)	९	२१	पू०	प्राचीन	इति किंकणीतंत्रेधनदाविधानं चतुर्विशः पटलः श्री शिवार्पणं मस्तु ॥
२१·९ × १० सें० मी०	१९	७	२९	पू०	प्राचीन सं० १८८६	इति श्री रुद्रतंत्रेरुद्रविरचितंयुद्धकौशलं समाप्तम् शुभमस्तुः शंवत् १८८६ पौष वदि रवौ कंह लिषतं लालारामदास ॥
१३·८ × १०·२ सें० मी०	२	८	१४	अपू०	प्राचीन	
१७·८ × ९ सें० मी०	४ (१–४)	७	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री कालीतंत्रे रजस्वलामंत्रोद्धारण स्तोत्रं संपूर्णं··· ··· ···।
१९·५ × ११·६ सें० मी०	७	१४	३१	अपू०	प्राचीन	इति श्री कालिकातंत्रे कालिका कवचं समाप्तं··· ··· ···।
३१·८ × १३·५ सें० मी०	७५ (१,३–७६)	६	३४	अपू०	प्राचीन	
(सं०सू०-२-३६)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४८९	३२७५	रहस्य मीमांसा			दे० का०	दे०
४९०	७६३०/८	राधाकवच			दे० का०	दे०
४९१	२३७९	राधामंत्र			दे० का०	दे०
४९२	७६३०/८	राधासहस्रनाम			दे० का०	दे०
४९३	७६३०/८	राधिकाकवच			दे० का०	दे०
४९४	३३४८/४६	राधिकासहस्रनाम			दे० का०	दे०
४९५	५४२१	रामकवच			दे० का०	दे०
४९६	६०६८	रामकवच			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६ × ८·७ सें० मी०	४ (१–४)	५	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री रहस्यमीमांसायां मंत्रार्थरहस्य समाप्तः ।
१५·२ × ६·७ सें० मी०	११ (१५–२६)	६	१२	पू०	प्राचीन	इति श्री सर्वोत्तममहात्म्य तंत्रे रुद्रयामले शिव नारद संवादे सिव प्रोक्तं राधा सहस्र नाम स्तोत्र समाप्तं ॥
१५·२ × ६·७ सें० मी०	१४ (१–१४)	६	१४	पू०	प्राचीन	इति श्री राधाकवच समाप्त ॥
२७·४ × ११·३ सें० मी०	३ (१–३)	११	४०	अपू०	प्राचीन	इति नारद पंच रात्रे राधा मंत्र कथनं नवमोध्यायः ॥
१५·२ × ६·७ सें० मी०	५ (३६–४०)	५	१२	पू०	प्राचीन	इति श्री राधिका कवच संपूर्ण ॥
१२·५ × ८·२ सें० मी०	३७ (१–३७)	७	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री सर्वोत्तममाहात्म्ये तंत्रे रुद्रयामिले शिव नारद संवादे शिव प्रोक्तं श्री राधिका सहस्र नामस्तोत्रं संपूर्णम् ॥
१७·७ × ११·२ सें० मी०	५ (१–५)	६	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामलेउमामहेश्वर संवादे त्रैलोक्यमोहनंनाम राम कवचं समाप्तम् शुभमस्तु श्री० ॥
१३·२ × ८·५ सें० मी०	११ (१–११)	५	१४	पू०	सं०१९७६	इति श्री रामं कवच संम्पर्णम् जेष्ट शुक्ल ३ सम्बद १९७६ मु० वल्देवगढ़ श्री सीताराम चन्द्रार्पणमस्तु ... ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४९७	२१४२/६	रामकवच			दे० का०	दे०
४९८	७७६३	रामकवच (त्रैलोक्यमोहनकवच)			दे० का०	दे०
४९९	६८७५	रामकवच			दे० का०	दे०
५००	४६१९	रामचंद्रकवच			दे० का०	दे०
५०१	५४४५	रामत्रैलोक्यमोहनकवच			दे० का०	दे०
५०२	६५२०/१६	रामत्रैलोक्यमोहनकवच			दे० का०	दे०
५०३	६५२०/१६	रामत्रैलोक्यवियजकवच			दे० का०	दे०
५०४	४४४०/१०	रामदुर्गा			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१८·५ × १६ सें० मी०	५ (१–५)	९	१७	पू०	सं०१९२३	इति श्री ब्रह्मयामले उमामहेश्वर संवादे-त्रैलोक्य मोहनं नाम श्री राम कवच संपूर्णम् सं० १९२३ चंद्र वासरान्वितायां ३ तृतियादिने शुभं भवतु श्री ।।
१६·१ × ९·२ सें० मी०	५ (१,५–८)	६	१७	अपू०	प्राचीन सं०१८९६	इति श्री ब्रह्मयामले तंत्रेहरगौरी संवादे त्रैलोक्य मोहनं नाम कवचं समाप्तं ।। सुभमस्तु सं० १८९६ के पौष शुक्ल १४ रवौका लिखितं श्री लालवीर सिंह देव पठनार्थे श्री लालरणमस्त सिंह देव ।
२१·९ × ११·८ सें० मी०	२ (१–२)	९	२८	अपू०	प्राचीन	
१६·८ × १२·१ सें० मी०	५	१२	१३	अपू०	प्राचीन	
२५ × १०·६ सें० मी०	४ (१–४)	७	३२	पू०	प्राचीन सं०१९००	इति श्री ब्रह्मयामले तंत्रे उमामहेश्वर संम्वदे श्री राम त्रैलोक्य मोहनं नाम कवचं समाप्तं शुभंभूयात् । लिषिते अस्वनवदि ।।१३।। गुरौका संवत् ।।१९।।०।०।।
९·९ × ९·५ सें० मी०	७ (२–८)	१०	१२	अपू०	प्राचीन	···ब्रह्मयामले तंत्रे उमामहेश्वर संवादे श्रीराम त्रैलोक्य मोहन नाम कवचं ।।
९·९ × ९·५ सें० मी०	८ (१–८)	१०	१३	पू०	प्राचीन	ब्रह्मजामले तंत्रे उमामहेश्वरसंवादे राम त्रैलोक्यवीजयंनामाकवचं समांप्त सुभ मस्तु सुभं भूयात् × × × × ×।।
१२·४ × ९·१ सें० मी०	४	९	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री राम दुर्गाः संपूर्णं श्री मम-प्रीतर्थे प्रातकाले पठे नित्यं ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५०५	६५२० / १६	रामनामकवच			दे० का०	दे०
५०६	५४७८	रामनामलेखन			दे० का०	दे०
५०७	१५५१	रामनामलेखन विधि			दे० का०	दे०
५०८	४२८६	रामनामलेखन विधि			दे० का०	दे०
५०९	५५९२	रामनामलेखन विधि			मि० का०	दे०
५१०	५४३३	रामानामलेखन विधि			दे० का०	दे०
५११	५५५८	रामपटलपद्धति			दे० का०	दे०
५१२	२००८	राममंत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
९.६ × ६.५ सें० मी०	१२ (१–१२)	८	१२	पू०	प्राचीन	इत्यगस्त्यविश्वामित्र संवादे श्री राम रहस्य रामनाम कवं संपूर्णं समाप्त सुभं भूयात् ॥
१७.३ × १०.४ सें० मी०	४ (१–४)	७	१८	अपू०	प्राचीन	लिखेभ्यानुदिवं देवि राम नाम विशेषतः लिखित्वा धारयित्वा च सर्वैश्वर्यं समन्विताः ... ... (पृ० १)
३० × १२.१ सें० मी०	३	६	३८	पू०	सं०१९०५	इति श्री गौरीश्वर संवादे रुद्रयामले रामनाम लेखन विधि प्रकार पटलः समाप्तः श्री संवत् १९०५
१६ × ८.२ सें० मी०	३ (१–३)	१२	२७	पू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामले श्रीरामनामलेखन विधि प्रकाश पटले ॥
२५.२ × ११.८ सें० मी०	४ (१–४)	८	३१	पू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामले गौरी ईश्वर संवादे राम नाम लेखन विधि ॥
१७.५ × १०.५ सें० मी०	२	७	२१	अपू०	प्राचीन सं०१९१९	इति श्री रुद्रयामले तंत्रे गौरीस्वर संवादे रामनामाभिलिषि विधि प्रकास पटल संपूर्णम् सुभमस्तु मिती माघ सुदि ५ संवत् १९१९ के साल शुभ
१७.७ × ९.६ सें० मी०	२ (१–२)	८	२२	पू०	प्राचीन	इति ध्यात्वा पटल पद्धत् संपूर्णं .
१७.१ × ११.४ सें० मी०	१	८	२०	पू०	प्राचीन	शुभ मस्तु

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५१३	५८०४	राममंत्रपद्धति			दे० का०	दे०
५१४	२५३४	राममंत्रविधि			दे० का०	दे०
५१५	५६६३	रामरक्षाकवच			दे० का०	दे०
५१६	३१९५	रामरहस्य			दे० का०	दे०
५१७	७४५३/२	रामलेखनविधि			दे० का०	दे०
५१८	६५२०/१६	रामवज्रकवच			दे० का०	दे०
५१९	२५५१	रामविधिमंत्रपटल			दे० का०	दे०
५२०	४०५९/२	रामसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०·२ × ९ सें० मी०	२० (१–२०)	६	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री राममंत्र विधि पद्धति पटल संपूर्णं ॥
१९·५ × ९·६ सें० मी०	१६ (१–१६)	७	२५	पू०	प्राचीन सं० १८२०	इति श्री राममंत्र विधि पटल संपूर्णं ॥ शुभमस्तु श्री रामार्पणं ॥ सं० १८२०
१७·४ × १३ सें० मी०	४ (१–४)	११	१२	अपू०	प्राचीन सं० १९८१	इति श्री रुद्रयामल तंत्र उत्तर खण्डे-शिव गौरी संवादे प्रत्यक्ष सिद्धि प्रदे रामरक्षा कवचं बीज गर्भसहितं संपूर्णम् × × × संवत् १९८१ × × × × ॥
२४·३ × ८·८ सें० मी०	३ (१–३)	७	३०	अपू०	प्राचीन	इति श्रीराम रहस्ये सप्तमो पटलः ॥ सुभ मस्तु ॥
१२·९ × १०·७ सें० मी०	६	११	१५	पू०	प्राचीन सं० १८९७	इति श्री गौरीश्वर संवादे रुद्रयामले राम नाम लेखन विधिः संपूर्णं ॥ × × × × सं० १८९७ × × × × ॥
९·९ × ९·५ सें० मी०	६	१०	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री हिरण्य गर्भ संहितायां पार महंस्येअगस्त्य प्रोक्त श्रीराम बज्रकवचं संपूर्णं शुभं भूयात् ॥
१८·९ × ११·४ सें० मी०	१६ (१–१६)	८	१९	पू०	प्राचीन सं० १९४९	इति श्रीराम विधि मंत्रः पटलं सपूर्णः ॥ समाप्तं ॥ संवत् १९४९ ना वर्षे मासो··· ··· ··· ॥
१५·९ × ८·७ सें० मी०	३२ (१–३२)	६	२०	पू०	प्राचीन सं० १८८९	इति श्री रुद्रजामल तन्त्रे पार्वती हर संवादे मकादि श्रीराम सहस्रनाम स्तोत्र संपूर्णं सं० १८८९ श्रावन सुदि १३ गुरूवासरे लिष्यत ढाकनसाध।

(सं०सू०-२-३७)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५२१	३३४८/४६	रामसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
५२२	५५३१	रामायणविधान			दे० का०	दे०
५२३	४८२८	रामार्चनचंद्रिका			दे० का०	दे०
५२४	४६६०	रुद्रचंडी			दे० का०	दे०
५२५	२६६५/४	रुद्रयामलतंत्र			दे० का०	दे०
५२६	४१६	रुद्रयामल (आसुरी कल्प)			दे० का०	दे०
५२७	२६३८	रेणुकाकवच			दे० का०	दे०
५२८	३३४८/४६	लक्ष्मणकवच			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
१२·५ × ८·२ सें० मी०	१३	८	१८	अपू० (खंडित)	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामले तंत्रे पार्वती हर सवादेमकारादि श्रीराम सहस्रनाम स्तोत्र संपूर्णम् ॥
२७·५ × ११·१ सें० मी०	६ (१–६)	९	३२	पू०	प्राचीन सं० १९३०	इति श्री महाहंस प्रयाणे उमारुद्रसंवादे रामायणविधान कथनं नामपञ्चमः पटलः समाप्तः ॥ संवत् १९३० ॥ मिती चैत्र कृष्ण × ×
२७·३ × ११·५ सें० मी०	७ (७६–८२)	११	३९	अपू०	प्राचीन	राम इत्यपरोमनुः। चंद्रांतश्चैतअद्रांतः पुनर्द्धेधाविभिधते । पंचाशन्मातृका मंत्र वर्ण प्रत्येक पूर्व्वकः ॥
१६·९ × ८·२ सें० मी०	१४ (१–१४)	६	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री चंडीका फलं समाप्तम् इति रुद्र चंडी समाप्तम् ॥
१५·५ × ९·५ सें० मी०	८	१२	१०	पू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामल तंत्रो यथा योगेन भाषितं सुभमस्तु संपुरणम् ॥ ...
१९ × १० सें० मी०	३	१३	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री रूद्रयामले आसुरी कल्प पटलः ॥ समाप्तः ॥
११·५ × ७·६ सें० मी०	७	५	१२	अपू०	प्राचीन	
१२·५ × ८·२ सें० मी०	५ (१–५)	६	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री नारदीयतंत्रे श्री लक्ष्मणकवचं समाप्तम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५२९	२६८५	लक्ष्मीनारायणनित्य-पूजा पद्धति			दे० का०	दे०
५३०	२५५६	लक्ष्मीनारायणपटल			दे० का०	दे०
५३१	४७२८	लक्ष्मीनृसिंहकवच			दे० का०	दे०
५३२	२५६१	लक्ष्मीहृदयमंत्र			दे० का०	दे०
५३३	३२७१	ललितामंत्ररहस्य			दे०का०	दे०
५३४	३१६७	ललितामंत्ररहस्य			दे० का०	दे०
५३५	२९७०	ललितार्चापद्धति			दे० का०	दे०
५३६	४३६०	ललितासहस्रनाम (सौभाग्यभास्कर टीका)	भास्करराय (भासुरानंद)		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·३ × १२ सें० मी०	३	८	३८	अपू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रया मले तंत्रे देवी रहस्ये-परमार्थ दीपिकायां श्री लक्ष्मी नारायण नित्य पूजा पद्धिति सपूर्णम् ।। शुभमस्तु ।
१५·८ × ८·५ सें० मी०	९ (१,४-७,९-११,१३)	६	२४	अपू०	प्राचीन	इति श्रीदेवो रहस्येतंत्रे परमार्थ दीपिकायां लक्ष्मी नारायण पटलं समाप्तं ।। संपूर्णं ।। शुभमस्तु ।। सिद्धरस्तु ।। श्री लक्ष्मी नारायण नमः ।।
१३.६ × ८·४ सें० मी०	३ (२–४)	७	१५	अपू०	प्राचीन	इति श्री नृसिहपुराणे ब्रह्मसावीत्री संवादे श्रीलक्ष्मी नृसिहकवच संपूर्णम् ।।
१६ × ८·३ सें० मी०	१७ (१–१७)	६	२४	अपू०	प्राचीन	
११·४ × ८ सें० मी०	२३ (२-११,१४-२६)	७	१६	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमाब्रह्मांड पुराणे उत्तरखंडे ललितोपाख्याने हयग्रीवागस्त्य संवादे ललिता मंत्र रहस्यं नाम त्रिशतिका स्तोत्रराजोनाम पंचविंशोध्यायः संपूर्ण-स्तोत्रं ।।··· ··· ··· ··· ··· ···
१३·५ × ७ स० मी०	१५ (१–१५)	७	२४	पू०	प्राचीन सं० १८७४	इति श्री ब्रह्मांडपुराणे उत्तरखंडे ललितोपाख्याने हयग्रीवागस्त्य संवादे ललिता मंत्र रहस्यं नाम त्रिशतिकास्तोत्र राजो नाम पंचविशोध्यायः ।। चरखारी ग्रामें लेखः सं० १८७४ चैत्र वदी १ चंद्रे
१७·७ × ८·७ सें० मी०	९४ (१–९४)	६	२१	अपू०	प्राचीन	
२५·८ × ११ सें० मी०	२५४ (१–२५४)	९	४०	पू०	प्राचीन सं० १८३२	इति श्री भास्कर रायेण कृते सौभाग्य भास्करे दशमेनशत्तेनाभूद्वारिरायकादशीफला ।। इति श्री ललेता सहस्रनामभाष्ये सौभाग्यभास्करे दशमं नाम शतकनामैकादशीकता ।।··· ··· ··· सं० १८३२ मिती जेठ सुदी पुननबासी ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५३७	२०७	ललितासहस्रनाम			दे० का०	दे०
५३८	७७३४	वज्रपंजरसूर्यकवच			दे० का०	दे०
५३९	२५११	वनदुर्गा			दे० का०	दे०
५४०	५७२६	वांछाकल्पलतोपस्थान			दे० का०	दे०
५४१	११५१	वामदेव प्रकाश	जयराम गिरि		दे० का०	दे०
५४२	३७४२	वामदेव प्रकाश	जयराम गिरि		दे० का०	दे०
५४३	५३२९	वामदेव प्रकाश	जैराम गिरि		दे० का०	दे०
५४४	५२२८/४	विजयाग्रहणविधि			दे० का	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्णहै ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	म	द	१०	१०	१०
२५·२ × ११·५ सें० मी०	११ (१–११)	१०	३०	अपू०	प्राचीन	
२३·८ × ९·८ सें० मी०	५ (१–५)	८	२८	पू०	प्राचीन सं०१९०६	इति श्री रुद्र जामले तंत्रे देवी रहस्ये वज्रपंजर सूर्य्य कवचांख्यातं नामत्रिः त्रिसः पटलः समाप्त सुभ मस्तु सं० १९०६ × ×
२५·५ × १०·३ सें० मी०	१६ (१-२,५-६,९-१९,२१)	६	४०	अपू०	प्राचीन	
३०·२ × ११ सें० मी०	६ (१–६)	१२	३२	पू०	सं०१९३७	इत्यथर्वणे मंत्रार्णवे सौभाग्य काण्डे वांछी कल्पलतोपस्थानं संपूर्णम् ॥ ••• चैत्र कृष्णा १३ संवत १९३७ नर्मदातीरे गोपुर वैठे लिखा देवीदीन चौवे •••
२३ × १२·५ सें० मी०	३० (१-१०,४०-५९)	८	३०	अपू०	प्राचीन	—
२४·८ × १३·२ सें० मी०	४१	९	३४	अपू०	प्राचीन	इति श्री मन्महाराज कुमार कुवर जयरामगिरि संग्रहीते वामदेव प्रकाशे चतुर्थ मयूख ४ ॥ (पृ० ७२)
३१·३ × १४·५ सें० मी०	७ (१–७)	१२	४१	अपू०	प्राचीन	
१६·५ × ११·२ सें० मी०	२ (१०–११)	११	१९	पू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामले विजया ग्रहणं विधिः समाप्तम् ॥ शुभ मस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५४५	७५६६	विधानमाला	नरसिंह भट्ट		दे० का०	दे०
५४६	९०९	विपरीतप्रत्यंगिरा-स्तवराज			दे० का०	दे०
५४७	६९६२	विविध न्यास			दे० का०	दे०
५४८	३०४६/७	विश्वतर्पण			दे० का०	दे०
५४९	२९६६/८	विष्णुपंजररामकवच			दे० का०	दे०
५५०	५३८१	विष्णुमंत्रमुक्तावली			दे० का०	दे०
५५१	६९९८	वृषप्रयोग			दे० का०	दे०
५५२	३८६६	शतचंडीप्रयोग (चंडी विधान)	श्रीकृष्ण		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३१·५ × १६·८ सें० मी०	६१ (पृ० २७ से १६७ तक के स्फुट पत्र)	१२	३७	अपू०	प्राचीन	इति श्री नृसिंह भट्ट विरचितायां विधान मालायां चतुर्वर्ग चिंचामणी हेमाद्रि प्रोक्तं वसंत पूजनं पत्र सं० ६७
३१·५ × १२·८ सें० मी०	२	१०	३५	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभैरवतंत्रे विपरीत प्रत्यंगिरा स्तवराज समाप्तः ··· ··· लिखितमिद पुस्तकं श्रीनाथ शर्म्मा मैथिलदेशांतर्गत् महेशपूरग्रामवाशिनः ॥
१६·६ × ९·१ सें० मी०	१७ (१–१७)	७	२१	अपू०	प्राचीन	
१७·७ × ११ सें० मी०	७	८	२०	पू०	प्राचीन	
१५·५ × १४·५ सें० मी०	१३	११	१६	अपू०	प्राचीन	
२४·२ × १०·६ सें० मी०	७ (१–७)	१६	५०	पू०	प्राचीन सं० १८२०	इति श्री विष्णु मंत्र मुक्तावली संपूर्ण ॥ ··· ··· विष्णु मंत्र मुक्तावली: संवत् १८२० मासका (अंतिम पृ० के ऊपरी कवर पर उद्धृत ॥)
१८·३ × १० सें० मी०	१४७ (पृ०१ से २०१ तक के बीच के स्फुट पत्र)	५	२१	अपू०	सं० १९४८	इति संख्यायन तंत्रे वृषप्रयोगोनाम ऊनचत्वारिंशत्पटलः ॥ ३९ ॥ संवत् १९-४८ ॥ ज्येष्टशुक्ल ॥ १३ शुभंभूयात ॥
२६ × १२·२ सें० मी०	३ (१२–१३, १६)	१२	४९	अपू०	सं० १९२६	इति प्रकारांतरंक्वचित् इति ऋणकरोपनामक नृसिंह भट्टात्मज नारायण भट्टसूनु श्री कृष्ण कृतो मंत्र महोदध्यनुसंरी शतचंडी प्रयोगः ॥ संवत् १९२६ ॥

(सं०सू० २-३८)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५५३	३१२५	शतचंडी शापोत्कीलन			दे० का०	दे०
५५४	१५४८/२	शत्रुविध्वंसनीस्तोत्र			दे० का०	दे०
५५५	६४४७	शरणागति महामंत्र			दे० का०	दे०
५५६	२३७५	शरभकवच			दे० का०	दे०
५५७	१२७८	शरभनित्यपूजाविधि			दे० का०	दे०
५५८	७८४१	शरभपूजापद्धति			दे० का०	दे०
५५९	७७०९	शरभप्रयोगविधि			मि० का०	दे०
५६०	३५९१/५	शरभमंत्रविधान			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१४·५ × १०·३ सें० मी०	३ (१–३)	१०	१६	पू०	प्राचीन	अथ चंडी······सप्तशती चंडीका उत्कीलन ······लक्ष्मी नारायणार्पण मस्तु ॥
१० × ७·१ सें० मी०	३	७	१३	पू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामले शत्रुविध्वंसनी स्तोत्र संपूर्ण ॥
२५.८ × ११·२ सें० मी०	१	११	३५	पू०	प्राचीन	इति श्री शरणागति समाप्तम ॥
१८.१ × ९·३ सें० मी०	८ (३-६,९-१०, १४-१५)	६	२५	अपू०	प्राचीन	इति श्री आकाशभैरव कल्पे प्रत्यक्ष सिद्धिप्रदे उमामहेश्वर संवादे शरभ कवच संपूर्णम् १०४ ॥
२१·४ × ९·५ सें० मी०	४	११	३५	पू०	प्राचीन	
२३·३ × ९·९ सें० मी०	६ (१–६)	९	३३	पू०	प्राचीन	इति सरभ पूजा पद्धती संपूर्ण ॥
२६ × ११·२ सें० मी०	५ (१–५)	१५	५२	पू०	प्राचीन	इत्याकाशभैरव कल्पे आदि खंडे शरभ-प्रयोग विधिर्नाम चतुश्चत्वारिंशत्पटलः समाप्तः ॥
१७ × १०·५ सें० मी०	६ (१–६)	७	१९	पू०	प्राचीन	इति शरभमन्त्रविधानम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५६१	२८३४	शरभशाल्वकवच			दे० का०	दे०
५६२	५३३७	शरभशाल्व पटल			दे० का०	दे०
५६३	७१८५	शरभसहस्रनाम स्तोत्र			दे० का०	दे०
५६४	३७५२	शरभार्चापारिजात	रामकृष्ण		दे० का०	दे०
५६५	२६६२	शरभास्त्रम्			दे० का०	दे०
५६६	४२१०	शरभास्त्रम्			दे० का०	दे०
५६७	७३२३	शारदातिलक			दे० का०	दे०
५६८	७०३३	शारदातिलक	लक्ष्मण देशिकेंद्र		दे० का	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
२६×१०·२ सें० मी०	३० (१–३०)	७	२८	पू०	प्राचीन	इति श्री महाकाश भैरवतंत्रप्रत्यक्ष सिद्धिप्रदे उमामहेश्वर संवादे शर्वशाल्व कवच समाप्तः ॥ शुभमस्तु ॥
२६×११·१ सें० मी०	७ (१–७)	१४	४३	पू०	प्राचीन	इति श्री आकाश भैरव कल्पे उमामहेश्वर संवादे श्री शरभसहस्रनाम स्तोत्रं संपूर्णं ॥× × × ×
१६×९·७ सें० मी०	१२ (१–१२)	७	१६	पू०	प्राचीन	इत्याकास भैरव कल्पे श्री शरभसाल्वपटलं संपूर्णं ॥× × × ×॥
२४·७×१३·१ सें० मी०	७० (२-३४, ३४-७०)	१०	३४	अपू०	प्राचीन सं० १९१२	इति शरभा चा(र्चा)पारिजाते रामकृष्ण विनिर्मिते काम्यं यंत्रामोदभूतः सप्तमः स्तवकोगमत् आत्रेय गोत्रे सुतरांपवित्रे ··· ··· ··· ···संवत् १९१२··· ···॥
२७·८×११·४ सें० मी०	२ (१–२)	८	३४	पू०	सं० १९३९	इति शरभास्त्रम् संवत् १९३९ ॥
२६·८×११·२ सें० मी०	२	८	४५	पू०	सं० १९११	इति शरभास्त्रम् संवत् १९११ के।
२२·५×१०·२ सें० मी०	९३ (१–९३)	१०	४२	अपू०	प्राचीन	इति शारदा तिलके षष्ठः पटलः । (पृ० ३७)
२३·५×१२·७ सें० मी०	१८० (१–१४८, १६१-१६२, १६५-१९४)	१०	३५	अपू०	प्राचीन	इति श्री शारदातिलकके पंचविंशः पटलः ॥२५॥ इति शारदा तिलकं समाप्तं ॥ शुभमस्तु ॥× × × ×॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
५६९	३७६५	शारदातिलक			दे० का०	दे०
५७०	१६०५	शारदातिलक			दे० का०	दे०
५७१	१५६१ ५	शाल्वशरभ मालामंत्र			दे० का०	दे०
५७२	५५३० ३	शिवकवच			मि० का०	दे०
५७३	७२०३	शिवकवच			दे० का०	दे०
५७४	७०१७	शिवकवच			दे० का०	दे०
५७५	७०८२	शिवकवच			दे० का०	दे०
५७६	४६६६	शिवकवच			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·३ × १२·२ सें० मी०	४२ (४२–८३)	१०	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री शारदातिलके षष्ठः पटलः ६ (पृ० ४४)
२८·५ × १३·५ सें० मी०	१५९ (१-२८,३०-१६२)	१२	३५	अपू०	प्राचीन सं०१८४२	इति शारदा तिलके पंचविंशः पटलः २५ मीति चैत्र शुक्ल ३ चं० सं० १८४२ ॥
१६·२ × १०·१ सें० मी०	२	८	१९	पू०	प्राचीन सं०१८६६	सं० १८६६ वैशाख कृष्ण ७ भृगु वाशरे लिखितं लाला नंद किशोर ॥
२६ × १४·७ सें० मी०	२ (१–२)	८	२७	अपू०	प्राचीन सं०१९७०	शिव कवचम् ॥ फा० शु० १५ बुधवार सं० १९७० ॥
१४·८ × ११ सें० मी०	९ (१–९)	९	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री स्कंदपुराणे ब्रह्मोत्तर खंडे शिव कवच कथनं नाम द्वादशोध्यायः ॥
२०·५ × १० सें० मी०	२ (१–२)	८	३४	पू०	प्राचीन	शके सप्ताशे ७१ सौम्य नाम संवत्सरे उदगयने शशिऋतु फाल्गुने मासे शुक्ल पक्षे चतुर्दश्यां तिथौ इंदु वासरे तेदिवशि विष्णु सांनिध्य पुस्तकं समाप्तं ॥ × ॥
१३·१ × ८ सें० मी०	८ (१–८)	८	२३	अपू०	प्राचीन	
१७·४ × ९ सें० मी०	८ (१–८)	७	२५	पू०	प्राचीन	इति स्कंद पुराणे ब्रह्मोत्तर खंडे शिव-वर्म कथनं नाम द्वादशोध्यायः ॥ शिव-कवच समाप्तः ॥ × × ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५७७	६८६	*शिवतांडव तंत्र			दे० का०	दे०
५७८	५२०४	शिववर्म (शिवकवच)			दे० का०	दे०
५७९	९४६	शिवसप्ताक्षर मंत्रविधि			दे० का०	दे०
५८०	११९५	शिवाबलि प्रकार			दे० का०	दे०
५८१	७०१०	शुक्रामृत संजीवनी मंत्र कवच			मि० का०	दे०
५८२	७७६९	शुक्रामृत संजीवनीमंत्र कवच			दे० का०	दे०
५८३	७००८	शुक्रामृत संजीवनी मंत्र न्यास			मि० का०	दे०
५८४	७२१७	शुक्रामृत संजीवनी मंत्र न्यास			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२९×१२ सें० मी०	२४ (१–२४)	१२	४६	पू० (जीर्ण)	प्राचीन	इति श्री शिव तांडवे सर्व तंत्रोत्तमे दक्षिणा मूर्ति पार्वती संवादे नागेंद्र प्रयाणे षोडष कोष्ठ यंत्र लिखन प्रकार कथनं नाम त्रयोदशः पटल १३ समाप्तः शुभमस्तु ।
२५·७×१२·२ सें० मी०	२	८	२६	अपू०	प्राचीन	नमस्कृत्य महादेवं विश्वव्यापीनमीश्वरं ॥ वक्षे शिवमयं वर्म्मं सर्व रक्षाकरं नृणाम् ॥१॥ (प्रारंभ)
१५·३×९·३ सें० मी०	५ (१–५)	६	१२	पू०	प्राचीन	इति शिव सप्ताक्षर मंत्रस्य विधिस्समाप्ता ॥
१६·८×११ सें० मी०	१० (१–१०)	८	१७	पू०	प्राचीन सं० १९३८	इति कुल चुडामानाष्ये शिवावलि प्रकारः समाप्तः सं० १९३८ कार्त्तक वदी चौथ सुभे कौ समाप्त लिष्यतयं श्रीतिवारी माहादेव साहनगर वारे की अज्जितं भूरकष्टेन पुस्तकंलिखतंमया··· ···॥
२०·२×८·८ सें० मी०	४ (१–४)	६	२२	पू०	सं० १९६९	इति श्री रुद्रयामले महातंत्रे गुप्त सारोद्धार खंडे पार्वतीश्वर संवादे श्री शुक्राऽमृतसंजीविनी मंत्रकवचं समाप्तम् ॥ शुभ मस्तु मि० माघ २ शुक्रवार दिने लिखितं पुरशोत्तमरलिहास्वार्थं परार्थं च संवत् १९६९ के ॥
१९·९×७·७ सें० मी०	३ (१–३)	६	३४	पू०	सं० १९६४	इति श्री रुद्रयामले महातंत्रे गुप्तसारोद्धारखंडे पार्वतीश्वर संवादे श्री शुक्राऽमृत संजीविनी मंत्रकवचं समाप्तम् ॥ मिती······संवत् १९६४॥········
२०·१×९·८ सें० मी०	३ (१–३)	६	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री शुक्राऽमृत संजीवनी मंत्र न्यासध्यान संपूर्णम् शुभमस्तु मि०मा०३०बु० त दिने समाप्तं ॥
१९·९×७·७ सें० मी०	२ (१–२)	६	३०	पू०	सं० १९६४	इति श्री शुक्राऽमृतसंजीवनी मंत्र न्यासध्यानं संपूर्णम् ॥ शुभ मस्तु ॥ संवत् १९६४ मिति भाद्रपद × ×××× ×॥

(सं०पू० २–३९)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५८५	५७३८	शूलिनीकवच			दे० का०	दे०
५८६	१२६५	श्यामाकवच			दे० का०	दे०
५८७	५९९	श्यामापद्धति			दे० का०	दे०
५८८	३९८	श्यामा भगवती स्तोत्र			दे० का०	दे०
५८९	१५८८	श्यामास्तवराज स्तोत्र			दे० का०	दे०
५९०	२०११	षट्कर्मप्रयोग			दे० का०	दे०
५९१	२३८०	षडक्षरी महाविद्या मंत्र			दे० का०	दे०
५९२	७८३	षोडश नित्यातंत्र			दे० का०	दे०

पत्रों का पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६·५ × ९·६ सें० मी०	४ (१–४)	११	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री आकाश भैरव कल्पे प्रत्यक्ष सिद्धिप्रदे उमामहेश्वर संवादे शूलिनी कवचन्नामाष्टाविंशोध्यायः × × ×॥
२०·६ × १३·४ सें० मी०	६ (१–६)	७	१६	पू०	प्राचीन	इति भैरवतंत्रे भैरव भैरवी संवादे श्यामा कवचं संपूर्णम् ॥
१७ × १३·५ सें० मी०	१५ (१–१५)	१३	२५	पू०	प्राचीन सं० १८०९	इति श्री श्यामापद्धतिः समाप्तः श्री संवत् १८०९ मीति माघवद्य ४ वार-चंद्र लिखितं स्वपठनार्थे काशिस्थानीस समाप्त ग्रंथं ॥ शुभंभवत् ॥
२८ × ११ सें० मी०	१३	७	२९	पू०	प्राचीन	संपूर्ण ॥ शुभमस्तु ॥
२०·५ × १३·५ सें० मी०	४ (१–४)	७	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामले भैरव परशुराम संवादे श्यामा स्तवराजस्तोत्रं संपूर्णम् ॥
२१ × १५·२ सें० मी०	६	१३	२५	अपू०	प्राचीन	
२६·८ × ११·३ सें० मी०	३ (१–३)	१०	३८	पू०	प्राचीन	इति श्री नारद पंचरात्रेषडक्षरी महा-विद्या मंत्रः ॥
२८·६ × ११·६ सें० मी०	१४८	९	४२	अपू०	प्राचीन	– –

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५९३	८५०	* षोडश नित्यातंत्र (कादिमत)			दे० का०	दे०
५९४	१७६२	षोडश नित्यातंत्र (मनोरमा टीका)	सुभगानंद		दे० का०	दे०
५९५	२९३५/७	संकटहरण स्तोत्र			दे० का०	दे०
५९६	३१९६	* संक्षिप्त तंत्रसार	कृष्णानंद		दे० का०	दे०
५९७	२८०२/९	संजीवनी विद्या			दे० का०	दे०
५९८	३२९१/५	संध्याप्रयोग पटल			दे० का०	दे०
५९९	६२५३	संमोहनतंत्र (पंचम पटल)			दे० का०	दे०
६००	१२८५/८	सनकादिक बीजमंत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·७ × १०·६ सें० मी०	१९ (१–१९)	१०	४४	अपू०	प्राचीन	
२७·५ × ११ सें० मी०	२७ (२४–५०)	१३	७५	अपू० (जीर्ण)	प्राचीन	
२४·५ × १४·५ सें० मी०	२	२२	१६	पू०,	प्राचीन सं० १९१९	इति श्री रुद्रयामलेतंत्रे वालायाः शंकट हरणस्तोत्रं समाप्तं शुभं ... ... संवत् १९१९ प्रविष्टामार्गशिरगत दिन २९ शिव शंभु...... . ...
२३·३ × १७ सें० मी०	९ (१–९)	१६	४३	अपू०	प्राचीन	
२० × ११·७ सें० मी०	८½	१३	२६	पू०	प्राचीन	इति संजीवनी विद्या संमाप्तं सम्पूर्णमितिरस्तु ॥
१७ × १०·५ सें० मी०	६ (१–६)	१४	२८	पू०	प्राचीन	इति संध्याप्रयोग पटलः ॥
३३·१ × १६·१ सें० मी०	५ (१–५)	१२	४८	पू०	प्राचीन	इति श्री संमोहन तंत्रे पंचम पटलः ॥५॥
१७·५ × ९·५ सें० मी०	१ (१)	७	१८	पू०	प्राचीन	इति सनकादिक बिजमंत्र संपूर्न ॥१॥ ॥ ॥६॥ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा हैं	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६०१	२३३७	सप्तशती प्रयोगसार			दे० का०	दे०
६०२	१४६५	सप्तशती शापविमोचन			दे० का०	दे०
६०३	६०४३/२	सरस्वतीकवचम्			दे० का०	दे०
६०४	३२६८	सर्वमंत्रउत्कीलन मंत्र			दे० का०	दे०
६०५	३३४८/४६	सर्वमंत्रोत्कीलक स्तोत्र			दे० का०	दे०
६०६	२८०२/६	सर्वार्थसाधन कवच			दे० का०	दे०
६०७	५३३०	सिंहसिद्धांतीयविषय			दे० का०	दे०
६०८	११०३	सुभगार्चन (१-८ मयूख)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१८·५ × १०·७ सें० मी०	३० (१–३०)	८	२५	अपू०	प्राचीन	
१७ × १३ सें० मी०	११	१०	१६	अपू०	प्राचीन	
२३·२ × ८·४ सें० मी०	२ (१–२)	७	३८	पू०	प्राचीन	इति सरस्वती रहस्ये शिवाशि संवादे सरस्वती कवचम् ॥
११·५ × ७ सें० मी०	४ (१–४)	६	१२	पू०	श०१६३५	इति श्री शिवरात्रि रहस्य पं. चरात्रिय छंद्र संहितायां शिव शक्ति संवादे शैव वैष्णव शाक्त सौरगा उ ध ति सर्व मंत्रोत्किलन मंत्रः समाप्तिः शाके १६७० वहुधान्य नामा ६ आषाढ़ शुद्ध त्रयोदशि सोमवार ... ... ॥
१२·५ × ८·२ सें० मी०	६ (१–६)	६	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री शिवरहस्ये पंचरात्रे मत्स्येन्द्र संहितायां शिवपार्वती संवादे शैववैष्णव शाक्त सौरगाणपत्य मंत्र संस्कारः सर्व मंत्रोत्कीलक नाम स्तोत्रं समाप्तम् शुभमस्तु ॥
२० × ११·७ सें० मी०	२	१४	३१	पू०	प्राचीन	इति रुद्रयामले त्रिपुदायाः सर्वार्थ साधनं कवचं ॥ समाप्तं ॥
२०·५ × ९·८ सें० मी०	७ (१–७)	१०	३०	अपू०	प्राचीन	
२२·२ × १०·३ सें० मी०	५९ (१–५९)	७	२७	पू०	प्राचीन	इत्यागमिरामचंद्रोत्कीर्णेसुभगार्चारत्ने अष्टमो मयूषः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६०९	३१३६	सुभगार्चनचंद्रिका पद्धति	रामचंद्र		दे० का०	दे०
६१०	३४१२	सूक्ततंत्र			दे० का०	दे०
६११	६६७० / ३	सूर्यकवच			दे० का०	दे०
६१२	३३४८ / ४६	सूर्यकवच			दे० का०	दे०
६१३	४५८३	सूर्यकवच			दे० का०	दे०
६१४	६३५६	सूर्यकवच			दे० का०	दे०
६१५	२२२४	सूर्यकवच			दे० का०	दे०
६१६	२२५८	सूर्यनामसहस्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२.६ × ११.४ सें० मी०	३३ (१–३३)	६	४२	पू०	प्राचीन सं० १८१३	इत्यागमी रामचंद्रोत्कीर्णे सुभगार्चारत्नेऽष्टमो मयूख: ॥ शुभमस्तु ॥··· ··· संवत् १८१३ श्रावणे चासितेपक्षे नवम्यांभौमवासरे ॥··· ··· ···
१७ × १०.४ सें० मी०	६ (१–६)	७	२४	पू०	सं० १९४४	इतिसूक्त तंत्र समाप्तम् लि० काकाराम गौड वासी अलालपुदा संवत् १९४४ श्रीरस्तु।
१५.१ × ११ सें० मी०	४ (१–४)	७	१४	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मयामले श्री सूर्यं कवचं समाप्तम् ॥
१२.५ × ८.२ सें० मी०	४ (१–४)	६	१८	पू०	प्राचीन सं० १८८१	इति श्री रुद्रयामले त्रैलोक्य मंगलालयं सूर्यस्य कवचं समप्तं १८८१ के कुर सुदि १ क: ॥
११.५ × ६ सें० मी०	४ (१-२,५-६)	४	१२	अपू०	प्राचीन	···श्री सूर्यं उ० ॥ साम्ब साम्ब महाबाहो श्रृणु मे कवचं शुभम् ॥ (पृ० १ प्रारंभ)
१५.३ × ८.४ सें० मी०	२ (१–२)	८	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री भवष्योत्तरपुराणे कृष्णोर्युणसम्वादे सूर्यं कवचसंपूर्णं क्वारकृष्णे १२ चंद्रे शं १९११।
२२.७ × १०.५ सें० मी०	२	८	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे श्रीकृष्णार्जुन संवादे सूर्यकवच स्तोत्र समाप्तम् शुभ मस्तु ॥
२०.४ × १०.७ सें० मी० (सं०सू०२-४०)	३७ (२–३८)	५	१७	अपू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामले तंत्रे देवी रहस्ये श्री सूर्यनाम सहस्राख्यं नाम चतुस्त्रिंश: पटल: संपूर्णम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६१७	७४४२	स्वरोदय तंत्र			दे० का०	दे०
६१८	७४७५	हनुमत् अघोरस्तोत्र			दे० का०	दे०
६१९	७९०७	हनुमत् एकमुखीकवच			दे० का०	दे०
६२०	१९१	हनुमत्कल्प:			दे० का०	दे०
६२१	१३५३	हनुमत् द्वादशाक्षर मंत्र (हिंदी टीका सहित)			दे० का०	दे०
६२२	३३४८/४६	सहनुमत् सहस्रनाम			दे० का०	दे०
६२३	३३४८/४६	हनुमत् सहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
६२४	३५९१/५	हनुमदघोरास्त्रनिरूपण			दे० का	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३५·३ × १५·१ सें० मी०	३३ (१–३३)	७	२७	पू०	प्राचीन	इति सदाशिव पार्वती संवादे स्वरोदय प्रकरण संपूर्ण सुभमस्तु राम ।।
१५·६ × ११·२ सें० मी०	१८	११	१०	अपू०	प्राचीन	
१३·६ × ६·२ सें० मी०	८ (१–८)	७	१३	पू०	प्राचीन	एकमुखिकवचसमाप्तं ।।
१५·४ × ११·३ सें० मी०	११ (१–११)	११	१७	अपू०	प्राचीन	
२३·५ × ११ सें० मी०	५	७	२४	अपू०	प्राचीन	
१२·५ × ८·२ सें० मी०	२४ (१–२४)	६	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामले तंत्रे सिद्धेस्वरस्यये सिव प्रोक्तं हकारादि हनुमत सहश्रनाम संपूर्णम् शुभमस्तु ।।
१२·५ × ८·२ सें० मी०	३७ (१–३७)	६	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामले गौरीश्वर संवादे श्रीहनुमत् सहस्रनाम स्तोत्र संपूर्णम् शुभमस्तु श्रीराम ।।
१७ × १०·५ सें० मी०	३ (३–५)	८	२५	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६२५	७४१४	हनुमन्मंत्रगह्वर (कवचादि)			दे० का०	दे०
६२६	७५२४	हनुमानदुर्गा			दे० का०	दे०
६२७	३११३/२	हनुमानदुर्गा			दे० का०	दे०
६२८	७१५२	हयग्रीवकवच			दे० का०	दे०
दर्शन						
१	५०६०	अखंडार्थ (टीका) (अद्वैतसिद्धि व्याख्या)			दे० का०	दे०
२	४७२३	अग्निहोत्र मीमांसा			दे० का०	दे०
३	४९८३	अज्ञानबोधनी	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
४	२४४६	अज्ञानबोधिनी	शंकराचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·६ × ११·२ सें० मी०	१२ (१२–२३)	११	२१	अपू०	प्राचीन सं०१८७१	इति हनुमन् गव्हर समाप्तम् संवत् १८७१ के साल ... ...
१७·३ × ८·८ सें० मी०	९ (१-३,६-११)	६	२१	अपू०	प्राचीन सं०१९४६	इति श्री अथर्वण बेदे मंत्रोद्योक्तं श्री हनुमान दुर्गा सम्पूर्णम् ।। स० ।। १९४६ ।। कार्तिक शुक्ल १ शुक्र ली: गौरी सर्म्मणे ।।
११·१ × १२·५ सें० मी०	११ (१–११)	९	१४	पू०	प्राचीन सं०१९४८	इति श्री हनुमानं दुर्गा संपूर्णम् ।। संवत् १९४८ श्रावण मासे कृष्णपक्षे शुभ तिथौ १० गुरुवासरे ।।
१५·३ × ७·९ सें० मी०	४ (१–४)	७	२१	पू०	प्राचीन सं०१९११	इति श्री हयग्रीव कवचं समाप्तं संवत् १९११ ।।
२७·६ × ११·६ सें० मी०	१६ (१–१६)	११	५६	अपू०	प्राचीन	
३०·६ × ११·५ सें० मी०	४ (१–४)	१३	५१	अपू०	प्राचीन	अग्निहोत्रमितिसमाप्त: ।।
२९·१ × १३·८ सें० मी०	१३ (१-७,९-१४)	१५	३६	अपू०	प्राचीन सं०१८६८	इति श्री संक्षिप्त वेदांत शास्त्र प्रक्रियां श्री श्री मत्परमहंस्य परिव्राजका चार्य्य श्री मत्संकरकृत वहिर्मुखांत: प्रणवम ज्ञान बोधनी अध्यात्मविद्योपदेश विधि समांप्त: शुभमस्तु संवत् १८६८ माघ कृष्ण × × ।।
३०·४ × १३·७ सें० मी०	१६ (१–१६)	१०	५१	पू०	प्राचीन	इति संक्षेप्त वेदांत शास्त्र प्राक्रिया श्री मत्परमहस परिव्राजकाचार्य श्री शंकराचार्य कृत वहिर्मुखानामंत: प्रणवमज्ञा बोधनी आध्यात्म विद्योपदेश विधि समाप्तं श्लोका ३६० ... ... ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५	१४११	अज्ञानबोधिनी			दे० का०	दे०
६	१४१२	अज्ञानबोधिनी			दे० का०	दे०
७	३३३५	अणुभाष्य	वल्लभाचार्य	गिरधर	दे० का०	दे०
८	१६८१	अणुभाष्य	वल्लभाचार्य		दे० का०	दे०
९	७२२५	अद्वैतमकरंद	लक्ष्मीधर		दे० का०	दे०
१०	६९२२	अद्वैतमकरंद (सटीक)	लक्ष्मीधर		दे० का०	दे०
११	५९४८	अद्वैतसिद्धि	मधुसूदन सरस्वती		दे० का०	दे०
१२	५२७	अद्वैतसिद्धि	मधुसूदन सरस्वती		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४·८ × १०·५ सें० मी०	७ (१–७)	११	५६	अपू०	प्राचीन	
२४·७ × १०·७ सें० मी०	१३ (१–१३)	१४	४९	अपू०	प्राचीन	
३४ × १६·५ सें० मी०	५६० (१–५ अध्याय)	१२	४८	अपू०	प्राचीन	
३२·६ × १६·६ सें० मी०	५७ (१–५७)	१२	४८	अपू०	प्राचीन	इति महानंदतीर्थ भगवत्पादाचार्य विरचिते श्री मद्ब्रह्म सूत्रानुव्याख्याने चतुर्थो ध्यायस्यपादः ॥
२६·४ × १४·३ सें० मी०	२० (१–२०)	१७	२७	पू०	प्राचीन	लक्ष्मीधर कवेः सूक्ति शरदंभोज संभृतः अद्वैतमकरंदोयं विद्वद्भृंगैर्निपीयतां ॥२८॥ लक्ष्मीधर इति ग्रंथकर्त्तुर्नाम × × × श्री अद्वैतमकरंद समाप्ताः ॥ श्री रामचंद्रार्पण मस्तु ।
२३·२ × ९·६ सें० मी०	३० (१–३०)	९	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री लक्ष्मीधर विरचितं अद्वैत मकरंदाख्य प्रकरणं समाप्तं ······॥
३२·३ × १२·७ सें० मी०	१९ (१–१९)	११	४६	अपू०	प्राचीन	
३५ × १३ सें० मी०	८८ (१-१८,१८, १९-८७)	११	४४	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३	६१४	* अद्वैतामृत	जगन्नाथ सरस्वती		दे० का०	दे०
१४	४६८५/२	अद्वैतामृत	परमहंस जगन्नाथ सरस्वती		दे० का०	दे०
१५	५६७	अध्यात्मचिंता			दे० का०	दे०
१६	५२३८	अध्यात्मप्रदीपिका (सटीक)	अष्टावक्र	विश्वेश्वर	दे० का०	दे०
१७	४८७१	अनुत्तमा			दे० का०	दे०
१८	२१६२	अनुत्तमा (संस्कृत टीका)	प्रियादासाचार्य	प्रियादासाचार्य	दे० का०	दे०
१९	४४३८	✓अनुमानचिंतामणि (दीधितिशिरोमणिटीका)		रघुनाथ	मि० का०	दे०
२०	५६९५	✓अनुमानदीपिका			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२ × ९·५ सें० मी०	२२ (१–२२)	१३	४५	पू०	प्राचीन सं०१६३८	इति श्री परमहंसपरिव्राजकाचार्य हरिहरसरस्वती प्रिय शिष्यपरमहंस परिव्राजकाचार्य जगंनाथसरस्वती विरचिते अद्वैतांमृतेपंचमःकवलः ॥ समाप्तोयंग्रंथः ।। शके ॥ १५०३ वृषसंवत्सरे फाल्गुणमासे त्रयोदश्यांभौमवासरे···॥
१९·५ × १०·६ सें० मी०	६७ (१–६७)	७	२६	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्यपरमहंस परिव्राजकाचार्यं हरिहरस्वती प्रियशिष्य परमहंस परिव्राजकाचार्य जगन्नाथ सरस्वती विरते अद्वैतामृत पंचमकवलः ॥
२५·४ × १२·७ सें० मी०	७ (१–७)	११	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री अध्यात्मचिंता संपूर्णम् ।
२७·३ × १३·३ सें० मी०	११ (१–११)	१३	३४	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमदष्टावक्रटीकायां विश्वेश्वर विरचितायां प्रथमंप्रकरणं ॥ (पृ०–६) × × ×
२१·४ × ८·२ सें० मी०	७ (१–७)	६	२७	पू०	प्राचीन	त्वङमनोयोगस्यस्यज्ञानत्वावछिन्नं प्रतिजन्य ज्ञानत्वावछिन्नं प्रतिवाहेतुत्वेमानाभावः (प्रारंभ) अतिरिक्तकारणत्वेमानाभावदिति संक्षेपः ॥ (अंत)
३४ × १६·५ सें० मी०	६ (१–१४, १–४६)	१४	५८	अपू०	प्राचीन	इति श्री सुसिद्धान्तोत्तमे प्रियादासाचार्ये विरचिते अनुत्तमायां टीकायां प्रियादासा चार्य्य कृतायां प्रथमोविश्रामः ॥
२१·२ × ८·५ सें० मी०	८४	८	४६	अपू०	प्राचीन	··· ··· ···दीधितिमधि चिन्तामणि तनुतेतार्किक शिरोमणिः श्रीमान ॥··· ··· ···रघुनाथ कवेरपेतदोषा कृतिरेषाविदुषां तनोतुमोदम् ॥··· (प्रारंभ) × × ×
२८·४ × १० सें० मी० (सं०सू० २-४१)	२१ (१–२१)	९	४३	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२१	६३०१	अनुमानप्रकाश	कविदत्त		दे० का०	दे०
२२	१७७	अनुमानप्रकाश	रुचिदत्त		दे० का०	दे०
२३	१७८	अनुमानप्रकाश	रुचिदत्त		दे० का०	दे०
२४	६१७८	अनुमानमणि दीधिति	शिरोमणि-भट्टाचार्य		दे० का०	दे०
२५	४०६०	अनुमानमणी			दे० का०	दे०
२६	७८७४	अनुमानमीमांसा			दे० का०	दे०
२७	७८०२	अनुमितिपरामर्श (कार्यकारणभावविचार)			दे० का०	दे०
२८	७३६७	अनुमिति परामर्शवाद	रघुदेव भट्टाचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·१ × १०·५ सें० मी०	२०० (६४-१६५, १६५-१७६, १७५-१७६, १७७-२६०)	११	३५	अपू०	प्राचीन	इति श्री महामहोध्याय श्री कविदत्त विरचितोनुमानप्रकाशः संपूर्णः ॥ ···
२४·७ × ११·१ सें० मी०	६१ (१-४६-५२-६२)	१२	३१	अपू०	प्राचीन	
२७·४ × १० सें० मी०	११४ (१–११४)	१०	५१	पू०	प्राचीन	इति श्री महोपाध्याय श्री रुचिदत्त विरचितो अनुमान प्रकाश समाप्त ॥ वागीश्वर्यैनमः ॥
२७·८ × ११·५ सें० मी०	७५ (२६–१००)	१२	५३	अपू०	प्राचीन	इति श्री महामहोपाध्याय श्री भट्टाचार्य शिरोमणि कृताऽनुमानमणिदीधितिः समाप्तः ॥ शुभं ॥
२५·७ × ११·२ सें० मी०	३४ (१–३४)	१०	४३	अपू०	प्राचीन	
२६· × ९·६ सें० मी०	८५	११	४३	अपू०	प्राचीन	
२२ × ९ सें० मी०	२३ (१,९-३०)	१२	३३	अपू०	प्राचीन	इत्यनुमितिपरामर्शयोः कार्यकरणभावविचारः ॥ शुभमस्तु ॥
२५·६ × ११·१ सें० मी०	१९ (१–१९)	१०	३४	पू०	प्राचीन	इति रघुदेवभट्टाचार्य न्यायालंकार कृतः अनुमितिपरामर्षवादः संपूर्णं ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२९	२९५	अनुमितिपरामर्शविचार	रघुदेवभट्ट		दे० का०	दे०
३०	३२३०	अनुमितिपरामर्शविचार	रघुदेवभट्टाचार्य		दे० का०	दे०
३१	७२९३	अनुमितिव्याप्ति			दे० का०	दे०
३२	६४७३	अनुमितिशिक्षा (अ० शि०)			दे० का०	दे०
३३	४७५७	अपरोक्षानुभूति	शंकराचार्य		दे०का०	दे०
३४	५०४२	अपरोक्षानुभूति			दे० का०	दे०
३५	६८६८	अपरोक्षानुभूति-सटीक		वामन	दे० का०	दे०
३६	५८३१	अमृतविद्या	माधवाश्रम		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६·३ × १०.९ सें० मी०	१४ (१–१४)	११	३९	पू०	प्राचीन सं० १८०८	इति श्री रघुदेव भट्टाचार्य कृतोऽनुमिति परामर्श विचारः संपूर्णः ... ...संवत् १८०८ पौष कृष्ण प्रतिपदि शुक्रवासरे लिखित मिदं पुस्तकं बोधू रालशर्मणा ॥ बोधूरामस्येदं पुस्तकम् ॥
२६ × १० सें० मी०	१२ (१–१२)	१०	५५	पू०	प्राचीन	इति श्री भट्टाचार्य रघुदेव कृतोनुमिति परामर्श विचारः संपूर्णः ॥
२६.४ × ७·४ सें० मी०	१० (१–१०)	८	५०	पू०	प्राचीन	
२४.७ × ८·६ सें० मी०	१८	११	५१	अपू०	प्राचीन	इति अपरोक्षानुभूतिः ॥
२३·६ × १२ सें० मी०	११ (१-३,१-८)	११	२६	पू० (कृमिकृंतित)	प्राचीन	
१९·६ × ८.८ स० मी०	८ (१–८)	१०	२६	अपू० (खंडित)	प्राचीन	
१७·५ × १०·९ सें० मी०	२९ (१–२९)	८	२५	अपू०	प्राचीन सं० १७०५	इति वामन कृत अपरोक्षानुभूतिसटिक संपूर्णमस्तू ॥ श्री गुरुअत्मारामार्पण-मस्तू ॥ शके १७०५ ॥ शोभकृतनाम-संबत्सरे ॥ मार्गिश्वर कृष्ण ॥ १० ॥ भृगुवारे लिखितं समाप्त ॥
२३·५ × ९ सें० मी०	१० (१–२५४)	१०	३२	पू०	प्राचीन सं० १७२१	इति श्री परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री माधवा श्रम विरचिता अमृत विद्या समाप्त ॥......स्वति संवत् १७२१ वर्षे... ... ...

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३७	५८५८	अर्थपंचक	शठकोपदास		दे० का०	दे०
३८	२५६५	अर्थपंचक			दे० का०	दे०
३९	७००	अवच्छेदकत्व निरुक्ति			दे० का०	दे०
४०	१९७३	अवच्छेदकत्व निरुक्ति			दे० का०	दे०
४१	८४६	अवच्छेदक लक्षण			दे० का०	दे०
४२	२५०६	अवच्छेकानुमितिविचार			दे० का०	दे०
४३	२०२१	अवधूतानुभूति	अष्टावक्र		दे० का०	दे०
४४	६९४	अवधूतानुभूति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१४·८×१०·३ सें० मी०	३७ (१–३७)	७	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री मच्छटकोप दासस्य कृति षुश्री मदर्थ पञ्चक विवेके विरोधि पञ्चक कथन पूर्वक प्रयन्तस्य कालक्षेप-क्रमो नाम पञ्चमो विवेकः ॥
२३·८×१० सें० मी०	१२ (१-१०,१५-१६)	८	३३	अपू०	प्राचीन	
१६·८×७·६ सें० मी०	१६	७	२८	पू०	प्राचीन	... ... साध्यानुसरणमिति ध्येयम् ॥
२७·१×११·३ सें० मी०	३१ (१-३०,३०)	८	३६	अपू०	प्राचीन	
२६·६×११·३ सें० मी०	१७ (१-११,१३-१८)	१०	५६	अपू०	प्राचीन	इत्यवच्छेदवलक्षणं ॥
२८·६×१० सें० मी०	१३ (३–१५)	६	५६	अपू०	प्राचीन सं०१७२३	अवछेदकानुमिति विचारः समाप्तः॥ संवत् १७२३ समये श्रावन सुदि पंचम्यां पुस्तकं समाप्तं ॥ शुभमस्तु ॥
२२·७×१०·६ सें० मी०	५५ (१-४,७-५७)	१२	४७	अपू०	प्राचीन सं०१८५२	इति अष्टावक्रविरचितायामवधूतानुभूति ग्रंथः संपूर्णम् ॥ संवत् १८५२......॥
२७×११·१ सें० मी०	२१ (१–२१)	७	३४	अपू०	प्राचीन	इति अवधूतानुभूति संपूर्णं सुभः इति शिष्य प्रोक्तं

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४५	५६४२	अष्टांग हठयोग	शर्ङ्गधर		दे० का०	दे०
४६	१५६८	अष्टावक्रटीका		विश्वेश्वर	दे० का०	दे०
४७	५२६२	अष्टावक्रटीका		विश्वेश्वर	दे० का०	दे०
४८	२६१२	अष्टावक्र सूक्त दीपिका		विश्वेश्वर	दे० का०	दे०
४९	३६७०	अष्टावक्रानुभूति			दे० का०	दे०
५०	३६१६	अष्टावक्रानुभूति (सटीक)		विश्वेश्वर	दे० का०	दे०
५१	६५	आख्यातवाद (टीका)	जयराम		दे० का०	दे०
५२	१०१०	आख्यातवाद	शिरोमणि भट्टाचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१४.८ × १० सें० मी०	१६ (४–११, १६–२२, अंतिम पत्र संख्यारहित)	१३	६	अपू०	प्राचीन	इति तुर्यातीतं एते पुराणेभ्यो योगशास्त्रेभ्यश्च इति शार्ङ्गधरस्य शांतरसे मार्क्कंडेयादिसाधिते द्वितीयोऽष्टांग हठयोग······ (पृ०—६) ।
२२ × १२ सें० मी०	७	७	२४	अपू०	प्राचीन	
२४.८ × १२.७ सें० मी०	७४ (१–७३ पत्र ४१–दो)	११	२७	अपू०	प्राचीन	इति श्री विश्वेश्वर विरचितायामष्टावक्र टीकायां पंचदशं प्रकर्णं ।। (पृ० ४०)
२३.३ × ६.७ सें० मी०	७१ (१–७१)	१२	३०	पू०	प्राचीन	इति श्रीमद्विश्वेश्वर विरचितायामष्टावक्र टीकायां संख्याक्रमव्याख्यान समाप्तेयं टीका ।। श्रीकृष्णोविजयति ।।
२२.१ × ११ सें० मी०	१६ (१–१६)	६	३३	पू०	प्राचीन	इत्यष्टावक्रः समाप्तः ।।
२०.४ × १२.४ सें० मी०	४३ (१–४३)	१५	३१	पू०	प्राचीन	इतिश्रीमद्विश्वेश्वर विरचितायां अष्टावक्र टीकायां सख्याक्रमाव्याख्यानं समाप्तोयंमूल टीका ।।······
२१.५ × ८.७ सें० मी०	१६०	१५	३६	अपू०	प्राचीन	
३१.८ × १०.५ सें० मी०	६ (१–६)	६	४६	पू०	प्राचीन	इति श्री शिरोमणि भट्टाचार्यकृतो आख्यातवादार्थः समाप्तः ।।
(सं०सू०-२-४२)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५३	५७८६	आख्यातवाद टिप्पणी	मथुरानाथ तर्क-बागीश		दे० का०	दे०
५४	६२६६	आख्यातवाद टिप्पणी			दे० का०	दे०
५५	७१८	आख्याततवाद दीपिका	रघुदेव भट्टाचार्य		दे० का०	दे०
५६	५५८४	आख्यातवाद व्याख्या	रघुदेव भट्टाचार्य		दे० का०	दे०
५७	४२७१	आख्यात विवेक	भट्टाचार्य-शिरोमणि		दे० का०	दे०
५८	२६११	*आत्मज्ञान (१–४ खंड) (संस्कृत टीका)		आनंदज्ञान (ज्ञानानंद)	दे० का०	दे०
५९	१४३५/५	आत्मज्ञानोपदेशविधिः	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
६०	१००८	आत्मबोध	शंकराचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·२ × ११·५ सें० मी०	१४ (१८–३१)	१५	४८	अपू०	प्राचीन सं० १७४६	इति महामहोपाध्याय श्री मथुरा नाथ तर्कवागीश भट्टाचार्य कृता आख्यात वादटिप्पनी समाप्ता ॥ संवत् १७४६ भादौ सुदी तेरसी ॥
२७·१ × ११·२ सें० मी०	७	११	५४	अपू०	प्राचीन	
३२ × ११ सें० मी०	४३ (१–४३)	८	५२	पू०	प्राचीन	इति रघुदेवभट्टाचार्य न्यायालंकार विराचिताख्यातवाद दीपिकासमाप्ता ॥ ज्ञात्वाविज्ञानावेषयं परांश्च स्वार्थमैवच आख्यातवाद सटीका लिखितेयंममाधुना ॥
२७·४ × ७·६ सें० मी०	४८ (१–४८)	७	४२	अपू०	प्राचीन	
२८ × ७·८ सें० मी०	७ (१–७)	७	४७	पू०	प्राचीन	इति श्री भट्टाचार्य शिरोमणि विरचिताख्यातविवेकस्समाप्तः ॥
२३·१ × ८·६ सें० मी०	२९ (२–३०)	८	३८	अपू०	प्राचीन सं० १५६४	इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री शुद्धानंद पूज्यपाद शिष्यभगवदानंदज्ञानविरचितात्मज्ञान टीका समाप्ताः ॥ श्री संवत् १५६४ वर्षे पौष शुदि दशवि दिने लिखितमिदं ॥
२२·५ × १० सें० मी०	६	१०	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीमद्गोविंदभगवत्पूज्यपाद शिष्यस्य शंकरे कृतौ आत्मज्ञानोपदेशविधिः समाप्ताः
२५·२ × १३·८ सें मी०	१० (२–११)	१२	३७	अपू०	प्राचीन	इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्यगोविंद भगवत्पूज्यपाद श्री शंकराचार्य कृतात्मबोध नाम प्रकरणं समाप्तं ॥ शुभंभवतु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लि.
१	२	३	४	५	६	७
६१	८८३	आत्मबोध	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
६२	५६१६	आत्मबोध	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
६३	१०४७	आत्मबोध	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
६४	४१	आत्मबोध	शंकराचार्य	ब्रजमोहनदास	दे० का०	दे०
६५	४६६७	आत्मबोधप्रकरण सटीक			मि० का०	दे०
६६	७०७०	आत्मबोध (सटीक)	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
६७	४३६३	आत्मबोध (सटीक)	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
६८	३७१३	आत्मबोध (सटीक)	शंकराचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·८ × १३·४ सें० मी०	१४ (१–१४)	१४	२७	पू०	प्राचीन	श्री मत्शंकराचार्य विरचितात्मबोध प्रकरणं समाप्तं ।। संपूर्णं ।।
२७·५ × ११·५ सें० मी०	६ (१–६)	९	४१	पू०	प्राचीन	इति श्रीपरम हंसपरिव्राजकाचार्य गोविंदभगवत्पूज्यपाद शिष्यश्रीमच्छ-ङ्कराचार्य कृत आत्मबोधः समाप्तः।
३१·८ × १६ सें० मी	१२ (१–१२)	११	४१	पू०	प्राचीन सं०१८९०	इति श्री परमहंस परिव्राजकाचार्य गोविंद भगवत्पूज्यपाद श्री शंकराचार्य कृतात्मबोधंनाम प्रकरणं समाप्तम् शुभं भूयात् ।। १ ।। संवत् १८९० तत्रवर्षे मासोत्तमे मासेकार्त्तिकमासे कृष्णपक्षे चतुर्थ्यां शुक्रवासरे······शुभमस्तु ।।
३० × १४·५ सें० मी०	१४ (१–१४)	९	३४	पू०	प्राचीन सं०१९०९	इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजिकाचार्य गोविंद भगवत्पूज्यपाद श्रीमच्छंकरा-चार्य विरचितात्मबोध प्रकरणं समाप्तं ।। संवत् १९०९ कार्त्तिक शु० १५ भृगुवासरे लिखितं ब्रजमोहन दासस्य ।'
२३·७ × १२·३ सें० मी०	२९ (१-१०, १२-३०)	७	३०	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य आत्मबोधप्रकरणं टीका समाप्तं ।।
२३·७ × १०·६ सें० मी०	१७ (१-८,१०-१८)	९	३१	अपू०	प्राचीन सं०१८५३	इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्यं गोविंद भगवत्पूज्यपाद श्रीमच्छंकरा-चार्य्यं विरचितात्मबोधाख्यंप्रकरणं समाप्तिमयमत् ।।······ इति टिप्पनं समाप्तं ।। माघमासासिते पक्षे पंचम्यां भौमवासरे ।। निहाल मिश्रो व्यलिष्त् त्रिपंचाष्ठैक वत्सरे ।।
२६·३ × ११·५ सें० मी०	१७ (१–१७)	८	३५	पू०	प्राचीन सं०१८९०	इति श्री मत्परमहंस परिव्राजमाचार्य गोविंद भगवत्पूज्यपादाशिष्य श्रीमच्छं-कराचार्य विरचितंआत्मबोध प्रकरणं सटीक संपूर्णम् चैत्र मासे कृष्णपक्षे संवत १८९० श्रीरामचं ।।
१६·५ × ९ सें० मी०	१७ (१–१७)	११	३३	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६९	३६६०	आत्मबोध (सटीक)	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
७०	१४७०	आत्मबोध (सटीक)	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
७१	२९९०	आत्मानात्मविवेक			दे० का०	दे०
७२	४१६७	आत्मानात्मविवेक	स्वयंप्रकाशयोगींद्र		दे० का०	दे०
७३	१७२४/३	आर्या	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
७४	५१८४	*आलोकदर्पण—प्रत्यक्ष-खंड (सटीक)	महेश ठक्कुर		दे० का०	दे०
७५	७४७६	आश्वलायन श्रौतसूत्र व्याख्या	मथुरानाथ तर्क-वागीश		दे० का०	दे०
७६	७८२३	ईश्वरनित्यसुख व्यवस्थापन			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०.४ × ९.४ सें० मी०	१२ (१–१२)	१३	३९	पू०	प्राचीन	इत्यात्मबोध व्याख्या समाप्ता ॥ श्री सच्चिदानंदगणेश्वरार्पणमस्तु ॥
२० × ११.५ सें० मी०	१८	११	२८	पू०	प्राचीन	इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य गोविंद भगवत्पूज्यपाद शिष्य श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री शंकराचार्य विरचितात्मबोध प्रकरणं सटीकं संपूर्णं ॥
२५.२ × १५.५ सें० मी०	४ (१–४)	२२	१७	पू०	प्राचीन	इत्यात्मानात्मविवेकः समाप्तः ॥
२७ × १४ सें० मी०	६ (१–६)	१०	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री मत्स्वयं प्रकाश योगींद्र कृत आत्मानात्म विवेकः समाप्तः संवत् १८... ॐ नमोनारायणाय ॥
१६.५ × ११.३ सें० मी०	६	८	१६	पू०	प्राचीन	इति शंकराचार्य विरचिते आर्या समात्या ... ... ॥
२८.४ × १२.९ सें० मी०	१८१ (१–१८१)	१३	४९	पू०	प्राचीन सं० १६४६	इति श्री महेश ठक्कुर विरचिते आलोक दर्प्पणे प्रत्यक्ष खण्डः समाप्तः ॥ शुभ मस्तु ॥ संवत् १६४६ समये कार्तिक वदि १ मंगल वासरे लिषितं वाराणस्यां जगदीस ब्राह्मणेन ॥
२७.४ × ११.४ सें० मी०	२९ (१–२९)	१०	५०	अपू०	प्राचीन	इति महामहापाध्याय श्री मथुरानाथ तर्कवागीश भट्टाचार्य वि ... ...
२६.५ × १०.३ सें० मी०	४ (१–४)	११	४२	पू०	प्राचीन	इतीश्वरेनित्यसुखव्यवस्थापनं ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७७	१२९८	उपक्रमपराक्रम	अप्पय दीक्षि		दे० का०	दे०
७८	३८४५	उपदेशपंचक (सटीक)	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
७९	६९६४	उपदेशसहस्री (सटीक)	शंकराचार्य	रामतीर्थ	दे० का०	दे०
८०	१७७०	कणादरहस्य (सिद्धांतमुक्ताहार टीका)	पद्मनाभ मिश्र		दे० का०	दे०
८१	१७७१	कणादरहस्य व्याख्या	प्रशस्तदेवाचार्य		दे० का०	दे०
८२	४७२	कर्मतत्त्व			दे० का०	दे०
८३	३००५	कारकवाद			दे० का०	दे०
८४	१६९८	कारकवाद			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३१·३ × १६·५ सें० मी०	४१ (१–४१)	१०	५३	पू०	प्राचीन	इति श्रीमद्भरद्वाज कुलजलधि कौस्तुभ श्रीमदद्वैतविद्याचार्य श्री रंगराजाध्वरिवरसूनो रप्पदीक्षितस्य कृतिरूपक्रमः-पराक्रमः संपूर्णः ॥ शुभमस्तु ॥
३१·२ × १२ सें० मी०	४ (१,३–५)	१०	४२	अपू०	प्राचीन सं०१९१८	इति श्रीमच्छंकराचार्य्य विरचितस्य उपदेशपंचकस्य टीका समाप्तिमगात् लिखितं पचौली महताब सिंह संवत् १९१८ श्राव ३ ॥
२६ × ११·७ सें० मी०	४० (पद्य १५) (गद्य २५)	११	३५	पू०	प्राचीन	इति श्रीमच्छंकर भगवत्पाद कृतौ गद्य बंधः समाप्तः ॥ ७ ॥ ... ... इति श्री रामतीर्थ विरचिता गद्यबंध व्याख्या समाप्ता ॥ ... ...
२९·४ × १४·५ सें० मी०	४४ (१–४४)	११	३९	पू०	प्राचीन	इति श्रीमन्मिश्र श्रीजगद्गुरुवलभद्रात्मजविश्वना थानुज विजय श्री गर्भ संभव सकलशास्त्रारविंदप्रद्योतनभट्टाचार्य्य मिश्र श्री पद्मनाभ कृतौ स्वकृत राद्धांत मुक्ताहाख्याख्याने कणादरहस्यं समाप्तम् ॥
२२ × ९·५ सें० मी०	४२ (१–४२)	९	२७	अपू०	प्राचीन	
२८·३ × १२·५ सें० मी०	२४	१०	३६	पू०	प्राचीन	इति श्री वेदांतस्य मतके कर्मतत्व निरूपणः षष्टः किरणः ६ श्री रामायनमः श्री जानकीनमः अविघ्नममास्तु पौष मासे पूर्णिमातिथौ मंगलवासरे तथ पुरमध्ये लिखितंलक्ष्मण दासेन स्व-स्यार्थं ॥ १ ॥
२३ × ७·८ सें० मी०	८	९	३९	अपू०	प्राचीन	
२५ × १० सें० मी०	७	१५	५०	पू०	प्राचीन	इति कारकवादः ।

(सं०सू०२–४३)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
८५	७७६५	कारकवादार्थ	जयराम		दे० का०	दे०
८६	७१५	कारिकावली	विश्वनाथ पंचानन		दे० का०	दे०
८७	६७२५	कारिकावली (भाषा परिच्छेद)	विश्वनाथ पंचानन		दे० का०	दे०
८८	१०१६	किरणावली	उदयनाचार्य		मि० का०	दे०
८९	१४८	किरणावली	उदयनाचार्य	विश्वनाथ पंचानन	दे० का०	दे०
९०	८७	किरणावली	उदयनाचार्य		दे० का०	दे०
९१	११९	किरणावली प्रकाश	उदयनाचार्य	वर्धमान	दे० का०	दे०
९२	२७१४	किरणावली प्रकाश		वर्धमान	दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१·२ × १०·७ सें० मी०	१८ (१–१८)	१२	३८	पू०	प्राचीन शाके १७७७	इति श्री मन्महोपाध्यायश्री जयराम विरचितः कारकवादार्थः समाप्तः × × शाके १७७७ ॥
२७ × ११ सें० मी०	८ (१–८)	१०	४३	अपू०	प्राचीन	
२२·८ × ९·६ सें० मी०	११ (१–११)	७	३०	पू०	प्राचीन सं० १८७५	इति श्री महामहोपाध्याय श्री सिद्धान्त पंचानन भट्टाचार्य्यं विरचितो भाषा परिच्छेदस्सम्पूर्णः ।… …शंभूयात् शराद्रि नाग भूसंख्ये सम्वद्विक्रमभूपतेः तैषे मास्यसिते पक्षे दशम्याम्भौमवासरे ॥ १ ॥ गुरुपादाब्ज युगलन्नामन्नामं सु भक्तितः स्वपाठार्थंङ्गयादत्तैर्लिखिता करिकावली ।… …
२१·५ × १०·२ सें० मी०	६८ (१–६८)	१०	४४	पू०	प्राचीन सं० १७२८	इति महामहोपाध्याय श्री उदयनाचार्यं विरचितायां किरणावल्यां द्रव्यपदार्थः समाप्तः ॥ शुभमस्तु ॥ संवत् १७२८ समये पौष कृष्णपक्षस्य चतुर्थ्यां शनि-वारान्वितायां लिखितमिदं पुस्तकं श्री मन्मिश्रपरमनिदस्यात्मज गोविंदमणि-नास्वार्थं परार्थंच ॥ शुभमस्तुसतां-सदा ॥ … …
२२ × ८·८ सें० मी०	७०	११	३५	अपू०	प्राचीन	
२४·२ × १०·१ सें० मी०	४१ (१०–५०)	१०	३८	अपू०	प्राचीन	
२६·२ × ६·५ सें० मी०	७७ (१ से १२६ तक स्फुट)	६	६२	अपू० (जीर्ण)	प्राचीन सं० १६०४	इति श्री महामहोपाध्याय श्री गंगेश्वरात्मजोपाध्याय वर्द्धमान विरचित किरणावली प्रकाशः समाप्तः ॥
२५·२ × ७·७ सें० मी०	४५ (१-१०, १२-१८, ४८-७५)	७	४७	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९३	५१४१	कुसुमांजलि कारिका व्याख्या	हरिहरदास भट्टाचार्य		दे० का०	दे०
९४	१२६	कुसुमांजलि टीका			दे० का०	दे०
९५	१०२	कुसुमांजलि प्रकाश	बर्द्धमान		दे० का०	दे०
९६	५३३३	* कुसुमांजलि विकास	गोपीनाथ मौनी		दे० का०	दे०
९७	१३६२	कैवल्य कल्पद्रुम व्याख्या (स्वाराज्यसिद्धि)		गंगाधर सरस्वती	दे० का०	दे०
९८	२८०८/९	क्रमदीपिका			दे० का०	दे०
९९	३०६७	खंडनखंड खाद्य	श्रीहर्ष		दे० का०	दे०
१००	७४९१	गदाधरी	गंगेशोपाध्याय		दे० का	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
२४·२ × ६·३ सें० मी०	३२ (१–३२)	१०	४४	पू०	प्राचीन	इति महामहोपाध्याय न्यायालंकार हरिदास भट्टाचार्य कृत कुसुमांजलि कारिका व्याख्या समाप्ता ॥
२५·१ × ८·५ सें० मी०	६५	९	३९	अपू०	प्राचीन	
२५·५ × ८·५ सें० मी०	३७	१०	४०	पू०	प्राचीन सं०११६३	इति श्री महामहोपाध्याय श्री वर्द्धमान विरचिते कुसमांजली प्रकाशे द्वितीयः स्तवकः समाप्त ।। सं० ११६३ पौष सुदि भौमे, शुभमस्तु ।। ग्रंथ संख्या ९०० लिखित उपाध्याय केशवेन ।।श्री।।
२८·७ × १०·५ सें० मी०	१४२ (१३–१५४)	९	४५	अपू०	प्राचीन सं०१७१०	इति गोपीनाथ मौनिनः कृतौ कुसुमांजलि विकासे पंचमः स्तववः संपूर्णः ॥ शुभमस्तु ।। सं० १७१० समय ज··· दी छटी लिखितं अजोध्या काएस्थेन शीवपुर नीवाशीनां··· ··· ··· ···
२७·८ × १२·२ सें० मी०	२० (१–२०)	१०	३०	पू०	प्राचीन	इति श्रीमत्परमहंस पारिव्राजकाचार्य श्री रामचंद्र सरस्वती पूज्यपाद शिष्येण श्रीसर्वज्ञसरस्वती पूज्यपाद शिष्येण गंगाधर सरस्वत्याख्यभिक्षुणा विरचितायां स्वाराज्य सिद्धि व्याख्यायां कैवल्य कल्पद्रुमाख्यायां कैवल्य प्रकरणं संपूर्णम् ॥
२० × ११·७ सें० मी०	३	१३	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री क्रमदीपिकायांवात्ता परमेश्वरी पद्दतः समाप्ताः ॥
३२ × १३ सें० मी०	१२३ (१–८१, १–४२)	११	५४	पू०	सं०१९३१	इति श्री हर्ष कृतावतिर्वचनीय सर्वस्रेखंडन खाषेतुरीयः परिछेदः समाप्तः ! श्री गोपाकृष्णायनमः ॥ सं० १९३१ ॥
३१·१ × १२·२ सें० मी०	११ (२००,२०४, २०७,२१०, २१६,२२०)	१०	६५	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०१	३७४४	गदाधरी			दे० का०	दे०
१०२	७६८४	गदाधरी			दे० का०	दे०
१०३	५०३२	गदाधरी (अवभव व्याख्या)	गदाधर भट्ट		दे० का०	दे०
१०४	८७३	गदाधरी टीका	गदाधर भट्टाचार्य		दे० का०	दे०
१०५	५७२०	गदाधरी पंचलक्षणी	गदाधर भट्टाचार्य		दे० का०	दे०
१०६	१३०१	गुणभाष्य			दे० का०	दे०
१०७	१२७३	गुणमणि कारिका			दे० का०	दे०
१०८	६८३	गुणशिरोमणिटीका	शिरोमणि-भट्टाचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२६ × ११·८ सें० मी०	२० (१–२०)	१०	४४	अपू०	प्राचीन	
३५.६ × १४.४ सें० मी०	४१	१३	५२	अपू०	प्राचीन	
२५·१ × ११ सें० मी०	३८ (१–३७) पत्र ३२ दो	१०	४७	पू०	प्राचीन	
३१·५ × १२.२ सें० मी०	२४१ (२६–१२५, १३२–१३३, १७४–२४४, २६२–४२६)	६	५८	अपू०	प्राचीन	इति महामहोपाध्याय श्रीयतगदाधर भट्टाचार्य चक्रवर्ति विरचिता सामान्य लक्षणांत दीपिका समाप्ता ॥ ......
३२·५ × १२.५ सें० मी०	६५	१३	५६	अपू०	प्राचीन	
२२·५ × ६.४ सें० मी०	१२ (१–१२)	१२	४०	अपू०	प्राचीन	
२०·६ × ८·१ सें० मी०	३० (३–५, ८–३५)	११	२६	अपू०	प्राचीन	
३३ × १२ सें० मी०	४२१	५	३४	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०९	८५८	गुणशिरोमणि टीका		कवींद्राचार्य सरस्वती	दे० का०	दे०
११०	६१४२	गैरिकाष्टक (गैरिकसूत्र व्याख्याष्टक)	केशव पाठक		दे० का०	दे०
१११	९०३	गोमठसार (सटीक)	आचार्य नेमिचंद्र		दे० का०	दे०
११२	६०५०	चिंतामणि			दे० का०	दे०
११३	७३१७	चिंतामणि टीका			दे० का०	दे०
११४	६८६९	चितदीपव्याख्या (तात्पर्यबोधिनी)	भारतीतीर्थ विद्यारण्य मुनि		दे० का०	दे०
११५	२६३३	चिंतामणि (अनुमान खंड)			दे० का०	दे०
११६	३२३३	चिंतामणि दीधित (पक्षताविचार)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२९.६ × १६·१ सें० मी०	९३ (१–९३)	८	३३	पू०	प्राचीन	इति साधर्म्य वैधर्म्य प्रकरणं ॥०॥ श्री विश्वेश्वरो जयति ॥ श्री गोविंदाय नमः ॥
१३·५ × ६·७ सें० मी०	५ (१–५)	६	२३	पू०	प्राचीन सं०१९४४	इति गैरिकाष्टक व्याख्या समाप्तिमगमत् ॥ श्री मत्केशव पाठकेन कृतिना श्री मद्गयावासिना मेघश्याम सुतेन तेन नितारामालोच्य सत्संमतम् ॥ प्रीत्यै श्री हथुआ पतेश्च सततं विद्वद्विनोदायवै······संवत् १९४४ ॥
२४·३ × १२·५ सें० मी०	२५	७	२५	अपू०	प्राचीन	
२४·८ × ८·१ सें० मी०	९ (१–९)	९	४६	अपू०	प्राचीन	
३२ × ९·५ सें० मी०	२२ (१–२२)	८	५६	अपू०	प्राचीन	
२७·३ × १२·१ सें० मी०	९३ (१-२५,२७-८५,९९)	११	४०	अपू०	प्राचीन	श्री भारती तीर्थ विद्याख्य मुनीश्वरौ क्रियते चित दीपस्य व्याख्या तात्पर्य बोधिनी × × पृ० १
२७·५ × ९·२ सें० मी०	४४ (१–४४)	७	४८	अपू०	प्राचीन	
२३·२ × १०·६ सें० मी०	७ (१–७)	१२	३८	पू०	प्राचीन	इति चिंतामणि दीधितौ पक्षताविचारः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११७	२७३५	चिंतामणि प्रकाश (पंचलक्षणी प्रकरण)			दे० का०	दे०
११८	२५१७	चिंतामणि प्रकाश			दे० का०	दे०
११९	६०८	चिंतामणि प्रकाश			दे० का०	दे०
१२०	५७०३	जन्माद्यस्यव्याख्या			दे० का०	दे०
१२१	७३१६	जागदीशी (पंचलक्षणी)	जगदीश भट्टाचार्य		दे० का०	दे०
१२२	६२८७	जागदीशी टीका ,,			दे० का०	दे०
१२३	५०३४	जागदीशी टीका ,,	जगदीश भट्टाचार्य		दे० का०	दे०
१२४	५१००	जागदीशी टीका ,,	जगदीश भट्टाचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६·५ × ७·५ सें० मी०	४०	७	५८	अपू०	प्राचीन	
२८·५ × ६ सें० मी०	५६	७	४५	अपू०	प्राचीन	
३२·३ × १० सें० मी०	१	७	५८	पू०	प्राचीन	इतिपंचलक्षणी प्रकर्णे चिंतामणि प्रकाश शिरोमणि समाप्ति प्रापितः। शुभं भवतु ॥··· ··· ···
२७·५ × ११·८ सें० मी०	६ (१–६)	६	४३	अपू०	प्राचीन	जन्माद्यस्येतिपपद्यस्यकाचिव्याख्या विरच्यते ॥ विद्वन्मनोमोदनीयं स्वात्मबोधायनान्यतः ॥७॥ (पत्र १)
३०·५ × ११·६ सें० मी०	२२ (१–२२)	१३	६५	अपू०	प्राचीन	
२७·६ × ६·२ सें० मी०	५	१०	५५	अपू०	प्राचीन	
२४·४ × १०·६ सें० मी०	२४ (१,३-२५)	११	३५	अपू०	प्राचीन	
२३·८ × १०·१ सें० मी०	७५ (१–७५)	६	३२	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२५	४८६८	जागदीशी पंचलक्षणी	जगदीश भट्टाचार्य		दे० का०	दे०
१२६	८७६	जागदीशी ,,		जगदीश भट्टाचार्य	दे० का०	दे०
१२७	४०३४	जागदीशी ,,	जगदीश भट्टाचार्य		दे० का०	दे०
१२८	४०४८	जागदीशी पंचलक्षणी	जगदीश भट्टाचार्य		दे० का०	दे०
१२९	८८०	जागदीशी ,, प्रशस्तपाद भाष्य	जगदीश भट्टाचार्य		दे० का०	दे०
१३०	३६५७	जीवन्मुक्ति			दे० का०	दे०
१३१	२३७८	ज्ञानप्रबोध			दे० का०	दे०
१३२	२५८६	ज्ञानमोदक			दे० का०	दे०

पत्रों का पृष्ठों आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५.३ × ११.५ सें० मी०	७० (१–७०)	११	३३	पू०	प्राचीन	
३२·३ × १० सें० मी०	५ (१–५)	७	५८	अपू०	प्राचीन	
३५ × १३ सें० मी०	२२ (१–२२)	११	७१	पू०	प्राचीन	प्रथम लक्षणं समाप्तं ॥
३२ × १२ सें० मी०	११ (१–११)	११	७३	अपू०	प्राचीन	
३३·५ × १०·२ सें० मी०	२१८ (१ से २३४ तक स्फुट)	९	६६	अपू०	प्राचीन	इति महामहोपाध्याय श्रीयुत श्री जगदीश कोलंकार महाट्टाचार्य विरचितानुमान मणि दीधिति टिप्पन्यां सामान्य लक्षण ग्रंथ टिप्पनी संपूर्णा शुभमस्तु ।
२७.२ × १४.८ सें० मी०	९	१३	४२	पू०	प्राचीन	इति श्री जीवन्मुक्तिचतुर्दकं समाप्तम् ॥ शुभमस्तु ॥ कौमारमाचरेत्प्राज्ञोधर्मान्-भागवतानिहं ॥ दुर्ल्लभं मानुषं जन्म तदप्पध्रुवमर्थहं ॥ श्रीगणेशायनमः ॥
२२ × ११ सें० मी०	१३ (२–१४)	६	२६	अपू०	प्राचीन	
१६·२ × १८·८ सें० मी०	६ (१–६)	१०	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री ज्ञानमोदक ग्रंथे प्रकरण त्रयोदशोध्याया समाप्तः ॥१३॥ श्री ब्रह्मार्पण मस्तु ॥ हरिः ॥ ओम् ॥ वासुदेव समर्थ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३३	६७२७	ज्ञानसार			दे० का०	दे०
१३४	३२५०	तंत्राधिकार निर्णय	भट्टोजी भट्ट		दे० का०	दे०
१३५	८६०	तत्वचिंतामणि	गंगेश उपाध्याय		दे० का०	दे०
१३६	४४७२	तत्वचिंतामणि			दे० का०	दे०
१३७	४४७०	तत्वचिंतामणि			दे० का०	दे०
१३८	१७५	* तत्वचिंतामणि (अनुमान खंड)	गंगेश उपाध्याय	जयदेव मिश्र	दे० का०	दे०
१३९	१८९	तत्वचिंतामणि (शब्दविवेक खंड)	श्री गंगेश्वर उपाध्याय		दे० का०	दे०
१४०	६९३३	तत्वचिंतामणि प्रकाश (अनुमान खंड)	रुचिदत्त		दे० का	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
२१·२ × ८·३ सें० मी०	१५ (१–१५)	७	१८	पू०	प्राचीन सं०१७४१	इति श्री इश्वर भाषितं ज्ञानसारस्य पदं देवी संबोधनार्थः त्रैलोक्यमाय वर्द्धनार्थां इश्वर पारवती संवादे समाद्धि नामोध्यायः समाप्तः ॥ सं० १७४१ वर्षे··· ··· ··· ···
२६·५ × ११·४ सें० मी०	२१ (१–२१)	१०	५५	पू०	प्राचीन	इति श्रीमदद्वैत सिद्धांतप्रतिष्टापक श्रौत-स्मार्त्त सत्संप्रदाय प्रवर्त्तक श्रीमद्‌भट्टोजे-भट्ट विरचितः स्तंत्राधिकारि निर्णयः समाप्तः ॥··· ··· ··· ···
२७·५ × ११ सें० मी०	११२	१०	४५	अपू०	प्राचीन	इति श्री परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीवामनेंद्रस्वामि चरणारविंद सेवक ज्ञानेंद्र सरस्व · ···
२०·६ × ८ सें० मी०	४५	७	४३	अपू०	प्राचीन	
२०·७ × ७·८ सें० मी०	५६	७	४०	अपू०	प्राचीन	—
२५·७ × ११·१ सें० मी०	१५५ (१–५१, ५३–१५६)	१२	४६	अपू०	प्राचीन सं०१६६६	इति श्री महामहोपाध्याय जयदेव मिश्र विरचितोनुमान खंडालोकः पूर्णः ॥८॥ श्री सरस्वत्यैनमः··· ···सं० १६६६ समएचैत्रसुदि दशमी सुभदिने विश्वेश्वर संनिधानेग्रंथ समाप्त ॥
२८ × ६·२ सें० मी०	७२ (५१–११२	१०	५२	अपू०	प्राचीन सं०१६६५	इति श्री महामहोपाध्याय श्रीगंगेश्वर विरचितेतत्वचिंतामणौ शब्दविवेकस्वृरीयः परिछेदः ॥ सं० १६६५ समये माघ शुदि १५ बुद्धावारे लिखितं वाराणस्यां मोहन ब्राह्मणेन ॥ रामसत्यः ॥
२३·४ × ६·६ सें० मी०	१५४ (१–१५४)	१२	३५	अपू०	प्राचीन	··· ···निशम्य सकलं शास्त्रं नाना गुरू मुखांबुजाव। अनुमान प्रकाशेयं रुचि-दत्तेन तन्यते ॥२॥······ (पृ०-१)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४१	४८७४	तत्वदीप			दे० का०	दे०
१४२	४४३१	तत्वदीपिका	रामकृष्ण		दे० का०	दे०
१४३	१६४८	*तत्वदीपिका (प्रथमपरिच्छेद)	चित्सुख मुनि		दे० का०	दे०
१४४	४०४५	तत्वदीपिका (संस्कृत टीका)			दे० का०	दे०
१४५	६७८१	तत्वदीपिका विवरण	अखंडानंद		दे० का०	दे०
१४६	१५२६	तत्वप्रकाशिका	जयतीर्थ		दे० का०	दे०
१४७	२६६१	तत्वप्रकाशिका व्याख्या			दे० का०	दे०
१४८	६७३४	तत्वप्रदीपिका	चित्सुख मुनि		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६·७ × ११·८ सें० मी०	४२ (१–४२)	१२	३४	अपू०	प्राचीन	
३३ × १५ सें० मी०	२१ (९,११-३०)	१८	५३	अपू०	प्राचीन	इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीभारतीतीर्थविद्यारण्य मुनिवर्यकिंकरेण श्री रामकृष्णाख्य विदुषा विरचिता महावाक्य विवेक व्याख्या समाप्तम् पंचम प्रकरणं ५ ।
२७ × ७·५ सें० मी०	९४ (१–९४)	७	५१	पू०	प्राचीन सं० १५८१	इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य ज्ञानोत्तमाख्यपूज्य पादशिष्य श्री चिन्सुख मुनिविरचितायां तत्वदीपिकायां प्रथम परिच्छेद······ ।। संवत् १५८१ समये अश्विनप्रथमपक्षपंचम्यां लिखितमिदं ···।
२७·२ × ७·५ सें० मी०	९७	७	५१	अपू०	प्राचीन	इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य ज्ञानोत्तमपूज्य पादशिष्य···त्वप्रदीपिकायां लक्षणभंगोनामद्वितीयः परिच्छेदः ।।
२५·१ × १०·७ सें० मी०	१५९ पू०–११५ उ०–४४	१०	४१	अपू० जीर्ण-शीर्ण	प्राचीन	इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्याखंडानुभूतिपूजायाद शिष्येणाखंडानद मुनिना विरचिते विवरण तत्व दीपने तृतीय वर्णकं समाप्तं ।। पूर्वार्द्ध पृ० ११५
३०·५ × १६·२ सें० मी०	९२ (१–९२)	१४	४९	पू०	प्राचीन सं० १९००	इतिश्रीजयतीर्थकृतायां तत्वप्रकाशिकायांप्रथमोध्यायः १ संपूर्ण शुभमस्तु संवत् १९०० शाके १७६५ ज्येष्ठवद्य ९ इंदुवासर
२०·८ × ९·९ सें० मी०	१२ (१–१२)	११	३५	अपू०	प्राचीन	
३१ × ११·२ सें० मी०	१२१ (१–१२१)	१२	७६	पू०	प्राचीन	इतिश्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य ज्ञानोत्तम पूज्यपादशिष्यश्रीचित्सुख मुनि विरचितायां तत्वप्रदीपिकायां लक्षणभंगोनाम द्वितीयः परिछेदः श्री संवत् १८४० ।। पृ० १०० इति श्री गौडेश्वराचार्य परमहंस परिव्राजकाचार्य ज्ञानोत्तम पूज्यपादशिष्य श्रीमत्परमहंस परिव्राजक श्रीचित्सुख मुनिविरचितायां तत्वप्रदीपिकायां चतुर्थः परिछेद इति तत्वप्रदीपिका समाप्ता··· ··· ··· अंत

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४६	६१४५	तत्वबोध			दे० का०	दे०
१५०	५६३६	तत्वबोध			दे० का०	दे०
१५१	२११८	तत्वबोध	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
१५२	१८७७	तत्वबोध			दे० का०	दे०
१५३	१८५७	तत्वबोध			दे० का०	दे०
१५४	१००१	तत्वबोध			दे० का०	दे०
१५५	४२५५	तत्वबोध			दे० का०	दे०
१५६	३६५१	तत्वबोध प्रकरण	शंकराचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·४ × ११.९ सें० मी०	३ (१–३)	१३	३४	पू०	प्राचीन	इति तत्वबोध संपूर्णम्तत्सत्हरिः ।।
२७.४ × ११·६ सें० मी०	५ (१–५)	८	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री तत्वबोधः समाप्तः ।
२५.६ × १०.८ सें० मी०	३ (१,५-६)	९	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री मच्छंकरार्थविरचितं तत्वबोध प्रकर्णं समाप्तम् ।।
२७·२ × १३·६ सें० मी०	३ (१–३)	१५	३६	पू०	प्राचीन सं०१८६८	इति स्मृतेस्तत्वबोध संपूर्णं शुभं ।। सं० १८६८ पौष मासे शुक्ले तिथौ ३ बुधवासरे लिखत मिदं लक्ष्मण घृत कौशिक गोत्र चंडीपुरमध्ये वांसी शुभमस्तु ।।
१६ × १० सें० मी०	१० (१–१०)	६	२१	पू०	प्राचीन	इति तत्वछ्बोध प्रकरणं समाप्तं ।।६।।
२२·७ × १० सें० मी०	६ (१–६)	९	३२	पू०	प्राचीन सं०१८९२	इति त्वत्ववाच प्रकरणं समाप्तम् सं० १८९२ श्री गणेशायनमः ।।
२२·८ × १०·५ सें० मी०	५ (१–५)	९	३२	पू०	प्राचीन	इति तत्वबोध प्रकरणं समाप्तं ।।
१८ × ९·३ सें० मी०	७ (१–७)	९	२४	पू०	प्राचीन	इति श्रीमत्परम हंस परिव्राजकाचार्य श्री मच्छंकराचार्य विरचिते तत्वबोध प्रकरण समाप्तः ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४९	६१४५	तत्वबोध			दे० का०	दे०
१५०	५९३६	तत्वबोध			दे० का०	दे०
१५१	२११८	तत्वबोध	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
१५२	१८७७	तत्वबोध			दे० का०	दे०
१५३	१८५७	तत्वबोध			दे० का०	दे०
१५४	१००१	तत्वबोध			दे० का०	दे०
१५५	४२५५	तत्वबोध			दे० का०	दे०
१५६	३६५१	तत्वबोध प्रकरण	शंकराचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५.४ × ११.९ सें० मी०	३ (१–३)	१३	३४	पू०	प्राचीन	इति तत्वबोध संपूर्णमृतत्सत्हरिः ।।
२७.४ × ११.६ सें० मी०	५ (१–५)	८	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री तत्वबोधः समाप्तः ।
२५.६ × १०.८ सें० मी०	३ (१,५-६)	९	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री मच्छंकरार्थविरचितं तत्वबोध प्रकर्णं समाप्तम् ।।
२७.२ × १३.६ सें० मी०	३ (१–३)	१५	३६	पू०	प्राचीन सं० १८६८	इति स्मृतेस्तत्वबोध संपूर्णं शुभं ।। सं० १८६८ पौष मासे शुक्ले तिथौ ३ बुधवासरे लिखत मिदं लक्ष्मण धृत कौशिक गोत्र चंडीपुरमध्ये वांसी शुभमस्तु ।।
१६ × १० सें० मी०	१० (१–१०)	६	२१	पू०	प्राचीन	इति तत्वछबोध प्रकरणं समाप्तं ।।६।।
२२.७ × १० सें० मी०	६ (१–६)	९	३२	पू०	प्राचीन सं० १८९२	इति त्वत्ववाच प्रकरणं समाप्तम् सं० १८९२ श्री गणेशायनमः ।।
२२.८ × १०.५ सें० मी०	५ (१–५)	९	३२	पू०	प्राचीन	इति तत्वबोध प्रकरणं समाप्तं ।।
१८ × ९.३ सें० मी०	७ (१–७)	९	२४	पू०	प्राचीन	इति श्रीमतपरम हंस परिव्राजकाचार्य श्री मच्छंकराचार्य विरचिते तत्वबोध प्रकरण समाप्तः ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५७	६६१	तत्वबोध प्रकरण	वसुदेवेन्द्र		दे० का०	दे०
१५८	२८४०	तत्वबोध प्रकरण			दे० का०	दे०
१५९	४६७६	तत्वमसि महावाक्य विवरण	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
१६०	१६१८	तत्वविवेक	लोकाचार्य		दे० का०	दे०
१६१	१५३३	तत्वविवेक (पददीपिका सहित)		रामकृष्ण	दे० का०	दे०
१६२	६७३६	तत्वविवेक (पददीपिका संस्कृत टीका)	भारती तीर्थं विद्यारण्य मुनि	रामकृष्ण	दे० का०	दे०
१६३	६३८४	तत्वविवेक दीपिका	रामकृष्ण		दे० का०	दे०
१६४	२४६६	तत्वविवेक दीपनं	नृसिहाश्रममुनी		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	१०
२७·८ × १०·८ सें० मी०	५ (१–५)	६	४०	पू०	प्राचीन सं०१८१८	इति श्री मत्परम हंस परिव्राजका चार्य श्री वासुदेवेन्द्र विरचितं तत्वबोध प्रकरणं समाप्तम् सं० १८६८ श्री श्री श्री श्री।
२३ × ९·९ सें० मी०	५ (१–५)	६	३०	पू०	प्राचीन सं०१८८३	इति श्री तत्वबोध प्रकरणं संपूर्णं शुभं भूयात्।। सं० १८८३ श्रावण मासे शुक्ल पक्षे··· ··· ···।।
२३·१ × १२·६ सें० मी०	३ (१–३)	११	२९	पू०	प्राचीन सं०१८७०	इति श्री मच्छंकराचार्य्य विरचितं तत्त्वमसि महावाक्य विवरणम्। सं० १८७० कार्त्तिकमासे शुक्ल पक्षे तिथौ द्वादश्यां भृगुवासरान्वितायां लिखितमिदं पुस्तकं × × × × ×।।
३० × १३ सें० मी०	४ (२–५)	१२	३८	अपू०	प्राचीन	
२९·८ × १२·९ सें० मी०	६५ (१-४,६-२८, २८-३५,३५, ३६,३६,३७, ३८,३८-६१)	११	३७	अपू०	प्राचीन	श्री भारती तीर्थ विद्यारण्य मुनीश्वरौ प्रत्यक् तत्व विवेकस्य क्रियते पददीपिका।।
३३·६ × १३·२ सें० मी०	१४५ (१–१४५)	१४	५६	पू०	प्राचीन सं०१७४८	इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री भारती तीर्थ विद्यारण्य मुनिकिंकरेण श्री रामकृष्णाख्य विदुषा विरचित सुपदेशग्रंथ विषयानंदः पंचमोध्यायः।। सं० १७४८··· ··· ······।
२३·६ × ११ सें० मी०	१३ (१–१३)	१५	४७	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीमत् भारती तीर्थ विद्यारण्य मुनिवर्य किंकरेण श्री रामकृष्णाख्य विदुषा विरचितस्तत्व विवेक दीपका समाप्तः।।
२६·५ × १२ सें० मी०	१३३ (१–१३३)	१२	४१	अपू०	प्राचीन	इति श्री वेदांत सिद्धांत साराभिज्ञ श्री नृसिंहाश्रम मुनी प्रणीते तत्वविवेक दीपने द्वितीय परिच्छेदः।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६५	२६६४	तत्वविवेक व्याख्या	रामकृष्ण		दे० का०	दे०
१६६	२६१२	तत्वसंख्यान			दे० का०	दे०
१६७	४१५५	तत्वानुसंधान	महादेव सरस्वती		दे० का०	दे०
१६८	६६२५	तत्वानुसंधान	महादेवानंद सरस्वती		दे० का०	दे०
१६९	१६५८	तत्वानुसंधान	महादेवसरस्वती		मि० का०	दे०
१७०	५२५६	तत्वानुसंधान व्याख्या	महादेवानंद सरस्वती		दे० का०	दे०
१७१	४७१६	तत्वार्थपंचक	श्रीहरिव्यास देव		दे० का०	दे०
१७२	४३०१	तत्वार्थपंचक	हरिव्यास देव		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३३·४ × १५ सें० मी०	१० (१–१०)	१५	४६	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री भारती तीर्थ विद्यारण्य मुनिवर्य किंकरेण श्रीराम कृष्णाख्य विदुषा विरचिता प्रत्यक्तत तत्वविवेक व्याख्या टिका समाप्त ॥
२३·६ × १०·१ सें० मी०	२२ (१–२२)	८	२७	अपू०	प्राचीन	
३० × १२·८ सें० मी०	२६ (१–२६)	११	५१	पू०	प्राचीन	इति श्री परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री मत्स्वयं प्रकाशानंद स्वरस्वती पूज्यपाद शिष्य भगवन्महादेव सरस्वती मुनि विरचितंतत्वानुसंधानं समाप्तम् ॥
२४·५ × ९·३ सें० मी०	१७ (१–१७)	१६	५२	पू०	प्राचीन	इति श्री परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री मत्स्वयं प्रकाशानंद सरस्वती पूज्य पाद शिष्य भगवन्माहादेवानंद सरस्वती विरचितं तत्वानुसंधानं समाप्तं ॥···
३३·७ × १५·५ सें० मी०	१३ (२–१४)	१४	४८	अपू०	प्राचीन	इति श्री परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्री मत्स्वयं प्रकाशानन्द सरस्वती पूज्य-पाद शिष्य भगवन्महादेव सरस्वती मुनि विरचितं तत्वानुसंधानं समाप्तं शुभ-मस्तु ॥ लिखितमिदं राम चन्द्रेणेति ॥ श्रीराम चन्द्रायनमः ॥
३३·६ × १२·१ सें० मी०	५७ (१-१३,१३-५६)	९	५६	पू०	(जीर्ण) प्राचीन	इति श्री मत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्री मत्स्वयं प्रकाशानंद सरस्वती पूज्य-पाद शिष्य भगवन्महादेवानंद सरस्वती मुनिवर्य चूडामणि विरचिते तत्वानु-संधान व्याख्याने अद्वैतचिंताकौस्तुभे चतुर्थः परिछेदः समाप्तोयं ग्रंथः ॥
२६·२ × १२·४ सें० मी०	१२ (१–१२)	११	३८	पू०	प्राचीन	इति श्री प्रवर परमहंस वैप्तवाचार्य श्री हरि व्यासदेव विरचितं तत्वार्थ समाप्तम् ॥
२६·१ × १२·२ सें० मी०	१२ (१–१२)	११	४१	पू०	प्राचीन	इति श्री प्रवर परमहंस वैष्टवाचार्य्य श्री हरिव्यासदेव विरचितं तत्वार्थपंचकं समाप्तम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१७३	६१५७	तत्वालोक			दे० का०	दे०
१७४	६३८८	तर्क चंद्रिका (सटीक)	रामकृष्ण भट्ट		दे० का०	दे०
१७५	५२५३	तर्कचंद्रिका	विश्वेश्वराश्रम		दे० का०	दे०
१७६	७५५७	तर्कदीपिका			दे० का०	दे०
१७७	३१३३	तर्कदीपिका	अन्नंभट्ट		दे० का०	दे०
१७८	१२५३	तर्कदीपिका			दे० का०	दे०
१७९	१३३७	तर्कपरिभाषा	केशवमिश्र		दे० का०	दे०
१८०	८७९	तर्कप्रकाश			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३४·८ × १७·८ सें० मी०	६ (१–६)	१२	३६	पू०	प्राचीन	
२३·२ × १०·५ सें० मी०	१५ (१–१५)	१४	५२	पू०	प्राचीन सं० १७५३	इति श्री मत्यदवाक्य प्रमाण पारावारीणवेंकटाद्रिभट्ट कुलोत्तंसतिरुमल भट्टात्मज सिद्धांत रत्नाकर कर्तृ राम कृष्ण भट्ट कर्तृका तर्कचंद्रिका ॥······
२१·३ × ८·५ सें० मी०	१४ (१–१४)	११	५१	पू०	प्राचीन	इति श्री विश्वेश्वराश्रम कृतं न्याय करणं समाप्तं ॥
२४·३ × ११·१ सें० मी०	८	१२	४२	अपू०	प्राचीन	
२७·७ × ११·७ सें० मी०	२७ (१–२७)	८	३७	पू०	शक सं० १७६५	इति श्री मदन्नभट्टोपाध्याय कृत तर्कदीपिका समाप्ता श्रीरामचंद्रप्रसादोस्तु शाके १७६५ शुभंभवतु ॥
३१ × १०·८ सें० मी०	१२ (३–१४)	१२	५२	अपू०	प्राचीन	
२८·३ × ६·८ सें० मी०	४२ (४–४५)	७	४२	अपू०	प्राचीन सं० १६६०	इति श्री केशव मिश्र विरचिता तर्कपरिभाषा समाप्ता ॥ संवत्······ ६० वर्षे कार्तिग शुदिनवम्यांगुरौ श्री श्री श्री
३२ × १०·८ सें० मी०	२४ (१–२४)	११	५१	अपू०	प्राचीन	

(सं०सू० २–४६)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१८१	७९६	तर्कप्रकाश			दे० का०	दे०
१८२	३७३१	तर्कप्रकाश (शब्दखंड)	श्रीकंठ दीक्षिति		दे० का०	दे०
१८३	५६६८	तर्कप्रदीपिका			दे० का०	दे०
१८४	२८३१	तर्कभाषा	केशव मिश्र		दे० का०	दे०
१८५	३९०५	तर्कभाषा	केशव मिश्र		दे० का०	दे०
१८६	५३२	तर्कभाषा (प्रमाणपदार्थ) (संस्कृत भाषा)	केशव मिश्र	गौरीकांत चक्रवर्ती	दे० का०	दे०
१८७	५७३३	तर्कसंग्रह	अन्नंभट्ट		दे० का०	दे०
१८८	५०८८	तर्कसंग्रह	अन्नंभट्ट		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४·५ × ११ सें० मी०	१३ (१३-२५,२७)	१५	३६	अपू०	प्राचीन	
२५ ३ × ११·१ सें० मी०	२३ (१-२२,२४)	१२	४४	अपू०	प्राचीन	
३०·५ × ७·३ सें० मी०	३४	७	५८	अपू०	प्राचीन	इति श्री विद्वन्मुकुट मणिवमाध्यंदिनीय लौगिकाक्षिकुल समुद्भूत केशवभट्ट ×
२७·५ × १०·९ सें० मी०	२९ (१–२९)	१२	४१	पू०	प्राचीन	इति श्री केशव मिश्ररचिता तर्कभाषा समाप्ता ॥
१८·६ × ८·४ सें० मी०	२६ (१–७,१५–३३)	१२	३७	अपू०	प्राचीन श०१४८५ सं०१६२०	इति श्रीमत्तार्किकचक्र चूडामणिश्च केशवमिश्राचार्यं विरचिततर्कभाषा समाप्ता ॥ श्री ॥ शके १४८५ वर्षे ॥
३७·१ × १९·३ सें० मी०	६१ (२–६२)	१३	३८	अपू०	प्राचीन	इति श्री तर्कभाषायाप्रमाणपदार्थ समाप्तः ॥ ... ... इति श्री प्रमाणपरिच्छेद समाप्तः ॥
२७·७ × ११·५ सें० मी०	८ (१–८)	९	४५	पू०	प्राचीन	अन्नम्भट्टेन विदुषा रचितस्तर्कसंग्रहः इति तर्कसंग्रहः समाप्तः ॥
२४·२ × ९·२ सें० मी०	६ (१–६)	११	३३	पू०	प्राचीन	इति सिद्धंकण न्यायमतयोर्बालव्युत्पत्ति सिद्धये अन्नं भट्टेन विदुषा रचितस्तर्क संग्रहः ... ... ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१८६	५६३	तर्कसंग्रह	अन्नंभट्ट		दे० का०	दे०
१६०	१५०	तर्कसंग्रह	अन्नंभट्ट		दे० का०	दे०
१६१	१२४	तर्कसंग्रह	अन्नंभट्ट		दे० का०	दे०
१६२	४६६७	तर्कसंग्रह	अन्नंभट्ट		दे० का०	दे०
१६३	४६६५	तर्कसंग्रह	अन्नंभट्ट		दे० का०	दे०
१६४	४८७३	तर्कसंग्रह	अन्नंभट्ट		दे० का०	दे०
१६५	७२८७	तर्कसंग्रह	अन्नंभट्ट		दे० का०	दे०
१६६	६३६०	तर्कसंग्रह	अन्नंभट्ट		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार*	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·४ × १२·३ सें० मी०	५ (१–५)	१२	३६	अपू०	प्राचीन	कणाद न्याय मतयोर्वालव्युत्पत्तिसद्धये अन्नभट्टेन ... रचित तर्कसंग्रहः इति तर्कसंग्रह समाप्तम् ।
२८·२ × ९·७ सें० मी०	७ (१–७)	९	४०	अपू०	प्राचीन	
२४ × १०·५ सें० मी०	१० (२–११)	८	२५	अपू०	प्राचीन	भरते न लिखितं तर्क संग्रह । ।। राम, राम, राम ।।
२५·३ × ११·२ सें० मी०	७ (१–७)	१०	३४	अपू०	प्राचीन सं० १९१०	अन्नंभट्टेन विदुषा रचितस्तर्कसंग्रहः इत्यन्नभट्टेन तर्क संग्रहः संपूर्णः ।। शुभमस्तु ।। सं० १९१० भाद्र शुक्ला ७ भृगौलिखितं पं० श्री नायकराम गोपाललेन ।।
२४·३ × १०·८ सें० मी०	३ (९–११)	८	३०	अपू०	प्राचीन	× × × अन्नंभट्टेन विदुषा रचितस्तर्कसंग्रहः इति तर्कसंग्रह समाप्तः ।। आषाढे मासि शुक्ल १५ संवत् × × × ।।
२९ × १०·७ सें० मी०	८ (१–८)	११	३५	अपू०	प्राचीन सं० १८४९	इति श्री अन्नभट्ट विरचि तर्क संग्रहः ।। श्री सरस्वत्यैनमः सं० १८४९ फाल्गुन शुदि त्रयोदशी × × × × ।।
२६·२ × ११·४ सें० मी०	१३ (१–१३)	७	३०	पू०	प्राचीन	अन्नंभट्टेन विदुषा रचितस्तर्कसंग्रहः ।। इति तर्क सग्रहः समाप्तः ।।
२०·९ × ९·५ सें० मी०	६ (१–६)	११	४१	पू०	प्राचीन	इति श्री मदन्नंभट्ट विरचितस्तर्क संग्रहः समाप्तः ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१९७	५६७३	तर्कसंग्रह	अन्नंभट्ट		दे० का०	दे०
१९८	५११०	तर्कसंग्रह	अन्नंभट्ट		दे० का०	दे०
१९९	४६४१	तर्कसंग्रह	अन्नंभट्ट		दे० का०	दे०
२००	१८	तर्कसंग्रह	अन्नंभट्ट		दे० का०	दे०
२०१	१०५४	तर्कसंग्रह	अन्नंभट्ट		दे० का०	दे०
२०२	१२२७	तर्कसंग्रह	अन्नंभट्ट		दे० का०	दे०
२०३	१९५	तर्कसंग्रह (दीपिका)	अन्नंभट्ट		दे० का०	दे०
२०४	६२२९	तर्कसंग्रह (दीपिका)	अन्नंभट्ट		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार *	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३१.३ × १४·७ सें० मी०	५ (१–५)	१३	४१	अपू०	प्राचीन सं०१८९८	इति तर्क संग्रह समाप्तं संवत् १८९८ ।। मिति चैत्र शुदि ९ वार बुध तस्मिन् समये बुधरामेणों × × × ।।
२१.३ × ९·६ सें० मी०	१० (१–१०)	९	३४	पू०	प्राचीन सं०१८४७	इति सिद्धकरणादन्यायमतयोर्वालव्युत्पत्ति सिद्धये अन्नंतभट्टेन विदुषारचितस्तक्र्व संग्रहः तर्क्वसंग्रह समाप्तं संवत् १८४७ का मिति सावण वदि ।। ७ वार मंगलवारे लिषतं भूंफण मध्ये मयाराम········
२१·८ × ९.५ सें० मी०	९ (१–९)	९	२९	पू०	प्राचीन	अन्नंभट्टेनविदुषारचितस्तर्क्वसंग्रहः इति तर्क्वसंग्रह समाप्त ।। श्रीमते रामानुजायन्मः ।।
२५ × ११ सें० मी०	८ (१–८)	९	२८	अपू०	प्राचीन	
३२ × १०.३ सें० मी०	४ (१–४)	११	५२	पू०	प्राचीन	अन्नंभट्टेन विदुषारचितरतर्कसंग्रह ।। इति श्री मदन्नंभट्ट विरचिता तर्कसंग्रहः समाप्तः ।। शुभंभवतु ।। ······
२२.८ × ८·६ सें० मी०	८ (१–८)	९	३६	अपू०	प्राचीन सं०१७४१	अन्नंभट्टरचित तर्क संग्रहः ।। शुभभस्तु ।। संवत् १७४१ ।।
२३ × १०·५ सें० मी०	२७	९	३८	पू०	प्राचीन १८२६सं०	इति श्री महोपाध्याय श्रीमदद्वैतविप्रयाःचार्य श्री मद्राघव सोमयाजीकुलवंतंस श्री मितिरुमरा चार्येस्यसूनुना अन्नभट्टेन विरचिता स्ववृत तर्कसंग्रहस्य दिपिका समाप्त ।।
३०·२ × १३·७ सें० मी०	४२ (१–४२)	८	३४	पू०	प्राचीन सं०१९२२	इति संग्रह दीपकायां सप्तपदार्थ निरूपणं समाप्तम् ।।······ संवत् १९२२ वैशाख सुदि २······

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२०५	६१३२	तर्क संगह (दीपिका टीका)	अन्नंभट्ट	मदन भट्टोपाध्याय	दे० का०	दे०
२०६	१२३७	तर्कसंग्रह (वाक्यवृत्ति)	अन्नंभट्ट		दे० का०	दे०
२०७	१३३५	तर्कसंग्रहदीपिका (संस्कृत टीका)	अन्नंभट्ट	मदनभट्ट	दे० का०	दे०
२०८	७६८	तर्कसंग्रहदीपिका (संस्कृत टीका)	अन्नंभट्ट	,,	दे० का०	दे०
२०९	६१२३	तर्क संग्रह (सिद्धान्तचन्द्रोदय टीका)	अन्नंभट्ट		दे० का०	दे०
२१०	१२२८	तर्कसंग्रहदीपिका	अन्नंभट्ट	मदनभट्ट	दे० का०	दे०
२११	३१३८	तर्कसंग्रहदीपिका	अन्नंभट्ट	,,	दे० का०	दे०
२१२	२६४०	तर्कसंग्रहदीपिका (उपमान परिच्छेद)	अन्नंभट्ट	,,	दे० का	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३१ × १०·२ सें० मी०	५ (१–३,१५–१७)	१३	५४	अपू०	प्राचीन	इति श्री मदन भट्टोपाध्याय-विरचिता तर्क संग्रह टीका समाप्ता शुभमस्तु ॥
२२·५ × ८·५ सें० मी०	२४ (१–२४)	९	३३	पू०	प्राचीन सं०१९०४	इति तर्क संग्रह वाक्यवृत्ति समाप्तः ॥ ··· ··· संमत् १९०४ मिति पौष शुद्ध १५ पौर्णिमाभौमवारे लिखितं वलवंतरावमोघे ॥ जानिये ॥ शिव ॥ ॥ शिव ॥ ··· ···
२३ × ९ सें० मी०	१८ (१–१८)	७	३८	पू०	प्राचीन	इति तर्कसंग्रहदीपिकाप्रकाशेभगव-दर्पिते उपमानपरिछेदसमाप्तः ॥
२७·२ × ११·३ सें० मी०	१४ (१-१३,१९)	११	४०	अपू०	प्राचीन	
२७·५ × ११ सें० मी०	६	७	३२	अपू०	प्राचीन	··· ··· श्री गजसिंह भूपतनय श्री राज सिंह प्रभो सुज्ञानाय विनिर्मितो तिसुगमः सिद्धन्त चन्द्रोदयो···(पृ० २)
२२·५ × ८·६ सें० मी०	४१ (१–४१)	७	४१	अपू०	प्राचीन	
२७·३ × ११· सें० मी०	७ (१–७)	९	३९	अपू०	प्राचीन	इति श्री मदनभटविरचितस्तर्कसंग्रह समाप्तः ॥
२७·४ × ११·३ सें० मी० (सं०सू०२-४७)	१६ (१–१६)	९	४०	पू०	प्राचीन	इति तर्कसंग्रह दीपिका प्रकाशे भगवदर्पिते उपमान परिच्छेदः समाप्तः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२१३	२६४२	तर्कसंग्रह दीपिका (प्रत्यक्षपरिच्छेद)			दे० का०	दे०
२१४	७३६४	तर्कसंग्रह दीपिका (प्रभाटीका)	अन्नंभट्ट		दे० का०	दे०
२१५	७३१४	तर्कसंग्रहदीपिकाप्रकाश	नीलकंठभट्ट		दे० का०	दे०
२१६	१०१२	तर्कसंग्रह दीपिका (संस्कृत टीका)	अन्नंभट्ट		दे० का०	दे०
२१७	३२६	तर्क संग्रहदीपिका	अन्नंभट्ट		दे०का०	दे०
२१८	५८५	तर्कसंग्रह (न्यायबोधिनी टीका)	अन्नंभट्ट	गोवर्धन	दे० का०	दे०
२१९	१३९	तर्कसंग्रह (पदकृत्यटीका)		चन्द्रजसिंह	दे० का०	दे०
२२०	६७८२	तर्कसंग्रहव्याख्या	न्याय गोवर्द्धन		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·४ × ११.३ सें० मी०	२४ (१–२४)	६	३९	पू०	प्राचीन सं० १७९६	इति तर्क संग्रह दीपिका प्रकाशे ... ... प्रत्यक्ष परिच्छेदः समाप्तः ॥ शुभं-भवतु ॥ शाके १७६६ व्ययनाम संवत्सरे श्री क्षेत्र ब्रह्मावर्त्ते लिखितो ... ... ॥
३१·८ × १०·१ सें० मी०	११९ (१–११९)	१३	५७	अपू० (खंडित)	प्राचीन	इति श्री विद्वव्यूहशिरोमणिश्रीमद्व्यासाचार्य सुतेनकुरु गोडुपनामक हनुमत्-रंख्यावताविरचितायां तर्कसंग्रहदीपिका प्रभायां तुरीय परिच्छेदः समाप्तः ॥ शिवंभूयात् ॥
३१.७ × १० सें० मी०	३७ (१–३७)	१३	५५	पू०	प्राचीन	इति श्री त्याण्योपनामककौडिन्यवंश-पयःपारावार राकाचंद्रायमाण पद-वाक्यप्रमाणपारावारीण श्रीरामभट्ट तनूज श्री नीलकंठभट्ट विदुषा विरचित तर्कसंग्रह दीपिकाप्रकाशः समाप्तः ॥ ...
३१.७ × १०·३ सें० मी०	१४ (१-१३,१५)	११	४८	अपू०	प्राचीन सं० १८६९	इति श्रीमदन्नंभट्टोपाध्यायकृता तर्क-संग्रह दीपिका समाप्ता शुभंभवत् सं० १८६९ वैशाखे मासि कृष्णपक्षे १ भृगु वासरे सीतारामेण लेखि ॥
२६·५ × ११·५ सें० मी०	२१ (२–२२)	६	३०	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमदनभट्ट उपाध्याय कृत तर्क-संग्रह टीका दिपिका समाप्ता ॥
२४·२ × १०.५ स० मी०	१६ (१–१६)	१२	४२	पू०	प्राचीन	इति न्यायबोधिन्यां टीकायां गोवर्द्धन रचितायां समाप्ता ॥ ... ...
२६·६ × ११·४ सें० मी०	१७	११	३५	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमदन्नभवद्गुरुदत्तसिंह शिष्य श्रीचन्द्रजसिंह विरचितं पदकृत्यके चतुर्थ खंडः समाप्तः ४ ॥
२६ × १०·७ सें० मी०	३० (१–३०)	७	२६	पू०	प्राचीन सं० १९२१	इति न्याय गोवर्द्धन विरचिता तर्क संग्रह व्याख्या समाप्तं ॥ सं० १९२ ॥१॥ ...

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२२९	१०८	तार्किकरक्षा	वरदराज		दे० का०	दे०
२३०	१७२६	तार्किकरक्षा (प्रथम परिच्छेद)	वरदराज		दे० का०	दे०
२३१	११८६	तार्किकरक्षाटीका	कवींद्राचार्य सरस्वती		दे० का०	दे०
२३२	३५०६	तिथिनिर्णय	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
२३३	१०१७	तृप्तिदीप व्याख्या	विद्यारण्य मुनि	रामकृष्ण	दे० का०	दे०
२३४	१४३५/५	त्रिपुरी			दे० का०	दे०
२३५	४०८९	दशलक्षणी			दे० का०	दे०
२३६	३४१०	दसश्लोकवेदांत	महाविष्णु		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२३·४ × ८·७ सें० मी०	३८ (१–३८)	१०	४२	अपू०	प्राचीन	
२१ × ८ सें० मी०	६ (१–६)	६	३७	पू०	प्राचीन	इति श्रीवरदराजकृतौ तार्किकरक्षायां प्रथमः परिच्छेदः समाप्तः ॥
२२·१ × ८·५ सें० मी०	२७ (१–२७)	११	२८	अपू०	प्राचीन	
३४ × १८ सें० मी०	२२ (१–२२)	११	६३	पू०	प्राचीन	इति पदवाक्यप्रमाणज्ञ श्रीलक्ष्मीधर सूर सूनुना भट्टोजि दीक्षितेन विरचितस्थितिनिर्णयः समाप्तोयंग्रंथः······॥
३३·२ × १५·१ सें० मी०	५५ (१–५५)	१४	५१	पू०	प्राचीन	इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्री भारती तीर्थ विद्यारण्यमुनिवर्यकिंकरेण रामकृष्णाख्य विदुषाविरचितातृप्तिदीपव्याख्यासमाप्ता ॥ सप्तमं प्रकरणं संपूर्णम् ॥
२२·५ × १० सें० मी०	५ (४–८)	१०	३६	अपू०	प्राचीन	इति त्रिपुरी समाप्त ॥
३० × १२·३ सें० मी०	११ (१–११)	७	३२	पू०	प्राचीन	
२२ × ११·२ सें० मी०	४ (१–४)	६	२२	पू०	प्राचीन	इति श्री नंदिकेश्वर संवादे महाविष्णु विरंचित दसश्लोक वेदांत्त संपूर्णं ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२३७	५०६३	दीधिति (गदाधरी टीका)	गदाधर भट्टाचार्य		दे० का०	दे०
२३८	४७२४	दीधिति व्याख्या (शिरोमणिटीका)	भवानंद भट्टाचार्य		दे० का०	दे०
२३९	७९०६	*द्रव्यकिरणावलीप्रकाश	रुचिदत्त		दे० का०	दे०
२४०	५४०७	द्रव्यगुणोपन्यास			दे० का०	दे०
२४१	१२२१	द्रव्यपदार्थ			दे० का०	दे०
२४२	१६७९	द्रव्यपदार्थ			दे० का०	दे०
२४३	५९८५	द्रव्यभाष्य टीका			दे० का०	दे०
२४४	११०९	द्वैतनिर्णयखंडन	वासुदेव		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·७ × १२·४ सें० मी०	१४० (१,१-४,६-१६,१८-२३, २५-३३,३७-३९,४१-११२ ११८-१२८, १२८-१५१)	११	४६	अपू०	प्राचीन	इति श्रीगदाधरभट्टाचार्य्यं विरचितानुमान खंड दीधिति टिप्पणी समाप्ता ॥ श्रीरस्तु शुभमस्तु ॥
२५·१ × ११·३ सें० मी०	८९ (१-३९,१७३-१९९,१९९-२२१)	१३	४७	अपू०	प्राचीन	श्री भट्टाचार्य्यभवानंद तर्कवागीशविरचिता शिरोमणीय पूर्वार्द्धं व्याख्या समाप्ता ॥
२६·४ × ९·३ सें० मी०	१२० (१-४२,४४-१२१)	९	४८	अपू०	प्राचीन सं० १६४१	इति श्री महामहोपाध्याय श्री रुचिदत्त विरचितोद्रव्य किरणावली प्रकाश प्रकाशः समाप्तः शुभमस्तु सं० १६४१ समये भाद्रपद द्वितीया रविवासरे लिषितं काश्यांवाश मधुसूदन ब्राह्मणेन द्रोणगोपालभट्ट पुस्तकं ॥
२२·५ × १० सें० मी०	५२ (१-५२)	१०	२६	अपू०	प्राचीन	
२४·९ × ८·३ सें० मी०	८ (१-८)	८	४४	पू०	प्राचीन	इति द्रव्य पदार्थः समाप्त ॥
१७·७ × ७·४ सें० मी०	११ (१-११)	९	२८	अपू०	प्राचीन	इति द्रव्य पदार्थः समदः ॥ श्री रघुनाथाय नमः ॥
२५·८ × ११ सें० मी०	३५ (१-३५)	१०	४४	पू०	प्राचीन	इति द्रव्यभाष्यं टीका समाप्ता ॥
३२ × ११·५ सें० मी०	२० (१-२०)	११	५०	पू०	प्राचीन	इति सकलविद्वन्मुकुटमणिभट्टप्रभाकरात्मज वासुदेवविरचितं द्वैतनिर्णय खंडनं समाप्तं ॥

(सं०सू० २-४८)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२४५	४०६६	धर्ममीमांसा तरणी	दिवाकर दीक्षित		दे० का०	दे०
२४६	५२३६	नञ्वाद	शिरोमणि		दे० का०	दे०
२४७	४३१५	नञ्वाद (टीका)			दे० का०	दे०
२४८	३१२८	नञ्वाद टिप्पणी		रघुदेव भट्टाचार्य	दे० का०	दे०
२४९	५३१४	नञ्वाद टीका	जयराम भट्ट		दे० का०	दे०
२५०	२२७४	नञ्वाद विवेचन			दे० का०	दे०
२५१	४८६७	नवीनमत विचार	भट्टाचार्य हरिराम वागीश।		दे० का०	दे०
२५२	७८७३	निबंधचंद्रिका सटीक			दे० का	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार •	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	१०
२३·७ × १०·७ सें० मी०	१५ (१,५–१८)	११	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री धर्ममीमांसा तरणीदिवाकर दीक्षित कृते द्वितीयस्याध्यायस्य चतुर्थः पादः ॥
२२·२ × ६·३ सें० मी०	४ (१–४)	१०	३४	पू०	प्राचीन	इति श्री महामहोपाध्याय तार्किक शिरोमणि विरचितोनञ्वावादः समाप्तः शुभमस्तु ॥
२६ × १०·४ सें० मी०	६ (१–६)	११	३८	अपू०	प्राचीन	
२०·२ × ६·६ सें० मी०	४ (१७–२०)	११	४६	अपू०	प्राचीन	इति रघुदेव भट्टाचार्य विरचिता नञ्-वाद टिप्पणी समाप्ता ॥ हेरंब ॥
२५·७ × १०·८ सें० मी०	७ (१–७)	१४	४३	अपू०	प्राचीन	
२४·२ × ६·२ सें० मी०	६ (१–६)	६	४०	अपू०	प्राचीन	
२५·८ × १०·८ सें० मी०	३४ (१–३४)	१०	३६	अपू० (खंडित)	सं० १८४६ श० १७१४	इति श्री भट्टाचार्य हरिराम…वागीश कृते नवीन मत विचार संपूर्ण…संवत् १८४६ शाके १६१४ मिती भा……॥
३१·७ × १६·४ सें० मी०	२० (१-३,५-२१)	११	४३	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२५३	५६४६	निगमनपरिमंत्रार्थ	रंग		मि० का०	दे०
२५४	६९२६	निरीश्वरवादोपपादनम् (सांख्य मते)			दे० का०	दे०
२५५	१७२४/३	निर्वाणदशक	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
२५६	६७३३	नैष्कर्म्यसिद्धि ('चंद्रिका' संस्कृत टीका)	सुरेश्वराचार्य	ज्ञानोत्तम मिश्र	दे० का०	दे०
२५७	६७३५	नैष्कर्म्यसिद्धि (प्रथम अध्याय)	सुरेश्वराचार्य		दे० का०	दे०
२५८	४८०९	नैष्कर्म्यसिद्धि चंद्रिका	ज्ञानोत्तम मिश्र		दे० का०	दे०
२५९	७३६५	न्यायकारिका व्याख्या			दे० का०	दे०
२६०	५०९७	न्यायकौस्तुभ (शब्दखंड)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३२·१ × १३·८ सें० मी०	६ (१–६)	५	२६	पू०	सं० १९२१	इति श्री यामुनाचार्यसूनुवर रंग विरचितो निगमनपडिमत्रार्थः समाप्तम् । मिति आश्विन वदि ७ संवत् १९२१ लिखितं मनसाराम ॥
२४·२ × ९.२ सें० मी०	३ (१–३)	११	३५	पू०	प्राचीन	साङ्ख्य शास्त्राभ्युपगतनिरीश्वर वादोपपादनम् ॥
१६.५ × ११·३ सें० मी०	२	८	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री मदशंकराचार्यं विरचितं निर्वाण दशकं समाप्ताः ॥ श्री कृष्णार्पण मस्तु ॥ श्रीराम ।
२०·४ × ११·७ सें० मी०	७३	१२	४६	पू०	प्राचीन	ओमिति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री सुरेश्वराचार्य विरचितायां संबंधाख्य नैष्कर्म्य सिद्धौ चतुर्थोध्यायः समाप्तः ॥ ··· ···
३१.५ × ११.७ सें० मी०	१३ (१–१३)	११	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री मछंकर भगवत्पूज्यपाद शिष्य सुरेश्वराचार्यकृतौ नैष्कर्म्य सिद्धौ प्रथमोध्यायः ॥१॥ ···
२८ × ९·४ सें० मी०	१२६ (१-८०,८२-१२७)	९	३९	अपू० (जीर्ण)	प्राचीन	इति श्रीमहोपाध्यायज्ञानोत्तममिश्र विरचितायां नैष्कर्म्यसिद्धिचंद्रिकायां चतुर्थोध्यायः समाप्तः ॥ जयदेविदुर्गे ॥
३१.१ × १०·४ सें० मी०	६३	१०	५०	अपू०	प्राचीन	
२४.१ × १०.२ सें० मी०	५६	१०	४७	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
२६१	५२३६	न्यायतरंगिणी सौरभ	रामाचार्य		दे० का०	दे०
२६२	५४०	न्यायदीपिका			दे० का०	दे०
२६३	१६४६	*न्यायनिबंधप्रकाश	वर्द्धमान		दे० का०	दे०
२६४	२६५४	*न्यायपंचमाध्याय (परिशिष्ट)	वर्धमान		दे० का०	दे०
२६५	४२३३	न्यायबोधिनी	गोवर्धन		दे० का०	दे०
२६६	७१२	न्यायबोधिनी	गोवर्धन		दे० का०	दे०
२६७	४६८	न्यायमालाविस्तर	माधवाचार्य		दे० का०	दे०
२६८	५५५	न्यायमालाविस्तर (द्वितीय एवं चतुर्थ अध्याय)	माधवाचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२८·२ × ११·१ सें० मी०	३८० (२–३८१)	९	४४	अपू०	प्राचीन सं० १७३०	
३१·७ × १३ सें० मी०	३	१२	४५	अपू०	प्राचीन	
२७ × ८·७ सें० मी०	१३२ (३–१२२ + ३)	६	५१	अपू०	प्राचीन सं० १६३६	इतिश्री महामहोपाध्यायश्रीगंगेश्वरात्मज महामहोपाध्याय श्रीवर्द्धमानकृते न्यायनिबंध प्रकाशे प्रथमोध्यायः समाप्तः ॥ संवत् १६३६ समये फाल्गुन शुदि गुरौदश्म्यां लिखितैषेति ॥ शुभमस्तु ॥
२६ × ७·७ सें० मी०	८६ (१–८६)	९	४५	पू०	प्राचीन सं० १५४३	इतिमहामहोपाध्याय श्रीमद्गंगेश्वरात्मज श्री वर्धमान विरचिते न्यायपंचमाध्यायपरिशिष्ट प्रकाशे द्वितीयमाह्निकं ॥ समाप्तश्चायं ग्रंथः ॥
२६·७ × ११·४ सें० मी०	१२ (१–२,५–१४)	१२	३८	अपू०	प्राचीन सं० १९३५	इतिश्रीमत्समस्तविद्वन्मुकुटश्रीगोवर्द्धनकृता तर्कसंग्रहव्याख्यान्यायबोधिनीसमाप्तिमगात् शुभंलेखकपाठकयोः संवत् १९३५ कार्तिक मासे कृष्णपक्षे शुभतिथौसप्तम्यां शुक्रवासरे श्रीः ॥
३२ × ११ सें० मी०	१४ (१–१४)	९	५५	पू०	प्राचीन	इतिश्रीमत्समस्तविद्वन्मुकुट श्रीगोवर्धनकृता तर्कसंग्रहव्या न्यायबोधिनी समाप्तिमगात् ॥श्री॥
२७·७ × १०·८ सें० मी०	५३ (१–५३)	८	३९	पू०	प्राचीन सं० १९३६	इतिमाधवीयेजैमिनिन्यायमाला विस्तरे प्रथमाध्यायस्य चतुर्थः पादः अध्यायस्च समाप्तः ॥ संवत् १९३६ पौष्य शुद्ध १ सोमवार ॥
२८ × ९·५ सें० मी०	४४	११	५२	पू०	प्राचीन	इतिश्रीमाधवीये जैमिनिन्यायमालाविस्तरे चतुर्थाध्यायस्प चतुर्थः पादः चतुर्थोध्यायः समाप्तः ॥ शुभमस्तु ॥ ॥ शिवरस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२६९	५३८	न्यायमीमांसा	मुरारी मिश्र		दे० का०	दे०
२७०	४९६	न्यायमांसानिरुक्तिः	मुरारि		दे० का०	दे०
२७१	७३८१	न्यायमुक्तावली (भाषापरिच्छेद)	विश्वनाथ पंचानन		दे० का०	दे०
२७२	७८३३	न्यायमुक्तावली टीका			दे० का०	दे०
२७३	७६८५	न्यायमुक्तावली (दिनकरी टीका	विश्वनाथ पंचानन	महादेव	दे० का०	दे०
२७४	२०९०	न्यायरत्नमाला			दे० का०	दे०
२७५	१७६०	न्यायरत्नमाला			दे० का०	दे०
२७६	१६८५	न्यायसिद्धांत मंजरी	चूड़ामणि भट्टाचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·७ × ९·७ सें० मी०	४४ (५–४८)	१२	४३	अपू०	प्राचीन सं० १८०२	इति श्रीमन्मुरारि विरचितांगत्वनिरुक्तिः समाप्तिमगमत् । सं० १८०२ आश्विन् कृष्ण ११ ।
२८.३ × १२ सें० मी०	२८ (१–२८)	१८	५८	पू०	प्राचीन	मुरारिनिर्मित्तिन्यायमिमांसावासितात्मनां तोषायविदुषामेषा··· ···इति श्री मन्मुरारिविरचितायां निरुक्तिः समाप्तिमगमत् ।। श्री शुभंभवतु ।। श्रीरस्तु ।। श्री ।।
२४·९ × १०·५ सें० मी०	९ (१–९)	८	३५	पू०	प्राचीन १९ वीं शताब्दी	इति श्री मद्भट्टाचार्य विश्वनाथ पंचानन विरचितो भाषा परिछेदः समाप्तिमगमत् × × × ×।।
३०·७ × ७.२ सें० मी०	१६ (४-७, ९-२०)	७	५५	अपू०	प्राचीन	
३२ × १०.४ सें० मी०	११८ (१–११८)	११	६०	पू० क्रमिक्त तित	प्राचीन सं० १८६८	× × ×लिखितं इदं पुस्तकं दिव्य सहस्रेण श्रीरामेण।। सं० १८६८ मिति पौष वद्य १० भौमवासरे ।।
२७·३ × ११.३ सें० मी०	७	११	४०	अपू०	प्राचीन	
२६·५ × ९·१ सें० मी०	३७ (१–३७)	९	४३	अपू०	प्राचीन	
२३·८ × १० सें० मी०	५ (१३–१७)	१०	३९	अपू०	प्राचीन	
(सं०सू०२–४९)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२७७	३७०	न्यायसिद्धांतमंजरी	चूड़ामणिभट्टाचार्य		दे० का०	दे०
२७८	६९६	न्यायसिद्धांतमंजरी	चूड़ामणिभट्टाचार्य		दे० का०	दे०
२७९	१०३२	न्यायसिद्धांतमुक्तावली			दे० का०	दे०
२८०	६२९२	न्यायसुधा			दे० का०	दे०
२८१	६७५८	न्यायसुधा			दे० का०	दे०
२८२	७४१८	न्यायसुधा टीका	जयतीर्थ		दे० का०	दे०
२८३	६६१५	न्यायसूत्र			दे० का०	दे०
२८४	१८०	न्यायसूत्रवृत्ति	विश्वनाथ भट्टाचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४·२ × १०·५ सें० मी०	३० (१–२६, ३१)	१२	४१	अपू०	प्राचीन	इतिश्रीभट्टाचार्य चूडामणि विरचिता न्यायसिद्धान्तमञ्जरी समाप्ता: ॥
२५ × ११.५ सें० मी	३५ (१–३५)	१३	३९	पू०	प्राचीन	इतिश्रीभट्टाचार्य चूडामणि विरचिता न्यायसिद्धांत मंजरी समाप्ता ॥
२५·२ × १५ सें० मी०	५ (१–५)	१३	३२	अपू०	प्राचीन	
३१·६ × ११·८ सें० मी०	१४० (१–८८, ९६-१४३, १४५–१४८)	११	४२	अपू०	प्राचीन	
३१·७ × ११·६ सें० मी०	४३ (१४९–१९१)	१०	४७	अपू०	प्राचीन	
३३·१ × १२·३ सें० मी०	२३३	११	४६	अपू०	प्राचीन	इतिश्री मत्पूर्णप्रमितिभगवत्पाद सुतेरनुख्यानस्यप्रगुण जयतीर्थक्षयपतिना ॥ कृतायां टीकायां विषमपदवाक्यार्थ विवृतौ द्वितीयाध्यायस्य प्रथमचरण: पर्यवसित: ॥१॥ इति श्री मन्यायसुधायां द्वितीयाध्यायस्य प्रथम: पाद: समाप्त: ॥ (पृ० ५४)
३४·३ × १३·४ सें० मी०	३६	१५	६१	अपू०	प्राचीन	
२६·१ × १२ सें० मी०	९८	१२	३२	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२८५	६२२३	न्यायामृत	व्यासपति		दे० का०	दे०
२८६	३०३९	न्यायामृत			दे० का०	दे०
२८७	७४८२	न्यायोक्तग्रस्फुटप्रत्यक्षादि (टीकारूपेण)			दे० का०	दे०
२८८	६३८३	पंचदशी	विद्यारण्य मुनि		दे० का०	दे०
२८९	१११३	पंचदशी (संस्कृतभाष्य)	विद्यारण्य मुनि	रामकृष्ण	दे० का०	दे०
२९०	१५५	पंचदशी	विद्यारण्य मुनि	रामकृष्ण	दे० का०	दे०
२९१	३६२२	पंचदशी (ध्यानदीप-कूटस्थदीप)	विद्यारण्यमुनि	रामकृष्ण	दे० का०	दे०
२९२	२५०२	पंचलक्षणी			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३१.७ × ११.८ सें० मी०	३०५ (१–३०५)	९	४२	(खंडित)	प्राचीन	इति श्री मत्परमहंस परिव्राजिकाचार्याणां श्रीमद्ब्रह्मण्य तीर्थपूज्य पादानां शिष्येण व्यासपतिनासंगृहीते न्यायामृते चतुर्थः परिछेदः ॥ श्री मद्गुर्वंतर्गत मुख्य प्राणांतर्गत श्री मद्दिव्यलक्ष्मीनृसिंहार्पणमस्तु ॥
२४ × १०.४ सें० मी०	१२ (१-४,५-११)	८	२३	अपू०	प्राचीन	
२६.४ × ७.१ सें० मी०	२६ (३-६,८-१९, २३-३२)	८	४७	अपू०	प्राचीन	
२३ × १०.४ सें० मी०	१२६ (१-१२५) पत्र ७६ दो	९	२९	पू०	प्राचीन सं०१८९८	इति श्री मत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्री विद्यारण्य मुनि कृतौ ब्रह्मानंदातर्गतविषयानंदोनाम पंचमोध्यायः समाप्तः संवत् १८९८ शके १७६३ ...... ।
३२.३ × १६ सें० मी०	२१२ (१–२१२)	१४	४४	पू०	प्राचीन सं०१८४०	इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्री भारतीतीर्थ विद्यारण्यमुनि किंकरेण श्री रामकृष्णाख्यविद्वुषांविरचित्तमुपदेशग्रंथविवरणे विद्यानंदः पंचमोध्यायः१५ पंचदशमंप्रकरणंसमाप्तं सुभमस्तु शंवत् १८४० मीति माघसुदी १ श्रीदुर्गादेव्यैनमः श्री सरस्वतीदव्यैनमः श्रीकृष्णायनमः
३५.५ × १३.५ सें० मी०	१३ (३-१४,१७)	१२	६१	अपू०	प्राचीन	
३०.५ × १३.५ सें० मी०	३८५	१०	४२	पू०	प्राचीन सं०१८५७	इति श्रीविद्यारण्यभारतीतीर्थमुनिवर्य्य किंकरेण श्रीराम कृष्णाख्यविदुषा विरचितेपंचदशी भूतविवेकसमाप्तम् ॥ श्रावण शुद्ध ११ सं० १८५७ शके १७-२२ (पंचदशीभूतविवेक पत्रसंख्या २९) इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री भारतीतीर्थविद्यारण्य मुनिवर्य्यकिंकरेण रामकृष्णाख्यविदुषाविरचिता कूटस्थ दीपव्याख्यायां समाप्तोयं ग्रंथः ॥
३१.३ × १२.२ सें० मी०	१३ (१–१३)	१२	४३	पू०	प्राचीन	पंचलक्षणी समाप्ता ॥ साध्य सामानाधिकार ... ...

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२९३	१८९३	पंचविवेक व्याख्या		रामकृष्ण	दे० का०	दे०
२९४	३६५९	पंचीकरण वार्त्तिक			दे० का०	दे०
२९५	१४३४	पंचीकरण वार्त्तिक	पूर्णानंद सरस्वती		दे० का०	दे०
२९६	३४१७	पंचीकरण वार्त्तिक	सुरेश्वराचार्य		दे० का०	दे०
२९७	१०९६	पक्षताबाद (गदाधरी टीका)		चिंतामणि विनायक प्रसाद	दे० का०	दे०
२९८	३४७२	पक्षतावाद निरूपण (दीधिति टिप्पणी)		गदाधर	दे० का०	दे०
२९९	११४०	पक्षताविचार			दे० का०	दे०
३००	७२९५	पक्षताव्याप्ति	भगवती		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२९·८×१५ सें० मी०	३६ (१–३६)	१५	३७	अपू०	प्राचीन	इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री भारती विद्यारण्य मुनिवर्य किंकरेण श्री रामकृष्णाख्यविदुषा विरचिता महावाक्य विवेक व्याख्या समाप्तम् पंचम प्रकरणं ॥
१९·७×९·१ सें० मी०	११ (१–११)	६	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री पंचीकरण वार्तिकाभरण समाप्तं ॥ श्री शुभंभूयात् ॥ श्री सच्चिदानंद गुरु नाथ समर्थ ॥
२२·८×१० सें० मी०	३	१०	३७	पू०	प्राचीन	इति पंचीकरण वार्तिक सम्पूर्णं ॥
१४·८×८ सें० मी०	१४ (१–४)	५	३१	पू०	प्राचीन	इति श्री सुरेश्वराचार्य कृतंपंचीकरण वर्तिकं संपुर्णं ॥
३२·५×११·६ सें० मी०	५६ (१–५६)	१०	५६	पू०	प्राचीन	इतिपक्षणो टिप्पणी समाप्ता श्रीमत्सिद्धेश्वरीचरणारूपासरोरुह परिसइयरायपोभ्य: श्री मत्पडितेभ्योनमो नमोस्तु श्री···शंवत्···श्री चिंतामणि विनायेक प्रसाद सिद्धिरस्तु ॥
२७·१×११·५ सें० मी०	१४८ (१–१४८)	१२	४१	अपू०	प्राचीन	
२२×१०·५ सें० मी०	१६ (१–१६)	१४	४९	पू०	प्राचीन सं० १७३९	इतिपक्षताविचार: समाप्तिपफाण ॥ श्री सरस्वत्यैनम: ॥ सं० १७३९ वैशाख वदि त्रयोदश्यां पूरितमिदंदिनकरेण ॥
१९·९×७·७ सें मी०	१८	७	३४	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३०१	३४५१	पतंजलि सूत्र			दे० का०	दे०
३०२	३०७६	पतंजलियोग शाल-सूत्रवृत्ति		श्री भोज	दे० का०	दे०
३०३	५६८६	प्रतियोगी ज्ञानकारण विचार	नारायणसार्वभौम		दे० का०	दे०
३०४	५४७	पदार्थ आलोक			दे० का०	दे०
३०५	१८४	* पदार्थखंडनटिप्पणं		रामभद्र सार्वभौम	दे० का०	दे०
३०६	२६३६	पदार्थदीपिका	कोंडभट्ट		दे० का०	दे०
३०७	३८८३	पदार्थ-प्रमाणवाद			दे० का०	दे०
३०८	१०७	पदार्थमाला	जयराम न्याय पंचानन		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२.३ × ९.४ सें० मी०	५ (१–५)	१०	३८	पू०	प्राचीन	इति पातंजल सूत्राणि ॥··· ···
२३.२ × ९.७ सें० मी०	३९ (१–३९)	१३	४७	पू०	प्राचीन	इति श्री महाराजाधिराज श्री भोजविरचितायां राजमार्त्तंडाभिधायां प्रातंजल योगशास्त्र सूत्रवृत्तौ कैवल्यपादः··· ···सूत्रेषुवृत्तिव्यधात् ॥ १ शुभमस्तु ॥
२२ × ९.३ सें० मी०	७ (१–७)	११	३८	पू०	प्राचीन	इति श्री नारायण सार्वभौमीय प्रतियोगिज्ञानकरण विचारः ॥
२८.५ × १०.३ सें० मी०	८६ (१–८६)	१०	४८	अपू०	प्राचीन	
२६ × १०.८ सें० मी०	२६ (२–२७)	१२	४३	अपू०	प्राचीन सं० १६७४	इति श्री महामहोपाध्याय रामभद्रसार्वभौमविरचितं पदार्थखंडन टिप्पणं समाप्तं ॥ ॥श्रीः॥ शके १५३९ । विक्रमे १६७४ ॥ श्रीः ॥ ग्रंथ, १८ ॥ छं ॥
२७ × ८.८ सें० मी०	७ (४१–४७)	७	४१	अपू०	प्राचीन	······वाल बुद्धि प्रकाशार्थं पदार्थानां प्रदीपिका रंगोजिभट्ट पुत्रेण कोडं भट्टेन निर्मिता इति श्री ॥
२६ × ११.३ सें० मी०	५ (१२–१६)	११	९	अपू०	प्राचीन	
२५.३ × १०.५ सें० मी०	९१ (१–९१)	१३	३३	पू० (जीर्ण)	प्राचीन सं० १७५६	इति श्री जयराम न्याय पंचानन विरचिताया पदार्थ मालायां द्रव्य परिछेदः समाप्तः ॥ संवत् १७५६ विरोधी संवत्सरे दक्षिणायते वर्षा ऋतौ साद्र प्रदे मासि कृष्ण पक्षेपंचम्यां मद वारे रेवती नक्षत्रे मीन स्वेत्वद्रे. सिंहस्वे सूर्ये धनु स्वेत्वदेवगुरौत द्विवसे दक्षिणाभि मुखे वैद्य नाथ सहात्मज जयरामेणेदं पुस्तकं लिखितं ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३०६	७८३६	पदार्थविचार			दे० का०	दे०
३१०	४०२७	परमात्मनिरूपणं			दे० का०	दे०
३११	७२१८	परात्रिंशिकाविवरण	अभिनवगुप्त		दे० का०	दे०
३१२	२५५८	परोक्षानुभव	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
३१३	१४२०	परोक्षानुभूति	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
३१४	२१५६	पातंजलयोगशास्त्र			दे० का०	दे०
३१५	२२८२	पातंजलयोगशास्त्रसूत्र (भाष्य)		भोजदेव	दे० का०	दे०
३१६	६७२६	पातंजलयोगसूत्र	पतंजलि		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·३ × ९·५ सें० मी०	९ (३–११)	११	४२	अपू०	प्राचीन	
१३.८ × ९.५ सें० मी०	३ (१–३)	८	३४	पू०	प्राचीन	इति श्री ईश्वर परमात्मंनिरूपणं संपूर्णं शुभं ॥
२७ × १०.४ सें० मी०	१६ (४०–५५)	१२	४४	अपू० (खंडित)	प्राचीन	श्री महामाहेश्वराचार्यवर्य्य श्रीमद्राजानकाभिनव गुप्तस्येतिशिवम् ॥ शतैरेकोनविंशत्यांत्रिंशिकेयं विवेचिता ×
२४ × १२·३ सें० मी०	६ (१–६)	११	३८	पू०	प्राचीन सं० १८६३	इति श्रीमत्संकराचार्य विरंचितम परोक्तानुभवस्तु संपूर्णं श्रीरस्तु सं० १८६३ ॥
२५ × ११·२ सें० मी०	९ (१–९)	११	३१	अपू०	प्राचीन	
३०·४ × ११·५ सें० मी०	३६ (१-१०,१२-३७)	१०	५९	अपू०	प्राचीन सं० १८५९	इति श्रीपातंजले योगशास्त्रे सांख्यप्रवचने कैवल्यपादश्चतुर्थः संपूर्णः ······ ···संवत् १८५९मी कार्तिक सु० १५ वार अतवारः ॥
२६·९ × ११·१ सें० मी०	१३ (६–१८)	१०	३५	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमहाराजाधिराज भोजदेवविरचितायां पातंजल योगशास्त्र सूत्रवृत्तौ योगपादः प्रथमः ॥
१८·९ × ९ सें० मी०	४ (१–४)	१३	३२	पू०	प्राचीन	इति पातंजले सांख्य प्रवचने योगशास्त्रे कैवल्य पादश्चतुर्थः ॥ सर्व सूत्र संख्या ॥१९४॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३१७	४५२	पातंजलयोगसूत्रवृत्ति	पतंजलि	धारेश्वर	दे० का०	दे०
३१८	६७८३	पातंजलि योगविवृति (राजमार्तंड)	भोजदेव		दे० का०	दे०
३१९	५६८५	पातंजलिविवृति (योगानुशासन)			दे० का०	दे०
३२०	३००२	पूर्वमीमांसासंग्रह			दे० का०	दे०
३२१	८५६	पूर्वमीमांसासंग्रह	लौगाक्षिभास्कर		दे० का०	दे०
३२२	२६२७	पूर्वमीमांसार्थसंग्रह	लौगाक्षिभास्कर		दे० का०	दे०
३२३	७४८०	प्रत्यक्षानुमानप्रकरण			दे० का०	दे०
३२४	५६७४	प्रबोधटीका	स्यानंतारण्य		दे० का०	दे०

पत्रों का पृष्ठों आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३५ × १३·५ सें० मी०	६१	१०	३४	पू०	प्राचीन	इति श्रीधारेश्वर विरचितायां राज मार्तंडविधानायां पातंजल योग शास्त्र वृत्तौ कैवल्य पादश्चतुर्थः ॥४॥ श्री राधा कृष्णाय नमः ॥
२६ × १०·५ सें० मी०	४० (१–४०)	११	४८	पू०	प्राचीन सं० १८४७	इति श्री भोजदेव विरचितायां राज मार्तंडभिधायांपातंजलयोगशास्त्र वृत्तौ कैवल्य पादश्चतुर्थः ४ संवत् १८४७ आश्विने··· ··· ···॥
२६·८ × ११·५ सें० मी०	३ (१–३)	७	२९	अपू०	प्राचीन	उत्सृज्य विस्तर मुदस्य विकल्प जालं फल्गु प्रकाममवधार्य्यं च सम्यगर्थान् अंत. पतंजलि मतेर्विवृतिर्मयेमातन्यते बुधजनप्रतिपत्ति हेतुः ॥७॥ अथयोगानुशासनम् ॥ (१ श्लोक सं० ७)
२३·७ × १०·२ सें० मी०	१९ (२–२०)	९	३२	अपू०	प्राचीन	
३५·५ × १४ सें० मी०	८ (३–११)	११	६८	अपू०	सं० १९२७	इति श्री महोपाध्याय लौगाक्षिभास्कर विरचिरत पूर्व मीमांसार्थ संग्र नामकं प्रकरणेमगा च ॥ शुभं समाप्तः ॥ शिवं सदा ॥ संवत्१९२७ चैत्र कृष्ण २ लिखतं राम प्रसादेन ।
२७.३ × ११·२ सें०, मी०	२३ (१–२३)	७	४४	पू०	प्राचीन	इति श्री महोपाध्याय लौगाक्षि भास्कर विरचित पूर्व मिमांसार्थ संग्रहनाम फकरणं मगाच्चर मवर्णं धुसं । समाप्तम् ॥ शुभमस्तु सर्वदा ॥
२४·७ × ९·१ सें०, मी०	२४ (१–२४)	१४	५०	अपू०	प्राचीन	
२८ × ११.५ सें० मी०	१२ (१–१२)	१२	४४	अपू०	प्राचीन	इति श्री पुरापारण्य पूज्यपादशिष्य स्यानंतारण्य भगवताप्रवोधटीकायां द्वितीयों कः ॥ (पृ० १२)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३२५	३११९	प्रमाणलक्षण			दे० का०	दे०
३२६	३२३४	प्रमाणवादरहस्य	भावानंद		दे० का०	दे०
३२७	११३३	प्रमाणसंग्रह	वनमाली		दे० का०	दे०
३२८	४२१९	* प्रशस्तपादभाष्य	प्रशस्तपादाचार्य		दे० का०	दे०
३२९	३८९२	प्रशस्तपादभाष्य (गुणभाष्य)			दे० का०	दे०
३३०	४६८५/२	प्रश्नावली	जडभरत		दे० का०	दे०
३३१	१२३८	प्रस्तावश्लोकटीका			दे० का०	दे०
३३२	१६९९	प्रागभावखंडनविचार			दे० का	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
२३.५ × १०.२ सें० मी०	२२ (१-३,५-२३)	८	२६	अपू०	प्राचीन	
२७.२ × ११.७ सें० मी०	२४ (१४–३७)	१५	५१	अपू०	प्राचीन	इतिभवानंद विरचितं प्रामाण्यवादरहस्यं समाप्तं ॥
२७ × ११.७ सें० मी०	६१ (१–६१)	११	३९	अपू०	प्राचीन	
२३.६ × ७ सें० मी०	६ (१—६)	१०	५४	पू०	श०१५२३	इतिश्री प्रशस्तपादाचार्यविरचितेवैशेषिकभाष्ये द्रव्यपदार्थः संपूर्णः ॥ श्री ॥ रामायनमः ॥ शके १५२३ आषाढ़ेमसि कृष्णपक्ष भौमवासरेदिनायामांशिवपुर्यांप्रशस्तभाष्य पुस्तकं कृ··· ···शुभमस्तु ॥ ··· ···
२६.८ × १०.९ सें० मी०	९ (१–९)	१५	५८	अपू०	प्राचीन	
१६.५ × १०.६ सें० मी०	२० (१-२०)	९	२२	पू०	प्राचीन	इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री मुनिमाधवा नंदस्यशिष्यो जडभरत विरचिता प्रश्नावली संपूर्णा श्री रामायनमः ॥
२३.५ × १०.५ सें० मी०	१० (१–१०)	१०	४४	पू०	प्राचीन सं०१९००	इतिप्रस्तावश्लोक टीकायां कति श्लोकनांव्याख्यासर्गः संपूर्णं ॥ संवत् १९०० ॥ शके १७६५ मार्गशीर्ष वद्यअमावस्यायां मंगलवारे वीठोबारोपलोपनामकेनलिखितं ··· ···
२७ × १०.३ सें० मी०	५	१३	५८	पू०	प्राचीन	इति प्रागभाव खंडन विचारः समाप्तिपफाए ॥ पूरितोयं भारद्वाजमणिरामेण ॥ श्रीसरस्वत्यैनमः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३३३	११४२	प्रागभाववाद			दे० का०	दे०
३३४	५३४३	बाधबुद्धिविचार	हरिराम		दे० का०	दे०
३३५	१४३५/५	बालबोधिनी	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
३३६	७३७५	ब्रह्मचिंतनिका			दे० का०	दे०
३३७	५५१४	ब्रह्मचिंतनिका	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
३३८	७०४४	ब्रह्मसूत्र अणुभाष्य विवरण	वल्लभाचार्य	गिरिधर	दे० का०	दे०
३३९	९२२४	ब्रह्मसूत्रभाष्य	आनंदतीर्थ		दे० का०	दे०
३४०	२८२४	ब्रह्मसूत्रभाष्य			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३३ × ९·६ सें० मी०	४ (१–४)	१६	४४	अपू०	प्राचीन	
२२·७ × ८·८ सें० मी०	३९ (१–३९)	१०	३३	पू०	प्राचीन सं०१७३४	इति हरिराम विरचितो बाधबुद्धिविचारः समाप्तः ॥··· सं०१७३४ माघ शुदि १४ लिखितमिदं चतुर्दश्यां··· ···
२२·५ × १० सें० मी०	५	९	३४	पू०	प्राचीन	इति श्रीशंकराचार्य विरचिताबालबोधिनी समाप्ता ॥
२१·७ × १०·६ सें० मी०	१० (१-८,१०, ११)	१०	२८	अपू०	प्राचीन	इति ब्रह्मचिंतनिकासंपूर्णं ॥ तत्सत ब्रह्मार्पण मस्तु ॥ × × × ×
१५·५ × ११·१ सें० मी०	२ (१–२)	१२	२३	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकचार्य श्रीमत्छंकराचार्य विरचितं ब्रह्म चिंतनिका समाप्तः ॥ ·· ··· ···
३३·३ × १६·७ सें० मी०	११ (२२-२९,२९, ३०,३०)	८	४८	अपू०	प्राचीन	श्रीमदाचार्यपदांबुज कृपापारसार श्रीमत्प्रभुचरणात्मज महाराज श्री यदुनाथ कुलोद्भवगोस्वामि श्री गोपालात्मज गिरिधर विरचितेऽणुभाष्य विवरणे चतुर्थाध्यायस्य चतुर्थपादः समाप्तिम- (पृ० ३२)
३१·४ × १२·१ सें० मी०	२३ (१–२३)	१०	४०	अपू०	प्राचीन	इति श्री मत् कृष्णद्वैपायन कृत ब्रह्मसूत्रभाष्ये श्रीमदानन्दतीर्थ भगवत्पादाचार्य विरचिते प्रथमाध्यायस्यतृतीय पादः × × ×॥ (पृ० २२)
३१·६ × ११·८ सें० मी०	७४ (२६–१००)	८	३७	अपू०	प्राचीन	
(सं० सू० २-५०)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
३४१	१९६०	ब्रह्मसूत्रभाष्य (तत्वप्रकाशिका टीका)	आनंदतीर्थ भगवत् पादा चार्य	जपतीर्थभिक्षु	दे० का०	दे०
३४२	६७८०	ब्रह्मानंद (अद्वैतानंदाध्याय)	रामकृष्ण		दे० का०	दे०
३४३	१०२२	ब्रह्मानंद (पंचम अध्याय)	रामकृष्ण		दे० का०	दे०
३४४	१०६३	ब्रह्मानंद (तृतीय अध्याय)	रामकृष्ण		दे० का०	दे०
३४५	११०८	ब्रह्मानंद (प्रथम अध्याय)	रामकृष्ण		दे० का०	दे०
३४६	३४७५	भक्तिरत्नावली	परमहंसविष्णुपुरी		दे० का०	दे०
३४७	३५६५	भक्तिरत्नावली	परमहंसविष्णुपुरी		दे० का०	दे०
३४८	१४४७	भक्तिरत्नावली	विष्णुपुरी		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३२ × १६·२ सें० मी०	४५ (१–४५)	१५	४८	पू०	प्राचीन सं० १८९०	इति श्री मदानंद तीर्थ भगवत्पादाचार्य विरचितस्य श्रीमद्ब्रह्म सूत्रभाष्यस्य टीकायांतत्व प्रकाशिकायां जपतीर्थ भिक्षु कृतायां द्वितीयोध्यायः ।। लिषा लाला अजोध्याप्रसाद मिती वैषाख वदि पंचमी ५ भोमे का सं० १८९० के साल ।।
२५·५ × ९·९ सें० मी०	१० (१–१०)	१०	४०	पू०	प्राचीन	इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्री भारतीतीर्थ श्रीविद्यारण्य मुनिवर्य किंकरेण श्रीरामकृष्णाख्यविदुषा-विरचिते ब्रह्मानंदेऽद्वैतानंदो नाम तृतीयोऽध्यायः समाप्तः ।। ... ...
२९·८ × ११·५ सें० मी०	७ (१–७)	१२	४२	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीभारतीतीर्थ······विद्यारण्यमुनिवर्य किंकरेण श्रीरामकृष्णाख्य विरचितं ब्रह्मानंदो नाम पचमाध्यायः ।।
३०·२ × ११·२ सें० मी०	२६ (१–२६)	१२	४४	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीभारतीतीर्थविद्यारण्य मुनिवर्य किंकरेण श्री रामकृष्णाख्य विदुषा विरचिता ब्रह्मानंदो नाम तृतीयोध्यायः ३।।
३० × ११·६ सें० मी०	२३ (१–२३)	१२	४८	पू०	प्राचीन	इतिश्रीमत्परहंसपरिव्राजकाचार्य श्री भारतीतीर्थविद्यारण्यमुनिवर्यकिंकरेण रामकृष्णाख्या विरचिते ब्रह्मानंदे-योगानंदोनामप्रथमोध्यायः ।।
२१ × ९·४ सें० मी०	३६ (१–३६)	८	४०	पू०	प्राचीन	इति श्रीपुरुषोत्तमचरणारविंदकृपामकरंदविंदुप्रोन्मीलित विवेकतैरभुक्तंपरमहंस विष्णुपुरी ग्रथितायां श्री भागवतामृताविधलब्ध भगवद्भक्तिरत्नावल्यां-त्रयोदशं विरचनं संपूर्णम् ।।
१५·८ × ७·५ सें० मी०	८२ (१–८२)	५	२५	पू०	प्राचीन सं० १८७३	इति श्रीमत्पुरुषात्तमचरणारविंद-कृपामकरंद विंदु प्रोन्मीलित विवेक तैर-भुक्त परमहंस विष्णुपुरी ग्रंथितायां श्री-भागवतामृताब्धिलब्ध्व श्री भगवद्भक्ति-रत्नावल्या त्रयोदशं विरचनं १३ ।। समाप्तं सुभमस्तु संवत् १८७३ ।।
१७·२ × १२·९ सें० मी०	७९ (१–७९)	८	१८	पू०	प्राचीन सं० १९३३	इति श्रीमत्पुरुषोत्तमचरणारविंद कृपामकरंदविंदुप्रोन्मीलितविव कतै-र्भुक्त परमहंस विष्णुपुरी ग्रथितायां श्रीभागवता ··· ··· संवत् १९३३ श्रावण शुक्ला पंचम्या भौमवासरे लिखतम् ···।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३४९	११०५	भक्तिरत्नावली	विष्णुपुरी		दे० का०	दे०
३५०	४६७	भक्तिरत्नावली			दे० का०	दे०
३५१	३३६६	भक्तिरत्नावली	परमहंसविष्णुपुरी		दे० का०	दे०
३५२	१०९८	भाट्टचिंतामणि	गागाभट्ट		दे० का०	दे०
३५३	४३४४	भाट्टचिंतामणि	गागाभट्ट		दे० का०	दे०
३५४	४१००	भाट्टतंत्ररहस्य	खंडदेव		दे० का०	दे०
३५५	३११०	भाट्टदिनकरी	दिनकर		दे० का०	दे०
३५६	३२१९	भाट्टदीपिका (लक्षण खंड)	खंडदेव		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
२७·७ × १४·५ सें० मी०	२३ (१–२३)	१२	३८	पू०	प्राचीन सं० १८५२	इति श्रीमत्पुरुषोत्तमचरण···श्रीभगवद्-भक्तिरत्नावल्यां विरंचनं त्रयोदशः ॥ संवत् १८५२ शुभं भूयात् ॥
३४ × १३ सें० मी०	१० (११–१९, २१)	१२	५७	अपू०	प्राचीन	
३६ × १३·५ सें० मी०	१०८ (१,१–१०७)	८	४९	अपू०	प्राचीन	३महायज्ञशारः प्राणः शशांक गुणितेशके फाल्गुने कृष्ण पक्षस्य द्वितीयायां सुमंगले ५ वाराणस्यां महेशस्यसांमिध्ये हरिमंदिरे भक्तिरत्नावली······
२८·५ × १२·३ सें० मी०	३८ (१–३८)	८	४२	पू०	प्राचीन	इतिगागाभट्टकृतौ भाट्टचिंतामणौषष्ठ-स्याष्टमः पादः ॥
२९ × १२·७ सें० मी०	७२ (१–७२)	९	४४	पू०	प्राचीन	इति गागा भट्टकृत भाट्टचिंतामणौ प्रथमाध्यायस्य प्रथमः पादः ॥ समाप्त ॥ × × ×
२५·२ × ८ सें० मी०	५२ (१–५२)	८	४३	अपू०	प्राचीन	स्मृत्वा स्मृत्वा पुराराति तत्प्रसादावलंबनात् । रहस्यं भाट्टतंत्रस्य विशदीकर्तुमस्महे १ यत् ज्ञानाज्जैमिनीयोक्तिः स्फुटीभवति तत्वतः । तद्रहस्यं खंडदेवः प्रकाशयितुमुद्यतः २ (पत्र-सं० १) आदि ।
२४·१ × १०·७ सें० मी०	३४ (१–३४)	१२	४०	पू०	प्राचीन	इत्युमारामकृष्णसुत दिनकरकृते भाट्ट दिनकरे पंचमोध्यायः समाप्तः ॥ शुभं-भवतु ॥
२५ × ११ सें० मी०	१९ (१–१९)	१०	४२	पू०	प्राचीन	इति श्री इन्द्रदेव सूनु खंडदेव कृत १२ स्यः पितमत्वर्थलक्षखंडनं समाप्तं । श्री गोपालकृष्णार्पणमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३५७	५४६३	भाट्टदीपिका	खंडदेव		दे० का०	दे०
३५८	५६२६	भाट्टदीपिका	खंडदेव		दे० का०	दे०
३५९	३३९२	भाट्टदीपिका	खंडदेव		दे० का०	दे०
३६०	५८०६	भाषापरिच्छेद	विश्वनाथपंचानन		दे० का०	दे०
३६१	७६४४	भाषापरिच्छेद	विश्वनाथपंचानन		दे० का०	दे०
३६२	१४१	भेदाधिकार	नृसिंहाश्रममुनि		दे० का०	दे०
३६३	५२१५	मंत्रार्थप्रदीपिका	शत्रुघ्न		दे० का०	दे०
३६४	७३५९	मणिरत्नमाला	तुलसीदास		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·६ × ८·६ सें० मी०	३३ (१–३३)	६	४१	अपू०	प्राचीन	इति श्री खंड देव कृतौ भाट्टदीपिकायां द्वितीयस्याध्याचतुर्थ पादः समाप्तः× × × × ×॥ (पृ० ३३)
२५·५ × ८ सें० मी०	३१ (७–३८)	१०	४४	अपू०	प्राचीन	इति श्री खंडदेव कृतौ भाट्टदीपिकायां दशमस्यद्वितीयः ॥··· (पत्रसंख्या-२६)
२५·३ × ११ सें० मी०	१३ (१–१३)	१०	४७	पू०	प्राचीन	इति स्थानिनोभावनावाचित्व खंडनंरुद्रदेव सुनु खंडदेवकृतं समाप्तं ॥
२५ × १०·५ सें० मी०	१३ (१–१३)	६	२८	पू०	प्राचीन	इति श्री विश्वनाथ पञ्चाननविरचितो भाषापरिच्छेदस्समाप्तः ॥
२५·६ × १०·६ सें० मी०	६ (१–६)	११	३४	पू०	प्राचीन	इति श्रीमहामहोपाध्याय श्रीयुत विश्वनाथ सिद्धांत पंचानन भट्टाचार्य विरचितो भाषापरिच्छेदः समाप्तः ॥
३२ × १३·४ सें० मी०	१२	१०	६२	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीमज्जगन्नाथाश्रम पूज्यपादशिष्य श्री मद्वेदांतसाराभिज्ञ नृसिंहाश्रम मुनि विरचितोभेदाधिक्वारः समाप्तः ॥
२६·३ × १५·३ सें० मी०	१५ (१-५,१३-१७,१६-२० ४७–४६)	१३	५२	अपू०	प्राचीन	इति श्री महामहोपाध्याय श्रीशत्रुघ्न विरचितायां मंत्रार्थप्रदीपिकायां नवग्रहादिमंत्र व्याख्यान परिछेदः समाप्तः ॥ हलायुधेये उग्रटेपिचार्प्यास्ततोवि ॥
३४·८ × १३·१ सें० मी०	३ (१–३)	१०	४२	पू०	प्राचीन सं० १६२६	इति श्रीतुलसीदासविरचिता मणिरत्नमाला संपूर्ण सं० १६२६ के साल ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३६५	६१००	मथुरानाथी पंचलक्षण	मथुरानाथ		दे० का०	दे०
३६६	६३८६	महावाक्यकारिका	विद्याधराचार्य		दे० का०	दे०
३६७	३९९	महावाक्यविवरणं	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
३६८	४५५२	महाकाव्यविवेकव्याख्या	रामकृष्ण		दे० का०	दे०
३६९	३४४४	महावाक्यार्थ	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
३७०	४७९७	महावाक्यार्थ			दे० का०	दे०
३७१	५४७१	महाविवेकव्याख्या	विद्यारण्यमुनि		दे० का०	दे०
३७२	१९६८/२२	मातृमदालसलोरी			दे० का	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२३·५ × १०·२ सें० मी०	२० (१–२०)	१०	२३	पू०	प्राचीन श० १७६७	इदं पुस्तं राधेकृष्णसूनुना रामचंद्रेण वैशाख शुद्धैकादश्यां प्रथमप्रहरे रात्रौ लिखितं ॥ शके १७६७ विश्वावसुनाम संवत्सर ॥
१६·८ × १०·३ सें० मी०	४ (१–४)	१०	२६	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य पंचमाश्रम विभूषितं यतींद्र योगींद्र श्री मज्जगंन्नाथाश्रम स्वामिपादपूज्यक शिष्य श्री स्वयंबोध विद्याधराचार्य विरचिताः षोडष महावाक्यकारिकाः समाप्तोः ॥
२४·५ × १० सें० मी०	४ (१–४)	८	३०	पू०	प्राचीन	इति श्रीमत शंकराचार्य विरचितं महावाक्यं विवरणं संपूर्णं तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु ।
२६·५ × १४.६ सें० मी०	१	१८	५८	पू०	प्राचीन सं० १८६१	इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री भारतीतीर्थं विद्यारण्यमुनिवर्य किंकरेण श्री रामकृष्णाख्य विदूषा विरचिता महावाक्य विवेक व्याख्या समाप्तम् पंचम प्रकार्णेइ सं० १८६१ लिखतं मिश्र मुरलिधर ।
१६·५ × ११·८ सें० मी०	४ (१–३,५)	६	२४	अपू०	प्राचीन	इति मत्प्रमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीमच्छंकर भगवत्पादकृत महावाक्यार्थं संपूर्णम् ॥ शुभमस्तु ॥
१६·२ × १२ सें० मी०	४ (१–४)	१०	२०	पू०	प्राचीन	एवं महावाक्यार्थं सदास्मरतोमुक्ति ध्रुवं भवेत् ॥ (पृ० १)
१६·५ × १०·२ सें० मी०	३ (१–३)	६	१६	अपू०	प्राचीन	
२६·२ × १४·१ सें० मी० (सं०सू० २-५२)	½	६½	४७	पू०	प्राचीन	इतिमात्रुमंदाल्लसायालोरी समाप्तः ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय का आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३७३	७१५	माथुरी पंचलक्षणी			दे० का०	दे०
३७४	६३८५	मानसोल्लास	सुरेश्वराचार्य		दे० का०	दे०
३७५	६८६१	* मानसोल्लास वृत्तांत विलास (सटीक)	विश्वरूपाचार्य	रामतीर्थ	दे० का०	दे०
३७६	२६४०	मितभाषिणी टीका	शिवादित्य		दे० का०	दे०
३७७	३७३२	मितभाषिणी टीका	शिवादित्य	माधवसरस्वती	दे० का०	दे०
३७८	२९०५	मीमांसाकौस्तुभ	खंडदेव		दे० का०	दे०
३७९	५२६	मीमांसादर्शन (शांकरभाष्य)	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
३८०	४९९	मीमांसादीपिप्रकाशिका (१–२ पाद)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३२.४×१० सें० मी०	९ (१–९)	१२	५४	अपू०	प्राचीन	
२१·६×१०.५ सें० मी०	३१ (१-१६,१८-२७,३१-३५)	७	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री मत्सुरेश्वराचार्य विरचितं मानसोल्लास प्रकरणं ॥
२५·७×११·८ सें० मी०	३९ (१–३९)	५७	१४	पू०	प्राचीन	इति श्री दक्षिणामूर्ति स्तोत्र व्याख्या प्रबंध मानसोल्लास वृत्तांतविलासः समाप्तः ॥
२५·७×७·७ सें० मी०	८७	९	७१	अपू०	प्राचीन	
२५·८×११ सें० मी०	२० (२३–४२)	१२	४६	अपू०	प्राचीन	प्रशंसायांलाटा गोरास्ट्रदेशोऽखिल राष्ट्र वर्यः सदाकरोदक्षिण भूमिनिष्ठः ॥ विराजते सह्यगिरेंद्रसानो वत्रास्ति गौकर्ण महाबलेश ॥ १ ॥ दद्देशजन्मायातिरेक दंडी सरस्वती मस्तक माधवाख्यः । सांयं शिवादित्यकृतेर कार्षीदिक काभियांवात्र सुखप्रकृत्यै ॥ २ ॥ माधवाख्ययतीद्रेंण कृष्णातीर निवासिना ॥ कृता सप्तपदार्थ्या स्तुटीकेयं मितभाषिणी ॥ इति श्रीमितभाषिणी समाप्ता ॥ श्रीरस्तु शुभमस्तु ॥ मितभाषिणी पुस्तकम् भारद्वाजदिनकरस्य॥
२५·२×११ सें० मी०	५४ (१-३३, १-२२)	९	४८	अपू०	प्राचीन	इति श्री मत्पूर्वोत्तर मीमांसापारावार यारेण श्री रूद्रदेव सूनोः खंडदेवस्य कृतौमीमांसा कौस्तुभे द्वितीयाध्यायस्य द्वितीयः पादः ॥
२९.५×१२·५ सें० मी०	२६५ (१-१३४,३-१३३)	१३	४६	अपू०	प्राचीन	
२५×१०·८ सें० मी०	१७	१०	३६	पू०	प्राचीन	इति मीमांसा दीपि प्रकाशिकायां प्रथमद्वितीयपादः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३८१	६९५९	मीमांसान्यायप्रकाश (मीमांसाप्रकरण)	आपदेव		मि० का०	दे०
३८२	७८२९	मीमांसान्यायप्रकाश	आपदेव		दे० का०	दे०
३८३	६७२८	मीमांसार्थ संग्रह	लौगाक्षिभास्कर		दे० का०	दे०
३८४	४७४	मीमांसार्थ संग्रह	,,		दे० का०	दे०
३८५	४४१२	मीमांसासूत्रव्याख्या	जैमिनि		दे० का०	दे०
३८६	६०४४	मुक्तावलीप्रकाश			दे० का०	दे०
३८७	१९७९	मुक्तावलीप्रकाश (संस्कृत टीका)			दे० का०	दे०
३८८	३१२१	मुक्तावलीप्रकाश	महादेवभट्ट		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·७ × १०·३ सें० मी०	५१ (१–५१)	१०	३६	पू०	प्राचीन	इति श्रीअनंतदेव सूनुना आपदेवेन कृतं मीमांसा न्याय प्रकाश संज्ञकं मीमासा प्रकरणं समाप्तं ॥
२६·६ × २१.१ सें० मी०	२१ (१-१७,३३-३६)	१४	५२	अपूं०	प्राचीन	इति श्री अनंतदेव सूनुना आपदेवेनकृतं मीमांसा न्यायप्रकाश संज्ञकं मीमा प्रकरणंसमाप्तं ॥ शुभमस्तु ॥
२३.५ × ९·९ सें० मी०	६ (१–६)	१२	४२	पू०	प्राचीन	
२३ × १०·७ सें० मी०	१८	१०	३२	पू०	प्राचीन सं०१९१६	इति श्री महोपाध्याय लौगाक्षि भास्कर विरचिता पूर्वमीमांसार्थसंग्रहनामकंप्रकरणंसमाप्तिमगमत् ॥ ६ ॥ श्री मन्नृपविक्रमार्क संवत् १९१६ पौष मासे शुक्ल पक्षे १२ द्वादश्यां तीथौ गुरुवासरे बालकृष्ण सूनूनाविट्ठलेन-लिखीतं पूर्वमीमांसार्थसंग्रहनामकं पुस्तकं स्वार्थं परार्थंचतत्समाप्तिमगमत् ॥ श्री राधा कृष्णार्पणमस्तु ॥ शुभंभूयात् ॥
२८·५ × ९·४ सें० मी०	३३ (१-३२,३४)	८	४३	अपू०	प्राचीन	
२४ × १०·२ सें० मी०	१४ (१–१४)	१०	४०	अपू०	प्राचीन	
२४ × १०·५ सें० मी०	४० (२–४१)	९	४१	अपू०	प्राचीन	
२४.२ × १० सें० मी०	१४	१०	३८	अपू०	प्राचीन	इति श्री भारद्वाजभट्ट बालकृष्णात्मज महादेव भट्ट कृतौ मुक्तावली प्रकाशे प्रथम परिछेदः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३८९	६३७	मुक्तावलीप्रकाश	महादेवभट्ट		दे० का०	दे०
३९०	६३२३	मुक्तावलीप्रभा	पं० रामनरसिंह		दे० का०	दे०
३९१	४२२९	मुक्तावलीप्रभा	पं० नरसिंहराय		दे० का०	दे०
३९२	३९६	मोक्षशास्त्र			दे० का०	दे०
३९३	४२४८	योगचिंतामणि			दे० का०	दे०
३९४	२६९६	योगप्रकरणम्			दे० का०	दे०
३९५	२०६८	योगबीज			दे० का०	दे०
३९६	६५४३	योगरत्नावली (कालज्ञानविधि)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७ × १० सें० मी०	६६ (२६-४६,४६-७७,७६-६२)	६	४३	अपू०	प्राचीन	इति श्री प्रत्यक्षखंडे मुक्तावलीप्रकाशः समाप्तः ॥ श्रीरस्तु ॥ शुभंभूयात् ॥ लेखक पाठकयार्शुभमस्तु ॥ श्री देव्यैनमः ॥
३२·१ × १४ सें० मी०	१२८ (१–१२८)	१०	३६	अपू०	प्राचीन	…कामाक्षीपदपाथोजेजप्त्वा मुक्तावली-प्रभा श्री रामनरसिम्हाख्य पण्डितेन चिकिर्ष्यते ……… (प्रारंभ)
३४ × १३ सें० मी०	२५ (१–२५)	१०	५६	अपू०	प्राचीन	कामाक्षी पदपाथोजे जप्त्वा मुक्तावली-प्रभा श्री रायणरसिम्हाख्य पण्डितेन चिकिर्ष्यते (प्रारंभ)
१६·२ × १४·७ सें० मी०	३१ (१६–४६)	१२	१७	अपू०	प्राचीन	
२१·५ × १४·५ सें० मी०	५४	११	२८	अपू० (जीर्ण)	प्राचीन	
२७·५ × ११ सें० मी०	४ (१–४)	१३	३८	पू०	प्राचीन	इति श्री नारदपन्चरात्रे ज्ञानामृतसारे योगप्रकरणम् समाप्तम् ।
२१·५ × १० सें० मी०	८ (१–३,१-५)	१४	३६	अपू०	प्राचीन	
२३·६ × ६ सें० मी०	१२ (१-१२)	६	३७	पू०	प्राचीन	इति श्री योग रत्नावल्यां काल ज्ञानादि-विधिः ॥ अस्ते समये सः ॥ तं ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३९७	१९४७	योगवाशिष्ठ (उपशम प्रकरण)			दे० का०	दे०
३९८	३२६२	योगवाशिष्ठ			दे० का०	दे०
३९९	७०१४	योगवाशिष्ठसार			दे० का०	दे०
४००	७००६	योगवाशिष्ठसार			दे० का०	दे०
४०१	३०८४	योगवासिष्ठसार			दे०का०	दे०
४०२	१५५२	योगशास्त्र	दत्तात्रेय		दे० का०	दे०
४०३	४०२९	राजयोग			दे० का०	दे०
४०४	३३३२	रामाभरण			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३४·८ × १५ सें० मी०	७५ (७-३१, ३३-४२, ४४-८५)	१०	५५	अपू०	प्राचीन	
३३·१ × १२·१ सें० मी०	४२	१२	४०	अपू०	प्राचीन	
२५.८ × १०·५ सें० मी०	८ (४–११)	१०	३८	अपू०	प्राचीन	इतिश्री योगवाशिष्ठसारे ब्रह्मनिर्वाण-पद दशमंप्रकरणं ॥ १० ॥ संवत् १७९८ × × × × ×
२०·९ × ११·४ सें० मी०	१५ (१–१५)	८	२६	अपू०	प्राचीन	इति योगवाशिष्ट सारे आत्मनिरुपणं-नामनवमोऽध्यायः × × × × ॥ (पृ० १४)
२० × १०·३ सें० मी०	१५ (३–१५)	१०	२५	अपू०	प्राचीन	योगवासिष्टसार दशमं प्रकरणं ॥
२४ × १२ स० मी०	५ (४-६, ९-१०)	९	३२	अपू०	प्राचीन सं० १८७८	इति श्रीदत्तात्रेयोक्तं योगशास्त्रं संपूर्णं ॥ संवत् १८७८ ज्येष्टमासे कृष्णपक्षे-षष्टीम्यां बुधवासेतदीपुस्तक संपूर्णं समाप्तः ॥ श्री रस्तु ॥ कल्याणमस्तुः ॥
१३ × ७·८ सें० मी०	१० (१–१०)	९	२४	अपू०	प्राचीन	
२७ × ११ सें० मी०	२	१५	५८	पू०	प्राचीन	इति श्री रामाभरणम् ॐतत्सत् ॥

(सं०सू०२-५३)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४०५	४७६३	लघु योगवाशिष्ठसार			दे० का०	दे०
४०६	१४३५/५	लघुवाक्यवृत्तिः			दे० का०	दे०
४०७	१९९१	लघुवाक्यवृत्तिप्रकरण	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
४०८	४०२८	लघुवाक्यवृत्तिसटीक			दे० का०	दे०
४०९	१२७७	लिंगोपहित लैंगिक भान विचार			दे० का०	दे०
४१०	१६८९	लिङ्गोपहितलैङ्गिक-भान विचार			दे० का०	दे०
४११	४६८१	वर्णांकवेदांत			दे० का०	दे०
४१२	३०९५	वाक्यवृत्तिप्रकाशिका		पं० नंदस्वरूप	दे० का	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·६ × १२·३ सें० मी०	१४ (१–१४)	९	३२	पू०	प्राचीन सं० १८६९	इति श्री लघुयोगवाशिष्ठ सारे निर्वाण प्रकरणं नाम दशमं ॥ शके १७३४ सं० १८६९ अधीक वैशाख शुक्ल १३ दिने समाप्तं ॥
२२·५ × १० सें० मी०	४	१०	३६	पू०	प्राचीन	इति लघुवाक्य वृत्ति समाप्ता ॥
३२ × १२·७ सें० मी०	६	१०	४१	पू०	प्राचीन	इति श्रीमच्छंकरार्य विरचितं लघुवाक्य, वृति प्रकरणं संपूर्णम् ॥ श्री राम शिव··· ··· ···॥
१८·५ × ९·५ सें० मी०	६ (१–६)	१४	३५	पू०	प्राचीन	इति श्री मदाचार्य विरचितं लघुवाक्य वृत्तिप्रकरणं समाप्तं ॥ इति लघुवाक्य वृत्ति टीकायां पुष्पांजलयभिधायां वेदान्त प्रकरणं सपूर्णं ॥
२२·५ × ८·७ सें० मी०	३५	११	३०	पू० (खंडित)	प्राचीन सं० १७४१	इति लिंगोपहित लैंगिक भान विचार: समाप्त: ॥ संवत् १७४१ शाके १६०६ आश्विन शुद्ध प्रतिपदा ॥··· ··· ···
२१·३ × ८·३ सें० मी०	९ (३–१४)	१०	५५	पू०	प्राचीन	इति लिंगोपहित लैंगिक भान विचार ॥ शुभं ॥श्री॥
२४·२ × १०·९ सें० मी०	२९	८	२६	अपू०	प्राचीन	
४२ × १६·८ सें० मी०	२५ (१–२५)	११	५५	पू०	प्राचीन सं० १८८३	इति श्री मन्महायोगी माधवप्राज्ञ गुरु ······नंदस्वरूप विश्वेश्वर पंडित विरचिता वाक्य वृत्ति प्रकाशिका समाप्ता: । श्रीसच्चिदानंदर्पणमस्तु ॥ संवत् १८८३ वर्षे मार्गशीष० ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४१३	५६७०	वाक्यसुधा	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
४१४	६३८७	वाक्यसुधानामप्रकरण	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
४१५	१५३६	वादसुधाकर	देवीदत्त		दे० का०	दे०
४१६	१२६०	वायुप्रत्यक्षवाद	रामचंद्र		दे० का०	दे०
४१७	३६१६	वार्तिक टीका (शास्त्रप्रकाशिका)	सुरेश्वराचार्य	भगवदानंद	दे० का०	दे०
४१८	३६१५	वार्तिक टीका	सुरेश्वराचार्य		दे० का०	दे०
४१९	६१५१	वाशिष्ठचंद्रिका (योगवाशिष्ठ टीका)		आत्मसुख	दे० का०	दे०
४२०	७२९२	वाचस्पतिप्रक्रिया	वाचस्पति मिश्र		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार॰	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४.२ × ९·५ सें० मी०	४ (१–४)	१०	३७	पू०	प्राचीन	……तत्र तावद्भगवान् शंकराचार्य्योऽविद्या विषचरमुषितप्रबोधस्य जगतोऽनुग्रहाय वाक्यसुधानामशास्त्र संग्रहंचकार।…… (प्रारंभ)
२१·४ × १०·१ सें० मी०	४ (१–४)	१७	४९	पू०	प्राचीन	इति श्री शंकराचार्य विरचितं वाक्य सुधा नाम प्रकरणं संपूर्णं॥ शुभमस्तु॥
२६·४ × ११·४ सें० मी०	१४ (४–१७)	१२	३९	अपू०	प्राचीन सं० १९२५	इति श्रीदेवीदत्ताचार्यकृतवाद सुधारक्रोविदुषाम्मुदेऽस्तु॥…समाप्तोऽयंग्रंथः॥
२३ × १० सें० मी०	९	१०	३२	पू०	प्राचीन	इति श्रीमट्टाचार्य सार्वभौम श्रीरामचंद्रविरचितोवायु प्रत्यक्षवादः समाप्तः॥ श्रीरामायनमः॥ श्रीगणेशायनमः॥
३०·८ × ९ सें० मी०	३२७ (१-११५, १-१०५, २१६-२६६, १-२२, १-३४)	९	५२	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्यं शुद्धानंद पूज्यपादशिष्यस्यभगवदानंदज्ञानेनकृतायां सुरेश्वरवर्त्तिकटीकायां शास्त्रकाशिकायामष्टमोध्यायः समाप्त॥ ॥ शुभमस्तु॥
३१·१ × ९·२ सें० मी०	२६४ (१-२१४, २१६-२६५)	९	५१	अपू०	प्राचीन	सुरेश्वराचार्यं वार्तिक टीकायां शास्त्रप्रकाशकायां षष्टोध्याय प्रारंभः॥ (प्रथम पत्र से)।
३१·५ × १३ सें० मी०	३७ (१९१-२१४, २१९-२३१)	१३	४२	अपू०	प्राचीन	इति श्री वाल्मीकीयेरामायणो मोक्षोपाये श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्योत्तम सुखपूज्यपाद शिष्य श्रीमदात्मजसुखकृतौ वासिष्ठचंद्रिकायां संसारतरणिनास्ति निर्वाण प्रकरणे वैतालोपाख्यानं नामपंचत्रिशः सर्गः॥ (पत्र सं० २२८)
२४·८ × १०·२ सें० मी०	१०३ (१–१०३)	१२	३५	अपू० (खंडित)	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४२१	२३७७	विज्ञाननौकापदव्याख्या	मुकुंद परिव्राजक		दे० का०	दे०
४२२	१२६६	वितंडावादनिरूपण			दे० का०	दे०
४२३	१२६३	विद्याविवेक	विज्ञानभिक्षु		दे० का०	दे०
४२४	७७३	विद्वन्मोदतरंगिणी	चिरंजीवभट्टाचार्य		दे० का०	दे०
४२५	१७६६	विधिरसायनदूषण	शंकरभट्ट		दे० का०	दे०
४२६	१२६१	विपरीतज्ञानादिविनिश्चय			दे० का०	दे०
४२७	११६७	विवेकसिंधु			दे० का०	दे०
४२८	३००४	विशिष्टबोध			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५·५ × १०·७ सें० मी०	१	१०	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री मुकुंद नाम्ना परिव्राजकेन कृता विज्ञान नौका पद व्याख्या समाप्ता वाच ।।
२४·५ × ९ सें० मी०	२४ (१–२४)	१०	४३	पू०	प्राचीन	··· ··· निवेशनीयवलदनिज्ञाननुबंधित्वविशिष्टेष्ट साधन ।।
२८·५ × १२ सें० मी०	८	१३	४०	पू०	प्राचीन	इति विद्या विवेक प्रकरणं समाप्तं ।।
२१ × ८·२ सें० मी०	२७	८	३८	अपू०	प्राचीन	
२६·३ × ११.२ सें० मी०	२६ (२७–५२)	१०	४८	अपू०	प्राचीन सं० १७६५	इति श्री मत्पदवाक्यप्रमाणपारावारपारीणधुरीणमीमांसाद्वैतसाम्राज्य धुरंधर श्री भट्टनारायणात्मज भट्टशंकर कृतं विधिरसायनदूषण समाप्तं ।। ··· संवत् १७६५ फाल्गुन सुदी एकादशी लिख्यते ।।
२३ × १० सें० मी०	२८ (१–२८)	९	३०	पू०	प्राचीन	इति ज्ञानादिविशिष्ट बुध्यो: प्रतिवध्यप्रति बंधक भाव विवेक: ।।
२२·५ × ९·६ सें० मी०	२२ (१–२२)	११	३५	पू०	प्राचीन	इति विवेक सिन्धु समाप्त: ।।
२३ × ८ सें० मी०	४ (१–४)	१०	३८	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४२९	२५४९	विशिष्टाद्वैतविजयवाद			दे० का०	दे०
४३०	१२५९	विषयताविचार			दे० का०	दे०
४३१	७८३५	वेदप्रामाण्यविचार			दे० का०	दे०
४३२	६१२१	वेदस्तुतिटीका		श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
४३३	३०४२	वेदस्तुतिटीका		श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
४३४	२०९३	वेदांतटीकाभाष्य			दे० का०	दे०
४३५	७२२१	वेदांतदर्शन			दे० का०	दे०
४३६	३३४६	वेदांतदीपिका	वनमालिब्रह्मचारी		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६·७ × ८·४ सें० मी०	१० (१–१०)	१०	२६	पू० क्रमिकं तित	प्राचीन सं०१९०६	इति श्री नै ध्रुवकाश्यप गोत्रपवित्रेण श्री मद्राघव सूनुना............संवत् १९०६ श्री रामायनमोनमः ॥
२३·५ × ९ सें० मी०	१२	९	४५	पू०	प्राचीन सं०१७८८	इति विषयता। विचारः समाप्तः॥राम॥
२५·८ × ७·४ सें० मी०	२९ (११,१९-४४ ४६-४७)	७	५०	अपू०	प्राचीन	
२७·३ × ११·२ सें० मी०	३ (२–४)	९	२७	अपू०	प्राचीन	
२९·३ × १४·९ सें० मी०	३९ (१–३९)	१५	४२	अपू०	प्राचीन	
२५·१ × ११ सें० मी०	२२ (५१-५५,५७-७२,७४)	८	३४	अपू०	प्राचीन	
३२ × १२·१ सें० मी०	५५ (५४–१०९)	११	३३	अपू०	प्राचीन	
३४·८ × १३·४ सें० मी०	३३ (१–३२)	१०	५८	पू०	प्राचीन सं०१८८१	इति श्री वनमालि ब्रह्मचारिविरचिता वेदांत दीपिका संपूर्णतामगात् ग्रंथ संख्या ॥१००॥ शुभमस्तु संवत् ८१ ॥

(सं०सू० २-५४)

...मांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४३७	६७७६	वेदांतपरिभाषा	धर्मराजाध्वरींद्र		दे० का०	दे०
४३८	२८३०	वेदांतपरिभाषा	धर्मराज दीक्षित		दे० का०	दे०
४३९	२९८	वेदांतमंजरी			दे० का०	दे०
४४०	३६५०	वेदांतमीमांसा सूत्र (चतुर्थ अध्याय)	वेदव्यास		दे० का०	दे०
४४१	२३४२	वेदान्तरहस्य प्रकरण	वेदांतवागीश भट्टाचार्य		दे० का०	दे०
४४२	७७७	वेदांतसार			दे० का०	दे०
४४३	३६६८	वेदांतसार			दे० का०	दे०
४४४	३६७१	वेदांतसार	सदानंद		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
२४·८ × ९·१ सें० मी०	२२ (१–२२)	१४	४८	पू०	प्राचीन	इति धर्मराजाध्वरीन्द्र विरचिता वेदांत परिभाषा ॥
२५ × १०·५ सें० मी०	४६ (१–४६)	६	३९	पू०	प्राचीन सं०१८४६	इति श्रीधर्मराज दीक्षित विरचिता वेदांत परिभापा समाप्ता संवत१८४६ ॥
३१·१ × १०·६ सें० मी०	१५ (१-१२,१५-१७)	८	४१	अपू०	प्राचीन	
१७·७ × ९ सें० मी०	२२ (१–२२)	८	२३	पू०	प्राचीन सं०१७७९	इति श्री भगवद्वेदव्याम कृतौ वेदांत मीमांसा सूत्रे चतुर्थस्याध्यायस्य चतुर्थः पादः ॥ १७७९ ॥
३० × १२·५ सें० मी०	४ (३–६)	१०	३०	अपू०	प्राचीन	इति श्री वेदांत वागीश भट्टाचार्य विरचिता वेदांत रहस्याख्यं प्रकरणं सामाप्तं ॥ श्री ॥
२१·३ × ११ सें० मी०	६	१०	२८	अपू०	प्राचीन	
२४ × ११ सें० मी०	८० (१–८०)	१५	४०	पू०	प्राचीन सं०१७४०	इति श्री वेदांतसंक्षेपसंग्रहप्रकरणं संपूर्णं शिवोहं शुभमवतु ॥ शके १७४० माघकृष्णोदशी मङ्गलवासरे चंद्रवासरा-ह्निसमाप्तः ॥
२२·५ × ८·४ सें० मी०	१५ (१–१५)	९	४०	पू०	प्राचीन	इति श्री परमहंस परिव्राजकाचार्य सदानंद कृतौ वेदांतसारः समाप्तः ॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४४५	३८४२/३	वेदांतसार	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
४४६	४७७	वेदांतसार	श्रीपरमहंस परिव्राजकाचार्य सदानंद		दे० का०	दे०
४४७	३९१३	वेदांतसार	सदानंद		दे० का०	दे०
४४८	३४०९	वेदांतसार	सदानंद		दे० का०	दे०
४४९	५१५१	वेदांतसार			दे० का०	दे०
४५०	१७५६	वेदांतसार	सदानंद		दे० का०	दे०
४५१	१२११	वेदांतसार	श्रीशंकराचार्य		दे० का०	दे०
४५२	११३५	वेदांतसार			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार.	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१४·५ × ९.५ सें० मी०	२	१४	१४	अपू०	प्राचीन	इति श्री शंकरार्य विरचितं वेदांतसारं समाप्तं ॥
२९·७ × ११·७ सें० मी०	९ (१–९)	१२	५०	पू०	प्राचीन	इति श्रीपरमहंस पारिव्राजकाचार्य सदानंद कृतौ वेदातसारः समाप्तः ॥ शुभम् ।
२५ × १२.६ सें० मी०	१६ (१–१६)	१०	३३	पू०	प्राचीन	इति श्रीपरमहंस परिव्राजकाचार्य सदानंद कृतौ वेदांतसार समाप्तं ॥ शुभ मस्तु ॥ श्री रस्तु ॥
१६ × ९·६ सें० मी०	४५ (१–४५)	७	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य सदानंद विरचितो वेदांतसारः समाप्त ।
३३·५ × १२ सें० मी०	१० (१-९,१)	११	४४	अपू०	प्राचीन	
२४ × ७·७ सें० मी०	२१ (१–२१)	७	३९	पू०	प्राचीन सं०१८६४	इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य सदानंदकृतौ वेदान्तसारः समाप्तः ॥ ब्रह्मार्पणमस्तु ॥ सं० १८६४ ॥ फाल्गुने मासे कृष्णपक्षे प्रतिपदायां पुण्यथौ ॥
१८·५ × १०·५ सें० मी०	१७ (४–२०)	९	२६	अपू०	प्राचीन	
३२ × १२·१ सें० मी०	६ (१,३-७)	१३	६२	अपू०	प्राचीन	इति श्रीपरमहंस परिव्राजकाचार्य सदानंद विरचितो वेदांत सारः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४५३	३१३१	वेदांतसार	सदानंद		मि० का०	दे०
४५४	७८६८	वेदांतसार (सुबोधिनी टीका)		नृसिंह सरस्वती	दे० का०	दे०
४५५	४७८७	वेदांतसार		नृसिंह सरस्वती	दे० का०	दे०
४५६	५२६३	वेदांतसार टीका			दे०	दे०
४५७	३४८८	वेदांतसार टीका			दे० का०	दे०
४५८	२४२४	वेदांतसार टीका			दे० का०	दे०
४५९	३३२७	वेदांतसार टीका (विद्वन्मनोरंजनी)		रामतीर्थ	दे० का०	दे०
४६०	७८९९	वेदांतसार टीका (विद्वन्मनोरंजनी)		रामतीर्थ यति	दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·७ × ११ सें० मी०	१९ (१–१९)	७	४०	पू०	सं०१९३८	इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य सदानंद विरचितो वेदांतसार समाप्तः ।। ··· ··· ··· ···सम १९३८० तद्दिने समाप्तं ।। श्रीरामचंद्रार्पणमस्तु ।।
२७·५ × ११·९ सें० मी०	६० (१·५८,६०-६१)	९	४४	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री कृष्णानंदभगवत्पूज्यपाद शिष्य नरसिंह सरस्वती कृता वेदांतसार टीका सुबोधिनी समाप्ता ।।
३१·२ × ११·९ सें० मी०	१९ (१–१९)	१२	८०	पू०	प्राचीन	श्रीपरमहंसपरिव्राजकाचार्य श्री कृष्णानन्दभगवत्पूज्य पादशिष्य नृसिंह रसस्वती कृत्ता वेदान्त सार टीका समाप्ता ।।
२७.३ × ११ सें० मी०	२२ (१,११-२८, २८-३०)	९	३४	अपू०	प्राचीन	
२५·५ × ९·५ सें० मी०	२२ (१–२२)	६	२९	अपू०	प्राचीन	
३३·४ × १४·५ सें० मी०	१० (१–१०)	१४	४१	अपू०	प्राचीन	
२७·७ × १४·२ सें० मी०	८१ (१–८१)	१२	३५	पू०	प्राचीन	वेदान्त सारवृत्ति रामतीर्थाभिधोयतिः चक्रे श्रीकृष्ण तीर्थ श्रीपदपंकजषट्पदः ।। इति श्रीवेदांतसार टीका विद्वन्मनोरञ्जनीसमाप्ता ।।
२९·५ × ११·१ सें० मी०	४३ (१-१६,१८-४४)	१४	५४	अपू०	प्राचीन	इति श्रीवेदांतसार टीका विद्वन्मनोरंजनी समाप्ता ।। × × × ×

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४६१	१६१७	वेदांतसार भाष्य		शेखरभट्ट	दे० का०	दे०
४६२	७४३६	वेदांतसारविवृति (विद्वन्मनोरंजनी)	रामानुजाचार्य	रामतीर्थ	दे० का०	दे०
४६३	६५६	* वेदांत सूत्र (राधावल्लभीयभाष्य)		विश्वनाथ सिंह जूदेव	दे० का०	दे०
४६४	१३५७	वेदांतसूत्रवृत्ति			दे० का०	दे०
४६५	७४७६	वेदांतसूत्रभाष्य			दे० का०	दे०
४६६	१४५६	वेदांत सूत्र (राधावल्लभीयभाष्य)		विश्वनाथ सिंह जूदेव	दे० का०	दे०
४६७	२७०५	वेदांतार्थकाशिका (ज्ञानचंद्रिका टीका)	निबानंदाचार्य	केशवकाश्मीरी	दे० का०	दे०
४६८	२६३७ / १२	वैकुंठगद्यत्रयम्	रामानुजाचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२८ × १०·५ सें० मी०	१	८	३५	अपू०	प्राचीन	
३१ × १२·२ सें० मी०	६४ (२,२-६४)	१४	४२	अपू०	प्राचीन	इति श्री वेदांत सार टीका विद्वन्मनोरंजनी समाप्ता ॥'''शुभमस्तु ॥ संवत् १९०८'''लिषितं पं० श्री नायक राम गोपालेन ॥ मुक्काम जबलपुर ॥
३२·५ × १३·२ सें० मी०	६९७ (१)–२४९ (२)–१८८ (३)–१८१ (४)– ७९	४	३४	अपू०	प्राचीन सं०१९०४	इति श्रीमद्‌भगवदवतारवेदार्थंनिर्णायक श्रीमद्‌वेद वेदान्ताचार्यं श्रीमद्‌वेदव्यासकृत वेदान्तसूत्राणांसिद्धि श्रीमहाराजाधिराज श्रीमहाराजा श्रीराजाबहादुर श्रीसीतारामचन्द्र कृपापात्राधिकारी विश्वनाथसिहजूदेवकृते श्रीराधावल्लभीयमतप्रवर्तकभाष्येचतुर्थाध्यायस्य चतुर्थः पादः चतुर्थाध्यायंचसिद्धः शुभंभूयात् श्रीसीता रामचन्द्रायनम४ मिती ज्यष्ठे शुक्लनवमी संवत् १९०४: शुभमस्तु मंगलंभूयात् श्रीरामचन्द्रायनमः राम, राम, राम
२८·८ × १०·४ सें० मी०	३३ (३९–७२)	११	५०	अपू०	प्राचीन	
३२·१ × १२·१ सें० मी०	४५	१०	४३	अपू०	प्राचीन	
३२ × १२·३ सें० मी०	१८५	४	३४	अपू०	प्राचीन	
२९ × ११·३ सें० मी०	९ (१–९)	८	४१	पू०	प्राचीन	इति श्रीभगवन् निवानंदाचार्यं कृता वेदांनार्थंकाशिका दशश्लोकी समाप्ता ॥ ......इति श्रीवेदांतार्थं काशिकायाः टीका श्री केशव काश्मीरी कृता ज्ञानचंद्रिका समाप्ता ॥
१३·१ × ८ सें० मी० (सं०पु० १-५४)	३८ (१–३८)	७	१४	पू०	प्राचीन सं०१९०५	इति श्री रामानुजार्यं कृतं वैकुंठगद्यत्रयं संपूर्णं शुभं सं० १९०५ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४६६	२६३७/१२	वैराग्यपंचकम्			दे० का०	दे०
४७०	२६६६	वैराग्यशतक सटीक			दे० का०	दे०
४७१	६८६७	वैयासिकन्यायरत्नमाला	भारतीतीर्थमुनि		दे० का०	दे०
४७२	२५०१	व्याप्तिअनुमान जागदीशी			दे० का०	दे०
४७३	६८	व्याप्तिवादपूर्वपक्ष		जयरामभट्ट	दे० का०	दे०
४७४	७३२०	व्युत्पत्तिवाद			दे० का०	दे०
४७५	६२३४	व्युत्पत्तिवाद			दे० का०	दे०
४७६	६०२६	व्युत्पत्तिवाद			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१३·१ × ८ सें० मी०	२	७	१४	पू०	प्राचीन	इति श्री वैराग्य पंचकं संपूर्ण ॥
३०·७ × १४·६ सें० मी०	२३ (१–२३)	१४	३८	पू०	प्राचीन सं० १८८६	इति श्री भर्तृहरिणाप्रोक्तं वैराग्यशतकं सटीकं समाप्तम्··· ·संवत् १८८६···॥
२७·५ × ११·५ सें० मी०	१०१ (१–१०१)	१०	४१	पू०	प्राचीन	इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री भारतीतीर्थ मुनि प्रणीतायां वैयासिक न्यायमालायां चतुर्थाध्यायस्य चतुर्थः पादः ॥ समाप्तावेदांताधिकरण रत्नमाला ॥ इदे पुस्तकं त्र्यंवक भट्टात्मज मुकंदभट्ट कवीश्वरस्येदं ॥ ॐ श्री महा लक्ष्म्यै नमः ॥
२७ × ११·२ सें० मी०	१६ (१९-३०,५०, ५५-५७)	१२	४६	अपू०	प्राचीन	
२२·४ × ९·२ सें० मी०	१८१	१६	३५	अपू०	प्राचीन	इदं पुस्तकं महादेवभट्टस्यभट्टबालकृष्ण सूनोःप्रायश्चहस्ताक्षरं॥यथाकथंचित्संपादितं स्वार्थं॥ जयरामभट्टाचार्यनी टिप्पणी व्याप्तिवादेंपूर्वपक्षे अप्टलक्षणांनप्रथमथकी लिखीसंकष्टे करीनं सांभाली नेरा खि··· ··· ···॥
३१·४ × १०·६ सें० मी०	१२ (१–१२)	११	४४	अपू०	प्राचीन	
२६·८ × ११·५ सें० मी०	५ (१–५)	९	३५	अपू०	प्राचीन	
२७·३ × ११·६ सें० मी०	३ (१–३)	९	५०	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४७७	११२४	व्युत्पत्तिवाद			दे० का०	दे०
४७८	७२२९	व्युत्पत्तिवाद			दे० का०	दे०
४७९	६९२४	व्युत्पत्तिवाद			दे० का०	दे०
४८०	७१६	व्युत्पत्ति वाद	गदाधर भट्टाचार्य		दे० का०	दे०
४८१	१९९	व्युत्पत्तिवाद	गदाधर भट्टाचार्य		दे० का०	दे०
४८२	२९९८	व्युत्पत्तिवाद			दे० का०	दे०
४८३	२९९७	व्युत्पत्तिवाद			दे० का०	दे०
४८४	६९२७	शक्तितत्वबोध			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७ × ९.७ सें० मी०	१३२	११	४८	अपू०	प्राचीन	
३१.८ × १०.५ सें० मी	४९ (१–४९)	११	५०	अपू०	प्राचीन	
२४.४ × ९ सें० मी०	३४ (१–३४)	१०	३६	अपू०	प्राचीन	
३२.५ × १२.३ सें० मी०	२४ (१–२४)	१२	५६	अपू०	प्राचीन	
२३ × १० सें० मी०	३३	९	३५	अपू०	प्राचीन	
२६.७ × ११.५ सें० मी०	१६ (१–१६)	८	४७	अपू०	प्राचीन	
२५.५ × ७.४ सें० मी०	३३	७	४८	अपू०	प्राचीन	
२४.४ × ९.४ सें० मी०	४१ (१–४१)	८	३२	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४८५	२०९८	शतदूषिणी			दे० का०	दे०
४८६	२५१८	शब्दप्रामाण्य			दे० का०	दे०
४८७	१५२१	शब्दमणिसार	भावानंदसिद्धांत वागीश		दे० का०	दे०
४८८	६९२८	शब्दशक्तिप्रकाशिका	जगदीश		दे० का०	दे०
४८९	७३३३	शब्दशक्तिप्रकाशिका (सुबोधिनी)	रामभद्रसिद्धांत-वागीश भट्टाचार्य		दे० का०	दे०
४९०	५९४	शब्दालोक	म० म० जयदेव मिश्र		दे० का०	दे०
४९१	३०५२	शारीरिकमीमांसाभाष्य		रामानुज	दे० का०	दे०
४९२	३९४६	शारीरिकमीमांसाभाष्य	रामानुज		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३१.६ × १५.३ सें० मी०	७ (१–७)	१४	५०	पू०	प्राचीन सं० १८८८	इति श्रीमन्नारायणचरणनलिन द्विरेफाणांवादीमके शरिणां··· ··· संवत् १८८८ के ॥
२४ × ६ सें० मी०	१३	१०	३७	अपू०	प्राचीन	
२३.५ × ६ सें० मी०	४७ (१-४५,४७-४८)	१०	३५	अपू०	प्राचीन	
२४·८ × ६.५ सें० मी०	८० (१–८०)	१०	४५	अपू०	प्राचीन	तर्के तंत्रं व विदुषा विदुषांतोषकारिका। क्रियने जगदीशेन शब्द शक्ति प्रकाशिका··· ··· (प्रारंभ)
२६ × १०·६ सें० मी०	५१ (१–५१)	१२	३५	पू० (जीर्ण)	प्राचीन	इति नवद्वीपीय महामहोपाध्याय श्री रामभद्र सिद्धांत वागीश भट्टाचार्य विरचिता शब्द शक्ति प्रकाशिका सुबोधिनी पथिनी समाप्ता ॥ × ×
२७ × ६.५ सें० मी०	७५ (१०१-१७५)	८	४४	अपू०	प्राचीन	इति महामहोपाध्याय श्री जयदेव मिश्र विरचितः शब्दालोकः समाप्तिमगमत् ॥ श्री वासुदेवायनमः ॥
२६·४ × ११·४ सें० मी०	२८६	१०	३५	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्रामानुज विरचिते शारीरक मीमांसाभाष्ये प्रथमस्याध्यायस्य चतुर्थः पादः ॥ श्री महागणाधिपतयेनमः ॥
३४·३ × १४·६ सें० मी०	५४	२०	५१	अपू०	प्राचीन	इति श्रीभगवद्रामानुजविरचिते शारीरक मीमांसा भाष्ये प्रथमस्याध्यायस्य चतुर्थ पादः समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४६३	६८६२	शारीरिकमीमांसाभाष्य	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
४६४	६७२४	शारीरकसूत्र (वेदांत सारप्रकरण)			दे० का०	दे०
४६५	५५०८	शास्त्रदीपिका			दे० का०	दे०
४६६	७७२५	शास्त्रदीपिका	पार्थसारथीमिश्र		दे० का०	दे०
४६७	२६०४	शास्त्रदीपिका			दे० का०	दे०
४६८	३१४६	शास्त्रदीपिका (संस्कृत टीका)		वैद्यनाथभट्ट	दे० का०	दे०
४६९	८१६	*शास्त्रदीपिका	पार्थसारथीमिश्र		दे० का०	दे०
४७०	१६७१	शास्त्रदीपिका	पार्थसारथीमिश्र		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·५ × १२·७ सें० मी०	अ०—१०० अ०—९६ च०अ०—३४ योग—२३०	११	४८	पू०	प्राचीन	इति श्रीशारीरक मीमांसाभाष्ये श्रीमच्छंकर भगवतः ॥ कृतौचतुर्थाध्यायस्य चतुर्थः पादः परिपूर्णः ॥०॥ समाप्तमिदं शांकरभाष्यं ॥
२२.२ × ९.५ सें० मी०	१३ (१—१३)	१०	३४	पू०	प्राचीन	··· ··· वेदांतो नामोपनिषत्प्रमाणं ॥ तदुपकारीणिच शारीरक सूत्रादीनि। अस्य वेदान्त प्रकरणत्वात्तदीयैरेवानुबंधैस्तद्वत्तासिद्धेर्नते पृथगालोचनीयाः ॥ ··· (पत्र सं०—१) इति वेदांतसाराख्यं प्रकरणं समाप्तं ॥ ··· (पत्र-सं०—१३)
२७ × १०·२ सें० मी०	११ (१०६-११६)	८	२६	अपू०	प्राचीन	इति श्रीशास्त्र दीपिकायां तृतीयस्याध्यायस्याष्टमः पादः ॥ समाप्तः ॥ अध्यायश्च समाप्तः ॥
२५·७ × ९.७ सें० मी०	१४८	१०	४६	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमहामहोपाध्याय श्री पार्थसारथिमिश्रविरचितायां शास्त्रदीपिकायां चतुर्थस्याध्यायस्य चतुर्थः पादः सामाप्तः ॥ शुभमस्त ॥
२२.२ × ८.९ सें० मी०	२५ (१—२५)	११	३३	अपू०	प्राचीन	
२८·५ × १२.२ सें० मी०	१९ (१—१९)	११	५७	पू०	प्राचीन	इतिश्रीमद्पदवाक्यप्रमाणज्ञ तत्सद्राम-चंद्राम भट्टात्मज वैद्यनाथभट्टोन्नीतायां-शास्त्रदीपिका टीकायां प्रभाख्यायां प्रथमाध्यायद्वितीयचरणः संपूर्णः ॥ ··· ···
२६ × ११ सें० मी०	२८ (५—३२)	१२	४२	अपू०	प्राचीन सं०१६६३	इति उपाध्याय श्रीपार्थसारथीमिश्रविरचितायां शास्त्रदीपिकायां षष्टस्याध्यायस्याष्टमः पादः ॥ शुभमस्तु ॥ संवत् १६६३ पौषशुदि त्रयोदसी ।
२८·८ × ६.२ सें० मी० (सं०सू०२—५६)	३५ (१—३५)	८	६२	पू०	प्राचीन	इति श्रीमाहामहोपाध्याय श्रीपार्थसारथिमिश्र विरचितायां शास्त्र दीपिकायां षष्टाध्यायस्याष्टमः पादः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५०१	१९७०	शास्त्रदीपिका	पार्थसारथि मिश्र		दे० का०	दे०
५०२	१९६८	शास्त्रदीपिका	पार्थसारथि मिश्र		दे० का०	दे०
५०३	१९६९	शास्त्रदीपिका (अष्टमाध्याय)	पार्थसारथि मिश्र		दे० का०	दे०
५०४	२१४४	शास्त्रदीपिका (सप्तम अध्याय)	पार्थसारथि मिश्र		दे० का०	दे०
५०५	६३२९	शास्त्रदीपिका			दे० का०	दे०
५०६	१३४५	शास्त्रदीपिकाप्रकाश (३–४ पादः)	चंपकनाथ		दे० का०	दे०
५०७	२१३२	शास्त्रदीपिकाव्याख्या (२–३) अध्याय		वैद्यनाथ	दे० का०	दे०
५०८	३३७०	शिरोमणि टीका	जगदीश भट्टाचार्य		दे० का	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार*	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
२९ × ६ सें० मी०	११ (१–११)	९	६१	अपू०	प्राचीन	
२९ × ६·२ सें० मी०	६३ (१–६३)	१०	६२	अपू०	प्राचीन	
२९ × ६.२ सें० मी०	७ (१–७)	९	६१	पू०	प्राचीन	इति श्रीमहामहोपाध्याय श्रीपार्थसारथि मिश्र विरचितायां शास्त्रदीपिकायामष्ट-माध्यस्य चतुर्थःपाद ॥ श्री दक्षिणा-मूर्त्तयेनमः ॥
२९ × ६·३ सें० मी०	११ (१–११)	९	६२	पू०	प्राचीन	इति श्रीपार्थसारथिमिश्रोपाध्याय विर-चितायांशास्त्र दीपिकायां सप्तमाध्याय-स्यचतुर्थः पाद ॥
२९·५ × ९ सें० मी०	४४ (१-२५,२७-३५,३७-४६)	७	४५	अपू०	प्राचीन	इति शास्त्रदीपिकायां प्रथमाध्यायस्य तृतीयपादः ॥..........(पत्र सं० ३५)
२८·७ × १२·२ सें० मी०	५८ (१–५८)	११	४०	पू०	प्राचीन	इति श्री चंपकनाथ कृतौ शास्त्रदीपिका व्याख्याने प्रकाशाख्याने प्रथमाध्यायस्य चतुर्थः पादः समाप्तश्चाध्यायः ॥ अथ द्वितीयो ॥
३१.७ × १२ सें० मी०	१२६ (१–५१, १–७५)	११	४६	पू०	प्राचीन	इति श्रीमत्पद... ...वैद्यनाथ कृतायां शास्त्रदीपिकाख्यायां तृतीयोध्यायाः संपूर्णः... ...॥
२४·१ × १०·२ सें० मी०	२४ (१–२४)	९	३२	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५०९	२५१६	शिरोमणि टीका			दे० का०	दे०
५१०	२३३१	शिरोमणि टीका			दे० का०	दे०
५११	२२८५	शिरोमणि टीका			दे० का०	दे०
५१२	३०९६	शिरोमणि टीका (अनुमान खंड)			दे० का०	दे०
५१३	२३४७	शिरोमणि टीका (उपाधिवादरहस्य)			दे० का०	दे०
५१४	३२२९	शिरोमणि टीका (पक्षतावाद)			दे० का०	दे०
५१५	२२८४	शिरोमणि टीका (हेत्वाभास प्रकरण)			दे० का०	दे०
५१६	५०४१	शिरोमणि टीका जागदीशी	जगदीश भट्टाचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों का पृष्ठों आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·५ × ११ सें० मी०	१२८	११	५२	अपू०	प्राचीन	
२६·५ × ११ सें० मी०	६१	११	५२	अपू०	प्राचीन	
२७·५ × ११·२ सें० मी०	३९ (४–४२)	१२	५६	अपू०	प्राचीन	
३५ × १५·२ सें० मी०	५० (१-५,७-११, १३-५२)	१०	५०	अपू०	प्राचीन	
२७·५ × ११·५ सें० मी०	३२ (३०–६१)	१३	४६	अपू०	प्राचीन	
२६.५ × १२·४ सें० मी०	५४ (१–५४)	१३	४३	पू०	प्राचीन	इति पक्षता टिप्पणी समाप्ता ।। श्रीसिद्धेश्वर्यै नमः ।। श्री ।।
२७ × १०·५ सें० मी०	४७ (१-४०,४८, ५४)	११	५०	अपू०	प्राचीन	
२८ × ९.४ सें० मी०	५७ (२२–७८)	११	४८	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५१७	७८२४	शिरोमणिटीका जागदीशी			दे० का०	दे०
५१८	७८८८	शिवसंहिता			दे० का०	दे०
५१९	१७७९	श्रुतिसार	[illegible]		दे० का०	दे०
५२०	१६७६	श्रुतिसूत्र तात्पर्य्यामृत (सटीक)		प्रियादासाचार्य्य	दे० का०	दे०
५२१	२७४८	संक्षेप शारीरक (प्रथमअध्याय)	विश्ववेद (सर्वज्ञग[illegible])		दे० का०	दे०
५२२	६७३६	संक्षेप शारीरक (सटीक)	सर्वज्ञात्म महामुनि	रामतीर्थ	दे० का०	दे०
५२३	३७८१	संज्ञा प्रकरण (प्रक्रिया)			दे० का०	दे०
५२४	२२६	संज्ञा प्रक्रिया			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३२·३ × १२·१ सें० मी०	३१ (१२–४२)	१२	५५	अपू०	प्राचीन	इति व्यधिकरण धर्मावछिन्नाभाव: समाप्त: ।। श्री सीताराम चंद्राभ्यानम: ।।
२४.२ × १०.६ सें० मी०	५६ (१–५६)	७	३२	पू०	प्राचीन सं० १६६५	इति श्री शिव संहितायां ईश्वर पार्वती संवादे पंचम: पटल: ।। श्री ।। राम संमत् १६६५ ।।
२२ × ८.६ सें० मी०	१० (१–२०)	२७	८५	पू०	प्राचीन सं० १७८६	इति श्रीमन् शंकराचार्यशिष्यत्रोटकाचार्य विरचितंश्रुतिसार समुद्धरणाख्यं प्रकरणं एकोनाशीत्यधिकशतत्रोटकवृत्तं श्लोक ग्रथितं श्री मत्भगवत् पूज्यपाद कमले समर्पितं ।। ... ... संमत् १७८६ ।। १५५१ शके ।।
३१·८ × १६·१ सें० मी०	६२ (२–६३)	१३	४०	अपू०	प्राचीन शके १८६६	इति श्रीश्रुतिसूत्रतात्पर्यामृत टीकायां सफल ज्ञान प्रकरणं द्वितीयं सपूर्णोयं ग्रंथ: चैत्र वदि ८ शक सं० १८६६ ।।
२६·२ × ११ सें० मी०	६४ (५–६८)	१२	४२	अपू०	प्राचीन	इत्यानंद वेद शिष्य विश्ववेद विरचिते संक्षिप्त शारीरक व्याख्याने सिद्धांत दीपे प्रथमोध्याय: ।। ... ...
३४·८ × १.३ सें० मी०	४४ (१–४४)	२६	७०	पू०	प्राचीन	इति श्री सर्वज्ञातममहामुनिविरचिते संक्षेप शारीरके फल लक्षणं चतुर्थोध्याय: ।। ... ...
२६·३ × १४·४ सें० मी०	२२ (१–२२)	११	२८	पू०	प्राचीन	इति संज्ञा प्रकरणं (प्रक्रिया) समाप्तं × × ।।
२१·५ × ११·८ सें० मी०	३३ (१–३३)	६	२०	पू०	प्राचीन	... ... मानपर्यवशेषणम्प्रवाद: तथा चसर्वप्रपंचरहितं ब्रह्माहमस्मीति प्रत्ययअभिन्न ब्रह्म ज्ञानान्मुक्तिरिति सिद्धं इति संज्ञा प्रक्रिया समाप्त: ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५२५	३८१०	सत्सुखानुभव			दे० का०	दे०
५२६	४६४४	सप्तपदार्थी	शिवादित्य		दे० का०	दे०
५२७	६७१६	* सप्तपदार्थी	शिवादित्य		दे० का०	दे०
५२८	७१०४	समाधिप्रकरण			दे० का०	दे०
५२९	७१३७	समासवाद	जयरामपंचानन		दे० का०	दे०
५३०	७८२२	समासवाद	जयराम पंचानन		दे० का०	दे०
५३१	५८९१	सर्वसिद्धांत	विश्वनाथ सिंह जूदेव		दे० का०	दे०
५३२	१५४९	सर्वसिद्धांत	विश्वनाथ सिंह		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४·२ × १२·८ सें० मी०	२१ (१–२१)	९	३२	अपू०	प्राचीन	
२०·८ × ७·६ सें० मी०	७ (२–८)	१०	३६	अपू०	प्राचीन	इति शिवादित्यविरचितासप्तापदार्थी समाप्ता ।। श्री कृष्णगोपाल ।।
२२·३ × ९·६ सें० मी०	१० (१–१०)	८	३२	पू०	प्राचीन सं० १६२०	इति शिवादित्य विरचितेयं सप्तपदार्थी समाप्तः ।। शुभमस्तु ।। सं० १६२० ली० भीषा ।।
१६·७ × ११ सें० मी०	४० (१–४०)	९	२५	पू०	प्राचीन शके १७२५	इति समाधि प्रकरणं संपूर्णं ।।…… … …।। शके १७२५… …।।
२५·६ × ९·६ सें० मी०	१२ (१–१२)	१४	३६	पू०	प्राचीन	इति श्रीन्यायपंचानन जयराम विरचितः समासवादः समाप्तः ।। श्री रस्तु ।।
२५·४ × १०·४ सें० मी०	१८ (१-३,१-११, १३-१७,१९)	१०	३१	अपू०	प्राचीन	इति श्री न्यायपंचानन जय × × ×।।
३४ × १३ सें० मी०	२१ (६३-६४,६६-६८,६४-९६, १०६,१०९-१२४)	७	३३	अपू०	प्राचीन	इति श्री महाराज कुमार श्री विश्वनाथ सिंह विरंचिते सर्व सिद्धांते द्वितीयः सिद्धांत ।। × × ×।। (पृ० ६३)
३१ × १८ सें० मी० (सं०सू०-२-५७)	१२९ (१–१०, १२–१३०)	१४	२८	अपू०	प्राचीन	इति श्री सर्व सिद्धांते पंचमः सिद्धांतः । श्री प्रियाचार्याय नमः ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय का आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५३३	३६०२	सर्वसिद्धांत	विश्वनाथ सिंह देव		दे० का०	दे०
५३४	६३६९	सांख्यतत्वकौमुदी	वाचस्पति मिश्र		दे० का०	दे०
५३५	८८	सांख्यतत्वकौमुदी	वाचस्पति मिश्र		दे० का०	दे०
५३६	६९५५	सांख्यतत्वकौमुदी व्याख्या	भारती यति		दे० का०	दे०
५३७	६३९१	सांख्यशास्त्रतत्व (सांख्यकारिका)	ईश्वरकृष्ण		दे० का०	दे०
५३८	२५३३/३	साधनपंचक	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
५३९	३९१	साध्यानुमितिलक्षणम्			मि० का०	दे०
५४०	३३६६	सामग्रीव्याप्तिविचार			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३१.६ × १२.१ सें० मी०	८२	८	४६	अपू० (क्रमिक त्रुटित)	प्राचीन	इति श्री सर्वसिद्धांते श्रीमहाराजकुमार श्री विश्वनाथसिंह देव विरचिते भिक्षकाचार्य्य संवादे पंचमः सिद्धांतः समाप्तश्चायं ग्रंथः श्री रामचंद्रो जयति श्रीरामायनमः
२३·६ × १०·५ सें० मी०	३२ (१–३२)	१२	५२	पू०	प्राचीन सं०१७९९	इति श्री वाचस्पति मिश्र विरचिता तत्व कौमुदी समाप्ता ॥ ··· ··· इति सांख्यसूत्रं··· संवत् १७९९
२६½ × ११ सें० मी०	३९ (१–३९)	१४	३४	पू०	प्राचीन	इति श्रीमद्वाचस्पति मिश्र विरचिता सांख्यतत्व कौमुदी समाप्ता। मुडल्ये इत्युपनामक अनंतेन लिखितं ॥ स्वार्थं परार्थं च ॥
२३·८ × १०·३ सें० मी०	१९ (१–१९)	१२	५२	पू०	प्राचीन	इति श्रीबोधारण्ययतिशिष्य श्री भारती नामक यति कृतातत्व कौमुदी व्याख्या समाप्ता ।।
२१·७ × ८·८ सें० मी०	३ (१–३)	१३	४१	अपू०	प्राचीन	इति श्रीश्वरकृष्ण विरचितं द्विसप्तति मितं सांख्य शास्त्र तत्वं मार्याभिः शुभकृत्संवत्सरे आषाढ़ शुक्ल दशम्याबुधवासरे गौतमी तीर वासिना विट्ठलेन देवोपनाम्नालिखितमिदं स्वार्थं परार्थंच ।
१७·२ × १३·५ सें० मी०	३	८	१८	पू०	प्राचीन	इति श्रीमतछंकराचार्य्य विरिचितं साधनं पंचकसमाप्तं ॥
२१ × ८ सें० मी०	८	७	४१	पू०	प्राचीन	
२७·५ × ११·५ सें० मी०	६ (१–६)	१०	५७	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५४१	७२१	सामान्य निरुक्ति	गदाधर मिश्र		दे० का०	दे०
५४२	८४४	सारसंक्षेप	विज्ञान भिक्षु		दे० का०	दे०
५४३	३६३०	साष्टांग योगनिर्णय			दे० का०	दे०
५४४	५०८८	सिद्धांतचंद्रोदय	श्रीकृष्णधूर्जटि दीक्षित		दे० का०	दे०
५४५	७५६०	सिद्धांतचंद्रोदय	विश्वनाथपंचानन		दे० का०	दे०
५४६	७४८१	सिद्धांतमुक्तावली			दे० का०	दे०
५४७	१६६७	सिद्धांतमुक्तावली			दे० का०	दे०
५४८	४८०६	सिद्धांतमुक्तावली	विश्वनाथपंचानन		दे० का	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार *	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३१·८ × १२ सें० मी०	२८ (१–२८)	१२	४५	अपू०	प्राचीन	
२८·५ × ११·५ सें० मी०	८ (१–८)	१२	३७	पू०	प्राचीन	इति श्री विज्ञान भिक्षु कृतं सारसंक्षेपाख्यं वेदांत प्रकरणं समाप्तं ॥
१७·२ × ९·८ सें० मी०	५	२४	४४	अपू०	प्राचीन सं० १७८५	इति गोरक्षक प्रोक्तं साष्टांग योग निर्णय संग्रहः—कालयुक्त संवत् १७८५ ··· ···
३१·४ × १२·५ सें० मी०	५० (१–५०)	११	५५	पू०	प्राचीन सं० १८८४	इति श्री सिद्धांतचंद्रोदये तर्कसंग्रह व्याख्याने मोक्ष निरूपणं नाम परिछेदः इति श्री कौशिक गोत्रादभव सामशाखाध्यापिकायं पुरी वासि वैकुंठि दीक्षितात्मजेन शेषी नाम सती गर्भ संभवेन महाराष्ट्र जीतीय चित्रामोपनामक पुण्य नगर निकेतन श्री काशीनाथ भट्ट शिष्येण द्रविड जातीय श्री कृष्ण धूर्जटि दीक्षितेन कतूहलादनीत पंच सप्ताधिकाष्ट शतोत्तरचतुः सहस्र वर्षे के कलियुगे प्रकटिते पोडशत ग्रंथ किरणालंकृते सिद्धांत चंद्रोदये समाप्तिर्विलसति सम्वत् १८८४ ज्येष्ट मासे कृष्ण पक्षे द्वादश्यां भौम दिन संयुवायां इदं पुस्तकं लिखितं सरूपलालेन कपिस्थले शुभं भूयत ॥
२५·१ × १०·६ सें० मी०	६८ (१–६८)	१२	३७	अपू०	प्राचीन	इति सिद्धांत चंद्रोदयेः कर्म विशेष निरूपणं नाम चतुर्थ परिछेदः ॥ ···
२४·६ × ९·८ सें० मी०	२१ (१–२१)	१२	३५	अपू०	प्राचीन	
३१·६ × ७·७ सें० मी०	३७	५	३७	अपू०	प्राचीन	
२२·१ × १०·२ सें० मी०	१८ (१-१४, १-४)	१५	३८	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५४६	१०२०	सिद्धांतमुक्तावली	म० म० सिद्धांत पंचानन भट्टाचार्य		दे० का०	दे०
५५०	५७६	सिद्धांतमुक्तावली		महादेव	दे० का०	दे०
५५१	६००	सिद्धांतमुक्तावली	पंचानन भट्टाचार्य		दे० का०	दे०
५५२	११३	सिद्धांतमुक्तावली	विश्वनाथ पंचानन		दे० का०	दे०
५५३	२८८८	सिद्धांतमुक्तावली			दे० का०	दे०
५५४	७३६	सिद्धांतमुक्तावली			दे० का०	दे०
५५५	११८३	सिद्धांतमुक्तावली (संस्कृतटीका)	विश्वनाथपंचानन	महादेव	दे० का०	दे०
५५६	६२०७	सिद्धांतमुक्तावलीटीका	विश्वनाथ पंचानन		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५.३ × १०.८ सें० मी०	४८ (१–४८)	१४	३८	पू०	प्राचीन	इति श्रीयुतमहामहोपाध्याय सिद्धांतपंचाननभट्टाचार्यं कृता सिद्धांतमुक्तावली समाप्ता ॥ श्री रस्तु ॥
२७ × ११.९ सें० मी०	३६ (१–३६)	१२	३४	अपू०	प्राचीन	
२४.३ × १०.२ सें० मी०	४५ (१–४५)	१२	५३	पू०	प्राचीन सं० १८१२	इति श्रीमहामहोपाध्याय पंचाननभट्टाचार्यं विरचिता सिद्धांत मुक्तावली समाप्त ॥ संवत् ॥ १८१२ ॥ समये कुआर शुद्ध। ५॥. ··· ··· ··· ···
२२.८ × १०.७ सें० मी०	७० (१–७०)	९	३०	अपू०	प्राचीन	
३१.६ × १२.६ सें० मी०	६४ (१–६४)	६	४७	पू०	प्राचीन सं० १८८८	इति श्रीयुत महामहोपाध्याय सिद्धांतपंचानन भट्टाचार्य कृती सिद्धांतमुक्तावली समाप्ता ॥ ··· सन् १८८८ ···
३५.१ × १०.४ सें० मी०	२४ (५–२८)	१२	६३	अपू०	प्राचीन	
३४.५ × १३.२ सें० मी०	२४	१२	७३	अपू०	प्राचीन	
२४.२ × ११.५ सें० मी०	२०८	७	३६	अपू०	प्राचीन	लक्ष्मी पाद युगं प्रणम्य पितरं श्री बालकृष्णाभिधं भारद्वाज कुलांबुधौविधुमिव श्रीगौरवास्यांवुजात् ॥ ज्ञात्वा शेषमतं मितेन वचशांसिद्धात मुक्तावलि गुढार्थी तनुतेयथा मिति महादेवः परेषांकृते ॥ तत्रतावत् भाष्यापरिछेदव्या निचिकीर्षु श्री विश्वनाथ पंचानणो निर्विघ्नपरिसमाप्ति सिद्धये ··· । (पृ० १)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५५७	७३१५	सिद्धांतमुक्तावली टीका (भाषापरिच्छेद)	विश्वनाथ पंचानन		दे० का०	दे०
५५८	७४८३	सिद्धांतलक्षण			दे० का०	दे०
५५९	२५१९	सिद्धांतलक्षण टिप्पणी	जगदीशभट्टाचार्य		दे० का०	दे०
५६०	७४९५	सिद्धांतलक्षणव्याख्यान			दे० का०	दे०
५६१	७८३४	सिद्धांतलक्षण (व्याप्ति प्रकरण)			दे० का०	दे०
५६२	४९४	सिद्धांतबिंदु	मधुसूदन सरस्वती		दे० का०	दे०
५६३	१७०२	सिद्धांतबिंदुखंडन (स्वादसुंदराख्यप्रकरण)	भट्टाचार्य वेणी-दत्त शर्मा		दे० का०	दे०
५६४	६३८२	सिद्धांतबिंदु टीका	स्वामी नारायण तीर्थ		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३२·१ × १०·३ सें० मी०	४६ (१–४६)	१०	६०	पू०	प्राचीन सं० १८६८	इति श्री महामहोपाध्याय विश्वनाथ पंचानन भट्टाचार्य विरचितभाषापरिच्छेदटीका सिद्धान्त मुक्तावली संपूर्ण ।। संवत् १८६८ ।।
२५·१ × १०·६ सें० मी०	४८ (३–५०)	११	३७	अपू०	प्राचीन	
३२ × १०·५ सें० मी०	२२ (१-३,७-२५)	९	६९	अपू०	प्राचीन	
२६ × ११·४ सें० मी०	६३ (८–७०)	१३	५२	अपू०	प्राचीन	
२७·८ × ११·७ सें० मी०	११ (४४–५४)	१२	४७	अपू०	प्राचीन	
३१·६ × १२·३ सें० मी०	१४ (१–१४)	१७	५३	पू०	प्राचीन	इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्री विश्वेवर सरस्वती भगवत्पाद पूज्य शिष्य: श्री मधुसूदन सरस्वती विरचित: सिद्धांतबिंदु नाम ग्रंथ: समाप्त: शुभमस्तु ।।
२५ × ९ सें० मी०	२४	९	४६	पू०	प्राचीन	इति श्री लक्ष्मी नृसिंह चरण चंचरिक तर्क धुरंधर भट्टाचार्य वेणीदत्त शमर्गाकृतास्वाद सुदराख्यं प्रकरणं समाप्तिमगात् ।। समाप्तं सिद्धांत बिंदु खण्डनं ।। शुभ मस्तु ।।
२४·२ × ११ सें० मी० (सं०सू० २-५८)	६८ (१–६८)	१९	५४	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य वर्य श्री विश्वेश्वर···नारायण तीर्थ विरचिता सिद्धांत बिंदु टीका समाप्ता।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५६५	४३४०	सिद्धांतोत्तम	प्रियादास		दे० का०	दे०
५६६	६१६७	सुखबोधार्थमालापद्धति	देवसेन पंडित		दे० का०	दे०
५६७	६०८६	सुबर्थ तत्वालोक	विश्वनाथ		दे० का०	दे०
५६८	६२९७	सुबोधिनी			दे० का०	दे०
५६९	२०७६	स्वात्मसंवित् उपदेश (१ से ८ प्रकरण)			दे० का०	दे०
५७०	५२५६	स्वात्मानंदप्रकाशिका	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
५७१	७८६१	स्थितिप्रकरण			दे० का०	दे०
५७२	७४२६	स्मृतिविचार			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२२·३ × १४·७ सें० मी०	१० (१–१०)	१३	२४	पू०	प्राचीन सं० १८६१	इति श्री मुसिद्धान्तोत्तमें प्रियां दासाचार्य विनिर्मिते ।। परमानंद प्राप्ति कारणवर्णनंनाम पंचमों विश्रामः ।। ··· ···। श्री संवत् १८६१ मीति पौष शुक्र तिथौ··· ··· ···।।
२७ × १०·७ सें० मी०	३ (४–५–६)	१३	४८	अपू०	प्राचीन	इनि सुख बोधार्थमाला पद्धनि श्रीदेवसेन पंडित विरचिना ।। इति नयचक्रं समाप्तम् ।।
२४·५ × ६ सें० मी०	३७ (१–३७)	१०	४२	पू०	प्राचीन	विद्यानिवास सूनोः कृतिरेषा विश्वनाथस्या विद्वुषामति नृश्गा [illegible] मन्तराणामुदे भवता ।। इति गुत्वथं तत्त्वालोकः ।। समाप्तः शुभमस्तु ।।··· ···
३१·३ × १३·३ सें० मी०	४६ (१–४६)	७	३०	अपू०	प्राचीन	
२३·२ × ६. स० मी०	४१ (१–४१)	५	२७	अपू०	प्राचीन	प्रियं कथामुक्त वचोगुरुणाग [illegible] तत्वं हिगुरुणा प्रकाशतं वदंति स्वात्मसंवित्युपदेश अष्टम प्रकरणं ।।८।। नमस्ते योग वीर्याय ज्ञानदाताय नित्यशः ब्रह्मानंदैक रूपाय दत्ताय जगदात्म ।।··· ···
२६·४ × १०·८ सें० मी०	११ (२–१२)	१०	२७	अपू०	प्राचीन	इनि श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री मच्छंकराचार्य विरचिता स्वात्मानंद प्रकाशिका मानस पंकजोल्लग आर्या समाप्तः ।। श्री [illegible] ।।
३४·८ × १२·६ सें० मी०	८८ (१,३–८६)	६	५०	अपू०	प्राचीन	इत्यार्षे रामायणे देव दूतोक्ते शतसाहस्र्यां संहितायां वशिष्ट ब्रह्मबोधे वाल्मीकीय स्थिति प्रकरणं समाप्तं ।। ६१ ।। श्री कृष्णायनमः ।।
२५·५ × ६·२ सें० मी०	१०	११	४१	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५७३	३०७७	हठप्रदीपिका	चिंतामणि स्वात्माराम योगी		दे० का०	दे०
५७४	५१०९	हठप्रदीपिका	स्वात्माराम योगी		दे० का०	दे०
५७५	६३८९	हठप्रदीपिका	स्वात्माराम योगी		दे० का०	दे०
५७६	७६१२	हठप्रदीपिका	स्वात्माराम		दे० का०	दे०
५७७	५९४०	हठयोगप्रदीपिका	सहजानंद		दे० का०	दे०
५७८	३८३३	हठयोगप्रदीपिका	,,		दे० का०	दे०
५७९	१५९६	हठयोगप्रदीपिका	आत्मारामयोगींद्र		दे० का०	दे०
५८०	६९५४	हरितत्वमुक्तावलीसमाख्या	स्वयंप्रकाश यति		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५ × ९.२ सें० मी०	२८ (१-३,५,८-२३,२३-३०)	७	४०	अपू०	प्राचीन	इति श्री सहजानंद संतानचिंतामणि स्वात्माराम योगिना विरचितायां हठ-प्रदीपिकायां चतुर्थोपदेश: यादृशं पुस्तकं दृष्ट्वा तादृशं लिखितं मया यदि शुद्धमशुद्धवामम दोषो न दीयते ॥ ···
२३.६ × ८.७ सें० मी०	१६ (१-१४,१६-१७)	८	४०	अपू०	प्राचीन	इति श्री सहजानंद चिंतामणिस्वस्ताराम विरचितायां हठ प्रदीपिकायां नादोपासनं नाम चतुर्थोपदेश: ॥
२०.४ × १०.४ सें० मी०	३२ (१–३२)	६	२६	पू०	प्राचीन	इति श्री सहजानंद संतान चिंतामणि स्वात्माराम योगेंद्र विरचितायां हठ प्रदिपीकायां चतुर्थोपदेश: ॥ इति श्री ग्रंथ समाप्त: ॥
२२ × ११.५ सें० मी०	३२ (१–३२)	११	२५	अपू०	प्राचीन	प्रणम्य श्री गुरुंनाथन्स्वात्मारामेण योगिना केवलं राजयोगाय हठयोगोपदिश्यते ॥ × × × हठप्रदीपिकांधते स्वात्माराम: कृपाकर: (प्रारंभ) ।
१४.५ × १६.५ सें० मी०	११६ (१–११६)	६	१५	पू०	प्राचीन सं० १६१२	इति श्री गोरक्ष शतकं समाप्तं ···संवत् १६१२ के साल लिषितं··· ··· (इति श्री सहजानंद संतानि चिंतामणि स्वात्माराम विरचितायां हठप्रदीपिकायां प्रथमोपदेश: ॥१॥ (पत्र सं०—१४)।
३३ × १५ सें० मी०	१६ (१–१६)	१३	४०	अपू० (जीर्णशीर्ण)	प्राचीन	इति हठप्रदीपिका द्वितीयोपदेश: (पत्र सं० ७) ।
२४.३ × १२.२ सें० मी०	२८ (१–२८)	६	३३	पू०	प्राचीन सं० १८७८	संवत् १८७८ शाके १६४३ ज्येष्ठ मा० ।
२३.५ × १०.४ सें० मी०	६१ (१-५६, ५६-६०)	१२	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्री कैवल्यानंद योगींद्र पाद कमल भृंगायमान स्वयंप्रकाशाख्य यतिविरचिता शंकरभगवत्पादकृति हरि स्तुति व्याख्या हरितत्वमुक्तावली समाख्या समाप्ता ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५८१	४०३५	हस्तामलक टीका	शंकराचार्य		मि० का०	दे०
५८२	६७२२	हस्तामलक टीका	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
५८३	६७२३	हस्तामलकस्तोत्र भाष्य	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
५८४	१०७०	हेत्वाभास			दे० का०	दे०
५८५	६२५०	हेत्वाभास			दे० का०	दे०
धर्मशास्त्र						
१	७७६२	अंगिरा स्मृति			दे० का०	दे०
२	७८५७	अगस्त संहिता			दे० का०	दे०
३	७५१६	अग्निहोत्रप्रायश्चित्त			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६·७ × १३·४ सें० मी०	५ (१–५)	१३	४२	पू०	प्राचीन	इति श्री शंकराचार्य विरचिता श्री हस्तामलक टीका समाप्ता ॥ ······
१६·८ × ८·६ सें० मी०	७ (१–७)	६	२६	पू०	प्राचीन	इति शंकराचार्य विरचिता हस्तामलक टीका समाप्तोयं ॥ ··· ···
२३·३ × ६·३ सें० मी०	८ (१–८)	१३	४७	पू०	प्राचीन	इति श्री शंकराचार्य भगवत्पाद कृत हस्तामलक स्तोत्र भाष्यं संपूर्णः ॥
२१ × १०·५ सें० मी०	५८ (१–५८)	१०	५६	पू०	प्राचीन	इति हेत्वाभासहस्यं ॥ श्री विश्वेश्वराय नमो नमः ॥ श्री दुर्गायै नमोनमः ॥ ··· ··· ··· ···
२७·१ × १०·८ सें० मी०	४७ (२-७,१०-३४,३६-५१)	१२	४५	अपू०	प्राचीन	
३३ × १५·८ सें० मी०	३ (१–३)	१६	५३	पू०	प्राचीन सं० १८५३	इति अंगिरा प्रोक्तं धर्मशास्त्रं समाप्तं इत्यंगिरास्मृतिः संवत् १८५३ शाके १७१८ माघ शुक्ल १५ रविवासरे ×
२३·२ × १०·६ सें० मी०	६	८	३०	अपू०	प्राचीन	
२३·१ × १०·४ सें० मी०	६ (१–६)	१२	४३	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४	६६८५	अत्रिस्मृति			दे० का०	दे०
५	६६०२	अनुक्रमणिका (धर्मसिंधुसार)			दे० का०	दे०
६	२३५१	अनुस्मृति			दे० का०	दे०
७	१८६५/२	अनुस्मृति	व्यास		दे० का०	दे०
८	३७१/२	अनुस्मृति	व्यास		दे० का०	दे०
९	१८०९	अनुस्मृति	,,		दे० का०	दे०
१०	४४४०/१०	अनुस्मृति	,,		दे० का०	दे०
११	२६६	अशौचत्रिंशत्श्लोकी			दे० का०	दे०

पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
ब	स	द	९	१०	११
६ (१-६)	११	५०	अपू०	प्राचीन	
४०			पू०	प्राचीन	इति धर्मसिंधु सारे तृतीय परिछेदोतरार्द्धस्यानुक्रमणिका समाप्ता ॥
४ (१-४)	६	३६	पू०	प्राचीन सं०१७३६	इति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां शांतिपर्वणि मोक्षधर्मे भीष्मोक्ता अनुस्मृतिः समाप्ता ॥ शुभमस्तु ॥ संवत् १७३६ वर्षे स्रावणवदि १३ शनिवासरे लिखितं हरि कृष्णदासे··· ··· ···॥
८	१०	१७	पू०	प्राचीन	इति श्रीमहाभारते सतसहस्रं शंहितायां उत्तमानुसासनेषु अनुस्मृतं संपूर्णं ॥
६ (४०-४५)	११	१६	पू०	प्राचीन सं०१८८७	इति श्रीमहाभारतेशतसाहस्रं संहितायां अनुस्मृति समाप्ता ॥ सं० १८८७ शनिवार भवति चैत्र शुक्ला तृतीया ॥३॥
६ (१-६)	६	१८	पू०	प्राचीन	इति श्रीमहाभारते शतसहस्र्यांसंहितायां विष्णु धर्मोत्तरे अनुस्मृतिः समाप्तम् ॥
२७	६	१७	पू०	प्राचीन	श्री मन्महाभारते शतसाहस्र्यांसंहितायां वैयासक्यांशांतिपर्वणिभीष्मयुधिष्टर संवादे अनुस्मृतिः संपूर्णम् ॥
२१ (१-२१)	६	४१	पू०	प्राचीन सं०१७१६	इत्य शौचत्रिंशत् श्लोकी समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥ संवत्१७१६ समए भाद्रपदे मासि कृष्ण पक्षे द्वितीया भौमवासरे लिषितं वाघवग ढेहुवारीग्रामे लिषितं भटहरीरामेण त्रिशत श्लोकी··· ··· विपाठुवस्य ॥१॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२	२९६६/८	अशौचनिर्णय	कल्याणभट्ट		दे० का०	दे०
१३	६६०५	अशौचनिर्णय	त्र्यंबक पंडित		दे० का०	दे०
१४	६८८६	अशौचनिर्णय	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
१५	२९६६/८	अशौचनिर्णय			दे० का०	दे०
१६	६३४२	अशौचनिर्णय			दे० का०	दे०
१७	६८५९	अशौचनिर्णय	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
१८	५९३२	अशौचनिर्णय	रामलाल		दे० का०	दे०
१९	६६०३	अशौचनिर्णय			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
१५·५ × १४·५ सें० मी०	१६	१२	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री मद्चिंतामणि दीक्षितात्मज श्री कल्याभट्ट कृतः सटीकपडशांति-सारः समाप्त।
२२·८ × १०·१ सें० मी०	६ (१–६)	८	३०	अपू०	प्राचीन	इति श्री यायजूक शिखामणि हनुमदुप-नामक रघुनाथनारायणात्मज त्र्यंबक पंडितविरचिताशौचनिर्णयः समाप्तः ॥ शुभंभवतु ॥ इदं पुस्तकं शुक्लोपनामक बालकृष्णेन लिखितं बादाग्रामे ॥ संवत् १६२१ आषाढ़कृष्णा ७ भौमवासरे इदं पुस्तकं समाप्त ॥
१६·२ × ६ सें० मी०	५ (१–५)	१२	४५	पू०	प्राचीन	इति भट्टो जी दीक्षितोन्मत्त अशौच निर्णयः समाप्तः॥ × × × × ॥
१५·५ × १४·५ सें० मी०	३	१२	१३	अपू०	प्राचीन	
२२·५ × ६·६ सें० मी०	४ (१–४)	२३	४८	पू०	प्राचीन सं० १८२२	इत्याशौच निर्णयः समाप्ताः। श्री रस्तु लिखितमिदं काकरोनीग्रामे विट्ठल कृष्ण दीक्षित सुनानंतकृष्णेन संवत् १८२२ मिति अश्विन शुद्ध ४।
२३·८ × ६·६ सें० मी०	४ (१–४)	१४	५०	पू०	प्राचीन सं० १७४४	इति पदवाक्यप्रमाणज्ञ श्री लक्ष्मीधर सूरेः सूनुना भट्टोजिदीक्षितेन रचित आशौच निर्णयः समाप्तः ॥ शुभमस्तु॥ संवत् १७४४ श्रावण कृष्णाष्टम्यां लिखितं दश पुत्र गोविंदेन ॥
३१·५ × ११·२ सें० मी०	१४ (१–१४)	५	४६	अपू०	प्राचीन	
२२·८ × ६·६ सें० मी०	६ (१–६)	१०	२६	पू०	प्राचीन	इति अशौच प्रकरणं समाप्तं ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२०	४४२	अशौचसंग्रह त्रिंशच्छ्लोकी व्याख्या			दे० का०	दे०
२१	७१६६	अश्वत्थोपनयन			दे० का०	दे०
२२	४२०६	आचारचिंतामणि			दे० का०	दे०
२३	७८६५	आचारतिलक			दे० का०	दे०
२४	६८८१	आचारसंग्रह			दे० का०	दे०
२५	१०२६	आचारादर्श	श्रीदत्त		दे० का०	दे०
२६	६२२५	आचारादर्श वृत्ति	गौरीपति भट्ट		दे० का०	दे०
२७	३०८६	आचाराध्याय			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४ × ११ सें० मी०	१०	१६	४६	पू०	प्राचीन	अत्र स्मार्त्त शुभार्थभणितमभणितं च स्वगृह्यं विहित्वा कृत्वा दद्यात् शुभयम-भिदंभूसुरेभ्यः शुभार्थ ॥
१७.७ × ८.१ सें० मी	१३ (१–१३)	७	१७	पू०	प्राचीन सं०१८०६	इत्य अश्वत्थोपनयनोद्यापनः समाप्तः ॥ संवत् १८०६ शके १६७० × × ।
३४.४ × १४ सें० मी०	७८ (१-६१, ६३-७९)	११	३६	अपू०	प्राचीन	
३४.७ × १३.३ सें० मी०	१७ (१–१७)	८	४२	पू०	प्राचीन सं०१९२१	इति श्रीआचारतिलके सर्व प्रभातिका निर्णयः समाप्तं शुभंभूयात् श्री शम्वत् १९२१ शन१२७१ फः भाद्रपद मासे कृष्णपक्षे अमावस्या गुरुवासरे तद्दिने गौरीदत्तेन लिखितंतिलकं शुभं × × ।
२५.५ × १०.६ सें० मी०	३४ (१–३४)	१०	३३	पू०	प्राचीन सं०१८८८	महादेवेन अजगामरपठनार्थं आचार संग्रहोयं ग्रंथः समाप्तिः ॥शुभं ॥······ ······संवत १८८८ मीति पौस शुक्ल ८ बुधे ॥
३३.५ × १६.४ सें० मी०	२६ (१–२६)	१२	४२	पू०	प्राचीन सं०१९०३	इति श्री महापाध्याय श्री दत्तकृत आचारादर्शः समाप्तः ॥ संवति १९०३ वैशाषशुक्ल एकादश्यां ११ गुरुवासरे शुभंभवतुः ॥
२४.४ × १०.४ सें० मी०	६८ (१–६८)	१२	३२	पू०	प्राचीन सं०१८३६	इति श्रीमहामहोपाध्यास्मार्त शिरोमणि श्री श्री श्री दामोदरभट्टपुत्र गौरीपति भट्टरचिता आचारदर्शवृत्तिः समाप्ता। अत्र संवत्सरे ॥ १८३६ ॥ पौष व॰ १४ । ···
२६.२ × ११.६ सें० मी०	८ (१–८)	११	३७	पू०	प्राचीन	इति श्री मार्कंडेय पुराणे आचाराध्याय : समाप्तः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२८	२६२०	आचारार्काष्टक	दिवाकर		दे० का०	दे०
२९	५९३१	आशौचनिर्णय	भट्टोजीदीक्षित		दे० का०	दे०
३०	३४२८	आशौचप्रकरण	भट्टोजीभट्ट		दे० का०	दे०
३१	३८९३	आश्वलायन गृह्यसूत्र	आश्वलायन		दे० का०	दे०
३२	३६१५	आश्वलायन गृह्यसूत्र	आश्वलायन		दे० का०	दे०
३३	३६३६	आश्वलायनगृह्यसूत्र-करिका	कुमारिल भट्ट		दे० का०	दे०
३४	३६१३	आश्वलायनगृह्यसूत्र-कारिका	कुमारिल भट्ट		दे० का०	दे०
३५	६१९०	आश्वलयनप्रयोगदीपिका	मंचनाचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३.३ × १०.७ सें० मी०	८६ (३—८८)	९	३८	अपू०	प्राचीन	
२७·७ × १०·७ सें० मी०	६ (१—६)	९	४५	पू०	प्राचीन	इति पदवाक्य प्रमाण श्री लक्ष्मीधर सूरेः सुनुना भट्टोजि दीक्षितेन रचित आशौच निर्णयः समाप्नः ॥
२४ × ११·४ सें० मी०	३ (१—३)	१६	४१	पू०	प्राचीन सं०१८०२	इति श्री मत्सकलपंडितालंकार भट्टोजी भट्ट विरचितं आशौच प्रकरणं समाप्तं । श्रीराम । संवत् १८०२··········॥
१८ × ७·७ सें० मी०	३८ (१—२९, ४०—४८)	८	२९	अपू०	प्राचीन	इति आश्वलायनस्मार्त्तसूत्रे चतुर्थोध्यायः आश्वलायनसूत्रे पोडशोऽध्यायः ॥ श्री रामचंद्रार्पणमस्तु ॥··· ··· ···
२२·७ × ९ सें० मी०	३४ (१—३४)	१०	४०	पू०	प्राचीन सं०१७९१	इत्याश्वलायनगृह्यपरिशिष्टे तृतीयोध्याय गृह्यपरिष्ठः समाप्तः ॥ संवत् १७९१ वैशाखवदि ६ शनी लिखितं ॥
२३·८ × १०·७ सें० मी०	२२८ (१—२२८)	९	३३	अपू०	प्राचीन	
२२·२ × ९·५ सें० मी०	४८ (१—३४, ३७—५०)	८	४२	अपू०	प्राचीन सं०१८०७	इति भट्टमारिलस्वामि विरचितासू कारिकासु चतुर्थोध्याय ॥ संवत् १८०७ शके १६७२ विक्रमार्कसंवत्सरे आश्विनवद्य-द्वादशिरविवासरेतदिने पुस्तकं समाप्तं ।
२७·३ × १२ सें० मी०	८८ (१—८८)	१३	५६	पू०	प्राचीन	इति मंचनाचार्य विरचितायां आश्वलायन सूत्र प्रयोग दीपिकायां षष्ठोध्यायः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३६	१०८९	आहारविधान			मि० का०	दे०
३७	६२४०	आह्निक सूत्र			दे० का०	दे०
३८	६८८५	आह्निकपंचाशिका	गणपति शर्मा		दे० का०	दे०
३९	६३१७	उपाकर्म (निर्णयसिंधु, द्वितीयखंड)			दे०	दे०
४०	६८३२	उपाकर्म			दे० का०	दे०
४१	२०२९	ऋतुमिताक्षरा (व्यवहाराध्याय)	विज्ञानेश्वर भट्टारक		दे० का०	दे०
४२	६३३९	एकादशीनिर्णय			दे० का०	दे०
४३	१६१६	एकादशीनिर्णय			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ ब	८ स	८ द	९	१०	११
२१·२ × १०·८ सें० मी०	६ (१–६)	६	२३	पू०	प्राचीन सं०१८३४	श्री रस्तू सं० १८३४ वि० ज्ये० व० ५ लि० नौश्वतराय।
३५·५ × १४·५ सें० मी०	६ (१–६)	१२	६३	अपू०	प्राचीन	
१४·२ × ८·२ सें० मी०	६ (१–६)	७	१६	पू०	प्राचीन सं०१६३५	इति श्रीमद्रावल हरिशंकर सूनु नागणपति शर्मणाकृतान्हीक पंचाशिका समाप्तिः ॥ संवत् १६३५ ······
२१.३ × १३·५ सें० मी०	१३ (१–१३)	६	२२	पू०	प्राचीन	श्री रामजी अथ निर्णय सिंधौ द्वितिय खंडाच्च अथ उपाकर्म लिख्यंतेः ··· (आदि)
२४·६ × ११ सें० मी०	२	१५	५०	पू०	प्राचीन सं०१६६२	इति कण्व माध्यन्दिन शाखो पयोगि ममुपाकर्मकाल निर्णय प्रकारः समाप्तिमगमत् ॥ संवत् १६६२ श्रावण शुक्ल त्रयोदश्यां रविवारे ॥
३५·५ × १३·५ सें० मी०	२१०	६	४०	पू०	प्राचीन	इति व्यवहारा अध्याया समाप्तम् ॥
२१ × ६·६ सें० मी०	१७ (१–१७)	८	३०	पू०	प्राचीन सं०१७४७	इति श्री सदाचार सार संग्रहे एकादशी निर्णय एकादशी ब्रत बिधि निर्णयः ॥ समाप्तं ॥······संवत १७४७ वर्षे जेष्ट वदि ६ गुरूदिने पुस्तक पूर्णः ॥
२६·५ × ११·५ सें० मी० (सं०सू० २-६०)	७	११	४७	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४४	६३६७	एकादशी निर्णय			दे० का०	दे०
४५	१३५६	एकादशी विधि			दे० का०	दे०
४६	११३४	कर्मविपाक			दे० का०	दे०
४७	६२७४	कर्मविपाक			दे० का०	दे०
४८	७७०३	कर्मविपाक संहिता			दे० का०	दे०
४९	३८०	कर्मविपाक संहिता			दे० का०	दे०
५०	१३२८	कात्यायन पर्व निर्णय			दे० का०	दे०
५१	३४६४	कात्यायन सूत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२१४×९ सें० मी०	६ (१,१-८)	१०	४०	पू०	प्राचीन	...अथैकादशी निर्णयः ॥ (प्रारंभ)
२७.५×१२.५ सें० मी०	३ (१–३)	६	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री एकादशि विधि लिषि समाप्त शुभम ॥
३२.५×१७.५ सें० मी०	६३ (१–३६, ३६–६२)	१५	४१	पू०	प्राचीन सं०१६००	इति श्री कर्मविपाकेभरतभृगुसंवादे पतिव्रतामहात्म्यं नामशप्तशीतित्तमोध्यायः ८७ संवत् १६०० शाके १७६५ मार्गशीर्षे कृष्णे पक्षे एकादश्यांशनि संयुते । लिठारातंलेपराजस्य गुरोअर्थंच शुभं भवेत् ॥... ...
२१.३×१०.६ सें० मी०	२०	११	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री कर्मविपाके नारदांवरीपसंवादेमीन रासि फलं १२ ।× × ×
३३.३×१२.२ सें० मी०	६१ (१–६१)	१२	५०	पू०	प्राचीन सं०१८६२	इति कर्मविपाक समाप्तम् × × संवत १८६२ भाद्र मासे कृष्ण पक्षेऽष्टम्यां रविवासरे ॥ × × × ×
३४.२×१३.३ सें० मी०	८ (१–५, ६८-७०)	१०	५०	अपू०	प्राचीन	
२७×१२ सें० मी०	५	६	३८	पू०	प्राचीन सं०१६४६	सं० १६४६ वै० शु० १ मं० काशिकारीवाव्ह काशिनाथ शर्मणा लिखितं ॥
२७.५×१४ सें० मी०	२६	१३	४५	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५२	३१९०	कात्यायन सूत्र			दे० का०	दे०
५३	५४५९	कात्यायन सूत्र	कात्यायन		दे० का०	दे०
५४	१३२९	कात्यायनीय सर्वतोमुख पद्धति			दे० का०	दे०
५५	१५६१	कार्तिक स्नान विधि			दे० का०	दे०
५६	६८८७	कालनिर्णय कारिकावली	माधवाचार्य		दे० का०	दे०
५७	४७४३	कालनिर्णय दीपिका	रामचंद्राचार्य		दे० का०	दे०
५८	६०१८	कालनिर्णय दीपिका	रामचंद्राचार्य		दे० का०	दे०
५९	२६८१	कालनिर्णय दीपिका			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१·८ × ९·९ सें० मी०	९ (४६–५४)	६	२६	अपू०	प्राचीन	इति कात्यायन सूत्रे चतुर्थोध्यायः ॥
२४ × १०·७ सें० मी०	३१	९	३३	अपू०	प्राचीन	इति कात्यासूत्रेयेन पंचमोध्यः ॥
२८·५ × ११·५ सें० मी०	२२	८	३६	पू०	प्राचीन सं० १९५७	इति श्रीमहायाज्ञिक…पाठक रामचंद्रात्मज गंगाधर कृताकात्यायन सूत्रानुगतासर्वतो मुख पद्धति… लिखिता ॥ शुभं ॥ संवत १९५७ आश्विन शुक्ल २ भौमे…लिखित पुरोहितोपाह्व ॥ गणपति शर्म्मणः ॥
२५·८ × १३·२ सें० मी०	४ (१–४)	११	३२	पू०	प्राचीन सं० १९१०	इतिकातीय स्नान विधिः सं० १९१० भाद्रपद कृष्ण ११ लिखितं मिश्र मुरलिधरः … …
१६ × ८·८ सें० मी०	८ (१–८)	१०	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री मन्माधवाचार्यकृत कालनिर्णय कारिकावली समाप्तिमगमत् ॥ इदं पुस्तकं नागपुरे सदाशिव भट्टकवीश्वरेण लिखित ॥
१८·४ × १३·४ सें० मी०	२८ (१-४,६-७,९-१८,२०-३१)	१३	२६	अपू०	प्राचीन	इति श्रीरामचंद्राचार्य कृतायांकालनिर्णयदीपिकायां सामान्यतः सर्वनिर्णयः × × ×॥ (पृ०४)
२२.५ × ७.४ सें० मी०	४५ (१-६,८-४६)	८	३३	अपू०	प्राचीन सं० १७१२	इति श्रीपरमहंसपरिव्राजकाचार्य श्री गोपाल गुरु पूज्यपाद शिष्य श्री रामचंद्राचार्यकृता कालनिर्णयदीपिका समाप्तेयं ॥ संवत१७१२ शाके १५७७ मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष २ सोमदिने लिपितं सिद्धपुरवा नृसिंह शिवपुरी ग्रामे ॥
३१ × १४ सें० मी०	७२ (१–७२)	१५	४२	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६०	११२०	कालमाधव			दे० का०	दे०
६१	६८५	कालमाधव			दे० का०	दे०
६२	८३२	कालमाधव(संस्कृतटीका)	वैद्यनाथभट्ट सूरि		दे० का०	दे०
६३	४१०२	कालमाधवीय व्याख्यान	वैद्यनाथभट्ट सूरि		दे० का०	दे०
६४	७२३२	कालमाधवीय कारिका व्याख्या	माधव	शामभट्ट	दे० का०	दे०
६५	५५७२	कालमार्तंड	कृष्ण मित्र		दे० का०	दे०
६६	६५३	कालमार्तंड	कृष्ण मित्र		दे० का०	दे०
६७	१८६	काशीमोक्षनिर्णय	सुरेश्वराचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४·२ × १०·७ सें० मी०	७ (१–७)	१०	३८	पू०	प्राचीन	ईदृशंनियमं न्यायैर्विवरीतु मिहोद्यमः। तमेवनिर्णयंशास्त्रन्यायाभ्यांवक्तुमुद्यतः॥ १३० शुभंभवतु॥ राम
२२·३ × १०·२ सें० मी०	५ (१–५)	१४	४०	पू०	प्राचीन	ईदृशंनियमं न्यायैर्विवरीतु मिहोघमः। तमेव निर्णयंशास्त्र न्यायाभ्यांवक्तु मुद्यतः॥३०॥ शुभं भवतु॥
२२ × १०·५ सें० मी०	२९ (१–२९)	१४	४४	पू०	प्राचीन	इति श्रीमत् धर्मशास्त्रपारावारीणतत्सद्रामचंद्रात्मज भट्ट वैद्यनाथ सूरि कृते कालमाधवीयकारिका व्याख्याने पंचमंप्रकरणं सपूर्णम॥ तत्सत्॥ रामगोविंद॥ शिवराम॥………
२४ × १०·५ सें० मी०	४२	१०	५८	पू०	प्राचीन सं० १८४६	इति श्री श्रीमद्धर्मशास्त्र पारावारेण तत्सद्रामं चन्द्रभटात्मजभर्त वैद्यनाथ भट्ट सूरि कृतेकालमाधवीय व्याख्याने पंचम प्रकरणं संपूर्ण संवत् १८४६।
२७·६ × ११·२ सें० मी०	५० (१–५०)	१०	४८	पू०	प्राचीन	इति श्रीमद्विद्वगण मुकुटमणि भट्ट कुलावंत गमन्त शंकरात्मज भट्ट रामभट्ट कृता कालमाधवीयकारिका व्याख्या समाप्ता॥
२३ × ११·३ सें० मी०	१० (९-११, १३-१७, २२, २९)	१०	२७	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमद्देवीदत्तात्मज रामसेवक तनूद्भवाचार्य कृष्णमित्र कृतौ काल मार्तण्डाभिधोनिर्णयः॥
२१·५ × ८·८ सें० मी०	२७ (८–३४)	७	२५	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमद्देवी दत्तात्मज रामसेवकतनूद्भवाचार्य कृष्ण मिश्र कृतौकालमार्तण्ड मिधो निर्णयस्समाप्तः॥ शुभमस्तु॥
२२·५ × १०·५ सें मी०	१६	११	२६	पू०	प्राचीन	इति श्रीसुरेश्वराचार्य विरचित सकल श्रुति स्मृतिनिर्धारित काशी मोक्षनिर्णय समाप्तः………॥ शिवमस्तु॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६८	१०५६	कृत्यकल्पतरु	लक्ष्मीधर		दे० का०	दे०
६९	२११५	कृत्यकल्पतरु	लक्ष्मीधर		दे० का०	दे०
७०	३३८५	कृत्यरत्नावली	रामचंद्र		दे० का०	दे०
७१	१६३७	कृत्यरत्नावली			दे० का०	दे०
७२	२४३२	कृष्णजन्मोत्सव व्रतनिर्णय स्व० च० हाशिये पर लिखित है	उदम्बरि ऋषि		दे० का०	दे०
७३	२१[illegible]४	गायत्रीकल्प	विश्वामित्र		मि० का०	दे०
७४	६६७४	गृह्यप्रयोग	ब्रह्मविद्यातीर्थ		दे० का०	दे०
[illegible]	[illegible]	[illegible]			[illegible]	[illegible]

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२८ × १२ सें० मी०	८२ (१-३, ३-८१)	१२	४१	पू०	प्राचीन	इति भट्ट श्री हृदयधरात्मजमहासांधिविग्रहिकभट्ट श्रीमल्लक्ष्मीधर विरचिते कृत्य कल्पतरौतीर्थं कांड समाप्तं ।।
२४·५ × ६·५ सें० मी०	६० (२, २-६४)	७	३०	अपू०	प्राचीन	
२३·३ × ११ सें० मी०	८८ (१–८८)	७	२८	पू०	प्राचीन सं० १७६८	इति श्री पदार्थाभिज्ञ तत्सतरामचंद्र विरचितायां कृत्यरत्नावली शुभा ।। × इति व्यतीपात फल ।। संवत् ।। १७६८ मार्ग वदि ६ शुक्रे ।।
३० × १३ सें० मी०	४ (२१–२४)	१२	४४	अपू०	प्राचीन	
३०·५ × १५·८ सें० मी०	७१ (१–७१)	११	४२	पू०	प्राचीन सं० १९०९	इति श्री परमहंस वैष्णवाचार्य निवार्क भगवत् पूज्यपाद शिष्येणेदं वरिणा ऋषिणा कृत एकादशी कृष्णजन्मोत्सव व्रतनिर्णयः समाप्तः···मितिमागसिर सुदी ७ रविवारे समाप्तम् सं० १०९९···
२५ × ११ सें० मी०	७९ (१–७९)	१०	३९	पू०	प्राचीन	इति श्री विश्वामित्र कल्पे नित्यनैमित्यकादि गायत्री पुरश्चरण विधानं समाप्तं ।।
२२·६ × १०·५ सें० मी०	४४ (२–४५)	१०	३४	अपू०	प्राचीन सं० १६८६	इति श्री परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्री ब्रह्मविद्यातीर्थविरचितो गृह्य प्रयोगः समाप्तः ।।······ ···इदंपुस्तकं संवत् १६ ।। ८६ ।। शके १५ ।। ५१ ··· ···।
२४·४ × ११ सें० मी० (सं०सू० २-६१)	३१ (१, ४-२१, २४-३५)	१०	३५	अपू०	प्राचीन	इति श्री कात्यायन विरचिते गृह्य सूत्रे माद्ध्यंदिनीये तृतीयः कांड समाप्तः ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७६	६६२	गृह्यसूत्र	शांखायन		दे० का०	दे०
७७	१०७५	गृह्यसूत्र			दे० का०	दे०
७८	६०५	गृह्य सूत्र			दे० का०	दे०
७९	५३५८	गृह्यसूत्र			दे० का०	दे०
८०	५६६२	गृह्यसूत्र (तृतीय कांड)			दे० का०	दे०
८१	६१२६	गृह्यसूत्र (प्रथम कांड)			दे० का०	दे०
८२	७३८९	गृह्यसूत्र			दे० का०	दे०
८३	५६४५	गोत्रनिर्णय	केशवदेव		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६·६ × ८·२ सें० मी०	३६ (१-२८,२८-३७,३६)	८	३५	अपू०	प्राचीन	
२५·३ × ११ सें० मी०	४४ (१-४४)	८	३२	अपू०	प्राचीन	इति गृह्यसूत्रेतृतीयं कांडं समाप्तं ॥···
२४·२ × ११·१ सें० मी०	७ (३-११,१३-१४)	१४	३५	अपू०	प्राचीन	
२५·५ × ६·८ सें० मी०	१२ (१-३,५-१३)	६	३३	अपू०	प्राचीन	इति गृह्यसूत्रे प्रथमं काण्डे समाप्तम् ॥
२४·१ × १०·५ सें० मी०	२६ (२८-५३,५३-५७)	७	२७	अपू०	प्राचीन	इति गृह्यसूत्रे तृतीय कांडे समाप्तम् ॥ श्लोक ७३० ॥
२५·७ × ८·८ सें० मी०	११ (१-११)	६	३२	पू०	प्राचीन सं०१८५६	इति गृह्यसूत्रे प्रथमकांडसमाप्तम्··· सं० १८५६ वैश्यप ख शुक्ल ३ भृगुवार ॥
१५·५ × ७·६ सें० मी०	३८	७	२१	अपू०	प्राचीन	इति गृह्यगुत्रेदिनियगांट गमाप्तं ॥
२३·६ × १०·७ सें० मी०	५ (१-५)	८	३६	पू०	प्राचीन	इति श्री केशवदैवज्ञकृतो (कृतौ) गोल-निर्णयः समाप्तः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८४	६०७	गोत्रप्रवरनिर्णय			मि० का०	दे०
८५	६३६	गोत्रप्रवरनिर्णय	भट्टोजीभट्ट		दे० का०	दे०
८६	६४७७	गोत्रप्रवरनिर्णय	भट्टोजीभट्ट		दे० का०	दे०
८७	६४७८	गोत्रप्रवरनिर्णय	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
८८	६१०५	गोत्रप्रवरनिर्णय	रघुनाथ भट्ट		दे० का०	दे०
८९	६२७७	गोत्रप्रवरनिर्णय	विश्वनाथ		दे० का०	दे०
९०	३९८५	गोत्रावली			दे० का०	दे०
९१	७३१९	गोदानविधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	म	द	९	१०	११
२८×१२·२ सें० मी०	३१ (१–३१)	१०	४२	अपू०	प्राचीन	
१९·५×८ सें० मी०	७ (१-२,४-८)	७	३५	अपू०	प्राचीन	इति श्वामुष्यायरण वर्गः ॥ भट्टोजीभट्ट गोत्र प्रवर निर्णयः ॥ गुरण··· ···
२०×८·९ सें० मी०	७ (१–७)	१०	३५	पू०	प्राचीन	इति श्रीमत्पदवाक्य प्रमारण पारावार पारिरण भट्टोजी भट्ट संगृहीत प्रवर निर्णयः समाप्तः ॥
२०×८·५ सें० मी०	४ (१–४)	१२	३८	पू०	प्राचीन	इतिभट्टोजीदिक्षित कृत प्रवरनिरार्यः ॥
२७·७×१२·७ सें० मी०	३६ (१–३६)	९	३९	पू०	प्राचीन सं०१७८४	इति श्रीमत्पादवाक्यप्रमारण निपुणतम भट्ट माधवात्मज भट्ट रघुनाथ कृतो गोत्र प्रवर निर्णयः समाप्तः रामार्प्पणमस्तु शुभमस्तु सं० १७८४ वर्षे अश्वन कृष्ण द्वादस्यां शुक्र दिने पूरित मिदं देवकी नंदनेन ॥
२५×१०·६ सें० मी०	३१ (१–३१)	९	२५	पू०	प्राचीन	इति श्रीमछंढुदेव तनय रामदेव नुज-विश्वनाथ देव विरचितो रामदेव प्रसा-दाख्यो गोत्रप्रवरनिर्णयः संपूर्णः ॥
२७·७×१० सें० मी०	४ (१–४)	८	३३	पू०	प्राचीन सं०१९०८	इति गोत्रावली संपूर्णा। सं० १९०८
२४·८×११ सें० मी०	४ (१–४)	१२	३०	पू०	प्राचीन सं०१८२१	इति गोदानविधिः शुभमस्तु सं० १८२१-× × × × × ×॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९२	८९८	गौतमधर्मसूत्र			दे० का०	दे०
९३	३९०	गौतमधर्मसूत्र			दे० का०	दे०
९४	५६७९	चतुर्वर्ग चिंतामणि (दानखंड)	हिमाद्रि		दे० का०	दे०
९५	६५५८	चित्तपावनोत्पत्तिवर्णन			दे० का०	दे०
९६	२३३४	जटमल्लविलास	जटमल्ल		दे०का०	दे०
९७	४७८५	जसवंतभास्कर	भास्कर		दे० का०	दे०
९८	११९८	तिथिनिर्णय (संस्कृत व्याख्या सहित)	आचार्य रामचंद्र	नृसिंह	दे० का०	दे०
९९	३४९४	तिथिनिर्णय			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६·२ × ११·६ सें० मी०	६	१२	३४	पू०	प्राचीन	इति गौतम न्याय पंचाध्यायी वात्स्यायन भाष्ये प्रथमाध्यायेत्रि सूत्री समाप्ता ॥ ॥ ३ ॥
२८·७ × १३·५ सें० मी०	३४ (१४-१६,२६-५३)	१४	४४	अपू० जीर्ण	प्राचीन	
२७ × ११·७ सें० मी०	१२८ (३-१३१)	१२	३७	अपू०	प्राचीन	इति श्री महाराजाधिराज श्री महादिवेस्य समस्त करणाधीश्वरावदविद्या विशारद श्री हिमाद्रि विरचिति चतुर्वर्गीचितामणौ दाने खंडदिान प्रशंसा प्रकरणं ॥ ७ ॥ (पत्र सं० ७)
२१·२ × ८·६ सें० मी०	४ (१–४)	१०	२४	अपू०	प्राचीन	इति श्री स्कंदपुराणे चतुरशीत्वध्यायात्यके सह्याद्रि खंडेचिम पावनोत्पत्ति वर्णनं नामैकाशीतितमोऽध्यायः ४ ॥
२८·५ × १६·५ सें० मी०	५८	१२	४५	अपू० जीर्ण	प्राचीन	
२४·८ × १६ सें० मी०	५२ (४से ८० तक स्फुट पत्र)	१५	३१	अपू०	प्राचीन	इति श्री मत्सामंत चक्र चूड़ामणिरुचिरचित नीराजनानीराजितकाशीश्वर पंचमगहिरवार विविधविरुदावली विराजमानमहाराजाधिराज श्रीमर्दिद्रमाणि नृपतिनंदन श्रीमत्कुमारजसवंतसिंह प्रेरिताग्निहोत्रिकुल तिलकायमान श्री मदायाजिभट्टसूनुभास्करविरचितेजसवंतभास्करेसंवत्सरवृ: ॥
२५·३ × ६·२ सें० मी०	२६ (१–२६)	८	३३	पू०	प्राचीन सं०१६३५	इतिश्रीमत्सकलशास्त्रविशारदसकलसदागमाचार्यपरमहंस परिव्राजकाचार्य कृतातिथिनिर्णयव्याख्याः समाप्ताः ॥ संवत् १६३५ वर्षे पु० ११ बुद्धे ॥ उ० गोविंदेन लिखितं ॥ लेखक पाठकयों शुभं भवतु ॥ ··· ··· ···
२६·२ × ८·२ सें० मी०	६२ (१–६२)	७	५१	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१००	१६६८	तिथिनिर्णय			दे० का०	दे०
१०१	६४८०	तिथिनिर्णय			दे० का०	दे०
१०२	६४७५	तिथिनिर्णय			दे० का०	दे०
१०३	६४३८	तिथिनिर्णय			दे० का०	दे०
१०४	७२७५	तिथिनिर्णय			दे० का०	दे०
१०५	२२७५	तिथिनिर्णय			दे० का०	दे०
१०६	७८८३	तिथिनिर्णय			दे० का०	दे०
१०७	६३०६	तिथिनिर्णय	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर-संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	म	द	६	१०	११
२२·३ × ८ सें० मी०	२०	८	३२	अपू०	प्राचीन	
१५·२ × ७·६ सें० मी०	६ (१,३–१०)	११	२२	अपू०	प्राचीन	
२१·८ × ६·३ सें० मी०	३२ (१–३२)	१०	४१	पू०	प्राचीन	इति पदवाक्य प्रमाणज्ञलक्ष्मधर सूरेः सूनुना भट्टोजी दीक्षितेन विरचितस्तिथिनिर्णयः समाप्तः सं० १८१० शके १६७५ चैत्र शुद्ध दशम्यां शुक्रवासरे त्र्यंबक सूनुना कवीश्वरोपनामक मुकुंद भट्टेनलिखितमिदं तिथिनिर्णय पुस्तकं समाप्तं ॥
२३·६ × ६·७ सें० मी०	८ (१-२,४-६, ८–१०)	६	२०	अपू०	प्राचीन सं० १८६०	तिथिनिर्णय समाप्तं शुभमस्तु संवत् १८६० समये नाम श्रावणवदि १३ सोमेक लिखितंमिदं पुस्तकं × × × ॥
१५ × १०·६ सें० मी०	५ (१–५)	६	१६	पू०	प्राचीन	इतिथिर्णयः लिषितं रामदीनपिडि ह्रा × × × ×॥
३०·१ × ६·४ सें० मी०	६ (१,१७-२१)	११	४६	अपू०	प्राचीन	
२६·६ × १४·५ सें० मी०	१० (१–१०)	१२	३८	अपू० जीर्णशीर्ण	प्राचीन सं० १८८१	इति संक्राति ग्रहणकालयो निर्णयः इवि विशेष तिथिनिर्णयः ॥ समाप्तः ॥ संवत् १८८१ के आश्विने मासे × × ×॥
२७·८ × ११ सें० मी०	३६ (१–३६)	६	४७	पू०	प्राचीन	इति पदवाक्य प्रमाणज्ञ लक्ष्मीधर सूरेः सूनुना भट्टोजि दीक्षितेन विरचितस्तिथिनिर्णयः समाप्तः ॥ चैत्र कृष्ण पति पदि वसंतोत्सवः··· ··· ···॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०८	६८८४	तिथिनिर्णय	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
१०९	४८२२	तिथिनिर्णय	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
११०	२५७१	तिथिनिर्णय	,,		दे० का०	दे०
१११	८२४	तिथिनिर्णय	,,		दे० का०	दे०
११२	३८५०	तिथिनिर्णय	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
११३	५८३४	तिथिनिर्णय	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
११४	७०७०	तिथिनिर्णय	रामादित्य		दे० का०	दे०
११५	३०	तिथिनिर्णय	श्रीनारायण		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०·५ × ९·४ सें० मी०	३४ (१–३४)	१३	३६	पू०	प्राचीन सं०१७५७	इति पदवाक्य प्रमाणज्ञ लक्ष्मीधर सूनोः सूनुना भटोजी दीक्षितेन विरचित स्तिथि निर्णय समाप्तः। संवत् १७५७ शके १६२२ अधीक आश्विने कृष्ण प्रति पदायां समाप्तः लिखितं × ×
१८·५ × १०·७ सें० मी०	५८ (१–५८)	१२	२८	पू०	प्राचीन सं०१८३६	इति श्री भट्टवाक्यप्रमाणज्ञ श्रीलक्ष्मीधरसूरे सुनुनामभट्टोजी दीक्षितेनरचितायातिथिनिर्णयः समाप्तः॥ संवत् १८३६ शके १७०१ प्रवर्तमाने विकारीनामाब्दे आश्विन शुक्ल पंचमी गुरुवासरेतद्दिने पुस्तकं समाप्तः॥ तारोपनाम्नः मोरेश्वरभट्टसुत केशवेन तापीपूरे लिखितं॥ ··· ···
२६·५ × ११·५ सें० मी०	२	८	३०	अपू०	प्राचीन	
१९·६ × ९·२ सें० मी०	१४ (१–१४)	९	२९	पू०	प्राचीन	इति निर्णय तिथि समाप्तः॥:सांवसदा शिवार्पणमस्तु॥
२५·५ × १०.२ स० मी०	३७ (१–३७)	११	४०	पू०	प्राचीन	इति श्री पदवाक्य प्रमाणवज्ञ लक्ष्मधर सूरेः सूनुनाभट्टोजि दीक्षितेन विरचित-स्तिथिनिर्णयः समाप्तिमगमत्॥ ···
२४·३ × ११ सें० मी०	२१ (१–२१)	१४	४८	पू०	प्राचीन	इति पद वाक्य प्रमाणज्ञ लक्ष्मीधर सूनुना भट्टोजिदीक्षित विरचितस्तिथि निर्णयः समाप्तः॥
१८·७ × ९·८ सें० मी०	१८ (२-१०-१५-२२)	९	३२	अपू०	प्राचीन	इती श्रि भन्ज्यादित्यात्मज श्री मद्रामादित्यविरचित सदाचार रत्नाकरो ति तिथि नीर्णय खंडे साधारनभिधेयं प्रथम॥:॥ (पृ० ५)
२५·५ × १०·५ सें० मी०	१२	१०	२१	पू०	प्राचीन सं०१९२४	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११६	५८७०	तिथिप्रकाश			दे० का०	दे०
११७	१६८३	तीर्थस्थलीसेतु	नारायणभट्ट		दे० का०	दे०
११८	६४६५	तिथ्यर्कप्रकाशानुक्रमणिका	वैजनाथ		दे० का०	दे०
११६	३६७६	तिथ्यादितत्वनिर्णय	लौगाक्षि भास्कर		दे० का०	दे०
१२०	६८५८	त्रिशतश्लोकी टीका	रघुनाथ भट्ट		दे० का०	दे०
१२१	७२७४	त्रिशतश्लोकी टीका	रामचंद्राचार्य		दे० का०	दे०
१२२	७४७१	त्रिशत्कर्म सटीक			दे० का०	दे०
१२३	५७६२	त्रिशतश्लोकी			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति-संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२२·१ × ६·७ सें० मी०	३६ (१–३६)	१०	३२	अपू०	प्राचीन	
३१·४ × १२ सें० मी०	८२ (१–८२)	११	४७	पू०	प्राचीन	इति श्रीमद्विद्वन्मुकुटमाणिक्य श्रीमद्भट्टरामेश्वरसूरिसूनु नारायणट्ट विरचिते त्रिस्थलीसेतौप्रबट्टके प्रकीर्णक तीर्थधर्म प्रकरणं समाप्तम् ।।
२४·६ × ६·३ सें० मी०	८०	१०	५५	अपू०	प्राचीन सं० १८०७	इत्थं दिवाकरसुतेनकनीयसा श्रीरामानुजेनगुरुभक्ति परायणेन श्रीतातपादरचिते सुजनप्रियेस्मिन् ग्रंथे क्रमोविलिखितः सवितुः प्रसादात् इतिदिवाकर सूरि सूत बैजनाथ कृता तिथ्यर्क प्रकाशानुक्रमणिकासमाप्तः श्रीरस्तु सं० १८०७ ।
२५ × १० सें० मी०	५६	१४	४६	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमहोपाध्याय लौगाक्षिभास्कर विरचितो विशेषतस्तिथ्यादितत्वनिर्णयः संपूर्णः ।। श्री रस्तु
२३·३ × १०·१ सें० मी०	६३ (१-६१, ६५-६६)	१२	४२	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमत्पदवाक्य प्रमाणज्ञ महामहोपाध्यायभट्ट माधवसुत भट्ट विश्वनाथानुजभट्ट रघुनाथ निर्मित त्रिशल्छोकविवृत्ति संपूर्णा ।।
२४ × ८·६ सें० मी०	३४ (१–३४)	८	३०	पू० क्रमिकृंतित	प्राचीन सं० १७३३	इति श्री रामचंद्राचार्यकृताया आशौच त्रिंशच्छोक्यांटीका समाप्ता ।।श्रीरस्तु।। संवतु १७३३ वर्षेभाद्रपद मासे शुक्ल पक्षे प्रतिपदातिथौ भौमवासरे ।। × × ×
२५ × १०·६ सें० मी०	२० (३-५, ७, ६, ११-१६, १६-२८)	६	३३	अपू०	प्राचीन	
२५·४ × ११·३ सें० मी०	४ (१–४)	१२	३८	पू०	प्राचीन	इतित्रिशच्छोकीं व्यालिखत् शिवरामः ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय का आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२४	३६७	त्रिशश्लोकी			दे० का०	दे०
१२५	६३४३	त्रिशश्लोकी भाष्य			दे० का०	दे०
१२६	१७४	त्रिशश्लोकी भाष्य (सटीक)			दे० का०	दे०
१२७	७८५६	दानचंद्रिका			दे० का०	दे०
१२८	६१३६	* दानवाक्यावली	श्रीधर यति		दे० का०	दे०
१२९	७१३३	दानवाक्यावली	डीहेश्वरशर्मा		दे० का०	दे०
१३०	१०८२	* दानविवेक	भानु दीक्षित		दे० का०	दे०
१३१	६८१	दायाधिकारक्रम			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त-मान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१.३×६.७ सें० मी०	८ (१–८)	६	३२	पू०	प्राचीन	इति त्रिशच्छ्श्लोकी समाप्ता। लिखित मिदंभर्किभट्टेन ॥
२२.२×६.६ सें० मी०	२० (१–२०)	१२	४०	पू०	प्राचीन	इति त्रिशश्लोकी भाष्यं समाप्तं ॥
२६.८×११.२ सें० मी०	२१ (१–२१)	१२	३३	पू०	प्राचीन	इति त्रिशश्लोकी भाष्यं समाप्तम् ॥ शुभमस्तु सर्वदा ॥ संवत् १८६६ ॥छा॥
२२.८×६.५ सें० मी०	७ (१–७)	१२	४२	अपू०	प्राचीन	
२८×१०.३ सें० मी०	६६ (१–६६)	११	४५	पू०	प्राचीन सं०१६७६	समस्तप्रक्रिया विराजमान दलित कल्पलताभिमानभवभक्ति भावितवहु-मान महामहादेवी श्री घररमति विर-चिता दानवाक्यावली संपूर्णम् ॥ समाप्ता: ॥ ··· ···लिखितं जयनंद ब्रह्मणे अर्गलापुर मध्ये··· ··· ··· संवत् १६७६······ ॥
२६.६×१०.८ सें० मी०	२१ (१–२१)	१६	५०	पू०	प्राचीन सं०१६०७	इति श्री डीहेश्वर शर्म्मणाकृता दान वाक्यावलीयं समाप्त सम्पूर्णः शुभमस्तु संवत् १६०७ शाके १७७२ समये पौषकृष्णा × × ×
३१×१२.५ सें० मी०	२६	१२	४६	पू०	प्राचीन	इति श्री पदवाक्य प्रमाण श्री भट्टोजी दीक्षितसूरेः सनुना भानुदीक्षितेन विर-चितो दान विवेकः समाप्तः ॥
४२×६.१ सें० मी०	४ (१–४)	८	६२	अपू०	प्राचीन	इति मृत पुंधनाधिकार क्रमः ··· ··· भवेतूपितुरिति नारदीया ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३२	७२३५	दिनकर उद्योत	गागाभट्ट		दे० का०	दे०
१३३	६२६२	द्विजाचार			दे० का०	दे०
१३४	७२१४	धर्मप्रवृत्ति	नारायणभट्ट		दे० का०	दे०
१३५	७८९२	धर्मशास्त्रसंग्रह			दे० का०	दे०
१३६	४५११	धर्मशास्त्रसंग्रह			दे० का०	दे०
१३७	२१४	धर्मशास्त्रसंग्रह			दे० का०	दे०
१३८	१६०९	धर्मसंहिता			दे० का०	दे०
१३९	३८९८	धर्मसारसंग्रह			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२६·७ × १२·७ सें० मी०	१७ (१–१७)	१०	४८	अपू०	प्राचीन	
२१·४ × १३·५ सें० मी०	६ (१–६)	११	२१	अपू०	प्राचीन	उक्तो वाजसनेयेन याज्ञवल्क्येन धीमता आचारो द्विजवर्णानां संबोधः कथ्यतेधुना १···आदि ॥
२१·२ × ११·६ सें० मी०	२२० (१–२२०)	१२	२५	पू०	प्राचीन सं०१८५१	इति श्री श्रीमद्रामेश्वरभट्टसूरि सूनु श्री-मद्विद्वज्जनवल्लभ श्री मन्नारायणभट्ट विरचितायां धर्म प्रवृत्तिः समाप्तः ॥ × × संवत् ।१८५१ यादृशं पुस्तकं दृष्टवा तादृशं लिखितं मया ॥ यदि शुद्धम × × × × ॥
३२·६ × १६·६ सें० मी०	६ (१–६)	१८	४५	अपू०	प्राचीन	
१५·३ × ११ सें० मी०	८ (१–८)	८	१६	पू०	प्राचीन	धर्मशास्त्रे ॥ (प्रारंभ पत्र सं० १)
२७·५ × ११·६ सें० मी०	५८ (६०-६७, १००-१०६, १६४-२०३)	११	३६	अपू०	प्राचीन	
१८ × १०·४ सें० मी०	६ (२–१०)	८	२३	अपू०	प्राचीन	
१६·८ × १०·१ सें० मी०	१३० (३-१४,२१-६६,६०-७२,७२-१२६)	६	२४	अपू०	आधुनिक	

(सं०सू० २-६३)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४०	६८५७	धर्मसिंधुसार	काशीनाथ उपाध्याय		दे० का०	दे०
१४१	३९२६	धर्मसिंधुसार	काशीनाथ उपाध्याय		दे० का०	दे०
१४२	६८६१	धर्मसिंधुसार (तृतीयपरिच्छेद)	काशीनाथ उपाध्याय		दे० का०	दे०
१४३	६८६०	धर्मसिंधुसार (माधवकारिका)			दे० का०	दे०
१४४	१०१३	नवाकंडिकासूत्र			दे० का०	दे०
१४५	६९९	नागपंचमीनिर्णय			दे० का०	दे०
१४६	१६७५	नारदसंहिता			दे० का०	दे०
१४७	६३२१	नारदसंहिता			दे० का	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
२३·५ × १०·३ सें० मी०	३४६	९	३४	पू०	प्राचीन	इति श्रीमत्काश्युपाध्याय सूरि सूनुयज्ञेश्वरोपाध्यायनुजानंतोपाध्यायमुनिनूत काशीनाथोपाध्यायविरचिते धर्म सिंधु सारे तृतीय परिछेदे पूर्वार्धः समाप्तोयं ॥
३३·८ × १०·१ सें० मी०	३७२ (१-१७,१-२६,१-७४, १-१५४,१-१०१)	९	५१	पू०	प्राचीन सं० १९०६	इति श्रीमत्काश्युपाध्याय सूरिसूनुयज्ञेश्वरोपाध्यायानुजानंतोपाध्यायमुन काशीनाथोपाध्याय विरचिते धर्मसिंधु सारे तृतीयपरिच्छेदोत्तरार्धं सम्पूर्णम् ॥ समाप्तश्चायं धर्मसिन्धुसाराख्यग्रन्थः सं० १९०६ फाल्गुन शुद्ध १३ रविवासरे
२४ × १०.३ सें० मी०	१६७ (१–१६७)	९	३०	पू०	प्राचीन सं० १८७५	श्री मत्काश्युपाध्याय सूरि सूनुयज्ञेश्वरोपाध्यायनुजानंतोपाध्यायमूरिसूत काशीनाथोपाध्याय विरचिते धर्मसिंधुसारेतृतीयपरिछेदोत्तरार्द्धं समाप्तं संवत १८७५ शाके १७४० × × × ×॥
२३·८ × १०·४ सें० मी०	४९ (१–४९)	९	२५	पू०	प्राचीन	इति माधवकारिकायां समाप्ता ॥
२१·६ × ११ सें० मी०	४ (१–४)	१२	२८	पू०	प्राचीन	इति श्री नवकंडिका सूत्रं समाप्तं ॥ शुभमस्तु ॥ कल्याण मस्तु ॥ श्रीरस्तु ॥
१९·९ × ७·७ सें० मी०	३ (१–३)	७	३७	पू०	प्राचीन सं० १९३६	सं० १९३६ श्रा० शु०·········राजाराम शर्मणः परामर्शः ॥
२९.६ × १३·८ सें० मी०	५० (१–५०)	१२	३९	पू०	प्राचीन	इति श्रीनारदसंहितायां श्राद्धलक्षणाध्यायं सप्त त्रिंशत्तमः ३७ समाप्तमितिनारदीयसंहिता ॥
२३·१ × १०·१ सें० मी०	५२ (१–५२)	११	४०	पू०	प्राचीन सं० १८५५	इति श्रीनारदीय संहितायां श्राद्धलक्षणाध्यायः ॥ संवत १८५५ भाद्रपद शुक्ले ५ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४८	३७४	निगदव्याख्यान	विष्णु वाजपेयी		दे० का०	दे०
१४९	३३३४	नित्याप्रकार			दे० का०	•
१५०	१८७१	निर्णय दीपक			दे० का०	दे०
१५१	२६२१	निर्णयभास्कर	हरिचंदन		दे० का०	दे०
१५२	७७६५	निर्णयसार (वैष्णवोपयोगी निर्णय)			दे० का०	दे०
१५३	५८४२	निर्णयसारोद्धार	माधव		दे० का०	दे०
१५४	११७	निर्णयसिंधु	कमलाकर भट्ट		दे० का०	दे०
१५५	७२६	निर्णयसिंधु	कमलाकर भट्ट		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७·२ × १० सें० मी०	२८	९	२१	पू०	प्राचीन	इति विष्नु वाजपेयकृत निगदव्याख्यानं समाप्तं ।। लवंति सफला वृक्षा लवति सुजनोजनाः ।। शुष्ककाष्ठंच मूर्खंचन लवंति कदाचन ।। १ ।। इति सूत्रभाष्य समाप्तं बापुदेवेनलिखीतं परोपकारार्थं ।। ६ ।।
१८ × ९ सें० मी०	४ (१–४)	८	३२	पू०	प्राचीन	इति नित्याप्रकारः ।।
३३·५ × १५·८ सें० मी०	१०६	१४	३८	अपू०	प्राचीन	पंच सप्ततिमेवर्षे संवत्पंचदशोत्परे ।। शुक्रस्य कृष्ण द्वादश्यां ग्रंथं पूर्णत्वमीयवान् ।। छ ।। इति श्री निर्णयदीपकः समाप्तम् । ६ ।। श्री रामोज्जयति ।। संवत् १९०० पौषे शुक्लेद्वितीयायां शनिवासरे लिषितं परमानंद ।।
१७ × १६·५ सें० मी०	१२ (१–१२)	१९	३१	पू०	प्राचीन सं० १८५४	इति हरिचन्दन नाम्ना विरचितं निर्णय भास्करं समाप्तं ।। संवत् १८५४
२२·७ × ९·९ सें० मी०	२९ (१–२९)	७	३१	पू०	प्राचीन	इति वैष्णवोपयोगिनानिर्णय समाप्तः ज्ञान परिछा चारि ।। लिषितं वैष्णव वालकदासः ।।
२१·१ × ८·५ सें० मी०	१४ (१–१४)	८	३१	पू०	प्राचीन	इति निर्णय सारोद्धारन्नाम संपूर्ण मस्तु ... ...
३५·५ × १४·४ सें० मी०	३७	१३	५०	अपू०	प्राचीन	
२८·५ × १२ सें० मी०	१६५ (१-६४,३५-१०१,१०१-१०२,१०२-१३४)	११	४६	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५६	४१२	निर्णयसिंधु	कमलाकर भट्ट		दे० का०	दे०
१५७	२६०९	निर्णयसिंधु			दे० का०	दे०
१५८	५३४	निर्णयसिंधु	कमलाकर भट्ट		दे० का०	दे०
१५९	७०४२	निर्णयसिंधु	कमलाकर भट्ट		दे० का०	दे०
१६०	४०४४	निर्णयसिंधु	कमलाकर भट्ट		दे० का०	दे०
१६१	२४१३	निर्णयसिंधु	कमलाकर भट्ट		दे० का०	दे०
१६२	७६३७	निर्णयसिंधु	कमलाकर भट्ट		दे० का०	दे०
१६३	५८३०	निर्णयसिंधु			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·५ × ११·७ सें० मी०	८० (३–३४, ६६–११२)	१२	४४	अपू०	प्राचीन	इतिश्रीमन्नारायणभट्ट सूरिसूनुरामकृष्णभट्टात्मज दिनकरभट्टानुज कमलाकरभट्टकृते निर्णयसिन्धौसंवत्सरकृत्यंनामः द्वितीय परिच्छेदः ।। शुभमस्तु ।। इति
२५·३ × १०·३ सें० मी०	६६ (१–२३, २५-६७)	१०	३६	अपू०	प्राचीन	श्रीमीमांसकनारायणभट्ट··· कमलाकरभट्टकृते निर्णयसिंधौ प्रथमः प्ररिच्छे ।।
२७·८ × ११·८ सें० मी०	३८ (१–३८)	११	४८	पू०	प्राचीन सं० १७८७	इति मीमांसक नारायणभट्टसूरिसूनुरामकृष्णभट्टात्मज दिनकरभट्टानुज कमलाकरभट्टकते निर्णयसिंधौ प्रथमः परिछेदः ।। समाप्तः—सं० १७८७ के समये नाम भाद्र सुदि १० गुरवासरे पुस्तक लिखितं नेवाजिनेन ।।
३२·३ × १८ सें० मी०	२३३	२०	४६	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमत्पदवाक्य प्रमाणपारावारीण श्री मद्रामेश्वरभट्ट सूरिसूनुना नारायणट्टसुत विद्वन्मुकुट हीरारङ्कु श्री रामकृष्णभट्टात्मजकमलाकर कृते निर्णयसिन्धौ पंचमपरिच्छेदः ।। समाप्तश्चायनिबन्ध संवत्१९०४ शकः१७६९ पौष सुदि ५ बुधे उत्तरायां भाद्रपदायां ।।
२५·२ × १०·१ सें० मी०	४५ (३७३ से ४२७) तक स्फुट पत्र	१०	३५	अपू०	प्राचीन शाके १६२५	इति श्रीमत्पदवाक्य प्रमाण पारावार पारीण श्रीमद्राश्वेरभट्ट सूरिसूनु नारायणभट्टसुत विद्वन्मुकुटहिरांकुर श्रीराम कृष्णभट्टात्मजकमलाकर कृते निर्णय सिंधौ तृतीयः परिच्छेदः समाप्तश्चायं निबंधः ।। शके १६० २५ वर्षे सुभानुसंवत्सरे आश्विन शुद्ध विजयादशमी तद्दिनी·········।।
२५·५ × १०·५ सें० मी०	१४४ (१–१४०, १४५–१५२)	१०	३५	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमन्नारायणभट्ट सूरिसूनुरामकृष्णभट्टसुतभट्टकमलाकर कृते निर्णयसिंघौसंवात्सर कृत्यं नाम द्वितीयः परिक्षेद ।।
२९ × ११·७ सें० मी०	१३ (२८ से १८० तक स्फुटपत्र)	१०	५३	अपू०	प्राचीन	इति श्रीकमलाकरभट्टकृते निर्णयसिंधौ तीर्थश्राद विधिः ।। (पत्र सं० १६०)
२४·३ × १०·५ सें० मी०	३ (३–५)	१०	३२	अपू०	प्राचीन	इति निर्णयसिंधौ सहगामिनी अनुगामिनी रजस्वलादाहनिषेधः ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६४	२५७९	निर्णयसिंधु	कमलाकर भट्ट		दे० का०	दे०
१६५	१३२३	निर्णयसिंधु (१–३) परिच्छेद	कमलाकर भट्ट		दे० का०	दे०
१६६	२५४४	निर्णयसिंधु (द्वितीय परिच्छेद)	कमलाकर भट्ट		दे० का०	दे०
१६७	२४१४	निर्णयसिंधु (तृतीय परिच्छेद)	कमलाकर भट्ट		दे० का०	दे०
१६८	२६०६	निर्णयसिंधु (तृतीय परिच्छेद)	कमलाकर भट्ट		दे० का०	दे०
१६९	७८५	निर्णयसिंधु	हेमाद्रिमाधव		दे० का०	दे०
१७०	६१६०	निर्णयामृत	सूर्यसेन		दे० का०	दे०
१७१	१९४३	निर्णयामृत	सूर्यसेन		दे० का	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५.२ × १०.२ सें० मी०	५ (१–५)	१०	२२	पू०	प्राचीन	इति निर्णयसिंधौ प्रथम परिछेदा अनुक्रमणीका समाप्तः ॥ ६ ॥
३२.७ × ११.८ सें० मी०	३९२	११	४८	पू०	प्राचीन शाके १७५४	इति श्रीमसाद वाक्यप्रमाण पारा वारंपारीण श्रीरामद्रामेश्वरभट्टसूरि सूनुना नारायणसुत विद्वनमुकुटहीरांकुर श्रीराम कृष्णभट्टात्मज दिनकरभट्टानुजकमलाकर भट्ट कृते निर्णय सिंधौ तृतीयः परिछेदः समाप्तः ॥ समाप्तश्चायं निबंधः ॥ श्री रामकृष्ण॥ शके १७५४ कीलक नाम संवत्सरेमार्गं शीर्ष शुद्ध दशम्यां गुरुवासरे समापितोयं निर्णय सिंधुः ॥
२५.५ × १०.२ सें० मी०	१२ (१–१२)	८	२६	पू०	प्राचीन	इति निर्णयसिन्धु द्वितीयपरिछेदुदानुक्रमणिकासमाप्तः ॥
२५.३ × १० सें० मी०	३३२ (१-३२९,३७७ ३९०,३९८)	९	३५	अपू०	प्राचीन	
२५.५ × १०.३ सें० मी०	१८ (१–१८)	१०	२९	पू०	प्राचीन	इति तृतीय परिछेदानुक्रमणिका समाप्तः ॥
२७.८ × ११.४ सें० मी०	५ (१–५)	११	४४	अपू०	प्राचीन	
३३.४ × १७ सें० मी०	११ (१–११)	१८	५०	अपू०	प्राचीन	श्री सूर्यसेन महीमहेन्द्र विरचिते निर्णयामृते शिवरातदुक्त महाभारते ... ...
३७.५ × १४.५ सें० मी० (सं०सू०२–६४)	६७	१३	४५	अपू० (जीर्ण)	प्राचीन	इति सूर्य्यं सेनमहेन्द्रें विद्रविते निर्णायामृते आशौच प्रकरणं संपूर्णम् ॥ कार्त्तिके मासेसिते पक्षे पौर्णं मास्यां शुभे दिने । अलेखि वासुदेवेन पुस्तकं सुषदं सदा ॥ शुभमस्तु सिद्धिरस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१७२	७७७४	निर्णयामृत	सूर्यसेन		दे० का०	दे०
१७३	६६०१	निर्णयोद्धार			दे० का०	दे०
१७४	१५६४	परमहंससंन्यासविधि			दे० का०	दे०
१७५	६८३०	पराशरस्मृतिव्याख्या	माधव		दे० का०	दे०
१७६	६५३४	पर्वनिर्णय			दे० का०	दे०
१७७	२६६६/८	पल्लीपतनशरटविचार			दे० का०	दे०
१७८	६४१	पल्लीशरटशांतिविधान			दे० का०	दे०
१७९	६६०८	पाकयज्ञनिर्णय			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२८·६ × ११·६ सें० मी०	८९	१६	५५	अपू०	प्राचीन	इति श्री सूर्यसेनमाहामहिंद्र विरचिते निर्णयामृते सप्तमीनिर्णयः ॥
२१ × ८.५ सें० मी०	१४ (१–१४)	९	३०	पू०	प्राचीन	इति निर्णयोद्धारः संपूर्णः ॥··· ··· ···
२३ × ९·५ सें० मी०	१९	३६	२०	अपू०	प्राचीन	
२९·८ × १४ सें० मी०	१६० (१–१६०)	१२	४६	पू०	प्राचीन	इति श्री महाराजाधिराजपरमेश्वर-वैदकमार्गप्रवर्तस्य श्रीवीर कभूपाल साम्राज्यधुरंधरस्य माधवामात्यस्यकृतौ पराशरस्मृतिव्याख्यायां माधवीयायां द्वादशोध्यायः प्रायश्चितकांडे शुभमस्तू ।
२०.३ × ६.८ सें० मी०	४ (१–४)	७	३७	पू०	प्राचीन	
१५·५ × १४.५ सें० मी०	७	१२	१७	अपू०	प्राचीन	
२७·१ × ११·८ सें० मी०	२	१२	३६	पू०	प्राचीन	इति गर्गोक्त पल्लीशरटशांतिविधानं समाप्तं ॥ सं० १९१२ शाके १७७७ श्रावण ··· ···४ गुरु दिने विश्वनाथ दीक्षितेन लिखितोयं ग्रंथः ॥
२२·१ × ८.३ सें० मी०	२३ (१–२३)	८	३५	पू०	प्राचीन	इति पाकयज्ञनिर्णये आग्रयण प्रयोगः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१८०	६६०६	पाकयज्ञपद्धति निर्णय	चंद्रशेखर शर्मा या चंद्रचूड भट्ट		दे० का०	दे०
१८१	३६०८	पारस्कर गृह्यसूत्र (संस्कार गणपति)	परमकृष्ण		दे० का०	दे०
१८२	३१८२	पारस्कर गृह्यसूत्र (हरिहर भाष्य)	हरिहर अग्निहोत्री		दे० का०	दे०
१८३	७७०२	पारस्करगृह्यसूत्रविवरण	रामकृष्ण		दे० का०	दे०
१८४	४३६	पाराशरधर्मसंहिता			दे० का०	दे०
१८५	८०४	पाराशरधर्मसंहिता			दे० का०	दे०
१८६	२२०१	पाराशरधर्मसंहिता			दे० का०	दे०
१८७	११५३	पाराशरधर्मसंहिता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४·२ × ११·१ सें० मी०	३३ (१–३३)	१२	३६	अपू०	प्राचीन	उमापति तनूजेन चंद्रशेखर शर्मणा ।। विलोक्य सूत्रं भाष्यं चविविधाः पद्धतीस्तथा ।। २ ।। क्रियते पाकयज्ञानां पद्धतिश्च विनिर्णयः ।। (पृ० १) × इति श्रीमत्पौराणिकधर्मभट्टसूत उमा भट्टात्मज चंद्रचूड भट्ट कृते पाक यज्ञनिर्णये पार्वणा··· ···। (पृ० २१)
२५·३ × १०·३ सें० मी०	४३ (५-१४,१८-५०)	१०	३८	अपू०	प्राचीन सं०१८६२	इति श्री मथमशाखीपरमकृष्णविरचिते पारस्कर गृह्यसूत्र विवर्णसंस्कार गणपतौग्रहमखः समाप्तः ।। ··· ··· ··· लिखितं लक्ष्मानभटवादके सं० १८६२।।
२४·१ × ९·८ सें० मी०	१२९ (९-५८,१०३-१८१)	९	३९	अपू०	प्राचीन सं०१७२२	इति श्री विज्ञानेश्वरशिष्याग्निहोतृ-हरिहर विरचितां पारस्करगृह्यसूत्र व्याख्यान पूर्व्विकायां प्रयोग पद्धतौ तृतीय कांडःसमाप्त ।। समाप्तेदं हरिहरभाष्यं संवत् १७२२ समये श्रावण वदी १२ गुरुवासरे ।। इदं पुस्तकं काश्यालिखितं।। रामभटस्य पुस्तकं ।।शुभमस्तु।। कल्याणमस्तु ।।
२४·७ × १०·४ सें० मी०	५ (१–५)	९	३१	पू०	प्राचीन	इति प्रथम शाखीय रामकृष्ण विरचिते पारस्करगृह्यसूत्रविवरणे संस्कार गणपतौ वैधव्ययोग परिहारः ।।
३०·५ × १३·५ सें० मी०	९ (१–९)	२१	४८	अपू०	प्राचीन	इति पाराशरेधर्मशास्त्रेसुशुभमस्तु रामाय कृष्णायनमः ।।
३४·५ × १३ सें० मी०	५७ (१-४५,४९-५२,५४-६१)	१३	५५	अपू०	प्राचीन	
३२·४ × २१ सें० मी०	९७ (१–९७)	१६	३६	अपू०	प्राचीन	
२२·८ × १३·५ सें० मी०	५	१०	२१	अपू०	प्राचीन	इति श्री पारासरे धर्मं सास्त्रे प्रथमोध्येः

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
१८८	७०६६	पाराशरस्मृति	पाराशर		दे० का०	दे०
१८९	२०७५	पाराशरस्मृति			दे० का०	दे०
१९०	३६६९	पाराशरस्मृति			दे० का०	दे०
१९१	२८२	पाराशरस्मृति (उत्तरखंड)			दे० का०	दे०
१९२	३९८०	पाराशरस्मृति			दे० का०	दे०
१९३	४४४८	पाराशरस्मृति			दे० का०	दे०
१९४	३४६८	पाराशरीपद्धति (सटीक)			दे० का०	दे०
१९५	३२६५	पाराशरीप्रकाशिका (राज्योग)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·६ × १३·८ सें० मी०	२३	१६	४९	अपू०	प्राचीन सं० १८८३	इति श्रीपाराशरीयेधर्म्मं शास्त्रे सुव्रतप्रोक्तायां संहितायांयोगाध्यायोनामद्वादशमोध्यायः १२ संपूर्णमिति संवत् १८८३ श्रावण शुक्लात्रयोदश्यां भौम वासरे इदंपुस्तकं लिखितंभागिरथि क्षेत्रेयमुनादत्तस्वयंपठनार्थम् ॥
२८·५ × १४ सें० मी०	१८ (१–१८)	१४	४१	अपू०	प्राचीन	इति श्रीपाराशरे धर्म्मशास्त्रे एकाशोध्यायः ॥ .... (पत्र सं० १६)
२८·४ × १४ सें० मी०	१६ (१–१६)	१४	३४	अपू०	प्राचीन	
२१·७ × १०·७ सें० मी०	३६ (१–३६)	१०	३१	पू० (कृमि कृंतित)	प्राचीन सं० १८११	इति श्रीपाराशरेधर्मशास्त्रे समुद्रस्नानं नाम १२ ध्यायः ॥ संवत् १८११ पौष वद्य १२ सौम्य वासरे तद्दिने लिखितमिदं रघुनाथ अयाचितेन ॥ शुभंभवतु ॥
२६·६ × ११·२ सें० मी०	७ (१–७)	९	३३	पू०	प्राचीन	इति श्रीपराशर्ये उत्तरखंडे धर्मशास्त्रयाग संस्कानो नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥
२६·५ × १०·३ सें० मी०	३५	८	३४	अपू० (जीर्णशीर्ण)	प्राचीन	इति पाराशरीये धर्मशास्त्रे प्रथमोध्यायः ॥१॥ × × × (पत्र सं० ६)
३०·४ × १५·२ सें० मी०	६ (१–६)	१५	४४	पू०	प्राचीन सं० १९०८	इतिपाराशरी पद्धति समाप्तः सप्तमाधिपतिश्चेत्स्यात्कोणेशाधिपसंयुतः यात्राजाया गजाप्तिस्या पाप संबंधतोऽसुखम् संवत् १९०८ शकः १७७३ आश्विने शुभेतिथौ ११ रवौ लिष्यतं···
२३·३ × १०·६ सें० मी०	६ (१–६)	११	४५	पू०	प्राचीन	इतिपाराशरी प्रकाशिकायां राज्ययोगकथनं समाप्तम् ॥श्री॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१९६	३२६३	पाराशरीप्रकाशिका (राजयोग)			दे० का०	दे०
१९७	६६०४	पिंडकल्पलतिका	सदाशिवदेव		दे० का०	दे०
१९८	१६४८	प्रकीर्णनिर्णय			दे० का०	दे०
१९९	७४४९	देवप्रतिष्ठाकालनिर्णय			दे० का०	दे०
२००	४२११	प्रतिष्ठामयूख	नीलकंठ भट्ट		दे० का०	दे०
२०१	७४६१	प्रपन्नकंठाभरण	रामप्रसाद मिश्र		दे० का०	दे०
२०२	७६३३	प्रयोगपारिजात (अन्वाधान प्रकरण)			दे० का०	दे०
२०३	६३४४	प्रयोगपारिजात	नरसिंह		दे० का	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·५ × १०·६ सें० मी०	३ (१–३)	१०	३७	अपू०	प्राचीन	इति पाराशरी प्रकाशिकायां राजयोग कथनं समाप्तम् ॥ श्री ॥
२२·६ × ९·५ सें० मी०	२ (१–२)	११	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री मद्देवालय पुरावासि श्री नीलकंठसूरि सूनु श्री श्रीपति सूरि सूनुना आपदेवापरनामधेयेन श्री सदाशिव देवेन रचिता सा पिंडयकल्पलतिका समाप्तं ॥
२८·५ × १२ सें० मी०	२ (१–२)	११	१०	अपू०	प्राचीन	
१९·८ × ८·२ सें० मी०	५ (१–५)	९	२५	पू०	प्राचीन	इति प्रतिष्ठा कालः निर्णयः ॥
३०·२ × १४·८ सें० मी०	४७ (१–४७)	१३	३२	पू०	प्राचीन सं० १८४७	इति श्री सगरवंशावतंसमहाराजाधिराज भगवंतसिंघवाग्रष्टमीमांसकभट्ट नीलकंठ कुले भगवंत्तभास्करे प्रतिष्ठामयूखोनवमः समाप्तः शुभमस्तु संवत् १८४७ ज्येष्ट वदि १ गुरौ लिषतं श्री रावत अनंत राम सुतरुद्रसीघ ॥
३८·८ × ११·५ सें० मी०	१६०	११	५१	अपू०	प्राचीन	इति श्री मद्रामप्रसाद मिश्र विरचिते प्रयन्नकण्ठाभरणो वरणाश्रमधर्म निरूपणे × × (पत्र सं० ११६)
१४·२ × ८ सें० मी०	१	१२	२८	अपू०	प्राचीन	इति पारिजातेऽन्वांधान प्रकरणं ॥
३२·३ × ८ सें० मी०	२३ (१–२३)	९	३६	पू०	प्राचीन	इति श्री नरसिंहीये प्रयोग पारिजाते षोडश कर्म कांडे आभ्युदयिक प्रकरणं।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२०४	८८७	प्रयोगरत्न	नारायण भट्ट		दे० का०	दे०
२०५	६६७३	प्रयोगरत्न	अनंत दीक्षित		दे० का०	दे०
२०६	६६१०	प्रयोगरत्न	नारायण भट्ट		दे० का०	दे०
२०७	६६११	प्रयोगरत्न	नारायण भट्ट		दे० का०	दे०
२०८	६६३६	प्रयोगरत्न	नारायण भट्ट		दे० का०	दे०
२०९	६६४२	प्रयोगरत्न	अनंत दीक्षित		दे० का०	दे०
२१०	६३७८	प्रयोगरत्न	नारायण भट्ट		दे० का०	दे०
२११	६८८२	प्रयोगरत्न समंत्रक प्रायश्चित्त			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५ × ८·३ सें० मी०	७०	१२	४६	अपू०	सं० १६६६	इतिश्रीरामेश्वरभट्टसुतनारायणभट्टकृते प्रयोगरत्ने समावर्तन प्रयोग ॥ संवत् १६६६ समये पौषशुद्धः··· ···
२३·४ × १०·१ सें० मी०	१६ (१–१६)	१०	४२	पू०	सं० १८०६	संवत् १८०६ श्रावण शुद्ध ३ गुरुवासरे यथानाम संवत्सरे इदं पुस्तकं समाप्तम्॥
२२·५ × ९·२ सें० मी०	१२४	१०	३२	अपू०	प्राचीन	भट्ट रामेश्वरे सुतो भट्ट नारायण. सुधीः॥ प्रयोगरत्नं कुरुते ··· ··· (प्रारंभ) ॥ इति श्री प्रयागरत्ने वधू सहगनंविधि (पृ० १०६) ।
२४ × १० सें० मी०	१७ (१–१७)	११	४४	पू०	प्राचीन	इति श्रीरामेश्वरभट्ट सूरि सूनुनारायण भट्ट कृते प्रयोग रत्नेन्वष्टक्य प्रयागः ॥
२३·८ × १०.२ सं० मी०	१५१ (१–१५१)	१०	४४	पू०	प्राचीन	इति श्री रामेश्वरभट्ट सूरि सूनुनारायण भट्ट कृते प्रयोग रत्नेऽष्टकाविकृति श्राद्ध प्रयोयः ॥
२३·२ × १०·२ सें० मी०	१४३ (१–१४३)	१०	३९	अपू० (जीर्ण)	प्राचीन	इति श्रीमद्यज्ञोपवीताभिधान श्री विश्वनाथ सूनुदादीक्षिताऽनंतेन सर्वोपकाराय समंतक विरचिते प्रयोग रत्ने प्रायश्चित्तांतः समाप्तः ······॥
१९·६ × १०·२ सें० मी०	२१ (१-१३,१५-. २२)	१०	२७	अपू०	शके १६५६	शके १६५६ आदनं नाम संवत्स आश्विन शुद्ध सप्तम्यां समाप्तं ॥ (मुख्य पृष्ठ)
२५ × १०·२ सें० मी०	८ (१–८)	१३	५२	पू०	प्राचीन	इति श्रीमद्यज्ञोपवीताभिधान श्री विश्वनाथ सूनुना दीक्षितानंतेन सर्वोपकाराय समंतक विरचिते प्रयोग रत्ने प्रायश्चित्तांत्तः समाप्तः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२१२	४०८८	प्रवरनिर्णय	भट्टोजी भट्ट		दे० का०	दे०
२१३	४२०७	प्रवरनिर्णय	भट्टोजी भट		दे० का०	दे०
२१४	७६३५	प्रवरनिर्णय			दे० का०	दे०
२१५	६८४०	प्रवरनिर्णय व्याख्या	विश्वनाथ देव		दे० का०	दे०
२१६	७१८४	प्रवराध्याय			दे० का०	दे०
२१७	१५३१	प्रवराध्याय			दे० का०	दे०
२१८	३८१	प्रवराध्याय			दे० का०	दे०
२१९	६३२	प्रवराध्याय			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·५ × १०.७ सें० मी०	७ (१–७)	११	३४	पू०	प्राचीन सं० १७१६	इति भट्टोजी भट्ट कृत प्रवरनिर्णयः समाप्तः ॥ संवत् १७१६ वरीर्षे आषाड वदी ३ सोमे तदिने लिखितं पुस्तकानी ••• ।
२७ ६ × १०.८ सें० मी०	४ (१–४)	१०	४१	पू०	प्राचीन सं० १९०८	इतिबौद्धायनोक्ते महाप्रवरनिर्णये भट्टोजी भट्टकृतः प्रवराणांगणानांचस मुद्धार समाप्तः ॥ संवत् १९०८ मितिभाद्रपदवदी तृतीया ३ शुक्रवार इदं लिखितं शिवकरण द्विजन्मना शुभं ••• •••
२३·३ × १०·१ सें० मी०	३ (३,५-६)	१०	३२	अपू०	प्राचीन	
२२·६ × १२·६ सें० मी०	१३ (१–१३)	×	×	पू०	प्राचीन	इति श्री मन्महोपाध्यायशभूतनयरामदेवानुज विश्वनाथदेव विरचितप्रवरनिर्णय वाक्यसुधार्णवांगस्तिरंतरयः सप्तार्षेः गोत्र प्रवर निर्णयः क्षत्रिय वैश्ययोः ॥ प्रवरनिर्णय समाप्तः ॥
२३·५ × १०·९ सें० मी०	४ (१–४)	९	२४	पू०	प्राचीन सं० १९२५	इति प्रवराध्याय समाप्तं संवत् १९२५ पौष कृष्णपक्षे प्रतिपदा चंद्रवारे लेषइत्वा ११ ॥
२७·२ × १२ सें० मी०	३ (१–३)	१२	४२	पू०	सं० १९६१	इति प्रवराध्यायीसम्पूर्णम् ॥ संवत् १९६१ शाके १८२६ मिति मार्गशिर शुदी १३ भौमदिने ॥
२५·५ × ११·५ सें० मी०	४	९	२७	अपू०	सं० १९३८	इति प्रवराध्यायसमाप्तम् सं० १९३८ कातिग १४ चतुदर्शी भौम दिने लिखितं बनवारिलाल शुभम् । *
२४ × ९ सें० मी०	५ (१४-१७,१९)	१०	३४	अपू०	प्राचीन सं० १८००	इतिषद वाक्य प्रमाणज श्री लक्ष्मीधर सूरेः सूनुना भट्टो जी दीक्षितेन विरचितायां श्री चतुर्विंशति स्मृति व्याख्यायां प्रायश्चित्त कांड संपूर्णं । शुभमस्तु सं० १८०० मिति ••• •••

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२२०	७४३३	प्रायश्चित्तकांड			दे० का०	दे०
२२१	६२३७	प्रायश्चित्त निर्णय			दे० का०	दे०
२२२	५१०५	प्रायश्चित्त मयूख	नीलकंठ भट्ट		दे० का०	दे०
२२३	४२७०	प्रायश्चित्त मुक्तावली	दिवाकर भट्ट		दे० का०	दे०
२२४	३२३७	प्रायश्चित्त मुक्तावली	दिवाकर भट्ट		दे० का०	दे०
२२५	२५४३	प्रायश्चित्त मुक्तावली	दिवाकर भट्ट		दे० का०	दे०
२२६	१३७३	प्रायश्चित्त विधि			दे० का०	दे०
२२७	६४१	प्रायश्चित्त विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२.८ × ९.३ सें० मी०	४	९	३३	अपू०	प्राचीन	
२३ × १०·६ सें० मी०	६ (१–६)	१०	३६	अपू०	प्राचीन	
३०·५ × १५·९ सें० मी०	२५	२१	३८	अपू०	प्राचीन	इति श्री भट्ट लीलकंठ कृते प्रायश्चित्त मयुखेस्तेयप्रायश्चित्तानि ॥ × × (पृ० १०)
५·७ × ११·४ सें० मी०	५ (१–५)	१४	२३	पू०·	प्राचीन	इति श्री भारद्वाज महादेव भट्टात्मज दिवाकर विरचितायां प्रायश्चित मुक्तावल्यां सर्वसाधारणः प्रायश्चित प्रयोगः ॥ ··· ··· ···
२४ × १०·७ सें० मी०	८ (१०८-११५)	१०	३२	अपू०	प्राचीन	इतिश्रीमद्भरद्वाजमहादेव भट्टात्मज दिवाकर रचिता प्रायश्चित्तमुक्तावली समाप्तिम फाणीत् ॥ शुभमस्तु ॥
२३·८ × १०·५ सें० मी०	१०७ (१–१०७)	१०	३३	अपू०	प्राचीन	
२३ × ९ सें० मी०	३३ (१–३३)	७	३९	पू०	प्राचीन	इति प्राजापत्यप्रत्यास्नायाः अथप्रसंग्राद्रेतस्खलन प्रायश्चितमाह ग्रहस्छः कामत-कुर्याद्रेतसः सूवत्म नंयदिसहस्रंतुजपेद्व्याः प्राग्गायामैस्त्रिभिः सह अकासेवोयाज्ञवल्क्यः ॥
२५ × ९·५ सें० मी०	१६४	८	४१	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२२८	१५६३	प्रायश्चित्त विवेक	शूलपाणि		दे० का०	दे०
२२९	२१०	प्रायश्चिताशौच निर्णय			दे० का०	दे०
२३०	६२६६	बृहत् पाराशरी स्मृति (संक्षिप्त)	पाराशर		दे० का०	दे०
२३१	३२०	बृहत् पाराशरी			दे० का०	दे०
२३२	५३२३	ब्राह्मणधर्म			दे० का०	दे०
२३३	७७८८	ब्राह्मणसर्वस्व	हलायुध		दे० का०	दे०
२३४	१३१५	भारतसंग्रह कारिका			दे० का०	दे०
२३५	१३०५	भोगोपभोग निर्णय			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६·४ × ११·२ सें० मी०	३०८ (५२-१०३, १०५-१६६, १६६-३४२ ३४४-३६०)	८	३३	अपू०	प्राचीन सं० १७०४	इति श्री साहुडिपालमहामहोपाध्याय-श्रीशूलपाणिविरचितः प्रायश्चित्त विवेकसंपूर्णं ··· ··· वेदव्योमसमुद्रच १७०४न्द्र विचरत्संवत्सरे दुस्तरेवाभिः···
२१·७ × ६ सें० मी०	२६ (१–२६)	६	३७	अपू०	प्राचीन	
२६·३ × १७·३ सें० मी०	१४ (१–१४)	११	२४	पू०	प्राचीन सं० १६१०	इति श्री बृहत्पाराशरीय स्मृतौ द्वादशोध्यायः १२ संपूर्णं ··· ··· संवत् १६१० फाल्गुण शुक्ल १५ ··· ···
२६ × १३·५ सें० मी०	२६ (५४-५६, ५६, ६१-८५)	१५	३४	अपू० (जीर्ण)	प्राचीन	(प्रारम्भ का अध्याय खंडित, सातवाँ अध्याय पूर्ण एवं शेष अध्याय खंडित)
२६·७ × ११ सें० मी०	२ (१–२)	६	३२	अपू०	प्राचीन	
२२·२ × १३·१ सें० मी०	१३५ (१–१३५)	१२	३५	अपू०	प्राचीन सं० १८४२	इति श्री धर्माध्यक्ष हलायुध कृतं ब्राह्मणसर्वस्वं समाप्तं ॥ शुभंभूयात् × × संवत् १८४२ चैत्रेलिखितोयं ग्रंथः जगन्नाथेन स्वान्वलोकनार्थं ॥
३३ × १३·७ सें० मी०	१०	१२	५८	अपू०	प्राचीन	
२६·७ × १२·८ सें० मी० (सं०सू०-२-६६)	२	२५	५४	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२३६	७४८१	मनुस्मृति	मनु		दे० का०	दे०
२३७	२४०३	मनुस्मृति (अन्वर्थमुक्तावली टीका)	मनु	कुल्लूक भट्ट	दे० का०	दे०
२३८	६२६६	मनुस्मृति संग्रह			दे० का०	दे०
२३९	६७२	मलमासनिर्णय			दे० का०	दे०
२४०	१५३०	महाप्रवरनिर्णय	भट्टोजी भट्ट		दे० का०	दे०
२४१	५४८९	माधवीयकालनिर्णय	माधव		दे० का०	दे०
२४२	८३३	मिताक्षरा			दे० का०	दे०
२४३	३९६९	मिताक्षरा			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०·३ × १२·५ सें० मी०	६४ (९–७२)	१३	१३	अपू०	प्राचीन	
३०·६ × १३·१ सें० मी०	१०६	१३	४२	अपू०	प्राचीन	इति श्रीवारेंद्रनंदन वासीयभट्ट श्रीकुल्लू कवि रचितायांमानव शास्त्रवृतौद्वितीयोध्यायः संवत् १९२ ? मिति अश्वननदि ॥
२५·३ × १६·५ सें० मी०	७ (१–७)	१२	२२	पू०	प्राचीन सं०१९०८	सं०१९०८ भाद्र शुक्ल ३ शुक्रे ।।
१६ × ९·५ सें० मी०	४	१२	२२	पू०	प्राचीन	
२७ × ११·६ सें० मी०	४ (१–४)	१२	३६	पू०	प्राचीन सं०१८६१	इति वौद्धायानोक्तेमहाप्रवरानिर्णयेभट्टोजी भट्टकृतः प्रवराणांगणांचसमुद्धारः समाप्तः शुभं संवत् १८६१ मिति पौष वदि १३ ·· ··· ॥
२५ × ११·१ सें० मी०	१२ (१–१२)	१२	४७	पू०	प्राचीन	इति माधवी काल निर्णयश्लोका समाप्तः: ॥
२२·७ × ८·५ सें० मी०	२६ (१–२६)	६	३४	अपू०	प्राचीन	
२५·८ × १० सें० मी०	१२५	७	३३	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२४४	११०१	मिताक्षरा			दे० का०	दे०
२४५	२३२	मिताक्षरा			दे० का०	दे०
२४६	१९८	मिताक्षरा	विज्ञानेश्वरभट्टारक		दे० का०	दे०
२४७	१६५	मिताक्षरा (अशौचदशक भाष्य)	श्रीविज्ञानेश्वर	पं० श्रीहरिहर	दे० का०	दे०
२४८	४४२४	मिताक्षरा (अशौचनिर्णय, सटीक)		श्रीभट्टाचार्य	दे०का०	दे०
२४९	६८०	मिताक्षरा	श्रीभट्टाचार्य		दे० का०	दे०
२५०	६७९४	मिताक्षरा (विवृत्ति, टीका)		विज्ञाननाथभट्ट	दे० का०	दे०
२५१	६५५६	मिताक्षरा (गोवधप्रकरण)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४·४ × १० सें० मी०	१७२	६	४०	अपू०	प्राचीन	
२६·७ × ११·७ सें० मी०	१०२ (१४२-१६४, १७३-२५५)	६	३८	अपू० (जीर्ण)	प्राचीन सं० १६८६	सं० १६८६ वर्षे आषाढशुक्ल पंचम्यां श्री यज्ञया लिखित मिदमंवष्ठ गंगाधरेण श्रीमद्गंगाधरपुरे ॥ दानकालेतु देवत्वंप्रतियानां प्रकीर्त्तितं गोतु नामपि धेनुत्वं श्रुत्युक्तं दानयोगतः ॥
२६·७ × १० सें० मी०	८४ (१-८४)	१०	४६	पू०	प्राचीन सं० १८०७	इति श्रीमत्पद्मनाभभट्टोपाध्यायात्मजस्य श्रीमत्परमहंस परिव्राजक विज्ञानेश्वरभट्टारक कृतौ मिताक्षराणां याज्ञवलक्य धर्मशास्त्रविवृतौ प्रथमोध्यायः ॥ शुभंभवतु ॥ संवत् १८०७ ॥
२५ × ११·४ सें० मी०	६	१६	४६	अपू०	प्राचीन	श्री विज्ञानेश्वरमुनिजनवाक्येमिताक्षरा अशौचवृत्तदशकंवदति हरिहारोनच । इत्याशौचदशकभाष्यां पंडित श्रीहरिहर विरचितंसमजनि ॥श्री॥ याद्यशं पुस्तकं दृष्टतादृश लिखितंमया 'यदि शुद्धमशुद्धवा मम दोषोनदीयात स्वास्ति संवत् १४ आठाषा सुदि ७७ वर्षेअश्विन सुदि ११ एकादश्यां बुधवासर'''यज्ञेश्वर शर्मस्मः पुत्रपुत्रेणात्र ब्रह्म शर्मण'''।
३२ × ११·६ सें० मी०	६ (१-६)	१५	७२	पू०	सं० १८७३	इति श्री मिताक्षरायां आशौचप्रकरणा दुद्धृत्यकृतायास्त्रिंशत्श्लोक्याः श्री भट्टाचार्य कृतंभाष्यं समाप्तम् ॥'''संवत् ॥ १८७३ ॥
२५ × १०.५ सें० मी०	६ (१८-२१, २४-२५)	६	३५	अपू०	प्राचीन सं० १८०४	इति श्रीमिताक्षरा या मासौ च प्रकरणा उधृत्यकृतायास्त्रिं शत् श्लोक्याः श्रीद्भ भट्टाचार्य कृतं भाष्यं समाप्तं ॥ शुभ मस्तु ॥ संवत् १८०४ मिति मार्गशिर्ष पौर्णिमा शुक्रे च लिखितं अनूप राम गौड़ ब्राह्मणेन पाठार्थं श्रोत्रिशिव प्रसाद वा शितल प्रसाद ॥
३४·४ × १५·७ सें० मी०	८५ + १५४ + १३७ = ३७६	१२	५३	पू०	प्राचीन सं० १८७३	विज्ञान नाथ रचिताविवृतिर्यमिताक्षरा सेयद्वादशसाहस्त्री संख्याता ग्रंथ संख्य ... ... सं० १६७२ ॥
२०·६ × ६·६ सें० मी०	८ (१-८)	११	३४	पू०	प्राचीन	इतिमिताक्षरायांगोवध प्रकरणं ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२५२	३१०६	मिता क्षरा (गौतमीय टीका)		हरदत्त	मि० का०	दे०
२५३	२८३३	मिताक्षरा (गौतमीय टीका)			दे० का०	दे०
२५४	५७८३	(मिताक्षरा)			दे० का०	दे०
२५५	५०३५	मिताक्षरा (प्रायश्चित्त खंड)	विज्ञानेश्वर भट्टारक		दे० का०	दे०
२५६	७७९७	मिताक्षरा (प्रायश्चित्त खंड, भाष्य)			दे० का०	दे०
२५७	७२९४	मिताक्षरा (प्रायश्चित्ताध्याय)			दे० का०	दे०
२५८	७३३२	मिताक्षरा (व्यवहाराध्याय)			दे० का०	दे०
२५९	२०९४	मिताक्षरा (संस्कृतटीका० सहित)		विश्वेश्वरभट्ट	दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·६ × १०·८ सें० मी०	४९ (२–४९)	११	५१	अपू०	प्राचीन	
२५·५ × १०·८ सें० मी०	५८ (५१–१०८)	१२	५१	अपू०	प्राचीन	इति श्री हरदत्त कृतायां गौतमीय-धर्मशास्त्र विवृत्तौ मिताक्षरायामष्टा-विंशोध्याय: ।। शुभं ।।
२५ × १०·२ सें० मी०	२६ (३२४–३४७ + २)	९	३८	अपू०	प्राचीन सं० १८९५	... ... संवत् १८९५ वर्षे कार्त्तिक कृष्ण पंचम्यां समाप्त: शुभमस्तु × ×।
३१·२ × १२·६ सें० मी०	७९ (४ से १२६ तक स्फुटपत्र)	१४	४८	अपू० (जीर्ण)	प्राचीन	इति भरद्वाजपद्मनाभभट्टोपाध्यायात्मजपरम हंसपरिव्राजक विज्ञानेश्वर भट्टारककृतौऋजु... ...।
२५ × ९·९ सें० मी०	४० (१–४०)	९	४०	अपू०	प्राचीन	
२५·९ × १०·१ सें० मी०	१९९ (४१–२४९)	९	४५	अपू० (जीर्णशीर्ण)	प्राचीन सं० १७०४	
२७·५ × ९·५ सें० मी०	१७२ (१–१७२)	९	५०	अपू० (खंडित) (अत्यंतजीर्ण शीर्ण)	प्राचीन	
२७·५ × ११·३ सें० मी०	९५ (१–९५)	९	३९	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२६०	४४८	*मुक्ताफल	बोपदेव पंडित		दे० का०	दे०
२६१	१२७४	मुक्तावली			दे० का०	दे०
२६२	५६१	मूल्याध्याय	कात्यायन		दे० का०	दे०
२६३	६८८३	मूल्याध्याय विवरण	कामदेव दीक्षित		दे० का०	दे०
२६४	३१७०	यजुर्वल्लभा	याज्ञवल्क्य		दे० का०	दे०
२६५	७०५५/४	यज्ञहोत्र निर्णय			दे० का०	दे०
२६६	६०८१	याज्ञवल्क्य स्मृति	याज्ञवल्क्य		दे० का०	दे०
२६७	६१४८	याज्ञवल्क्य स्मृति	याज्ञवल्क्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७×१२ सें० मी०	५० (१–५०)	१०	३६	पू०	प्राचीन	इत्याचार्यं श्रीबोपदेवपंडित विरचितंमुक्ताफलं समाप्तं ॥ श्रीः ॥
२६·६×१३·९ सें० मी०	१५ (१–१५)	९	२६	अपू०	प्राचीन सं०१९०९	
२४×१०·५ सें० मी०	६	११	३६	पू०	प्राचीन सं०१८७९	
२३·९×१०·२ सें० मी०	९ (१–९)	१०	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री दीक्षित कामदेव कृतंमूल्याय विवरणं समाप्तं ॥
२६×१०·५ सें० मी०	४९ (१ से ८१ तक स्फुटपत्र)	१०	३३	अपू०	प्राचीन	
१३·५×१३ सें० मी०	५ (१–५)	१५	१६	पू०	प्राचीन	
२४·९×१०·१ सें० मी०	१५ (१–१५)	९	३३	पू०	प्राचीन सं०१८५५	संवत् १८५५ शुभमस्तु ॥ लिखितं सीतल परसाद ब्राह्मणकाश्यांमध्ये ॥
२१·३×१३·८ सें० मी०	४८ (१–४८)	९	२२	पू०	प्राचीन सं०१९०८	इत्य स्वामि विक्रय प्रकरणम् ११ संवत् १९०८ चैत्र कृष्ण ८ शनौ लक्ष्मी धरस्य पुस्तकात् लिखितं गोपालेन—जसीरावस्य छावनी मध्ये समाप्तोयम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२६८	७४३८	याज्ञवल्क्य स्मृति	याज्ञवल्क मुनि		दे० का०	दे०
२६९	१९२	याज्ञवल्क्य स्मृति	याज्ञवल्क मुनि		दे० का०	दे०
२७०	२९६६ ८	रजस्वला विचार			दे० का०	दे०
२७१	६५५५	रजोदोषनिर्णय			दे० का०	दे०
२७२	२४६८	रामार्याशतम्	महामुद्गल भट्ट		दे० का०	दे०
२७३	६७५१	वपावदान निर्णय			दे० का०	दे०
२७४	४३३६	वशिष्ठ संहिता			दे० का०	दे०
२७५	७१२४	वशिष्ठ स्मृति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३३·२ × १३·७ सें० मी०	१७ (१–१७)	१६	६४	पू०	प्राचीन सं० १८५५	इति याज्ञवल्केन मुनिना विरचितं धर्मशास्त्रं समाप्तम् संवत् १८५५·· ···॥
२३ × ११ सें० मी०	१९	७	२५	अपू०	प्राचीन	
२२ × १०·५ सें० मी०	२	१७	१९	अपू०	प्राचीन	
२०·६ × ९·३ सें० मी०	२	११	३६	अपू०	प्राचीन	अथ रजोदोष निर्णयः (प्रारंभ) ॥
२४ × ९·५ सें० मी०	७	८	४०	पू०	प्राचीन	इति श्री महामुद्गल भट्ट विरचितं रामार्याशतमष्टाधिकंसंपूर्णम् ॥ शुभमस्तु ॥
२४×११·१ सें० मी०	११ (१–११)	१५	३६	पू०	प्राचीन	इदं पुस्तकं आवल्युपनामकदादं भट स्वामिकंवपावदान निर्णयस्य। (पू० ११ श्लोक संख्या ३३५)।
३०·५×११·९ सें० मी०	७ (१–७)	१३	४७	पू०	प्राचीन सं० १९०३	इति श्री वसिष्ट संहि० संवत् १९०३ माघ कृष्ण लिखितं मिश्र मुरलिधरः ॐ तत्सत् ॥
३३·३ × १५·५ सें मी०	१९ (१–१४,१६-२०)	१६	६५	अपू०	प्राचीन	इति श्री वशिष्ठस्मृतौ विष्णुप्रतिष्ठापनविधिर्नाम नवमोऽध्यायः ९ शुभमस्तु संवत् × × × १८५४ शाके १७१९ ब्रह्मविंशतिकायां विभवनाम संवत्सरे प्रवर्त्तते श्री सूर्य याम्ययणे शरद ऋतौ आश्विन शुक्ल १५ गुरुवासरे × ×

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२७६	९८८	वार्त्तिकसार			दे० का०	दे०
२७७	२५०३	वाशिष्ठ स्मृति			दे० का०	दे०
२७८	६८३५	विधुरौपागनं			दे० का०	दे०
२७९	४४०६	वीरमित्रोदय	मित्रमिश्र		मि० का०	दे०
२८०	१६१	वृत्तशत	महेश्वर		दे० का०	दे०
२८१	६२६८	बृहस्पति स्मृति	बृहस्पति		दे० का०	दे०
२८२	९७२	वेदव्यासीय धर्मशास्त्र			दे० का०	दे०
२८३	१४३६	व्रतनिर्णय			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पंक्तिसंख्या	और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
३०·६ × १४·१ सें० मी०	३४	१२	२७	पू०	प्राचीन	इतिवार्त्तिक सारेषष्ठोध्यायः ॥ याज्ञवल्क्य कांड समाप्त ॥
२९·८ × ११·८ सें० मी०	७ (१–७)	९	३९	अपू०	प्राचीन	
१५·८ × ८·१ सें० मी०	३ (१–३)	११	२४	पू०	प्राचीन	इति विधुर औपासनं प्रकरणं ॥
३४·२ × १५·४ सें० मी०	२१६ (१–१६२, १–५४)	१४	५४	पू०	प्राचीन	श्री मन्मित्रमिश्र कृते वीर मित्रोदया-विधान निबंधे संस्कार प्रकाशः समाप्तः ॥
२३·८ × १०·७ सें० मी०	८ (१–८)	९	२९	अपू०	प्राचीन	
२७·५ × १८ सें० मी०	३ (१–३)	१३	२६	पू०	प्राचीन सं० १९०९	इति श्री बृहस्पति स्मृतिः संपूर्णं सं० १९०९ मार्गशुक्ल १ शनी वृदीमध्ये ॥
२२.२ × ९·६ सें० मी०	१८ (१–१८)	८	३३	पू०	प्राचीन	इति श्रीवेदव्यासीयेधर्मशास्त्रे चतुर्थोध्यायः ॥ समाप्तोयंग्रंथः ॥ शुभमस्तु ॥ श्रीरामचंद्रायनमः ॥
२१·६ × ८·७ सें० मी०	७ (१–७)	७	२०	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२८४	२९९१	व्रतादिविचार			दे० का०	दे०
२८५	७१२३	व्रतार्क			दे० का०	दे०
२८६	३९२७	व्रतार्क	शंकरभट्ट		दे० का०	दे०
२८६	१६४	व्रतार्क	शंकर भट्ट		दे० का०	दे०
२८७	६३३२	व्रतार्क (तिथिव्रतोपवासनिर्णय)	शंकर भट्ट		दे० का०	दे०
२८८	७३७९	व्रतार्क	शंकरभट्ट		दे० का०	दे०
२८९	७५७६	व्रतार्क	शंकरभट्ट		दे० का०	दे०
२९०	६२६७	शंख स्मृति	शंख		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
३०·४ × ९·५ सें० मी०	१५	११	५०	अपू०	प्राचीन	
३२·९ × १४·३ सें० मी०	९ (१–९)	१५	५०	अपू०	प्राचीन	
३४·५ × १५.७ सें० मी०	२३७ (१–२३७)	११	५०	पू०	प्राचीन सं०१८४५	इति श्रीमन्मीमांशशारापारपारीणभट्ट-शंकरसूरिसूनुभट्टनीलकंठात्मजशंकर कृतौव्रतार्कसमाप्तं ॥ ··· ··· ··· ··· वैशाखकृष्णसप्तम्यांरविवारान्वितांतथा ॥ सिद्धार्थीनामविख्यतोसंवत्सरमिदंजगत् ॥ पुस्तकराजे श्रीबालाजीजनार्दनस्यलिखितं कृष्णजू ॥ ··· ···संवत् १८४५ श्री रस्तु शुभमस्तु ।
३५ × १३·५ सें० मी०	२९० (१-१२६ तथा १३६ से ३६५ तक स्फुट पत्र)	९	४६	अपू०	सं०१९२० श०१७८४	इति श्रीमिमांसक भट्ट श्रीनीलकंठात्मज भट्टश्री शंकर कृतौ व्रतार्के अनुक्रमणि-का समाप्तीमगमत् ॥ ग्रंथसंख्या १००५१ ॥ सं० १९२० सके १७८४ कार्तिक मासे कृस्ने पक्षे तिथौपंचम्याम् मंद-वासरे तदिनं गोविंदात्मज चिरंजीव रामेश्वर गौड़ ब्राम्हणें लिखितं ॥ भग-निपृष्टि कटीग्रीवासब्धमुष्टिअधोमुखं ॥ कष्टेनलिखितं ग्रंथमत्नते प्रतिपालयेत ॥ १ ॥
३१·६ × १२·२ सें० मी०	५ (१–५)	१०	४३	पू०	प्राचीन	इति व्रतार्के तिथ्यादि व्रतानि उपवास निर्णयः ।
२७·४ × ११·३ सें० मी०	१२ (१–१२)	८	३६	पू०	प्राचीन सं०१९०३	इति शप्यन्येकादशीवृतं संवत् १९०३ ॥
३४·५ × १३ सें० मी०	६ (३३३-३३६, ३३९-३४०)	९	४४	अपू०	प्राचीन	
२७ × १८ सें० मी०	१७ (१–१७)	१३	२७	पू०	प्राचीन सं०१९०९	इति श्री शांखे धर्मशास्त्रे अष्टादशो-ध्याय: १८ पुस्तक बुंदी मध्ये लिखी कान्यकुब्ज गयादत्त धर्मशास्त्री की पुस्तक से लिखी सं १९०९ मार्गशिर कृष्ण ··· ···

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२९२	१४८९	शतप्रश्नकल्पलता (जातिविवेक)	माधव		दे० का०	दे०
२९३	१६१४	शांडिल्य स्मृति	शांडिल्य		दे० का०	दे०
२९४	३८९७	शांतिमयूख	नीलकंठभट्ट		दे० का०	दे०
२९५	६६७२	शांतिरत्न	कमलाकरभट्ट		दे० का०	दे०
२९६	७७६०	शातातपस्मृति	शातातप		दे० का०	दे०
२९७	४१७	शास्त्रदीपिका (सटीक)			दे० का०	दे०
२९८	७८६७	शिवसंहिता			दे० का०	दे०
२९९	३५४	शुद्धिचंद्रिका	कृष्णभट्ट		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	ग	द	९	१०	११
१७.१ × ११.४ सें० मी०	२३	९	१६	अपू०	प्राचीन	
२७ × १०·५ सें० मी०	२	८	३३	अपू०	प्राचीन	
२८ × ११·९ सें० मी०	२१ (१–२१)	१२	३६	अपू०	प्राचीन	श्रीमच्छंकर भट्टसूरिसूनु भट्टनीलकंठकृतौ भास्करे शांतिमयूखे विनायक शांति पद्धति··· ··· ···(पृ० १०-११) ॥
२३·२ × १०·३ सें० मी०	७९ (१–७९)	१२	४३	पू०	प्राचीन सं० १७८५	इति कमलाकरभट्ट कृतेरजोदर्शनशांतिः समाप्त (पृ० २०)······ इतिस्थाली पाक प्रयोगः ॥ संवत् १७८५ माघ शुद्ध ११ वुधवारे संपूर्णम् ॥··· ··· ···
३३ × १५·८ सें० मी०	३ (१–३)	१५	५४	पू०	प्राचीन सं० १८५३	इति श्रीशातातप महर्षिप्रोक्तं धर्मशास्त्रं समाप्तं······ ··· सं० १८५३······ ॥
२७·२ × ७·५ सें० मी०	२१ (१–२१)	९	५०	अपू०	प्राचीन	
२५·६ × १०·१ सें० मी०	८	८	४४	अपू०	प्राचीन	
२३·७ × ११ सें० मी०	८ (२–९)	१३	४२	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमन्मौनिकुल तिलकायमानगोवर्द्धन भट्टात्मज रघुनाथभट्ट सुत श्रीकृष्ण भट्टविरचिता शुद्धचंद्रिका संपूर्णा ॥

(सं०सू० २-६८)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३००	४८९	शुद्धितत्व	रघुनंदन भट्टाचार्य		दे० का०	दे०
३०१	६८८०	शूद्र धर्म	कमलाकर		दे० का०	दे०
३०२	५०५४ १५	शौचनिर्णय	गोपालसिद्धांत पंचानन		दे० का०	दे०
३०३	३०३३	श्राद्धनिर्णय			दे० का०	दे०
३०४	७२६२	श्राद्धनिर्णय			दे० का०	दे०
३०५	६८४२	श्राद्धमयूख	नीलकंठ		दे० का०	दे०
३०६	६६३४	श्रीरामकल्पद्रुम (संस्कार आदि)	अनंतभट्ट		दे० का०	दे०
३०७	५१०७	श्रौतसूत्र (गोत्रप्रवरनिर्णयाध्याय)	आश्वलायन		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
४२·२ × ९ सें० मी०	८८ (१-५६, ८३-११५)	७	६४	अपू०	प्राचीन	इति वन्द्यघटीय श्रीरघुनन्दन भट्टाचार्य विरचितं शुद्धितत्वं समाप्तम् ॥ शुभमस्तु ॥ ... ...
२४·५ × १०·६ सें० मी	४८ (१–४८)	९	३९	पू०	प्राचीन	
१६ × ७·८ सें० मी०	३८ (१–३८)	८	२६	पू०	प्राचीन सं०१७९०	इति श्रीमहामहोपाध्याय श्रीगोपालसिद्धान्त पञ्चानन भट्टाचार्य विरचितो शौचनिर्णयः ॥ शुभमस्तु ॥ श्रीरस्तु ॥ संवत् १७९० राम अगहनबदि शुक्ला द्वादश्यांसोमवासरोलिखतमिदंखड्गपुरे।
३३·७ × १४·२ सें० मी०	१६	९	३८	अपू०	प्राचीन	
१५·२ × १०.९ सें० मी०	७ (१–७)	१०	१८	पू०	प्राचीन सं०१८९१	इति श्राद्धनिर्णयः संवत् १८९१ ॥ शाके १७५६ मिती माघ सुदि ११ सौमेकः लिखितं श्री धतुरहा राछिग्राल राम स्वपठणार्थं × × × ॥
२७·६ × ११·५ सें० मी०	९९ (२-१००)	१०	४०	अपू०	प्राचीन	इति श्री मीमांसक शंकर भट्टात्मजट्टनीलकंठ कृते भास्करे श्राद्धमयूखः ॥
२४·५ × ११·३ सें० मी०	२५ (१–२५)	११	५४	अपू०	प्राचीन	इति कमलाकर भट्टात्मजानंतभट्ट कृते श्री रामकल्पद्रुमांतर्गते संस्कार कांडे सप्तस्छाः समाप्ताः ॥ शुभमस्तू ॥
१३·३ × ८.४ सें० मी०	४ (१–४)	१२	२३	पू०	प्राचीन	इत्याश्वलायन श्रौतसूत्रे उत्तर प... गोत्रप्रवर निर्णयाध्यायः समाप्तः ॥ सोमेश्वरः प्रीयताम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३०८	५३५३	षोडशोपचार			दे० का०	दे०
३०९	४८७	संध्या कर्म			दे० का०	दे०
३१०	४२७/४	संध्याप्रयोग			दे० का०	दे०
३११	३४१	संध्यामंत्र (सटीक)			दे० का०	दे०
३१२	६८३३	संस्कारकौस्तुभ			दे० का०	दे०
३१३	६३६५	संस्कारनिर्णय	चंद्रचूडभट्ट		मि० का०	दे०
३१४	७६२	संस्कारनिर्णय	कमलाकर भट्ट		दे० का०	दे०
३१५	३४७	संस्कारनृसिंह (सप्तर्षि उपाख्यान)	हरिभट्ट		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२·६ × १०·६ सें० मी०	५१ (१–५१)	१०	३३	पू०	प्राचीन सं० १८८१	इति देवकोत्थापनं ।। संवत १८८१ मन्मथनाम सवत्सरे उत्तरायण ।।··· ···सुभं भवतु ।। हे पुस्तक गोविंदात्मज रामचेंद्रेन लिखितं ।। प्रांत कन्नडनिमढोंगरिंकर पाचे असे ।।
१५·३ × १०·५ सें० मी०	८ (१–८)	६	१७	पू०	प्राचीन सं० १९१५	इति संध्या कर्म समाप्तम् सं० १९१५ लिषतं हरि गुलाल स्वात्मपठनार्थं मूलचंद । श्रीगंगा जी सहाय ।। शुभमस्तु ।।
१४·५ × १० सें० मी०	१२ (१–१२)	७	१४	पू०	प्राचीन सं० १९३४	इति कात्यायन सूत्रोक्तं संध्या प्रयोग: संपूर्णं ।। मितिकार्तिक शु० ७ सं० १९३४ लिखितं बलदेव गौडब्राह्मण कापूरखा ।
३५ × १३·१ सें० मी०	१० (१–१०)	६	३४	पू०	प्राचीन सं० १९३६	इति संध्यामन्य: व्याख्या । कार्त्तिक मासेकृष्ण पक्षे प्रतीपदायां वृहस्पत वासरेलिपि कृतं गिरधारी··· ··· ··· संवत् १९३६ ।।
२५·८ × ११ सें० मी०	२२ (१–२२)	१०	३७	पू०	प्राचीन	इति संस्कार कौस्तुभे नवग्रह मख: × × × × × × । (पृ० २१)
१७·६ × १०·४ सें० मी०	१३५ (१-५४, ५७-१३७)	११	२८	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमत्पौराणिकधर्माभट्ट सूनु श्रीमद्विद्वन्मुकुटमाणिक्य उमण भट्टसूरि सूनु चंद्रचूड भट्ट विरचित: संस्कार निर्णय: समाप्तिमगमत् ।।··· ··· ···
१८·४ × १०·७ सें० मी०	२६ (१–२६)	१२	२८	पू०	प्राचीन	
२३·५ × १०·५ सें० मी०	१० (३–१२)	१६	४६	अपू०	प्राचीन	इति श्रीसप्तर्ष्युपाख्याने हरिभट्ट विरचिते संस्कार नृसिंहे अन्नप्रासन संस्कार: समाप्तिगमस्त: ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है.	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३१६	२४६	संस्कार नृसिंह (सप्तर्षि उपाख्यान)	हरिभट्ट		दे० का०	दे०
३१७	७१२२	सदाचारचंद्रिका			दे० का०	दे०
३१८	५३२४	सद्धर्मदूषणोद्धार (द्वादश परिच्छेद)	हरिशंकरलाल		दे० का०	दे०
३१९	२२४४	सनत्कुमार संहिता			दे० का०	दे०
३२०	७०५५ / ४	समुच्चयप्रकाश			दे० का०	दे०
३२१	१११०	सरोजसुंदर			दे० का०	दे०
३२२	७३७०	सरोजसुंदर (स्मृतिसार)			दे० का०	दे०
३२३	१०२६	सरोजसुंदर (स्मृतिसार)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·५ × १०·५ सें० मी०	६ (१-४,११-१२,२३-२५)	१६	४६	अपू०	प्राचीन	इति श्रीसप्तर्ष्युपाख्याने नृहरि विरचिते संस्कार नृसिंहे अर्कविवाहविधिः समाप्तः ॥
३१·८ × १५·१ सें० मी०	५७ (१-४,६-१३,१५-५४,५६-५८)	१५	५०	अपू०	प्राचीन	इति सदाचार चंद्रिका संपूर्ण ॥ शुभमस्तु ॥
२७ × ११·२ सें० मी०	५० (१–५०)	९	४५	पू०	सं०१९४५	इति श्री सद्धर्मदूषणोद्धारे मुजफ्फरनगरनिवासी धनाढ्याग्रणीनिहालचंद्रतद्भ्रातृकेशदासा दिकारिते शंकरलाल शास्त्रिकृते मुजफ्फरनगर प्रांतवतिलांखग्रामवासि पं० मिहिरचंद्रकृत भाषा विवृतिसहिते द्वादशः परिच्छेदः श्री सम्वत् १९४५··· + + + ॥
२२·८ × १२·२ सें० मी०	६८ (१–६८)	८	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री सनत्कुमार संहितायां सनत्कुमारांबरीषसंवादे श्री कृष्ण युगल प्रकाशकः षष्ट पटलः ॥६॥
१३·५ × १३ सें० मी०	८ (७–१४)	१५	१४	पू०	प्राचीन	
२६·८ × ११·३ सें० मी०	७ (१–७)	९	३२	पू०	प्राचीन सं०१९०७	इति श्री मीमासरहस्येसर्व सारसंग्रह सरोजसुन्दर समाप्तम् संवत् १९०७ ॥७॥ शाके १७७२ मार्गशिर्ष कृष्ण द्वादश्यांशनिवाशरे लेखिराम ······ ॥
३३·१ × १३·३ सें० मी०	१७ (१–१७)	९	३८	पू०	प्राचीन सं०१९०८	इति नानामुनि प्रणीतं सरोज सुन्दरं धर्मशास्त्र संपूर्ण शुभंभूयात् सम्वत् १९०८ भाद्रपदमासेकृष्णपक्षे षष्ठयां रविवासरे × × ×
२३·३ × १२·५ सें० मी०	१४ (१–१४)	१४	३८	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३२४	६७४०	सर्वतोभद्र विधान			दे० का०	दे०
३२५	२८००	सर्वानुक्रम सूत्र (प्रथमोध्याय)			दे० का०	दे०
३२६	७७२७	सहस्त्रभोजनविधि			दे० का०	दे०
३२७	४८७६	सारसंग्रह			दे० का०	दे०
३२८	१८१७	सारसंग्रह	गोरक्षशर्मा		दे० का०	दे०
३२९	५४०	सावित्री उद्यापन			दे० का०	दे०
३३०	४६८९	सूतकनिर्णय	भागुरी		दे० का०	दे०
३३१	२९६६/८	सूतकनिर्णय	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२३·१ × १०·७ सें० मी०	४१ (१-७,१०-४२; पत्र २१ दो)	१२	४४	अपू०	प्राचीन	इति व्रतखंडे समाप्तं ॥
२६·७ × ११·२ सें० मी०	७ (१–७)	११	४४	अपू०	प्राचीन	इति सर्वानुक्रम सूत्रे प्रथमोध्यायाः ॥
२४·२ × ११·३ सें० मी०	२	८	३०	अपू०	प्राचीन	
३०·२ × १३·५ सें० मी०	१५ (१–१५)	१३	३६	अपू०	प्राचीन	
३० × १४ सें० मी०	२५ (१–२५)	११	४८	अपू० (जीर्ण)	प्राचीन	
२१·५ × ६ सें० मी०	१२	८	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री स्कंद पुराणे सावित्री उद्यापनं समाप्तं ॥ इदं पुस्तकं विद्याधरभगवंतयेव लिखितं ॥
२७·६ × ११·८ सें० मी०	५ (१–५)	८	३७	पू०	सं०१६३६	इति श्री स्मृतिसार समुच्चयधर्म सास्त्र भागुरी कृते सूतके प्रकरण समाप्तम् १६३६ ॥
१५·५ × १४·५ सें० मी० (सं०सू० २-६६)	८	१३	१७	पू०	प्राचीन	इति पदवाक्य प्रामाणादिज्ञ श्री लक्ष्मीधर सूरेः सुनूना भट्टोजी दीक्षितेनरचित सूतक निर्णयः समाप्तः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३३२	५४०३	स्त्रीधर्म			दे० का०	दे०
३३३	६५६०	स्मार्तप्रायश्चित्त			दे० का०	दे०
३३४	२७२५	स्मार्तोल्लास	शिवप्रसाद		दे० का०	दे०
३३५	५०६१	स्मृतिलेश	नित्यानंद द्विवेदी		दे० का०	दे०
३३६	६३८०	स्मृतिसार	याज्ञिकदेव		दे० का०	दे०
३३७	७४३०	स्मृतिसार			दे० का०	दे०
३३८	७७१३	स्मृतिसारसिद्धांतसंग्रह			दे० का०	दे०
३३९	६२६५	हारीत स्मृति	हारीत		दे० का	दे०
३४०	४५६४	होलिकानिर्णय			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
२२·४ × १३·३ सें० मी०	७ (१–७)	८	२१	अपू०	प्राचीन	श्री गणेशाय नमः ।। अथ स्त्री धर्मा उच्यंतो ··· ··· ··· (प्रारंभ)
२५ × १०·७ सें० मी०	२३ (१–२३)	१४	४०	पू०	प्राचीन	··· अथस्मार्तं प्रायश्चितानि × × (प्रारंभ) ।
२२·२ × १६ सें० मी०	१२४	११	२६	अपू०	प्राचीन	
२५ × ११·५ सें० मी०	४५ (१–४५)	१२	३३	पू०	प्राचीन सं०१८१४	इति श्री नित्यानंद द्विवेदि रचितः स्मृतिलेशः समाप्तः सुभमस्तु ।। सम्वत् १८१४ समय मार्ग वदि दशमी भौमवासरे ।। लिषितमिदं पुस्तकं निहाल मिश्रेण ।।
२४ × ६ सें० मी०	१६ (१-४, ६-१३ १५-१८)	१०	३५	अपू०	प्राचीन	इति श्री याज्ञिकदेव विरचिते स्मृतिसारः समाप्तः ।।
२७·७ × ११·१ सें० मी०	२२	१०	४५	अपू०	प्राचीन	
२६.६ × ११·२ सें० मी०	१३ (१–१३)	६	३४	अपू०	प्राचीन	
२७ × १८ सें० मी०	५ (१–५)	१३	२८	पू०	प्राचीन सं०१६०६	इति श्री हारीतस्मृति समाप्तं संमत् १६०६ पौष कृष्ण ५ शुक्रवारे बूदी मध्ये कान्यकुब्ज गयादत्त जी धर्मशास्त्री की पुस्तक से लिखी गोपाल न स्वयंपठनार्थं ।।
३७·४ × १०·१ सें० मी०	२ (१–२)	११	५१	अपू०	प्राचीन	अथ फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमायां होलिकाया निर्णीयते ··· ··· (प्रारंभ)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
नीति उपदेश						
१	४७६४	चतुश्लोकी महाभारत			दे० का०	दे०
२	६०६८	चाणक्यनीति	चाणक्य		दे० का०	दे०
३	६४७	चाणक्य नीति	चाणक्य		दे० का०	दे०
४	१३१६	चाणक्य नीति	चाणक्य		दे० का०	दे०
५	६६८६ ३	चाणक्य नीति	चाणक्य		दे० का०	दे०
६	४६२२	चाणक्यनीतिसार संग्रह	चाणक्य		दे० का०	दे०
७	३६७८	चाणक्यशतक			दे० का०	दे०
८	२४६१	चाणक्यसारसंग्रह	कालिदास		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ब	८स	८द	९	१०	११
४४·८ × ११·८ सें० मी०	१ (खर्रा)	२०	१३	पू०	प्राचीन	इति श्रीमन्महाभारते शत सहस्र संहितायां शांति पर्वणि चतुःश्लोकी भारतं संपूर्णं ॥ ··· ···
३०·५ × १०·९ सें० मी०	२४ (१–२४)	९	३५	पू०	प्राचीन सं०१९०२	इति श्रीवृद्ध चाणिकाख्ये अष्टादशोध्याय: १८··· ···संवत्१९०२······
१४ × १०·७ सें० मी०	१९ (९-१५,१८-२९)	१०	१६	अपू०	प्राचीन सं०१८६४	इति श्रीवृद्ध चाणक्ये राजनीति शास्त्रे-अष्टमोध्याय: ॥ सं० १८६४ भाद्रे मासे शुक्ल पक्षे नवम्यां गुरुवासरे ॥
२४·४ × १०·१ सें० मी०	६ (१–६)	१०	२०	अपू०	प्राचीन	
१७ × १५·७ सें० मी०	९ (२२–३०)	१२	१९	पू०	प्राचीन सं०१८९६	इति श्री लघु चाणक्ये राजनीति शास्त्रे अष्टमोध्याय संपूर्णं ॥ मीति जेष्ट प्रथमे शुक्ले पक्षे ९ भौमवासरे संवत् १८९६ शाके १७६१······
२३·६ × ११·१ सें० मी०	५ (१–५)	८	२६	पू०	प्राचीन सं०१९२५	इति श्रीसर्व संग्रह समाप्त। शुभमस्तु ॥ सं० १९२५ ॥ शके १७६० आसाढ वदि १३ वार गुरुवासरे ॥
३१·४ × १२·८ सें० मी०	११ (१–११)	७	२७	पू०	सं०१९४२	इति चाणक्य शतकं समाप्तम् ॥सम्वत् १९४२ कार्तिकस्यासितेपक्षे अष्टम्यां शनिवासरे गंगा प्रसाद पठनार्थं वनवारी दास लिपि कृतम् ········॥
२७·३ × १०·९ सें० मी०	९	१२	२८	पू०	प्राचीन सं०१९२२	(ग्रंथ नाम के लिये हाशिये पर 'राज०' शब्द लिखित है।) इति श्री कवि कालिदास कृतौ चाणक्यसार संग्रह संपूर्णं संवत् १९२२ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है?	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९	२२५२	ज्ञानतिलक			दे० का०	दे०
१०	१३८४	नवरत्न			दे० का०	दे०
११	५६३५	नवरत्न			दे० का०	दे०
१२	६१४१	नीति, वैराग्य एवं शृंगारशतक	भर्तृहरि		दे० का०	दे०
१३	५७६९	नीतिशतक	भर्तृहरि		दे० का०	दे०
१४	१३७	नीतिशतकम् (सटीक)	भर्तृहरि		दे० का०	दे०
१५	४७	नीतिशतकम्	भर्तृहरि		दे० का०	दे०
१६	५५१३	नीतिशास्त्र (प० पा०)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१ × १०·५ सें० मी०	३ (१–३)	६	३१	पू०	प्राचीन सं० १८६४	इति श्री ब्रह्मांड पुराने ।। श्री कृस्नादं शंवादे ग्यान तिलकुशं पूर्ण ।। समाप्ता ।। शंवतु ।। १८६४ ।। लिखित्वं पं० श्री गंगा प्रसाद ।।
१६·७ × १०·२ सें० मी०	२	११	४१	पू०	प्राचीन	इति नवकवि र्भिविचिरन्नवरत्नं समाप्तम् ।।
१५·७ × ६·५ सें० मी०	४ (१–४)	७	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री नवरत्न समाप्तम् ।।
२८·३ × ११ सें० मी०	३६ (१–३६)	७	३१	पू०	प्राचीन सं० १८७१	इति श्री मद्भर्तृहर विरचितं वैराग्य शतकं समाप्तं ।। ··· संवत् १८७१ ।। शाके १७ ।। ३६ ।।
२४ × ८·७ सें० मी०	२४ (१–२४)	७	२७	अपू०	प्राचीन	
३२·७ × १२·१ सें० मी०	१७ (१–१७)	१०	५०	पू०	प्राचीन	इति भर्तृहरि विरचितं नीतिशतकटीका समाप्तः ।। सांख्यटीका ३३४ सवसंख्या ५२७ ।।
२३ × १०·२ सें० मी०	१८	७	२६	अपू०	प्राचीन	
२४·३ × ८·७ सें० मी०	२४ (१–२४)	७	४४	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१७	४११०	नीतिश्लोक			दे० का०	दे०
१८	२३६५	नीतिश्लोक			दे० का०	दे०
१९	५९२८	पंचतंत्र			दे० का०	दे०
२०	४९५	पंचतंत्र (मित्रभेद)	विष्णुशर्मा		दे० का०	दे०
२१	६७२९	प्रबोधसुधाकर	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
२२	७०६	प्रश्नोत्तरमाला	शुकयोगींद्र		दे० का०	दे०
२३	४६००	प्रश्नोत्तरमाला	शुकापति		दे० का०	दे०
२४	७५६	प्रश्नोत्तररत्नमाला	शंकराचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·८ × १०·८ सें० मी०	५ (१–५)	११	३३	अपू०	प्राचीन	
१६·८ × ८·७ सें० मी०	६	७	१७	अपू०	प्राचीन	
२३ × १४·२ सें० मी०	१२	१३	१२	अपू०	आधुनिक	
२८·१ × ११·६ सें० मी०	३७ (१-२६,३४-४१)	१२	४८	अपू०	प्राचीन	
१६·८ × ८·५ सें० मी०	१७ (५–२१)	६	२२	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमच्छंकराचार्य विरचिते सुधाकरे ध्यानाख्यं सप्तदशंप्रकरणं ॥१७॥ ··· ··· ··· ··· (पृ० १६)
२३·३ × १० सें० मी०	४ (१–४)	८	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री शुकेयोगींद्र विरचिता प्रश्नोत्तरमाला ॥
२०.६ × ११ सें० मी०	५ (१–५)	१०	२३	पू०	सं०१८८२	इति श्रीशूकपति विरचिता प्रश्नोत्तर माला समाप्ताः॥ शंवत् ॥१८॥८२॥ आश्वीनेमासे शूक्ले पक्षे नवम्यां जीववासरे··· ··· ··· ···॥
२५ × ११·५ सें० मी०	५	६	२२	पू०	प्राचीन	इति श्रीमच्छंकराचार्य विरचितो प्रश्नोत्तर रत्नमाला संपूर्णं मस्तु मस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की सख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२५	५४२६/४	प्रश्नोत्तरामणिरत्नमाला	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
२६	५३८२	प्रश्नोत्तरी	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
२७	३८६०	प्रस्तावश्लोक			दे० का०	दे०
२८	३५३८	भर्तृहरि शतक (नीति-शृंगार-वैराग्य)	भर्तृहरि		दे० का०	दे०
२९	७२९९	भर्तृहरि शतक—सटीक (वैराग्य)	भर्तृहरि		दे० का०	दे०
३०	७२४१	भर्तृहरिशतक (नीति एवं शृंगार)	भर्तृहरि		दे० का०	दे०
३१	२९३४	मणिरत्नमाला			दे० का०	दे०
३२	४८३७	मध्यचाणक्य			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	म	द	९	१०	११
१७·३ × ८.६ सें० मी०	४	७	२६	पू०	प्राचीन	श्री मच्छंकराचार्य विरचिता प्रश्नोत्तरा-मणिरत्नमाला समाप्ता ॥
१६ × ७.६ सें० मी०	४ (२–५)	६	१६	अपू०	प्राचीन	
३१.५ × ११ सें० मी०	९ (१–९)	८	३५	अपू०	प्राचीन	
२२·४ × ११·३ सें० मी०	३५ (१–३५)	१०	२६	अपू०	प्राचीन	इति श्री मत्सकल नृपति मौलि मंडल मणि श्री मधुकर नृपति तनूज श्रीमद्-निह्निशचित्तायां विवेक दीपकायां भर्तृ-हरि टीकायां नीतिशतं समाप्तं ॥ (पृ० १४)
२४ × १०.५ सें० मी०	४ (१–४)	११	३४	अपू०	प्राचीन	
१८ × ११.३ सें० मी०	४० (१-३५,३७-४१)	९	१५	अपू०	प्राचीन	इति भर्त-हरि कृतौ णीति शकं समाप्तं ॥ (पृ०सं० २२)
२५·१ × ११·१ सें० मी०	५ (१–५)	७	२८	पू०	प्राचीन	इति श्री शुकनारद संवादे प्रश्नोशरष्या-मणि रत्नमाला समाप्ता ॥
२४ × १०·५ सें० मी०	७ (१–७)	१०	३०	पू०	प्राचीन सं०१८८२	इति मध्यचानक्यं समाप्तं ॥ शम्वत् १८८२ समयनाम श्रावण कृष्णे अम-वस्यायां रविवासरे वृझावनशर्मनो लेखिमिदं पुस्तकं ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहनिवेश की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
३३	१७२३	मनोबोध	नारायण त्रिपाठी		दे० का०	दे०
३४	१७९३	राजनीति शतक			दे० का०	दे०
३५	४८३९	राजनीति शास्त्र	चाणक्य		दे० का०	दे०
३६	२४	राजनीति शास्त्र	चाणक्य		दे० का०	दे०
३७	२५६४	राजनीति शास्त्र			दे० का०	दे०
३८	११११६/४	राजनीति शास्त्र शतक			दे० का०	दे०
३९	६७८८	राजनीति समुच्चय			दे० का०	दे०
४०	४९३४/४	लघुचाणक्य नीति	चाणक्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५ × ११·५ सें० मी०	१२ (१–१२)	८	२२	पू०	प्राचीन	इति श्री कूर्माचलाधीश्वर महाराजाधिराज श्री मद्योत चंद्र प्रकाशित नारायण त्रिपाठि कृतो मनोबोधः समाप्तः। पार्वतीपतये नमः ॥
२८·५ × १४·२ सें० मी०	६	१८	३३	पू०	प्राचीन	इति श्री प्रस्तावज्ञानमात्मनिज प्रकाशसतत रां रच्यते राजनीत शतकसंपूर्णम ॥
३१·४ × ११·८ सें० मी०	८ (१–८)	१३	४८	पू०	प्राचीन सं० १८८५	इति चानक्य विरचितं राज निति शास्त्रं समाप्तम् ॥ संवत् १८८५ समयनाम पौष मांसे त्रयोदश्यां मन्दवासरे वुभावनरामस्य लिपिर्विराजते ॥
२५·५ × १४·३ सें० मी०	८ (१-२, २६-३१)	१०	२७	अपू०	प्राचीन सं० १९१०	इति श्री चाणिक्ये राजनीतिशास्त्रेऽष्टमोध्यायः ॥ ८ ॥ क्त संबत् १९१० ॥ मिति ज्येष्ट सुदि प्रतिपद्यांमध्ये शुभ करणेनलिखितं ॥
२७ × ११ सें० मी०	५	८	३५	अपू०	प्राचीन सं० १८६८	इति श्री राजनिति शास्त्रे अष्ट दशोध्यायः समाप्तं शुभ मस्तु संवत् ॥ १८६८ ॥
२९ × १४·१ सें० मी०	३ (४–६)	१५	४६	पू०	प्राचीन	इति श्री राजनितिशास्त्रं शतकं समाप्तः ॥
२६·८ × ११·४ सें० मी०	४ (१–४)	१२	४३	पू०	प्राचीन	इति श्री राजिनीति समुच्चयं समाप्तम् ॥
१५·८ × १०·८ सें० मी०	५ (२–६)	१३	२१	अपू०	प्राचीन	इति लघुचाणक्ये राजनीति शास्त्रे अष्टोध्यायः ॥ ८ ॥ समाप्तः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४१	६११६ ७	लघुचाणक्य राजनीति			दे० का०	दे०
४२	५३८०	विदुरनीति			दे० का०	दे०
४३	३६६२	वृद्धचाणक्य नीति			दे० का०	दे०
४४	४६३४ २	वृद्धचाणक्य नीति	चाणक्य		दे० का०	दे०
४५	६५७५	वृद्धचाणक्य नीति	चाणक्य		दे० का०	दे०
४६	६५७४	वृद्धचाणक्य नीति	चाणक्य		दे० का०	दे०
४७	६११६ ७	वृद्धचाणक्य राजनीति			दे० का०	दे०
४८	१५२३	वृद्धचाणक्य राजनीति	चाणक्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१४·७ × ९·९ सें० मी०	११ (५९–६९)	९	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री लघुचाणक्ये राजनीतिशास्त्रे अष्टमोध्यायः ॥८॥
२३·८ × ९·५ सें० मी०	३४ (१-३०,१३-१४ और २९-३० अतिरिक्त पत्र)	७	२६	अपू०	प्राचीन	इति भारते उद्योगपर्वनी विदुरनीतौ ॥ प्रथमाध्यायः ॥ (पृ० सं० १४)
२२·२ × ९·८ सें० मी०	२० (१–२०)	७	२९	पू०	प्राचीन श०१६३८	इति श्रीवृद्धचाणक्ये राजनीतिशास्त्रे अष्टमोध्यायः ॥ वृद्धचाणक्य संपूर्णं ॥ शुभमस्तु लषकष्य ॥ शाके १६३८ समये ज्येष्ठ सुदि १३··· ··· ···॥
१५·८ × १०·८ सें० मी०	८ (७–१४)	१३	२२	अपू०	प्राचीन	इति वृद्धि चारणक्ये राजनीति शास्त्रे-अष्टमोध्याय ॥८॥ × × ×
२०·८ × १०·३ सें० मी०	१४ (१–१४)	९	१९	पू०	प्राचीन सं०१९११ (?)	इति श्रीवृद्ध चाणिक्ये राजनीति शास्त्रे अष्टमोध्यायः समाप्तिमगमत् शुभं श्री रुद्रशून्यनव चंद्र सुवर्पे मासेथ फाल्गुन सिते मुनि तिथ्यां श्रीकाव्य वासर दिने नृप नीतिरंबावती च नगरे लिखिता च ॥१॥ × × ×
१९·४ × ९·५ सें० मी०	१९ (१–१९)	९	२२	पू०	प्राचीन	इति वृद्ध चाणक्ये राजनिति शास्त्रे दसमोध्यायः सुभ ॥
१४·७ × ९·९ सें० मी०	१८ (६९–८६)	९	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री वृद्धचाणक्ये राजनीति शास्त्रे अष्टमोध्यायः ॥८॥ संपूणम् ॥ शुभम्॥
२६·१ × ११·३ सें० मी०	८ (१–८)	१४	३७	अपू०	प्राचीन सं०१८४१	इति श्रीवृद्ध चरनाइके रा जात शास्त्रे अष्टमोध्याय ८। लिष पटयाला मधे ······संवत् १८४१ मिती असुन सुदी ८ बुद्धवारे··· ··· ···

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा हैं	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४६	७८१०	वृद्धचाणक्य राजनीति			दे० का०	दे०
५०	७४२२	वेतालपंचविंशतिका	शिवदास		दे० का०	दे०
५१	७१७४	वेतालपंचविंशतिका	शिवदास		दे० का०	दे०
५२	४३६१	वैतालपंचविंशतिका	शिवदास		दे० का०	दे०
५३	४८४३	बैतालपंचविंशतिका	शिवदास		दे० का०	दे०
५४	६५७३	वैराग्यशतक	भर्तृहरि		दे० का०	दे०
५५	२२१८	वैराग्यशतक	भर्तृहरि		दे० का०	दे०
५६	५४३२	वैराग्यशतक (सटीक)	भर्तृहरि		दे० का	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४×१०·१ सें० मी०	२५ (१–२५)	९	२८	पू०	प्राचीन सं०१९२७	इति वृद्ध चाणाख्येसप्तदशोध्याय समाप्तः ।। इति वृद्ध चा० समाप्तः ।। संवत् १९२७ चित्रभानुनाम सं०कार्तीक × × × ×
२१·६×८·५ सें० मी०	५ (१–५)	८	२८	पू०	प्राचीन	इति श्री शिवदास विरचितायांमार्गे वैताल विक्रम संवादे विक्रमादित्यस्य अष्टमहा सिद्धि प्राप्तिर्नामा तथा च परकाया प्रवेश विद्या प्राप्तिर्नाम विनोदवैताल पंचविंशतिका समाप्तः ।। ···
२१·४×७·८ सें० मी०	६१ (१–६१)	९	२९	पू०	प्राचीन श०१७२०	इति श्री शिवदास विरचितायां वेतालपंचविंशतिकायां पंचविंशतिमं कथानकं ।। समाप्तं ।। ··· ··· ··· विक्रमार्क शके १७८० शालिवाहन शके १७२० शुक्ल नाम संवत्सरे दक्षिणायने शारद्रुतौ आश्विनमासे कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां इंदु वासरे ··· ··· ।।
२३·३×९·१ सें० मी०	४८	८	३२	अपू०	प्राचीन सं०१८३४	इति श्रीवेतालमहाकवि शिवदास विरचितायां वेतालपंचविंशतिकायां पंचविंशतिकथानकं समाप्तम् इतिवेताल पंचविंशतिका संपूर्णा संवत् १८३४ मिति जेष्ठ सुदि १२ मंगलवासरे इदं पुस्तकं समाप्तं काश्यां मध्ये लिखितं लक्ष्मणदास वैष्णवेन शुभमस्तु ।।
२२×७·९ सें० मी०	३३ (१–३३)	८	४६	अपू०	प्राचीन	इति श्री शिवदास विरचितायां वेत्ताल पंचविशतिकायां दशमं कथानकम् + + + + + + + ।।
१९·४×९·७ सें० मी०	१७ (१–१७)	८	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री भर्तृहरि कृतं वैराग्यशतं संपूर्णं ।
२९·२×१२·५ सें० मी०	२३	१२	४२	अपू०	प्राचीन	
२२·५×१०·७ सें० मी०	१० (२-१०,१२)	११	३०	अपू०	प्राचीन	इति श्री वैराग्यशतक टीका समाप्तं शुभमस्तू ।।
(सं०सू०२–७१)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है.	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५७	३३८७	वैराग्यशतक टीका	भर्तृहरि		दे० का०	दे०
५८	७४००	वैराग्यशतक	भर्तृहरि		दे० का०	दे०
५६	५६१६	शतकत्रय (नीति, वैराग्य एवं श्रृंगार)	भर्तृहरि		दे० का०	दे०
६०	२४७८	शुक्रनीति			दे० का०	दे०
६१	७५६२	श्रृंगारशतक सटीक	भर्तृहरि		दे० का०	दे०
६२	७५६६/२	चाणक्यनीति (संक्षिप्त वृद्धचाणक्य-नीति)	चाणक्य		मि० का०	दे०
६३	१७३	नीतिसंग्रह			दे० का०	दे०
६४	१३८५	सभातरंग (सुभाषित)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४ × ११ सें० मी०	१४ (१–१४)	१०	३८	पू०	प्राचीन सं० १८८५	भर्तृहरी वैराग्यशतटीका समाप्ता शुभ मस्तु श्लोक संख्या ८५ संवत् १८८५ शक १७५० ॥
२४·७ × १०·३ सें० मी०	९ (१–९)	१२	३९	पू०	प्राचीन	इति श्री भर्तृहरि विरचितं वैराग्यशतकं संपूर्णं ॥ श्री सांब सदा शिवार्पणमस्तु ।
२९ × ११·५ सें० मी०	२६ (३–२८)	९	४४	अपू०	प्राचीन	
२५·८ × १७ सें० मी०	२३९ (१–२३९)	२०	१५	पू०	सं० १९५४	इति शुक्रनीति संपूर्णम् शुभम् ॥
३२ × १३ स० मी०	२० (१,४-६,६-८, ८,९-१३,१५, १७-१६-१९)	१०	४२	अपू०	प्राचीन	
१९·५ × १४·८ सें० मी०	२३ (१–२३)	१६	११	अपू०	प्राचीन	··· ··· अथ संक्षिप्त वृद्ध चाणक्ये शास्त्रं लिख्यते (प्रारंभ)
२०·५ × ९·५ सें० मी०	७	१०	३४	अपू०	प्राचीन	
२५ × ११ सें० मी०	३ (२–३,५,)	१५	४६	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६५	२४१६	सारसंग्रह			दे० का०	दे०
६६	१८३९	सूक्तावलि			दे० का०	दे०
६७	२३५९	सूक्तावली			दे० का०	दे०
६८	३३१४	हितोपदेश			दे० का०	दे०
६९	७५४९	हितोपदेश			दे० का०	दे०
पुराणेतिहास						
१	१७९२	अश्वमेधधर्म युधिष्ठिरयज्ञ			दे० का०	दे०
२	७८७८	अगस्त्य संहिता			दे० का०	दे०
३	१६२	अगस्त्य संहिता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६·५ × १०·५ सें० मी०	४ (१–४)	१५	४२	अपू०	प्राचीन	
१५·५ × १२·२ सें० मी०	२५ (१–२५)	६	१७	पू०	प्राचीन	इति सूक्तावलि समाप्तिमागमत् ॥
२१ × १४·५ सें० मी०	६	१५	३२	पू०	प्राचीन सं० १६१६	इति सुक्तावली समाप्ताः। संवत् १६१६ वर्षे कार्तिक शुदि ६ कार्तिकस्य सिते पक्षे ··· ··· ··· ··· ···॥
३६·२ × १४·३ सें० मी०	६१ (२-७,६-६३)	६	४७	अपू०	प्राचीन	
२०·८ × १० सें० मी०	२६ (७,१५-२१, २३-२५,३४-४६,५५,६६)	१०	२७	अपू० (खंडित)	प्राचीन	
२३·५ × ६ सें० मी०	१६	५	३३	अपू०	प्राचीन सं० १७५४	इति श्री महाभारते शत सहस्र संहितायां अश्वमेघ धर्म्म युधिष्टिर यज्ञ समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥ संवत् १७५४ ॥ समेनाम ··· ···॥
२३·४ × ११ सें० मी०	१५ (६६-७४,६४-६६,१०१, १०२)	६	३४	अपू०	प्राचीन	इत्यागस्त्य संहितायां परमरहस्ये राम व्रत कथनं नाम षड्विंशोध्यायः ॥ (पृ० ६६)
२५·५ × ६·२ सें० मी०	६७ (१-३६,४८, ५२-७६)	८	४१	अपू०	प्राचीन	ग्रंथ संख्या १६०० शुभं ॥ संवत् १७१६ समयेमासि शुल्क पौर्णिमायांगत पत्राणां समाप्ति ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४	२०७८	अद्भुत रामायण			दे० का०	दे०
५	२०६२	अध्यात्म रामायण			दे० का०	दे०
६	२१८८	अध्यात्म रामायण			दे० का०	दे०
७	११५७	अध्यात्म रामायण			दे० का०	दे०
८	५१६	अध्यात्म रामायण (प्रथम सर्ग)			दे० का०	दे०
९	५७५	अध्यात्म रामायण (बालकांड)			दे० का०	दे०
१०	७४२	अध्यात्म रामायण (बालकांड)			दे० का०	दे०
११	२१६०	अध्यात्म रामायण (अयोध्याकांड नवम सर्ग)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३१ × १५·७ सें० मी०	३० (१–३८)	१५	३५	पू०	प्राचीन सं० १९०२	इति श्रीअद्भुत रामायन समाप्तम् संवत् १९०२ केमिति फागुन सुदि ८ गुरोकः समाप्तम् ।
२८ × १२ सें० मी०	२०	१२	३४	अपू०	प्राचीन	
३४ × १७ सें० मी०	२५	१३	२९	अपू०	प्राचीन	
२०·८ × १२ सें० मी०	६ (२–७)	६	२१	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसंवादे बालकांडे श्री रामहृदयं नाम द्वितीयोध्यायः श्री रामचंद्रार्प्यणमस्तु श्री श्री श्री
२४ × १०·६ सें० मी०	६ (१–६)	६	२१	पू०	प्राचीन सं० १९२०	इति श्री मदध्यातमरामायणे उमामहेश्वर संवादे श्री रामहृदयं प्रथमः सर्गः संवत् १९२० फाल्गुन कृष्ण ४ भृगुदिने ॥ श्री राम श्री राम लिषतं शिव साहाय ॥
२७·७ × १०·८ सें० मी०	१२ (२४–३६)	७	३०	अपू०	प्राचीन	
२३·६ × १४·४ सें० मी०	४४ (१–४४)	६	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री मदध्यात्मरामादणे उमामहेश्वर संवादे बालकांडे सप्तमः सर्गः ॥ ··· ·· शुभंभवतु ॥
३८·५ × १७.३ सें० मी०	२६	१२	३४	पू०	प्राचीन सं० १९१६	इति श्री मदध्यात्म रामायणे उमामहेश्वरसंवादे अयोध्याकांडे नवमः सर्गः ॥ श्रीअयोध्याकांड समाप्तम् ॥ माघमाशे शुक्लपक्षे अष्टम्यां भौमवासरे संवत् १९१६ ॥ राम ···

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२	२१८६	आध्यात्म रामायण (किष्किधा कांड)			दे० का०	दे०
१३	२६०	अध्यात्म रामायण (युद्धकांड उत्तरकांड)			दे० का०	दे०
१४	१४२२	अध्यात्मरामायण (सुंदर कांड—उत्तर-कांड)			दे० का०	दे०
१५	८३६	अध्यात्मरामायण विधि वर्णन			दे० का०	दे०
१६	२७२२	अन्वयवोधिनीटीका			दे० का०	दे०
१७	४६५	आदिपुराण			दे० का०	दे०
१८	६६३६	इतिहास समुच्चय			दे० का०	दे०
१९	३०६	इतिहास समुच्चय			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३४.५ × १७.३ सें० मी०	२४	१३	२९	०	प्राचीन सं०१९१९	इति श्री मदध्यात्म रामायणे उमा महेश्वरसंवादे किष्किधा कांडेनवम: सर्ग: ९ ··· ··· संमत् । १९१९ ॥ मीती चइत्र मासे शुक्ल पक्षे ॥ ४ ॥ गुरवासरे ॥
३३ × १६.७ सें० मी०	४८ (९७-१४३, १४५)	१२	३२	अपू०	प्राचीन	
३४.२ × १४.७ सें० मी०	८३ सु०कां०१-१३ यु०कां०१-२९ उ कां०१-४१	१२	४०	पू०	प्राचीन सं०१९०३	इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वर संवादे उत्तरकांडेचतुर्दशोध्याय: १४ शुभमस्तु शुभंभूत् संवत् १९०३ ॥···
२८.१ × १२.१ सें० मी०	२ (१-२)	९	४०	अपू०	प्राचीन	इति श्री गौरी तंत्रे हरकात्यायनी संवादेअध्यात्मरामायण विधि वर्णनो-नाम पंच सप्तम: पटल: ॥ संवत् १९२१ पौष शुक्लसप्तम्यां ७ बुधे ॥
३४.२ × १७.६ सें० मी०	४९ (१ १०,१२-५०)	१४	३५	अपू०	प्राचीन सं०१९२३	इति श्री···डामणिचक्रवर्त्ति विरचिता-यामन्वयबोधिन्यांटीकायां ··· संवत् १९२३ के साल मिती भाद्र वदि ८ समाप्तोयं ग्रथ: शुभमस्तु ॥
३२ × १३ सें० मी०	४४ (१-४४)	४	३३	अपू०	प्राचीन	
२८.६ × ११.५ सें० मी०	९३	११	५२	पू०	प्राचीन	इतिहास समुच्चये संसार कूप वर्णनं नाम पट् त्रिशत्तमोऽध्याय: ॥ ······
२९.३ × १२.३ सें० मी०	६८ (१,३-६९)	१०	३६	अपू०	प्राचीन	